बारहा के सैय्यदों का इतिहास

इलाहाबाद विश्वविद्यालय की डी० फिल० उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध

निर्देशिका :

डा० (श्रीमती) चन्द्रा पंत

रीडर, इतिहास विभाग,

इलाहाबाद विश्वविद्यालय,

इलाहाबाद

प्रस्तुत कर्त्री :

कु० रंजना किशोर

एम० ए०, इतिहास

इतिहास विभाग

इलाहाबाद विश्वविद्यालय

इलाहाबाद

१९८३

अनुक्रम

पृ॰सं॰

---:oo:---

प्रस्तावना

प्रस्तुत शोध ग्रंथ में मध्यकालीन इतिहास में सम्राट निर्माता सैय्यद बन्धुओं के वंश के इतिहास का विवरण प्रस्तुत करने का अकिंचन प्रयास किया गया है । मध्यकालीन इतिहास के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि इस काल में उमरा वर्ग का महत्वपूर्ण योगदान रहा न केवल राजनीतिक क्षेत्र में अपितु सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक प्रत्येक क्षेत्र में इस वर्ग ने विशिष्ट भूमिका अभिनीत की । इनमें से अधिकांशतः मूल रूप से भारतीय नहीं थे तथा अरब व फारस आदि विभिन्न देशों से आए थे, तथापि उन्होंने अपने आप को पूर्ण रूप से भारतीय परिवेश में ढाल लिया था । उमरा वर्ग के विभिन्न परिवारों के भारत वर्ष में प्रविष्टि का जो क्रम सल्तनत कालीन शासकों के काल में प्रारम्भ हुआ था, वह मुगल काल तक निरन्तर चलता रहा तथा अपने पूर्व पुरुषों की भूमि से धीरे-धीरे उनका सम्पर्क समाप्त हो गया । सम्भवतः ही ऐसा कोई परिवार रहा हो, जिसने पुनः अरब अथवा फारस जाकर बसने का निश्चय किया हो ।

सम्भवतः इसका कारण भारतीय शासकों द्वारा इन विदेशी तत्वों के प्रति उदारतापूर्ण व्यवहार एवम् योग्यता को पहचानने की शासकों की क्षमता थी, परन्तु इतिहासकारों

ने प्रमुखत: शासकों को ही अपने अध्ययन का केन्द्र बनाया । तथा उमरा वर्ग का वंश इतिहास बहुत कम लिखा गया । लाइफ एण्ड टाइम्स, पोलिटीकल बायोग्राफी आफ मुनीम खाँ निजामउलमुल्क आसफ खाँ आदि अनेक ग्रन्थ उमराओं के जीवन से संबंधित उपलब्ध हैं, तथापि पारिवारिक इकाई के रूप में किसी वंश का इतिहास बहुत कम लिखा गया है ।

कुछ इतिहासकारों ने अवश्य ही इस ओर ध्यान दिया । नूरजहाँ एण्ड हर फेमली नामक पुस्तक में महत्वपूर्ण उमरा एतमादउद्दौला के परिवार के इतिहास का विवरण मिलता है । इसी प्रकार के परिवारों में बारहा के सैय्यदों का वंश है और इस शोध ग्रन्थ में इसी वंश के परिवार के सदस्यों की इतिहास का विवरण प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है ।

ऐतिहासिक सामग्री की दृष्टि से बारहा के सैय्यदों के जीवन से संबंधित अनेक आधार ग्रन्थ तथा उक्त वंश के सदस्यों द्वारा बनवाई गई इमारते, अभिलेख उपलब्ध हैं, इनमें से कुछ तो भारत वर्ष में उपलब्ध भी नहीं है । लेखिका ने सैय्यदों से संबंधित अनेक स्थानों का भ्रमण किया और जानसठ, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर आदि में बसे विभिन्न सैय्यद परिवारों से वार्तालाप किया तथा जो कुछ सामग्री उनके पूर्व पुरुषों से संबंधित प्राप्त हो सकी उसके आधार पर तथा विभिन्न पुस्त-

कालयों में प्राप्त एतिहासिक ग्रन्थों के आधार पर इस वंश के इतिहास को लिखने का प्रयत्न किया है ।

अस्तु ! मेरी सीमित सम्भावनाओं को ध्यान में रख कर यदि सुधी पाठक देखने का प्रयास करेंगे तो निश्चित ही उन्हें उक्त विषय पर कुछ महत्वपूर्ण सामग्री इस शोध ग्रंथ में उपलब्ध होगी । यह भी सम्भव है कि अध्ययन की निजी रूचियों के कारण विषय वस्तु का मूल्यांकन सीमित दायरे में हुआ हो, परन्तु इसे पढ़कर विचारक इस क्षेत्र में और अधिक विस्तृत व रचनात्मक कार्य कर सकेंगे ऐसा मेरा विश्वास है व इसी स्थिति में मेरे इस कार्य का महत्व है व सफलता भी ।

इस शोध प्रबन्ध के प्रस्तुत करने के अवसर पर मैं अपनी निर्देशिका डा॰ श्रीमती चन्द्रा पंत का सद् परामर्श और विषय के सम्बन्ध में अपने व्यापक ज्ञान द्वारा उचित निर्देशन को मैं कभी नहीं भूल सकती । उनके स्नेहपूर्ण व्यवहार से ही मैं आज इस शोध प्रबन्ध को प्रस्तुत करने की स्थिति में आ सकी हूँ । अतः मैं उनकी आभारी हूँ ।

विषय से सम्बद्ध विद्वान डा० रघुवीर सिंह (सीतामऊ लाइब्रेरी, मालवा) जैसी महान विभूति ने जिस प्रकार इस कार्य को आगे बढ़ाने में मेरी सहायता की उसके लिए कृतज्ञता का कोई भी शब्द कम होगा । सीतामऊ के ही श्री मनोहर सिंह राणावत जी ने भी मेरी बहुत सहायता की ।

डा० सी०बी० त्रिपाठी विभागाध्यक्ष मध्यकालीन एवम् आधुनिक इतिहास विभाग ने समय समय पर अमूल्य सुझाव देकर मुझे अनुगृहीत किया । डा० हरी शंकर श्रीवास्तव ने विभिन्न समस्याओं को सुलझाने में मेरी सहायता की । अतः मैं उपरोक्त सभी विद्वानों के प्रति अपना कृतज्ञ प्रणाम प्रेषित करती हूँ ।

शोध ग्रन्थ को अन्तिम रूप देने में इलाहाबाद विश्वविद्यालय लाइब्रेरी, पब्लिक लाइब्रेरी इलाहाबाद, नेशनल आरकाइव्स नई दिल्ली, नेहरू संग्रहालय नई दिल्ली, नेशनल लाइब्रेरी कलकत्ता के स्टाफ द्वारा दिये गये सहयोग तथा सहायता को शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता ।

मैं अपने पारिवारिक सम्बन्धियों के प्रति अपना आभार व्यक्त करना परम कर्तव्य मानती हूँ, जिनके स्नेह तथा छत्रछाया में रह कर इस कार्य को परिणित कर सकी हूँ । विशेष रूप से अपने भाई श्री एच०सी० सक्सेना की आभारी हूँ, जिनकी सहायता से मैं जानसठ तहसील गई तथा सैय्यद परिवारों से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ । मैं अपने टाइपिस्ट श्री मेहरोत्रा को अत्यन्त कुशलता से टाइप करने के लिये धन्यवाद देती हूँ ।

मेरे पास अपनी स्वर्गीय माँ तथा भाई के प्रति किसी भी प्रकार का आभार व्यक्त करने की भाषा नहीं है । उन्होंने ही मुझे बार-बार अनेक संकटों में भी इस पुनीत कर्तव्य की ओर प्रेरित किया, नहीं तो मेरी अक्षमता और उदासीनता के गर्त में यह शोध ग्रंथ पड़ी रह जाती । आज उनकी पुण्य स्मृति तथा आशीर्वाद मेरे साथ है -- उनकी पुण्य स्मृति में मेरी यह श्रद्धांजलि है ।

रंजना किशोर
6.5.83

-----:o:-----

- परिचय -

मध्यकालीन भारतीय ऐतिहासिक ग्रन्थों का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि यह काल प्रमुखत: शासक वर्ग व उमरा वर्ग के मध्य प्रभुता के लिए संघर्ष का काल था ।

शासक की सफलता अथवा असफलता का द्योतक उमरा वर्ग पर उसका प्रभाव होता था । यह उमरा वर्ग प्रशासन के स्तम्भों की भाँति था । राजनीति, सैन्य संचालन, प्रशासन, प्राय: प्रत्येक क्षेत्र उनकी गतिविधियों से पूर्ण था । यद्यपि योग्य शासकों ने सत्ता को पूर्ण रूप से अपने हाथों में बनाए रखा, तथापि अवसर मिलने पर उमरा वर्ग अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील रहा तथा अयोग्य शासकों के काल में उन्हें उसका पूर्ण रूपेण अवसर भी मिला ।

सल्तनत काल में उत्तराधिकार के निश्चित नियम के न होने से विभिन्न राजवंशों की सत्ता स्थापित हुई तथा सत्ता प्राप्ति के लिए विभिन्न वंशों एवं विभिन्न राजकुमारों में संघर्ष हुआ । इसका लाभ उमरा वर्ग ने भी उठाया तथा अवसर प्राप्त होने पर शासकों को कठपुतली बना कर रखा ।

सल्तनत काल से लेकर मुगल काल तक में नासिरउद्दीन महमूद, कैकुबाद रफीउद्दौला जैसे अनेक कठपुतलीवत सम्राट हुए ।

इन सम्राटों के काल में उमरा वर्ग का प्रभाव अक्षुण्य बना रहा । यद्यपि इस वर्ग ने सत्ता अधिग्रहण के लिए उचित अनुचित सभी प्रकार के उपायों का अवलम्बन किया तथापि राज्य की आर्थिक सामाजिक, साँस्कृतिक प्रगति के लिए कार्य कर यह स्पष्ट कर दिया कि राज्य के हित उनकी दृष्टि में सर्वोपरि था ।

विभिन्न शासकों के काल में इस वर्ग के कई सदस्यों के व्यक्तिगत कार्यों व कुछ सदस्यों के एक पारिवारिक इकाई के रूप में क्रिया कलापों से इतिहास के पृष्ठ भरे पड़े हैं ।

मुगलों के शासन काल से भारतीय इतिहास में एक नए युग का सूत्रपात हुआ । मुगल शासकों ने उमरा वर्ग को शासन में सहयोगी बनाते हुए भी सत्ता को पूर्ण रूप से अपने हाथों में रखा और यद्यपि कभी कभी इस वर्ग के सदस्यों द्वारा शाही सत्ता के विरुद्ध विद्रोह भी किया गया, परन्तु पूर्ण रूप से इन विद्रोहियों के दमन ने यह स्पष्ट कर दिया कि मुगल शासक उमरा वर्ग की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली थे । परन्तु उत्तर मुगल काल तक आते आते स्थिति में परिवर्तन हो गया । अयोग्य शासकों के राज्यारोहण से शासकों की शक्ति घटने लगी व इस वर्ग का प्रभुत्व एक बार पुन: दृष्टिगत होने लगा तथा अन्तिम मुगल सम्राट उमरावों के हाथ में कठपुतली की भाँति रहे ।

मध्यकालीन इतिहासकारों ने प्रमुखत: शासकों को ही अध्ययन का केन्द्र बनाया । यद्यपि उमरा वर्ग की राजनैतिक

गतिविधियों का भी विवरण दिया गया, तथापि इस वंश के एक पारिवारिक इकाई के रूप में कार्यकलापों का व उनके वंशगत इतिहास का विवरण प्रायः नहीं के बराबर है ।

इस प्रकार पारिवारिक इकाई के रूप में राज दरबार में विशिष्ट भूमिका निभाने में बारहा के सैय्यदों का वंश भी था । यद्यपि छिट पुट उदाहरणों को छोड़कर समसामायिक स्त्रोतों में सल्तनत कालीन इतिहास में इनकी गतिविधियों का अधिक विवरण नहीं मिलता, तथापि सल्तनत काल से लेकर उत्तर मुगल कालीन शासकों के काल तक इस वंश के सदस्यों ने शाही सेवा में सक्रिय योगदान दिया ।

प्रारम्भ में इनकी गतिविधियाँ युद्ध क्षेत्र तक ही सीमित रही परन्तु उन्होंने मुगल सेना के अग्रिम भाग में उत्कृष्ट एवं सराहनीय सेवायें प्रदान कर अनेक विपरीत परिस्थितियों में मुगल सम्राटों का साथ दिया । धीरे धीरे उन्होंने मुगल राजनीति में भी विशिष्ट भूमिका निभानी प्रारम्भ कर दी कर दी । यहाँ तक कि 1713 से लेकर 1723 तक मुगल साम्राज्य की सम्पूर्ण शक्ति सैय्यद अब्दुल्ला खाँ व सैय्यद हुसैन अली खाँ के हाथों में केन्द्रीभूत हो गई और यह युग "सैय्यद बन्धुओं" के नाम से जाना जाने लगा ।

सैय्यद बन्धुओं के जीवन से संबंधित अनेक आधार ग्रंथ उपलब्ध है तथा उनमें से बहुत से भारत वर्ष में उपलब्ध भी नहीं हैं जो कुछ भी इस विषय में उपलब्ध हो सका है उसके आधार पर इस वंश के इतिहास पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया गया है ।

कृति के प्रथम अध्याय में सैय्यदों के भारत में प्रवेश का वर्णन है । सर्वप्रथम सैय्यदों का भारत आने का उल्लेख महमूद गज़नी के काल में मिलता है । महमूद गज़नी ने जब भारत में आक्रमण करने का निश्चय किया तो सैय्यद अबुल फरह को को इस अभियान में आमंत्रित किया । इस अभियान में गज़नी की विजय के पश्चात् सैय्यद अबुल फरह वसेत चले गए और अपने चारों पुत्रों को भारत ही छोड़ दिया और इन्हीं चार पुत्रों से चार शाखाएं विकसित हुई जो तिहानपुरी, कुण्डली, चितरोरी तथा जगनेरी शाखा के नाम जानी गई ।

कृति के दूसरे अध्याय में अकबर के काल में सैय्यदों के विभिन्न अभियानों में योगदान का विवरण प्रस्तुत किया गया है । सैय्यद महमूद खाँ बारहा, सैय्यद अहमद खाँ बारहा, सैय्यद कासिम व सैय्यद हाशिम बारहा, सैय्यद राजू, सैय्यद बायजीद, सैय्यद अब्दुल्ला, सैय्यद लाद आदि अनेक सैय्यदों की वीरता का वर्णन दिया गया है । इस काल में सैय्यदों को पाँच हजार जात व पाँच सौ सवार का मनसब प्राप्त हुआ था । यह काल सैय्यदों के मुगल दरबार में प्रवेश का काल था तथा सम्भवत: उन्हें अभी अधिक अवसर प्राप्त नहीं हुआ था तथापि उनके द्वारा प्राप्त मनसब इस बात का प्रतीक है कि उन्होंने विभिन्न अभियानों में वीरता का परिचय दिया होगा ।

इसी प्रकार से तीसरे अध्याय में जहाँगीर तथा सैय्यद संबंधों का वर्णन है, इस समय तक धीरे-धीरे इन लोगों का प्रभाव

बढ़ता जा रहा था । सैय्यद अली असगर बारहा को हिसार की फौजदारी दिलेर खाँ बारहा को बड़ौदा की फौजदारी प्रदान की गई तथा इस समय तक इनके मनसब में भी अभिवृद्धि हो गई और कुल मिलाकर ढ इन्हें 9200 जात व 3450 सवारों का मनसब प्राप्त हुआ ।

चौथे अध्याय में शाहजहाँ के काल का वर्णन है । इस समय तक सैय्यद खाने जहाँ बारहा ग्वालियर के दुर्गाध्यक्ष, सैय्यद हसन गुजरात अहमदाबाद में गोधरा सरकार के फौजदार तथा सैय्यद शहाबुद्दीन मन्दसोर इन्दौर के फौजदार, सैय्यद मुजफ्फर खाँ बारहा, लहौर के दुर्गाध्यक्ष नियुक्त हुए । इन सैय्यदों ने भी विभिन्न अभियानों में वीरता पूर्वक कार्य किया तथा साहस एवं वफादारी का परिचय दिया । इस काल में इनके मनसबों में भी पर्याप्त अभिवृद्धि हुई ।

पाँचवें अध्याय में औरंगजेब के साथ सैय्यदों के संबंधों का वर्णन किया गया है । यद्यपि औरंगजेब सैय्यदों को सदैव शंका की दृष्टि से देखता था, फिर भी इसके काल में सैय्यद मियाँ मुनव्वर खाँ, दिलेर खाँ, सैय्यद अब्दुल्ला खाँ व सैय्यद हुसैन अली खाँ बारहा के विभिन्न अभियानों का वर्णन है । जिसमें इन लोगों ने अपनी वीरता का परिचय दिया । सैय्यद मियाँ ने अजमेर तथा बीजापुर के सूबेदार के रूप में कार्य किया । सैय्यद अब्दुल्ला खाँ व सैय्यद हुसैन अली खाँ को हिंडोना व बयाना के फौजदार के रूप में नियुक्त किया । बहादुर शाह के समय भी शुजात खाँ बारहा को अजमेर का सूबेदार तथा सैय्यद फतेह मुहम्मद को ग्वालियर का

किलेदार नियुक्त किया । सैय्यद अब्दुल्ला खाँ व हुसैन अली खाँ को अजमेर तथा बिहार का नायब सूबेदार नियुक्त किया ।

छठवें अध्याय में उत्तराधिकार के युद्ध का वर्णन है जो औरंगजेब के पुत्रों के मध्य हुआ । इस उत्तराधिकार के युद्ध में सैय्यद अब्दुल्ला खाँ व सैय्यद हुसैन अली खाँ बारहा ने बहुत महत्व-पूर्ण भाग लिया । जाजों के युद्ध में इन दोनों भाईयों ने अपनी वीरता दिखाई तथा इन बन्धुओं की कृपा से ही अजीमुश्शान विजयी हो सका । इनके एक भाई सैय्यद नजमुद्दीन अली खाँ बारहा की तो इस युद्ध में मृत्यु भी हो गई । अजीमुश्शान ने इन बन्धुओं की वीरता से प्रसन्न होकर सैय्यद हुसैन अली खाँ बारहा को अपना नायब सूबेदार के रूप में बिहार में नियुक्त किया तथा सैय्यद अब्दुल्ला खाँ ने सिक्खों के विरुद्ध अन्तःपुर के युद्ध में एक बार पुनः अपनी बहादुरी का परिचय दिया । अजीमुश्शान ने सम्राट से अनुरोध करके सैय्यद अब्दुल्ला खाँ को इलाहाबाद का नायब सूबेदार नियुक्त किया ।

सातवें अध्याय में फार्रुखसियर का राज्यारोहण तथा उनका सैय्यदों के साथ संबंधों का वर्णन है । सैय्यद बन्धुओं की कृपा से ही फार्रुखसियर गद्दी पर बैठा था, इसके काल में सैय्यद बन्धुओं को ऊँची ऊँची उपाधियाँ एवं पद प्रदान किए गए । सैय्यद अब्दुल्ला खाँ को वजीर का पद तथा "कुतबुलमुल्क" की उपाधि दी गई व मुल्तान की सूबेदारी दी गई तथा सैय्यद हुसैन अली खाँ बारहा को भी अमीरुल उमरा की उपाधि से विभूषित किया और बिहार की सूबेदारी प्रदान की । इसके

अतिरिक्त अन्य अनेक सैय्यदों को भी ऊँचे ऊँचे पदों से सम्मानित किया । फार्रुखसियर का व्यवहार प्रारम्भ में तो सैय्यदों के साथ बहुत अच्छा था , परन्तु धीरे-धीरे इनके सम्बन्ध बिगड़ने लगे । वास्तविक सत्ता किसके हाथ में हो, इस प्रश्न को लेकर सम्राट तथा सैय्यदों में संघर्ष छिड़ गया । सम्राट सैय्यदों को सलाहकार के रूप में रखना चाहते थे न कि सत्ता के उपभोग कर्ता के रूप में और इससे मत भेद दिन प्रतिदिन बढ़ता गया । अधिक दिन तक सैय्यद बन्धु इस स्थिति में नहीं रह सके और उन्होंने फार्रुखसियर को पदच्युत कर दिया । और दूसरे बीस वर्षीय राजकुमार रफी-उदरजात को बादशाह बनाया ।

इसी प्रकार से आठवें व अंतिम अध्याय में सैय्यदों की विजारत का वर्णन है । इस समय तक सैय्यद इतने अधिक प्रभाशाली हो गए थे कि बादशाह सिर्फ नाम मात्र को थे । बादशाहों का उठना बैठना सब सैय्यदों के हाथ में था, सैय्यद हिम्मत खाँ बारहा इन सम्राटों के संरक्षक थे । इसी अध्याय में सैय्यदों के मराठा, जाट व राजपूतों के संबंधों का वर्णन है । सैय्यद बन्धु इन राजपूत ,जाट मराठों से मिलजुल कर रहना चाहते थे और इसके लिए इन लोगों को सफलता भी मिली । कुछ हद तक इन लोगों को सफलता भी मिली । सैय्यद दिलावर अली खाँ बारहा तथा सैय्यद आलम अली खाँ ने भी अनेक युद्धों में वीरता से युद्ध कर अपने प्राण न्योछावर कर दिए थे । सैय्यद नुसारत यार खाँ बारहा नार नौल के फौज-दार सैय्यद गैरत खाँ आगरा के गर्वनर सैय्यद इब्राहीम खाँ मुल्तान के डिप्टी गर्वनर सैय्यद आलम अली दक्षिण के डिप्टी गर्वनर, सैय्यद शाह अली खाँ इलाहाबाद के गर्वनर सैय्यद शहमत खाँ सहारनपुर के

फौजदार तथा सैय्यद जाफर अली सिकन्दराबाद के फौजदार नियुक्त हुए । लेकिन अब तक अमीर लोग इन सैय्यदों के बढ़ते प्रभाव से बहुत अधिक ईर्षा करने लगे थे और यह अमीर इन सैय्यदों को कृतघ्न समझते थे । निजामुउलमुल्क के उत्थान से सैय्यदों का पतन प्रारम्भ हो गया था और यहीं से इनकी विजारत समाप्त हो गई ।

सामाजिक व सांस्कृतिक क्षेत्र में इनके क्रियाकलापों का अधिक वर्णन नहीं मिलता है, सम्भवतः इसका कारण यह रहा होगा कि मुख्यतः सैनिक होने के कारण ये लोग इस दिशा में अधिक ध्यान न दे सके ।

प्रशासनिक दृष्टि से भी सैय्यदों की समीक्षा करना सरल नहीं है, फार्रुखसियर के समय से ही यह लोग आन्तरिक मामलों में इतना अधिक व्यस्त रहे कि प्रशासन की तरफ अधिक ध्यान न दे सके । यह सब होते हुए भी इनकी विजारत महत्व-हीन नहीं कही जा सकती और इन बन्धुओं ने यह सिद्ध कर दिया कि अयोग्य बादशाह के शासन काल में शक्ति का केन्द्र वजीर बन सकता है जो शासक पर उमरा वर्ग की विजय का प्रतीक है ।

———:oo:———

अध्याय - 1

बारहा के सैय्यदों का वंश परिचय एवं भारत में आगमन

मुगलकाल का इतिहास भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण युग है। इस वंश के शासकों ने न केवल राजनीतिक क्षेत्र में अपितु सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक सभी क्षेत्रों में समान रुचि लेकर इस युग को विशिष्टता प्रदान की। 1526 में बाबर द्वारा संस्थापित इस वंश के शासक यूं तो 1857 तक सत्ता में बने रहे तथापि औरंगजेब की 1707 में मृत्यु होने के पश्चात् इस साम्राज्य का विघटन होना आरम्भ हो गया था[1]। योग्य शासकों के अभाव में उमरा वर्ग का प्रभुत्व बढ़ता गया। इन उमरावों में बारहा के सैय्यदों का नाम विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। वास्तव में फर्रुखसियर सैय्यद बन्धुओं के सहयोग से ही बादशाह बना[2]

1- मुगल साम्राज्य के विघटन के कारणों के लिये देखिये -
इरविन लेटर मुगल्स 2 खण्ड तथा जे॰एन॰ सरकार कृत फॉल ऑफ द मुगल एम्पायर चार भागों में,

सर॰जे॰एन॰ सरकार द्वारा रचित हिस्ट्री ऑफ औरंगजेब भाग-3 पृ॰ 283-364

डा॰ सतीश चन्द्र कृत पार्टीज एण्ड पोलिटिक्स पृ॰ xiii तथा उन्हीं के द्वारा रचित उत्तर मुगल कालीन भारत पृ॰ 22-25

प्रोफेसर इरफान हबीब द्वारा सम्पादित मध्यकालीन भारत में डा॰ अतहरअली द्वारा रचित लेख मुगल साम्राज्य का अन्त पृ॰ 107-118

औरंगजेब की मृत्यु के समय सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं शासनात्मक प्रायः सभी दृष्टियों से मुगल साम्राज्य की स्थिति शोचनीय हो गई थी।

2- नूरुद्दीन कृत जहांदारनामा पाण्डुलिपि फोलियो 41ए
डा॰ सतीश चन्द्र कृत उत्तर मुगल कालीन भारत पृ॰ 92

और 1713 से लेकर 1723 तक का काल भारतीय इतिहास में "सय्यद बन्धुओं का युग" कहा गया[1]।

इतिहास के अध्ययन से ज्ञात होता है कि इस वंश के लोगों ने मध्यकालीन इतिहास में राजनीतिक तथा सामाजिक दोनों ही क्षेत्रों में विशिष्ट योगदान दिया ।

"सय्यद" शब्द का प्रयोग पैगम्बर मोहम्मद की पुत्री फातिमा तथा अली से उत्पन्न सन्तानों के लिए किया गया[2]। बारहा के सय्यद

1- डा॰ सतीश चन्द्र कृत उत्तर मुगल कालीन भारत पृ॰ 86
पार्टीज एण्ड पोलिटिक्स एट द मुगल कोर्ट पृ॰ 92

2- सय्यद शब्द का प्रयोग कुरान में दो ही स्थानों पर किया गया है । सूरा तीन के चौतीसवें पारे में जहाँ "जॉन बेपटिस्ट" का उल्लेख हुआ है और सूरा बारहा के पच्चीसवें पारे में जहाँ जैलिबा (Zalibhah) के पति के लिए इसका प्रयोग हुआ है । मजमाउल बिहार पृ॰ 151 में इसका अर्थ दयालु उदार पृति बताया गया है । सय्यदों की दो शाखाओं का उल्लेख मिलता है । पहले हसन के अनुयायी दूसरे हुसैन के अनुयायी ।

हसन तथा हुसैन दोनों ही अली के पुत्र थे । मोहम्मद के इन उत्तराधिकारियों का नाम प्रत्येक काल में दैनिक प्रार्थना (नमाज़) में आदर पूर्वक लिया जाता रहा है । ऐसा ज्ञात होता है कि सय्यद शब्द का प्रयोग उन लोगों के लिए भी होता रहा जो मोहम्मद पैगम्बर के वंशज नहीं थे, जैसे :- सय्यद शाह, सय्यद अमीर आदि । विस्तृत विवरण के लिये देखिये -
जे॰पी॰ हेज द्वारा रचित डिक्शनरी आफ इस्लाम ओरिएण्टल पब्लिशर्स

अपना पूर्व पुरुष अब्दुला बारहा को मानते थे । अबुल फराह का परिवार मेसोपोटोमिया के वसेत[1] क्षेत्र के प्रसिद्ध परिवारों में से था[2]। अबुल फराह

1- वसेत - यह बगदाद के निकट एक स्थान है । देखिये -

हिस्टोरिकल अकाउन्ट आफ मुजफ्फरनगर पृ॰ 15।
आइने अकबरी भाग-1,पृ॰ 390
डा॰सतीश चन्द्र कृत पार्टीज एण्ड पौलिटिक्स पृ॰ 86
मुजफ्फरनगर गजेटियर पृ॰ 160
इरविन लेटर मुगल्स, पृ॰ 20।
लीड्स मुजफ्फरनगर पृ॰ 5।

डा॰ सतीश चन्द्र ने अपनी कृति उत्तर मुगल कालीन भारत में अबुल फराह को मेसोपोटोमिया के प्राचीन वंश से संबंधित बताया है । ऐसा ज्ञात होता है कि वसेत वंश के निवासियों के बगदाद के समीपवर्ती उक्त क्षेत्र में निवास करने के कारण वह क्षेत्र भी "वसेत" के नाम से प्रसिद्ध हुआ ।

मुजफ्फरनगर गजेटियर पृ॰ 159

2- देखिये - सरदेसाई कृत हिन्दुस्तानचा अर्वाचीन इतिहास पृ॰ 125 याचें मूल ठिकाव मेसोपोटेमियाँत वास्तित हे होय ।

के भारत आने का उल्लेख सर्वप्रथम महमूद गजनी[1] के काल में मिलता है ।

सुबुक्तगीन की मृत्यु के पश्चात् जब महमूद गजनी शासक बना; तो उसने गजनी पर अपनी स्थिति सुदृढ़ कर लेने के पश्चात भारत विजय की योजना बनाई । ऐसा ज्ञात होता है कि अपने इस अभियान में उसने वसेत से सैय्यद अब्दुलाअलहसनमारूफ व अबुलफराह वसेत को भारतीय अभियान

1- मुसलमानों ने भारत में सर्वप्रथम सिन्ध पर अधिकार स्थापित किया । 1221 में मुहम्मद बिन कासिम ने सिन्ध में शासन कर रहे ब्राह्मण वंश को पराजित कर मुस्लिम राजनीतिक आकांक्षा की पूर्ति की । तत्पश्चात् दसवीं शताब्दी में तुर्की सत्ता ने भारत पर अधिकार स्थापित किया । गजनी एक प्रकार से मध्य एशिया के में प्रारम्भ में नये साम्राज्यवादी आन्दोलन का प्रमुख केन्द्र बना । सुबुक्तगीन जो अल्पतगीन का एक तुर्की दास था, शीघ्र ही शक्तिशाली बन गया तथा गजनी पर राज्यारोहण के पश्चात् उसने बस्त दावर कुदसर अभियान तथा तुर्किस्तान एवं गोर को भी अपने राज्य में मिला लिया । उसके पश्चात् उसने भारत की उत्तर पश्चिमी सीमा पर स्थित शाहिया शासक जयपाल के विरूद्ध अभियान का नेतृत्व किया । सुबुक्तगीन ने उत्तर पश्चिम सीमावर्ती प्रान्तों में पहाड़ी पर स्थित दुर्गों पर अधिकार कर प्रचुर धन प्राप्त किया । शाही शासक जयपाल इस प्रकार की घटनाओं की अनदेखी नहीं कर सकता था । क्योंकि सुबुक्तगीन का बढ़ता हुआ प्रभाव उसके राज्य के लिए घातक सिद्ध हो सकता था । उसने एक विशाल सेना के साथ सुबुक्तगीन के विरूद्ध आक्रमण किया । जयपाल तथा गजनी के बीच दीर्घकाल तक युद्ध होता रहा । विस्तृत विवरण के लिये देखिये -
लाइफ एण्ड टाइम्स आफ महमूद गजनी तथा -
हावर्थ द्वारा रचित हिस्ट्री ऑफ द मंगोल्स भाग-8, पृ० 148

तारीखे यामिनी पृ० 29 में यद्यपि अफगानों के सुबुक्तगीन की सेना में भारत आने का उल्लेख है, परन्तु अबुल फराह के उक्त सेना के साथ आने का विवरण नहीं मिलता ।

में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया[1]। इस अभियान में विजय प्राप्त होने के पश्चात् महमूद ने पुरस्कार स्वरूप अबुल फराह वैसत को सरहिन्द तथा कालानूर का क्षेत्र प्रदान किया[2]। उसके पश्चात् अबुल फराह वैसत ने अपनी जागीर पर अपने चार पुत्रों को छोड़ा और वह स्वयं वैसत वापस चले गए[3]। 1055 में उनका देहान्त हो गया तथा वह वहीं दफन

1- महमूद गजनी ने भारत पर 17 आक्रमण किए । इसका उल्लेख नहीं मिलता कि महमूद ने अब्दुल्ला को किस अभियान में आमंत्रित किया था । परन्तु यह पता चलता है कि जिस अभियान में अबुल फराह वैसत ने भाग लिया उसमें महमूद गजनी विजयी हुआ । यह भी पता चलता है कि इस युद्ध में अब्दुला ने वीरता का परिचय दिया ।

2- देखिये - सैय्यद सुलेमान अली खाँ कृत सादाते बारहा का तारीखी जायजा पृ० 20
सरदेसाई कृत हिन्दुस्थानचा अर्वाचीन इतिहास पृ० 125

तेथून एक पुरुष हिन्दुस्थानात येऊन सरहिंदच्या नजीक राहिला पुढे त्याची चार कुटुंबे झाली पैकी एक कुटुंब गंगायमुने चे दुआबात मीरत व सहारणपुर मांचे दरम्यान वस्ती करून राहिले कोणी, म्हणतात बारा नावाचे गावावरून या कुटुंबास बारा सैय्यद म्हणू लागले कोणी सांगतात त्याचे आर भी बारा गाँव होते त्यावरून त्याचे टोपणनांव बारा असे पडले ।

3- सेटिलमेन्ट रिपोर्ट पृ० 5।

कर दिया गया[1]।

मुहम्मद गोरी के भारत वर्ष पर आगमन के पश्चात् जब भारत में गोर वंश का शासन स्थापित हुआ[2] तो सुल्तान शिहाबुद्दीन गोरी ने लाहौर पहुँच कर सादाते बारहा को अपनी सेवा में बुलाया उनमें से सैय्यद अबुल हसन, सैय्यद यहया, सैय्यद जमालुद्दीन, मुहम्मद गोरी की सेना में सम्मिलित हो गये व शाही सेवा में रहे[3]।

मुहम्मद गोरी की मृत्यु के पश्चात् 1206 में कुतुबुद्दीन ऐबक शासक बना। सैय्यदों की सेवाओं को ध्यान में रखते हुए उसने उन्हें गंगा व यमुना के मध्य का "दोआब" का क्षेत्र प्रदान किया[4] और यद्यपि ये लोग सुल्तानों की सेवा में कार्यरत रहे, तथापि इनके किसी विशिष्ट

1- मुजफ्फरनगार गजेटियर में दिये विवरण से ज्ञात होता है कि अबुल फराह इल्तुतमिश के पुत्र नासिरूद्दीन के काल में भारत आया था तथा सिकन्दर लोदी के काल तक रहा। यह विवरण तिथि क्रम में ठीक नहीं लगता तथा ऐसा ज्ञात होता है कि अबुल फराह के वे पुत्र संभवतः इस काल में आये होंगे जो अपने पिता के साथ वसैत वापस चले गए थे। इसकी पुष्टि सम्भलहेरा में सालार औलिया इब्न सालार चतरौरी के मकबरे से भी होती है, जिसमें तिथि 777 हिजरी सन् 1375 दी हुई है, ये अबुल फराह की आठवीं पीढ़ी में माने जाते हैं। देखिये - प्रोसीडिंग्ज ऑफ एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल 1872 पृ. 166

2- तबकाते नासरी पृ. 120

3- सादाते बारहा पृ. 24

4- वही पृ. 25

पदों पर नियुक्त होने का विवरण नहीं मिलता[1]। अबुल फराह के अन्य पुत्र जो पिता के साथ ही बगदाद वापस चले गए थे, बगदाद में ही रहे। परन्तु 1258 के लगभग बगदाद में स्थिति शोचनीय होने के कारण उन्हें अपना देश छोड़कर भारत आना पड़ा। 1258 के लगभग मंगोल नेता हलाकू खान ने बगदाद के सुल्तान मुस्तासिमबिल्ला को मार कर सिंहासन पर अधिकार कर लिया, साथ ही फारस और अरब पर भी अपना अधिकार जमा लिया। सत्ता प्रयास के लिए उसने जो प्रयास किये, उससे बगदाद व निकटवर्ती राज्यों में अशान्ति व्याप्त हो गयी[2]।

अराजकता की स्थिति में अबुल फराह के वंशज बगदाद छोड़कर भारत आ गए। उस समय भारत में इल्तुतमिश का पुत्र नासिरुद्दीन महमूद शासन कर रहा था[3]। यह विचारणीय तथ्य है कि अबुल फराह के वंशज भारत ही में क्यों आए? यह पता चलता है कि उन लोगों की

1- सादाते बारहा के अनुसार इल्तुतमिश के काल में भी अपनी सेवाओं के उपलक्ष्य में सैय्यदों को पुरस्कृत किया जाता रहा। सैय्यद मुहम्मद सुगरा को जो इस वंश के थे, परगना बिलग्राम मिला जो अब जिला हरदोई में है। यहाँ अभी भी बारहा वंश के सैय्यद निवास करते हैं।

2- सेटिलमेन्ट रिपोर्ट लीड्स मुजफ्फरनगर पृ॰ 5।
हिस्टोरिकल अकाउन्ट आफ मुजफ्फरनगर पृ॰ 15।
मुजफ्फरनगर गजेटियर पृ॰ 160
सादाते बारहा पृ॰ 26

3- सुल्तान नासिरुद्दीन महमूद का राज्यारोहण संस्कार 27 मई, 1246 को सम्पन्न हुआ था।
मुजफ्फरनगर गजेटियर पृ॰ 160

स्थिति अपने देश में हलाकू के आतंक के कारण सुरक्षित न थी । इसके अतिरिक्त पंजाब में उनके सम्बन्धियों के अपने प्रभाव क्षेत्र थे, जहाँ पर वे अपने को सुरक्षित अनुभव कर सकते थे । यह भी पता चलता है कि जब 1206 में कुतुबुद्दीन शासक बना तो बारहा के वे सैय्यद जो भारत में रह गए थे, उन्होंने कुतुबुद्दीन के साथ सहयोग ही नहीं किया, अपितु युद्ध क्षेत्र में वीरता का भी प्रदर्शन किया । इसके फलस्वरूप उन्हें पुरस्कार स्वरूप दोआब का क्षेत्र प्रदान किया गया । अबुल फराह के परिवार के वे सदस्य जो पहले भारत आ गए थे, यहीं बस गए । सम्भवतः इसका कारण यह था कि अभी भी बगदाद में उनकी स्थिति बहुत सुरक्षित नहीं थी, किन्तु भारत में स्थिति उनके अनुकूल थी[1]।

सम्भव है कि सैय्यद शासकों के काल में (1414-1451) इस वंश के व्यक्तियों को भी उच्च पुरस्कार, पद तथा प्रतिष्ठा प्राप्त हुई होगी, क्योंकि सुल्तान खिज्र खाँ (1414-1421) के काल में सैय्यदों के प्रमुख[2] सैय्यद सलीम को सहारनपुर का शिक[3] प्रदान किया गया ।

1- ऐतिहासिक कृतियों में इस वंश के व्यक्तियों के विशिष्ट पदों पर आसीन होने का उल्लेख नहीं मिलता । सम्भवतः इसका कारण सैय्यद काल के इतिहास के लिए समसामयिक कृतियों का अभाव है ।

2- सैय्यदों के स्थानीय इतिहास का विवरण प्राप्त करने के लिए देखिये - लीड्स, ब्लाकमेन तथा केडले द्वारा प्रस्तुत विवरण बोर्ड ऑफ रेवेन्यू के रिकार्ड तथा स्थानीय सूचनायें ।

3- "शिक" के लिये देखिये - इक्तदार हुसैन सिद्दीकी द्वारा रचित लेख - इवोल्यूशन ऑफ विलायत शिक एण्ड सरकार पृ.25 इसमें सरहिन्द को शिक के स्थान पर खित्ता-ए-सरहिन्द लिखा गया है । तारीख ए मुबारकशाही में इक्ता-ए-सरहिन्द लिखा है । देखिये - तारीखे मुबारकशाही पृ. 25

दिल्ली में सैय्यद वंश के राज्य तथा सहारनपुर में सैय्यद वंशीय शिकदार की नियुक्ति का लाभ बारहा के सैय्यदों को अवश्य ही पहुँचा होगा। सम्भवतः यही कारण था कि अबुल फराह के वे वंशज जो बाद में हलाकू के अभियान से बगदाद में उत्पन्न अशांति व अव्यवस्था के फलस्वरूप भारत आये वे बगदाद वापस न जाकर यहीं बस गए। अबुल फराह के वे चार पुत्र जो पहले भारत आ गए थे, उनसे चार शाखायें विकसित हुई[1]।

प्रथम शाखा सैय्यद दाऊद से प्रारम्भ हुई जो तिहानपुर में आकर बसे। ये इतिहास में 'तिहानपुरी सैय्यदों' के नाम से जाने जाते हैं[2]।

1- आइने अकबरी भाग-1, पृ॰ 390
मुजफ्फरनगर गजेटियर पृ॰ 160
सैटिलमेन्ट रिपोर्ट पृ॰ 5।
हिस्टोरिकल अकाउन्ट प्र॰ ABA आफ मुजफ्फरनगर पृ॰ 15।

सैय्यद मूलतः सैनिक थे तथा उच्च राज्य पद के महत्वकांक्षी थे और दिल्ली उन दिनों राजनीतिक गतिविधियों का केन्द्र था। संभवतः इसी कारण उन्होंने दिल्ली के निकटवर्ती क्षेत्र में बसना प्रारम्भ किया।

2- आइने अकबरी भाग-1 पृ॰ 390
मुजफ्फरनगर गजेटियर पृ॰ 160
हिस्टोरिकल अकाउन्ट आफ मुजफ्फरनगर पृ॰ 15।
सैटिलमेन्ट रिपोर्ट पृ॰ 26

सादाते बारहा के अनुसार सैय्यद दाऊद की आठवीं पीढ़ी में उनके वंशज जलाल खाँ तिहानपुर से आकर मौजा दानश्री में बस गये। दानश्री जानसठ से (शुमाल) उत्तर की तरफ तीन मील की दूरी पर स्थित है। मौजा मसेड़ा जानसठ से पश्चिम की ओर प्रायः 4 मील की दूरी पर स्थित है।

दूसरी शाखा के प्रवर्तक सैय्यद अबुल फजल थे, जो चितबनौर में बसे और यद्यपि इनके वंशज 'चितरौरी सैय्यद' कहलाए । परन्तु वह चितबनौर छोड़कर सम्भलहेरा में आकर बस गए[1]।

तीसरे सैय्यद अबुल फिरास कुन्डली नामक स्थान में रहने लगे । इस शाखा के लोग 'कुन्डली वाल' के नाम से प्रसिद्ध हुए । बाद

1- आइने अकबरी भाग-1, पृ॰ 390
   इरविन लेटर मुगल्स मुजफ्फरनगर गजेटियर पृ॰ 160
   सैटिलमेन्ट रिपोर्ट पृ॰ 26
   हिस्टौरिकल अकाउन्ट ऑफ मुजफ्फरनगर पृ॰ 15।

सैय्यद हसन फखरूद्दीन जो अबुल फजल की सन्तानों में से थे मौजा सम्भलहेरा में प्रायः आखेट के उद्देश्य से जाया करते थे । ऐसा ज्ञात होता है कि वहाँ के राजा की मृत्यु के पश्चात् उनकी विधवा रानी द्वारा यह क्षेत्र सैय्यद हसन को प्रदान कर दिया गया और सैय्यद फखरूद्दीन ने अपने परिवार को मौजा चितबनौर से सम्भलहेरा बुला लिया। इस प्रकार यद्यपि चितबनौर से आने के कारण यह चितबनौरी कहलाए तथापि इनका निवास स्थान सम्भलहेरा ही रहा ।

में ये भी मौज़ा मझेड़ा में बस गये परन्तु कुन्डलीवाल सैय्यद कहलाते रहे[1]।

इसी प्रकार अबुल फराह के चौथे पुत्र सैय्यद निजामुद्दीन हुसैन जगनेर में आकर बसे और उनके वंशज इतिहास में 'जगनेरी सैय्यदों' के नाम से प्रसिद्ध हुए । अपने अन्य भाइयों की ही भाँति ही इन्होंने भी जगनेर छोड़कर मौज़ा पलड़ी[2] को अपना निवास स्थल बनाया[3]।

भारत में बसे अबुल फराह के वंशजों की शाखाओं के सैय्यद "बारहा" के सैय्यद कहलाए । सैय्यदों के बारहा सैय्यद कहलाने के विषय में विभिन्न मत हैं :-

---

1- आइने अकबरी भाग-1, पृ॰ 452
हिस्टोरिकल अकाउन्ट ऑफ मुजफ्फरनगर पृ॰ 151
सैटिलमेन्ट रिपोर्ट पृ॰ 160
मुजफ्फरनगर गजेटियर पृ॰ 171

आइने अकबरी में ब्लाकमैन द्वारा दिये गये सैय्यदों के वंश वृक्ष में सैय्यद अबुल फ़ज़ल को चितबनौरी शाखा का प्रवर्तक व सैय्यद अबुलफ़ज़ाइल को कुन्डलीवाल शाखा का प्रवर्तक कहा गया है । डॉ॰ सैय्यद सफ़दर हुसैन ने अपनी कृति सैय्यदान बादशाहगीर में सैय्यद अबुल फिरास को कुन्डलीवाल शाखा का प्रवर्तक माना है । यही नाम सादाते बारहा में भी दिया गया है । अतः इस शोध ग्रन्थ में "अबुल फिरास" नाम कुन्डलीवाल शाखा के प्रवर्तक के लिये दिया गया है ।

2- मौज़ा पलड़ी जानसठ से चार मील दूर दक्षिण में (जुनूब) स्थित है ।

3- मुजफ्फरनगर गजेटियर पृ॰ 160
सैटिलमेन्ट रिपोर्ट पृ॰
हिस्टोरिकल अकाउन्ट ऑफ मुजफ्फरनगर पृ॰ 151

सैय्यदों के लिए लश्कर से "बाहिर" शब्द का प्रयोग किया गया है । दिल्ली के बाहर रहने के कारण यह सम्भवतः "बारहा" के नाम से जाने गए । वस्तुतः बारहा शब्द बाहिर का अपभ्रंश प्रतीत होता है[1]।

शिया मुस्लिम होने के कारण ये बारहा इमामों के अनुयायी थे । इसलिये इन्हें बारहा नाम से जाना गया । इस मत की पुष्टि भी मुगल कालीन ऐतिहासिक ग्रन्थों से होती है[2]।

यह भी परम्परा है कि बुलन्दशहर में पठानों की बस्ती के बारहा गाँव होने के कारण भी इन्हें "बारहा" नाम से जाना गया[3]।

1- आइने अकबरी भाग-1 अं० अनुवाद पृ० 384
सैटिलमेन्ट रिपोर्ट पृ० 51
हिस्टौरिकल अकाउन्ट आँफ मुजफ्फरनगर पूर्वार्द्ध पृ० 152
मुजफ्फरनगर गजेटियर पृ० 160, 161

2- आइने अकबरी पृ० 394
हिस्टौरिकल अकाउन्ट आँफ मुजफ्फरनगर पृ० 152
सैटिलमेन्ट रिपोर्ट पृ० 51
मुजफ्फरनगर गजेटियर पृ० 161

3- आइने अकबरी पृ० 394
हिस्टौरिकल अकाउन्ट आँफ मुजफ्फरनगर पृ० 152
सैटिलमेन्ट रिपोर्ट पृ० 51

अपने मूल निवास में यह लोग सैय्यदात अबरार कहे जाते थे । "अबरार" शब्द ही बाद में बिगड़ कर "बारहा" हो गया[1]।

मुगल काल में वरिष्ठ सैनिक पदों पर नियुक्त होने के कारण ये बारहा के सैय्यद कहलाए[2]। अकबर के शासन काल में मुगल सेना के अग्रिम दस्ते के नेतृत्व का अधिकार भी इन्हें मिल चुका था[3]।

भारत वर्ष में आकर बारह विभिन्न गाँवों में बसने के कारण इन्हें बारहा सैय्यद कहा गया[4]।

1- आइने अकबरी पृ॰ 394
सैटिलमेन्ट रिपोर्ट पृ॰ 52
मुजफ्फरनगर गजेटियर पृ॰ 161

2- उत्तर प्रदेश के विभिन्न भागों में बोल-चाल की भाषा में "बारहा" शब्द का प्रयोग ख्याति प्राप्त वीर पुरूषों के लिए किया जाता है, इसलिए यह भी संभव है कि इन सैय्यदों के बहादुर होने के तथा मुगल काल में वरिष्ठ सैनिक पदों में कार्यरत होने के कारण इन्हें बारहा कहा गया ।

3- विलियम इरविन कृत लेटर मुगल्स भाग-1,पृ॰ 202

4- लेखक के अनुसार - इलियट द्वारा उल्लिखित बारहा गाँव का जो सफदरजंग द्वारा लूटा गया था, अस्तित्व नहीं मिलता । परन्तु दिल्ली से फर्रुखाबाद सफदरजंग के प्रस्थान करने के मार्ग में "मराहरा" (Marahra) (अब एटा जिले में स्थित) स्थान में अवश्य सैय्यदों की बस्ती है । देखिये - इरविन पृ॰ 202 , ऐसा ज्ञात होता है कि इस क्षेत्र में ये लोग बाद में आकर बसे होंगे ।

मुजफ्फरनगर गजेटियर पृ॰ 161, यह मत तबकाते अकबरी और तुजुकेजहाँगीरी में भी पाया जाता है ।

सम्भवतः दिल्ली के बाहर मेरठ तथा सहारनपुर व उनके आस पास के क्षेत्र में बारह विभिन्न गाँवों में बसने के कारण इन्हें बारहा कहा गया[1]।

<u>तिहानपुरी सैय्यद</u> -

बारहा के सैय्यदों की तिहानपुरी शाखा के वंशज <u>सैय्यद दाऊद</u> की आठवीं पीढ़ी के <u>सैय्यद जलाल खानमीर</u> थे । जो तिहानपुर छोड़कर जाकली[3] परगना के दानश्री नामक गाँव में बस गए थे, <u>सैय्यद खानमीर</u> के चार पुत्र <u>सैय्यद उमर शहीद</u>, <u>सैय्यद चमन</u>, <u>सैय्यद हसन</u> और <u>सैय्यद अहमद</u> थे[4]

1- लेखिका ने इस संदर्भ में सहारनपुर व मुजफ्फरनगर की यात्रा की व वहाँ "बसे" सैय्यदों से साक्षात्कार किया तथा उनके पास उपलब्ध वंश वृक्षों व अन्य सामग्री आदि का अवलोकन करके यह निष्कर्ष निकाला कि अबुल फराह महमूद गजनी के काल में भारत वर्ष आया था तथा सरहिन्द व कालानूर के क्षेत्र में अपने चार पुत्रों को छोड़कर वापस वसैत चला गया था। उसके वंशज बाद में मेरठ दिल्ली के बाहर तथा सहारनपुर के मध्य विभिन्न गाँवों में बस गये जहाँ इस वंश के लोग आज भी पाए जाते हैं । देखिये - एपेन्डिक्स जिसमें तत्कालीन सैय्यद वंशीय व्यक्तियों का विवरण है । इनमें से अधिकांश स्थान 1595 में दिये मानचित्र में दिये गये हैं । देखिये - इरफान एटलस पृ॰ 8ए +29 +77

2- मुजफ्फरनगर गजेटियर पृ॰ 163

3- वही पृ॰ 259
सेटिलमेन्ट रिपोर्ट लीड्स पृ॰ 138 में यह परगना पहले "जाकली" नाम से प्रसिद्ध था, परन्तु बाद में यहाँ के महत्वपूर्ण व केन्द्रीय शहर जानसठ के ही आधार पर इसका नाम रख दिया गया ।

4- आइने अकबरी पृ॰ 394-95

सैय्यद खानमीर को इन्हीं चार पुत्रों के वंशज तिहानपुरी सैय्यदों के नाम से जाने गए[1]।

सैय्यद खानमीर के सबसे बड़े पुत्र सैय्यद उमर शहीद जानसठ नाम के कस्बे में बसे[2]। खानमीर के जानसठ आने के पूर्व वहाँ की भूमि ब्राह्मणों और जाटों के अधिकार में थी । ब्राह्मणों के बाद यह भूमि सैय्यदों ने प्राप्त कर ली और धीरे-धीरे यह बहुत बड़े भू-भाग के स्वामी बन गए[3]।

1- मुजफ्फरनगर गजेटियर पृ॰ 162-63

सैय्यद खानमीर

सैय्यद उमर	सैय्यद चमन	सैय्यद हसन	सैय्यद अहमद
लीड्स में मीर शहीद दिया गया है ।	लीड्स में जमन लिखा है ।	लीड्स में भी यही लिखा है ।	लीड्स में भी यही लिखा है ।

सेटिलमेन्ट रिपोर्ट पृ॰ 20-21 में भी यही नाम दिये गये हैं । अतः अधिक प्रचलित नामों को स्वीकार किया गया है ।

2- सेटिलमेन्ट रिपोर्ट पृ॰ 52
मुजफ्फरनगर गजेटियर पृ॰ 163
आइने अकबरी पृ॰ 394

3- सेटिलमेन्ट रिपोर्ट पृ॰ 52
आइने अकबरी पृ॰ 394

सैय्यद खानमीर के दूसरे पुत्र सैय्यद चमन[1] (जमा) "दानश्री" गाँव को छोड़कर जाक्ली जानसठ[2] परगने के चितोरा गाँव में बस गए[3]। सैय्यद चमन के वंशज सैय्यद जलाल शाहजहाँ के शासन काल में उच्च राज्य

1- मुजफ्फरनगर गजेटियर के अनुसार खानमीर के दूसरे पुत्र का नाम सैय्यद चमन था, जबकि सैटिलमेन्ट रिपोर्ट लीड्स में इनका नाम सैय्यद जमा बताया गया है । (पृ. 53 भाग-4)

2- मुजफ्फरनगर गजेटियर पृ. 163
सैटिलमेन्ट रिपोर्ट पृ. 53

जाक्ली जानसठ :-

मुजफ्फरनगर जनपद में स्थित यह परगना,जौली अकबरी परगने का प्रतिनिधित्व करता है । जिसमें 1816 ई. में 19 ग्राम थे । जानसठ का निर्माण फर्रुखसियर के शासन काल में हुआ था । सन् 1854 में जोली जनसठ के पुन: निर्माण से उसके 33 मौलिक जागीरों की संख्या निकटवर्ती हस्तीनापुर (मेरठ जनपद) के 29 ग्रामों के मिलने के कारण बढ़ गई । अधिकतर परगना बारहा सैय्यदों के तीन मुख्य परिवारों के अधिकार में था।

औरंगजेब तथा शाहजहाँ के शासन काल में तिहानपुरी परगनों ने अत्यन्त श्रेष्ठता प्राप्त की । अब्दुल्ला तथा हुसेन अली खान जो कि इतिहास में सम्राट निर्माता के नाम से सुप्रसिद्ध है, रफीउदरजात के शासन काल में सर्वोत्तम मर्यादा प्राप्त की ।
सैटिलमेन्ट रिपोर्ट पृ. 53
मुजफ्फरनगर गजेटियर पृ. 163

3- मुजफ्फरनगर गजेटियर पृ. 163
आइने अकबरी पृ. 394

पदों पर नियुक्त थे । मेरठ जिले में "सरधना"[1] नामक परगना के अन्तर्गत किरवा[2], जलालपुर[3] के आस पास लगभग चौबीस गाँव सैय्यद जलाल के अधीन थे[4]।

सैय्यद जलाल के पुत्र <u>मुहम्मद सुलह खान</u> अवध के नवाबों के यहाँ राजकीय पदों पर नियुक्त थे[5]। उनके द्वारा अपना अधिकांश समय अवध के नवाबों की सेवा में व्यतीत करने के कारण किरवा जलालपुर के चौबीस गाँव के आस-पास की भू-सम्पत्ति पर इनका अधिकार धीरे-धीरे समाप्त होता गया । वर्तमान समय में इस शाखा के लोगों की जमीन केवल "चितौरा"[6] गाँव में रह गई ।

सैय्यद खानमीर के तीसरे पुत्र <u>हसन मंसूर</u>[7] दानश्री[8] गाँव को

1- लीड्स मुजफ्फरनगर पृ॰ 53

2- लीड्स मुजफ्फरनगर पृ॰ 53

3- वही

4- सैटिलमेन्ट रिपोर्ट मुजफ्फरनगर पृ॰ 53

5- वही

6- वही

7- मुजफ्फरनगर गजेटियर पृ॰ 163
लीड्स मुजफ्फरनगर पृ॰ 53

मुजफ्फरनगर गजेटियर में सैय्यद खानमीर के तीसरे पुत्र का नाम सैय्यद हसन दिया गया है (पृ॰ 163) जबकि सैटिलमेन्ट रिपोर्ट में उनको सैय्यद मंसूर नाम दिया गया है (पृ॰53, भाग-6) तथा आइने अकबरी में इनका नाम सैय्यद हुना दिया गया है (देखिये-पृ॰394)

8- सैटिलमेन्ट रिपोर्ट मुजफ्फरनगर लीड्स पृ॰ 53

छोड़कर मुजफ्फरनगर जिले के बहेरी[1] नामक गाँव में जा बसे । उनके छः पुत्र सैय्यद कुतुब, सैय्यद सुल्तान, सैय्यद युसूफ, सैय्यद खान, सैय्यद मान तथा नासिरूद्दीन थे[2]। सैय्यद मंसूर के बड़े पुत्र[3] सैय्यद कुतुब के वंशज मुगलों की सेवा में रहे ।

सैय्यद खानमीर के चौथे पुत्र सैय्यद अहमद दानश्री को

1- मुजफ्फरनगर गजेटियर पृ॰ 163
लीड्स मुजफ्फरनगर पृ॰ 53

2- लीड्स मुजफ्फरनगर पृ॰ 54
आइने अकबरी पृ॰ 394-95

3- इस वंश के लोग आज भी बिलासपुर तथा मुजफ्फरनगर में निवास करते हैं तथा उनके आवास स्थलों के आस पास इमारतों के भग्नावशेष इस बात के सूचक हैं कि उन्हें शाही सेवा में धन व सम्मान दोनों की प्राप्ति हुई । ये कुतुब के वंशज 'रथेरी सैय्यद' कहलाए । सैय्यद सुल्तान के वंशज सिरधोली में निवास करने लगे ।

सैय्यद युसूफ की सन्तानों ने बिहारी गाँव को अपना निवास स्थल बनाया । सैय्यद जान तथा सैय्यद मान के कोई संतान नहीं थी ।

सैय्यद नासिरूद्दीन के वंशजों में सैय्यद खान शाहजहाँपुरी थे । आइने अकबरी पृ॰ 394

छोड़कर जाकली जानसठ[1] परगना के "काकल"[2] गाँव में बसे ।

1- लीड्स मुजफ्फरनगार पृ. 54
   आइने अकबरी पृ. 394-95

2- लीड्स मुजफ्फरनगार पृ. 54
   मुजफ्फरनगार गजेटियर पृ. 163

काकल :-

(परगना जाकली जानसठ तहसील जानसठ) मुजफ्फरनगार से जानसठ जाने वाले मार्ग पर परगना के मध्य में स्थित काकल एक बड़ा ग्राम है जो मुजफ्फरनगार से 11 मील तथा जानसठ से 3 मील दूर है । इस ग्राम के पूर्व में अनुशार तथा पश्चिम में काठा नदियाँ हैं । इस ग्राम में छः महल है जो सैय्यदों तथा महाजनों की पट्टीदारी तथा जमींदारी में थे । महाजन अत्यन्त समृद्धशाली हैं तथा गेहूँ और लेन-देन के व्यापार में संलग्न हैं । सप्ताह में दो बार मंगलवार तथा शनिवार शक्कर तथा गेहूँ का बड़ा बाजार लगता है तथा ये वस्तुएँ मुजफ्फरनगार भेजी जाती है । खादी कपड़े का भी उत्पादन यहाँ होता है । पूर्व जनगणनानुसार इस ग्राम की जनसंख्या 4268 व्यक्ति थे, जिसमें 1987 मुसलमान तथा 172 जैन और आर्य थे , यहाँ के निवासियों में सैय्यद तथा सानी मुख्य हैं । यहाँ एक राजकीय प्राइमरी स्कूल भी है । मुहर्रम के अवसर पर अधिक जनसंख्या में लोग यहाँ एकत्रित होते हैं तथा लगभग 1000 व्यक्ति निकटवर्ती ग्रामों में से एकत्रित होते हैं । चिहल्लुम जो सफर के 20वें दिन मनाया जाता है यहाँ का एक और आकर्षण है, जिनमें लगभग 2000 व्यक्ति सम्मिलित होते हैं ।

आलमगीर के शासन काल में सैय्यदों की इस शाखा के लोग उच्च राजकीय पदों पर नियुक्त थे[1]। सैय्यद तातर खान तथा दीवान यार मुहम्मद खान ने विशेष पद आलमगीर के शासन में प्राप्त किए[2]।

चितरौरी सैय्यद -

सैय्यद अबुल फराह के दूसरे पुत्र सैय्यद अबुल फजल चितबनौर गाँव में आकर रहने लगे, इस कारण इन्हें चितरौरी शाखा के संस्थापक के रूप में जाना जाता है[3]।

इस शाखा के सैय्यद हसन फखरूद्दीन अकबर बादशाह के शासन काल में सम्भलपुरा में सम्भलहेरा के राजा के यहाँ नियुक्त था[4]। सम्भलहेरा के राजा की मृत्यु के बाद उस ही पद पर बने रहे । राजा रामचन्द्र के निःसन्तान मरने के बाद उसकी रानी ने हसन फखरूद्दीन को अपना दत्तक पुत्र बनाया[5]। रानी के इस कार्य को शाही अदालत ने स्वीकृति प्रदान कर दी[6]।

1- सेटिलमेन्ट रिपोर्ट मुजफ्फरनगर लीड्स पृ. 54
   मुजफ्फरनगर गजेटियर पृ. 162

2- आइने अकबरी पृ. 395

3- मुजफ्फरनगर गजेटियर पृ. 160

4- मुजफ्फरनगर गजेटियर पृ. 168
   आइने अकबरी पृ. 395

5- वही

6- वही

रानी ने अपने जीवन काल में शासन कार्य स्वयं देखा, किन्तु उसकी मृत्यु के बाद सत्ता उसके उत्तराधिकारी के हाथ चली गई। फखरूद्दीन के वंशज आज भी सम्भलहेरा गाँव में पाए जाते हैं[1]।

हसन फखरूद्दीन के वंशज सैय्यद हदीसा के चार भाई सैय्यद अली, सैय्यद अहमद, सैय्यद ताजउद्दीन तथा सैय्यद सुलह थे। सैय्यद अली निःसन्तान मरे[2]। सैय्यद अहमद अलाउद्दीन गोरी तथा राजा रतन चन्द्र के मध्य हुए संघर्ष में मारे गए[3]।

1- सीड्स मुजफ्फरनगर पृ॰ 5
मुजफ्फरनगर गजेटियर पृ॰ 168

सम्भलहेरा :-

यह परगना भूमा सम्भलहेरा मुजफ्फरनगर जनपद में एक ग्राम है, जो खतौली स्टेशन से 18 मील दूर स्थित है। इस ग्राम की आबादी 1872 की जनगणना के अनुसार 2018 थी। इस ग्राम के घर एक मुसलमान स्वामी के सुन्दर ईंट के बने घर के चारों ओर स्थित है। इसके चारों ओर की भूमि रेतीली है तथा निकट में लघु रेतीले पहाड़ हैं। निकटवर्ती ग्राम मुहम्मदपुर में एक ईंटों का किला है, जिसकी कुछ अवहेलना सी प्रतीत होती है। यहाँ पर हरियाली नगण्य है तथा मार्च 1868 में कुँए का पानी धरती की सतह से 30 फीट नीचे था। सम्भलहेरा के सैय्यद बारहा सैय्यद के चितरौरी शाखा के थे।

2- मुजफ्फरनगर गजेटियर पृ॰ 169

3- सीड्स मुजफ्फरनगर पृ॰ 54
मुजफ्फरनगर गजेटियर पृ॰ 169

सैय्यद गद्दन के उत्तराधिकारी परगना खतौली* के "काइलदाई" गाँव में बसे[1]।

शाह अली खाँ ने उन्हें उच्च पद पर नियुक्त किया । इनके वंशज आज भी ककरौली गाँव में पाए जाते हैं । सैय्यद ताजउद्दीन के लड़के सैय्यद उमर करकौली में बसे[2]। सैय्यद सुलह सम्भलहेरा छोड़कर कैयतौर गाँव गए । इस गाँव की अधिकांश भू सम्पत्ति एक कायस्थ जमीदार परिवार की विधवा के पास थी । उसका इकलौता पुत्र एक नरभक्षी चीते द्वारा मार डाला गया था, इसलिए उसने घोषणा कर दी थी कि वह चीते को मार डालने वाले व्यक्ति को अपनी आधी सम्पत्ति दे देगी । सैय्यद सुलह ने नरभक्षी चीते को मार डाला और उस महिला ने अपने पूर्व घोषणा के अनुसार अपनी आधी सम्पत्ति उसे दे दी[3]।

सैय्यद सुलह को उसने अपना दत्तक पुत्र भी घोषित किया । जमीदार की विधवा पत्नी की मृत्यु से सैय्यद मुहम्मद खान के वंशज नवाब नसरत यार खान तथा स्कन्दौला आलमगीर के काल में आ गए तथा

1- लीड्स मुजफ्फरनगर पृ. 54

2- आइने अकबरी पृ. 394

* खतौली परगना -

इस परगने में 88 ग्राम है जिनका पुनर्विभाजन 1892 ई0 में 187 महलों में हुआ था । इनमें से 102 महल अकेले तथा संयुक्त जमीदारी में 49 महल पट्टीदारी में तथा 36 महल भाई चारा अवधि में थे । एक समय में लगभग सभी परगने सैय्यदों से सम्बद्ध थे, जो अबुल मुजफ्फरनगर शाहजहाँ के मंत्री के वंशज थे ।

गुजरात और पटना के उच्च राजकीय पदों पर नियुक्त हुए । पारिश्रमिक के रूप में उन्हें पाँच हजार रुपये मासिक तथा अहमदाबाद जिले के परगना नरगल में राजस्व से मुक्त छब्बीस गाँव मिले । 1850 तक इन गाँवों पर मुहम्मद खान के वंशजों का अधिकार बना रहा[1]।

कुन्डलीवाल सैय्यद -

सैय्यद अबुल फराह के तीसरे पुत्र सैय्यद अबुल फाजिल परनाला के कुन्डली गाँव को छोड़कर मझेरा गाँव[2] में जाकर बस गए[3] और 'कुन्डलीवाल' नाम से प्रसिद्ध हुए[4]। इस शाखा के वंशज अली मुहम्मद मुगल काल के उच्च सरकारी पद पर कार्यरत थे ।

1- सैटिलमेन्ट रिपोर्ट पृ॰ 55

2- मझेरा -

मझेरा तथा सम्भलहेरा ग्राम कुछ समय पहले बारहा सैय्यदों की दो शाखाओं, कुन्डलीवाल तथा चितरौरी, द्वारा स्थापित किये गए थे । कुन्डलीवाल ने कोई श्रेष्ठता एवं प्रसिद्धि प्राप्त न की, परन्तु चितरौरी ने सम्पूर्ण निकटवर्ती परगना बुढ़ाना (कुछ कुन्डलीवाल की जागीरी को छोड़कर) को अपने प्रताप से अपने अधिकार में कर लिया ।
मुजफ्फरनगर गजेटियर पृ॰ 170

3- मुजफ्फरनगर गजेटियर पृ॰ 170

4- मुजफ्फरनगर गजेटियर पृ॰ 160

मझेरा के सैय्यदों की शाखा के लोग बारहा की अन्य शाखाओं की तरह सम्पन्न न थे और इन्हें शारीरिक परिश्रम तथा कृषि के द्वारा जीविकोपार्जन करना पड़ता था ।

जानेरी सैय्यद -

अबुल फराह के चौथे पुत्र सैय्यद नजिमुद्दीन हुसैन जानेरी में जा बसे तथा इस परिवार की शाखा को 'जानेरी सैय्यदों' के नाम से जाना गया[1]। सैय्यद नजिमुद्दीन हुसैन के पुत्र सैय्यद कमरुद्दीन जानेर छोड़कर बिदोली[2] जा बसे। कुछ पीढ़ियों के बाद इस शाखा के वंशज

1- मुजफ्फरनगर गजेटियर पृ· 160

2- इरफान व हबीब कृत एन एटलस ऑफ द मुगल एम्पायर पृ·4ए 29+77
मुजफ्फरनगर गजेटियर पृ· 170

बिदोली - परगना की राजधानी में कुछ महत्वहीन ग्राम है, जो मुजफ्फरनगर से 36 मील दूर स्थित है । यह ग्राम मुजफ्फरनगर से शामली होते हुए मार्ग से संबंधित है । यह मार्ग जमुना नदी के तट तक जाता है तथा यह मार्ग नावों के पुल से होता हुआ करनाल तक जाता है । इसकी ही एक मार्ग शाखा करली से बिदोली जाती है । बिदोली ग्राम की आबादी मुख्य मार्ग से लगभग 1 मील दक्षिण में स्थित है । एक अन्य मार्ग बिदोली परगने के उत्तर से चौसाना जाती है । ग्राम की वास्तविक भूमि कुछ ऊँची है । परन्तु निकटवर्ती मार्ग की भूमि कुछ निचाई पर है । इस ग्राम के दक्षिण में एक धसकन है, जिसमें कच्छ भूमि तथा झीलों की एक ग्रन्थमाला है । विगत वर्षों में इस क्षेत्र की भूमि तथा घरों को बाढ़ के कारण अत्यन्त क्षति पहुँची है । सन् 1872 बिदोली की जनसंख्या 3662 से घटकर अंतिम जनगणना के अनुसार 2538 हो गई, जिसमें 1404 मुसलमान तथा 58 जैन है । यह परगना पहले 1856 के एक्ट द्वारा प्रशासित होता था । बिदोली में एक पुलिस स्टेशन, एक पोस्ट ऑफिस, तथा एक सरकारी प्राइमरी स्कूल है । इस ग्राम के उत्तर में मेरठ, करनाल मार्ग पर स्थित एक पड़ाव है । बिदोली बारहा सैय्यदों के जानेरी परिवार का केन्द्र स्थल है ।

सैय्यद फजलुद्दीन व उनके पुत्र बिदौली छोड़कर जाकली जनसठ परगना के "पैलरी" नामक गाँव में रहने लगे[1]। पैलरी चन्दौरी, तुलसीपुर तथा खेरी नामक आदि गाँव में अपनी भू-सम्पत्ति का विस्तार कर लिया ।

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त तक ये स्थान इनके अधिकार में रहे । इस शाखा के लोग मुजफ्फरनगर, पानीपत दिल्ली और उसके आस-पास के क्षेत्र में बसे[2]।

पैलरी के सैय्यद आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न थे । भारत में बारहा सैय्यदों की चार शाखाओं में तिहानपुरी शाखा के लोगों को सम्मान और समृद्धि की दृष्टि से अधिक ख्याति मिली ।

यद्यपि अकबर के शासन के पूर्व सैय्यदों की किसी भी शाखा के महत्वपूर्ण राजकीय पद पर रहने का उल्लेख नहीं मिलता, सम्भवतः अभी तक मुगल शासकों को उन पर पूर्ण विश्वास प्राप्त न रहा हो, तथापि शेरशाह के विरुद्ध इन सैय्यदों की एक शाखा ने हुमायूं से सहयोग

1- हिस्टोरिकल अकाउन्ट आफ मुजफ्फरनगर पृ॰ 7
सेटिलमेन्ट रिपोर्ट पृ॰ 55
मुजफ्फरनगर गजेटियर पृ॰ 170

2- सेटिलमेन्ट रिपोर्ट पृ॰ 55
हिस्टोरिकल अकाउन्ट आफ मुजफ्फरनगर पृ॰ 7

किया । तिहानपुरी शाखा ऐसी थी जिसके वंशज अकबर के शासन काल से ही उत्तरोत्तर प्रगति करते गए और उनकी चरम सीमा औरंगजेब के बाद के मुगल सम्राटों के समय देखने को मिली जब उन्हें सम्राट निर्माता के नाम से जाना गया । बाद में कुन्डलीवाल, जगनेरी, चितरौरी शाखा के वंशजों ने भी अवध और करनाल के नवाब तथा अन्य क्षेत्रीय राजाओं के यहाँ उच्च पदों पर कार्य किया ।

सादाते बारहा जो से0 कुलमान द्वारा लिखित उसमें सैय्यदों को मुख्य पद हुमायूँ के समय से ही मिले लिखा गया है । जबकि इरविन व डा· सतीशचन्द्र के अनुसार अकबर के समय से इन्हें मुख्य पद प्राप्त हुए ।

इरविन लेटर मुगल पृ· 202
पार्टीज एण्ड पोलिटिक्स पृ· 87

अध्याय - 2

-: अकबर :-

अकबर के राज्य काल में सैय्यदों का वर्णन

अकबर के राज्य काल में बारहा के सैय्यदों का उल्लेख सर्वप्रथम नवम्बर, 1556 में मिलता है ।

चौदह फरवरी, 1556 को अकबर का राज्यारोहण संस्कार सम्पन्न हुआ[1]। भारत वर्ष में उस समय मुगल साम्राज्य की सीमायें दिल्ली, आगरा, पंजाब के कुछ भाग तक ही सीमित थी । इस सीमित क्षेत्र में भी मुगलों का आधिपत्य सुदृढ़ था[2]।

1- अकबरनामा भाग-2 पृ. 5 अंग्रेजी अनुवाद 1979 संस्करण
तबकाते अकबरी भाग-2 पृ. 126
मुन्तखबुत्तवारीख भाग-2 पृ. 4

1556 में मुगल सम्राट हमायूं की दिल्ली में मृत्यु हो गई । उस समय अकबर पंजाब में सिकन्दर सूर के विरुद्ध अभियान में संलग्न था, उसकी अवस्था तेरह वर्ष की थी । ऐसी स्थिति में बैरम खाँ ने उसे सन् 1556 को हमायूं का उत्तराधिकारी घोषित किया तथा उसका राज्यारोहण किया ।

2- अबुल फज़ल के कथनानुसार हुमायूं की मृत्यु की सूचना मिलते ही अफगानों ने अविलम्ब मुगलों के विरुद्ध आक्रमण का निश्चय कर लिया था । देखिये - अकबरनामा भाग-2 पृ.5, 1979 संस्करण

अकबर के राज्यारोहण के सात महीने के अन्तर्गत ही मुगल प्रान्तपति बयाना, इटावा, सम्भल, कालपी, नागौर तथा आगरा से भगा दिए गए थे[1]। यहाँ तक दिल्ली भी प्राय: मुगल साम्राज्य के हाथ से निकलने को था ।

भारत वर्ष के बाहर मुगल साम्राज्य की सीमायें काबुल तथा गजनी तक थी जो अकबर के सौतेले भाई मुहम्मद हकीम मिर्जा के नियन्त्रण में थी और इन क्षेत्रों की देख भाल के लिए मुनीम खाँ नियुक्त था[2], जो बैरम खाँ के प्रति सद्भाव नहीं रखता था ।

अकबर के काल में बारहा के सैय्यदों का प्रथम उल्लेख

अकबर के प्रमुख प्रतिद्वंदियों में सर्वप्रथम सिकन्दर सूर था, जो सूर वंशी होने के नाते दिल्ली के साम्राज्य पर अपना अधिकार स्थापित करना चाहता था । अकबर के राज्यारोहण के पश्चात् उसने स्वयं को मानकोट के किले में बन्द कर लिया था[3]। मुगल सेना ने मानकोट पर घेरा डाल दिया[4]। लम्बे समय तक घेरे के चलते रहने के

1- उस समय बियाना में हैदर मुहम्मद खाँ ‖सम्भल में अली कुली खाँ शैबानी‖ इटावा में कियाँ खाँ गंग तथा सरकार कालपी में अब्दुला खाँ उजबेग व आगरा में इसकन्दर खाँ उजबेग कोल जलाली में कियाँ खाँ नियुक्त थे ।
मुन्तखबुत्तवारीख पृ. 6 अंग्रेजी, 1973 संस्करण

2- अकबरनामा भाग-2 पृ. 25 ‖1979 संस्करण‖

3- अकबरनामा भाग-2 पृ. 79
अकबर द ग्रेट मुगल स्मिथ पृ. 40

4- वही

कारण सिकन्दर सूर को बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा । सेना के लिए खाद्यान्न की समस्या उत्पन्न हो गयी । सिकन्दर के सहयोगी अमीरों ने धीरे-धीरे उसका साथ छोड़ना आरम्भ किया[1] और मुगल सेना से जा मिले । ऐसा प्रतीत होता है कि उन लोगों में से जो सिकन्दर सूर का साथ छोड़कर मुगलों से जा मिले थे, उनमें सैय्यद महमूद खाँ बारहा भी था[2]। संभवतः महमूद खाँ बारहा अपनी जाति के प्रथम पुरुष थे जो तैमूरी वंश के राज्य काल में सरदारी तक पहुँचे थे[3]। ये अपनी वीरता के लिए प्रसिद्ध थे । इन्होंने अकबर के समय अनेक अभियानों में भाग लिया और वीरता प्राप्त की । 980 हिजरी में इनकी मृत्यु हो गई[4]। यह दो हजारी मंसब तक पहुँचे थे[5]। सिकन्दर सूर के अतिरिक्त आदिल शाह और इब्राहीम सूर थे । यही नहीं अपितु छोटे-छोटे अफगान सरदार भी मुगल साम्राज्य के लिए कठिनाइयाँ उत्पन्न कर रहे थे । आदिल शाह का प्रधानमंत्री हेमू इन सबमें सबसे अधिक शक्तिशाली था और उसने दिल्ली पर अधिकार स्थापित कर लिया था । उसने विभिन्न अफगान सरदारों को भी

1- मुन्तखबुत्तवारीख भाग-2 पृ. 11

2- वही

3- मुगल दरबार पृ. 229 मासिर उल उमरा अनुवाद पृ. 36,37

4- वही

5- वही

विभिन्न प्रलोभन देकर अपनी तरफ मिला लिया था और विक्रमादित्य की पदवी धारण की[1]।

अकबर ने हेमू का सामना करने के लिए स्वयं अभियान में जाने का निश्चय किया । नवम्बर 1556 में हेमू का सामना करने के लिए जो अग्रिम सेना अली कुली खाँ शैबानी के नेतृत्व में भेजी गई थी, उसमें सैय्यद महमूद खाँ बारहा भी था[2], जो बैरम खाँ की सेना में नियुक्त था[3]।

अकबर के राज्य काल के द्वितीय वर्ष में सैय्यद महमूद खाँ को हाजी खाँ[4] का सामना करने के लिए भेजा गया ।

1- मुन्तखबुत्तवारीख भाग-2, अंग्रेजी अनुवाद पृ॰ 7

2- मासिरउल उमरा पृ॰ 36, अंग्रेजी अनुवाद भाग-2
अकबरनामा बेवरिज कृत अंग्रेजी अनुवाद भाग-2 पृ॰ 54

3- मासिरउल उमरा पृ॰ 36 अंग्रेजी अनुवाद भाग-2
अकबरनामा बेवरिज कृत अंग्रेजी अनुवाद भाग-2 पृ॰ 72

4- हाजी खाँ शेरशाह सूर का सेवक था तथा उसने अजमेर एवम् नागौर पर अधिकार स्थापित कर लिया था । यही नहीं अपितु वह विद्रोह की योजना बना रहा था ।
देखिये - मआसिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद भाग-2 पृ॰ 36

बैरम खाँ के पतन के पश्चात् महमूद खाँ बारहा बादशाह की सेवा में उपस्थित हुआ तथा उसे दिल्ली के निकटवर्ती क्षेत्रों में जागीर प्रदान की गई[1]।

अकबर के राज्य काल के तीसरे वर्ष में महमूद खाँ ने जेतारण[2] के किले पर अधिकार स्थापित कर लिया[3]।

बैरम खाँ के पतन के पश्चात् अकबर द्वारा शमशुद्दीन अतका खान प्रधान मंत्री पद पर नियुक्त किया गया तथा उसे साम्राज्य के राजनीति, आर्थिक, सेना संबंधी कार्यों की देखभाल सौंपी गई। मुनीम खाँ इससे बहुत असन्तुष्ट था और वो प्रधान मंत्री को समाप्त करने के लिए षड्यंत्र रच रहा था। माहम अनगा भी अतका खान से सन्तुष्ट नहीं थी[4]।

अकबर के राज्य काल के सातवें वर्ष शमशुद्दीन मुहम्मद अतका खान मारा गया[5], मुनीम खाँ जो गुप्त रूप से इस षडयंत्र में सम्मिलित

1- मआसिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद भाग-2 पृ. 36
जागीर के नाम का उल्लेख कृति में नहीं किया गया है।
हिस्टोरिकल अकाउन्ट आफ मुजफ्फरनगर में 1561 में उसे दिल्ली के समीप जागीर मिलना लिखा है।

2- जेतरण जोधपुर राज्य में स्थित है। ﴾देखिये- अकबरनामा ﴾ भाग-2, बेवरिज कृत अनुवाद पृ. 103﴿

3- मआसिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद पृ. 37 भाग-2

4- अकबरनामा भाग-2 पृ. 119, 131 ﴾अतका द्वारा अकबर को लिखित पत्र﴿

5- अधम खाँ द्वारा अतका खान की हत्या कर दी गई थी।
देखिये - मआसिर उल उमरा भाग-2, पृ. 285 तथा वही पृ. 159
विस्तृत विवरण के लिए देखिये-डा. आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव कृत अकबर महान भाग-1 तथा स्मिथ अकबर द ग्रेट मुगल

था उसे यह भय हुआ की सम्भवत: खानेआजम अतका खान की हत्या में उसे भी आजम खाँ का साथी माना जाएगा । अत: सशंकित होकर वह काबुल की ओर चला गया । अकबर ने अशरफ खाँ मीर मुँशी को उसे समझाने के लिए भेजा । बादशाह का विचार था कि वह भय के कारण भागा है, स्वामी द्रोह के कारण नहीं । जब मुनीम खाँ और उसके साथी "सरोर"[1] नामक स्थान पर पहुँचे जो मीर मुहम्मद मुंशी की जागीर में था तो कासिम अली सीस्तानी ने उसे बन्दी बना लिया । सैय्यद महमूद खाँ बारहा जिसकी जागीर समीपवर्ती क्षेत्र में थी, इस घटना की सूचना मिलने पर मुनीम खाँ को अपने मकान पर लाया और उसका यथोचित सत्कार कर उसे वापिस लेकर बादशाह के सम्मुख उपस्थित किया[2]।

1573 में अकबर ने मिर्जा बन्धुओं को समाप्त करने का निश्चय किया, जिन्होंने गुजरात के अधिकांश भाग पर अधिकार कर लिया था । बड़ौदा पर इब्राहीम हुसेन मिर्जा का अधिकार था, "सूरत" व उसके आस पास का क्षेत्र मुहम्मद हुसेन मिर्जा के अधिकार में था[3]।

1- सरोर - परगना बिरवार में स्थित था और यह मीर मुहम्मद मुंशी की जागीर में था । मीर मुंशी का सेवक कासिम अली सीस्तानी उस परगने का शिकदार था ।

2- अकबरनामा भाग-2 अनुवाद पृ० 278-279
मआसिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद भाग-2 पृ० 285

3- मुगल दरबार भाग-4 पृ० 229
अकबरनामा भाग-2 पृ० 15 अंग्रेजी अनुवाद
मासिर उल उमरा पृ० 36 अंग्रेजी अनुवाद भाग-2

चम्पानेर तथा उसके समीपवर्ती क्षेत्रों पर शाह मिर्जा का अधिकार था । मिर्जाओं के साथ अकबर का युद्ध सरनाल[1] में हुआ । अकबर के इस अभियान में सैय्यद महमूद खाँ बारहा ने भी प्रमुख भाग लिया[2]। भयभीत होकर इब्राहीम खाँ वहाँ से भाग निकला उसका पीछा करने के लिए अन्य सरदारों के साथ सैय्यद महमूद खाँ बारहा भी नियुक्त हुए[3]।

सरनाल के इस युद्ध में पराजित होने के पश्चात इब्राहीम हुसेन मिर्जा ने पटटन के समीप मुहम्मद हुसेन मिर्जा तथा शाह मिर्जा के साथ मिलकर विद्रोह की योजना बनाई, परन्तु शीघ्र ही अपने भाइयों के साथ मन-मुटाव हो जाने के कारण उसने यह निश्चय किया कि वह अकेले ही राजधानी पर आक्रमण करेगा । जब बादशाह को इस बात की सूचना मिली तो उसने सैय्यद महमूद खाँ बारहा को इब्राहीम हुसेन खाँ का पीछा करने को भेजा[4]।

1- सरनाल - गुजरात में महेन्द्री अथवा माही नदी के किनारे एक छोटा सा शहर है । [देखिए - मुनतुख उत्तवारीख भाग-2 पृ. 186]

2- अकबरनामा अनुवाद भाग-3 पृ. 19
मआसिर उल उमरा भाग-2 पृ. 37

3- मआसिर उल उमरा अनुवाद भाग-2 पृ. 37

4- अकबरनामा अंग्रेजी अनुवाद भाग-3 पृ. 27

1573 में जब मधुकर बुंदेला[1] ने विद्रोह किया तो सैय्यद महमूद खाँ बारहा और बारहा के अन्य सैय्यदों को एक सेना के साथ ओरछा पर अभियान करने को भेजा गया । सैय्यदों ने बड़े साहस से कार्य करके उस राज्य में व्यवस्था स्थापित कर ली सैय्यद महमूद खाँ ने भी असाधारण वीरता से भाग लिया और विजय प्राप्त की[2]।

गुजरात के द्वितीय अभियान के समय जब शाही हरम को गुजरात से भेजा गया तो उसमें राजा भगवान दास, शुजतखाँ तथा राजा रामसिंह के साथ सैय्यद महमूद खाँ था[3]।

इसी के पश्चात् सैय्यद महमूद खाँ बारहा की मृत्यु हो गई[4]।

1- मधुकर बुंदेला, बुन्देलखण्ड में ओरछा राज्य का राजा था । यह गहडवाड़ जाति का था । इसका पिता रूद्र रूद्र प्रताप था और उसने ओरछा नगर की नींव डाली थी । इसने अपने उपाय, नीति, साहस, वीरता से ख्याति प्राप्त कर ली थी । यही नहीं, अपितु उसने सिरोंज और ग्वालियर के बीच के स्थान पर अधिकार कर लिया । ऐश्वर्य, सेना और राज्य के बढ़ने से इसका अहंकार बढ़ गया था और उसने अकबर के विरुद्ध विद्रोह कर दिया । मधुकर बुंदेला की जीवनी के लिए देखिये- मआसिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद भाग-2 पृ० 105

2- मआसिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद भाग-2 पृ० 37
अकबरनामा अंग्रेजी अनुवाद भाग-3 पृ० 102
मुगल दरबार पृ० 231 भाग-4

3- अकबरनामा भाग-1 अध्याय 10, पृ० 61 अंग्रेजी अनुवाद

4- मुगल दरबार भाग-3 पृ० 229
अकबरनामा भाग-2 पृ० 108

सैय्यद अहमद खाँ बारहा जो सैय्यद महमूद खाँ बारहा के छोटे भाई थे, उसने भी अकबर के राज्य काल में विभिन्न अभियानों में भाग लिया[1]।

अकबर के राज्य काल के सत्रहवें वर्ष में यह सैय्यद महमूद खाँ बारहा के साथ खाने कला के अधीन नियुक्त हुआ, जो गुजरात अभियान में भाग लेने के लिए भेजा गया[2]। यह शेर खाँ फौलादी के पुत्रों का पीछा करने के लिए भेजा गया ऐसा ज्ञात होता है कि जब इब्राहीम हुसैन मिर्जा बादशाह की सेना द्वारा गुजरात से भगा दिया गया तो वह राजधानी की ओर बढ़ा और मुहम्मद हुसैन मिर्जा और शाह मिर्जा तथा फौलादियों ने जो अव्यवस्थित स्थिति में थे, पारस्परिक समझौता किया और पट्टन पर आक्रमण कर दिया । सैय्यद अहमद खाँ बारहा ने दुर्ग रक्षा के लिये प्रयत्न किया[3]।

जब शाही शिविर पट्टन में था तब वहाँ का प्रबन्ध कार्य भी सैय्यद अहमद ने किया[4]। उसी वर्ष मुहम्मद हुसैन मिर्जा और शाह

1- अहमद खाँ की जीवनी के लिए देखिए - मआसिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद भाग-1 पृ॰ 163

2- अकबरनामा अंग्रेजी अनुवाद भाग-2 पृ॰ 372
मआसिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद भाग-1 पृ॰ 163

3- युद्ध के विस्तृत विवरण के लिए देखिये-अकबरनामा अं॰अनु॰ भाग-3 पृ॰33
मआसिर उल उमरा अनुवाद भाग-1 पृ॰ 163

4- मआसिर उल उमरा अनुवाद भाग-1 पृ॰ 164 अकबरनामा अनुवाद भाग-3 पृ॰ 9
मुन्तखबुत्तवारीख अंग्रेजी अनुवाद भाग-2 पृ॰ 144
इसमें पट्टन सैय्यद अहमद खाँ बारहा को जागीर के रूप में दिया जाना लिखा है ।

मिर्जा ने विद्रोह किया और शेर खाँ के साथ आकर पट्टन पर घेरा डाल दिया। इन्होंने जो योजना बनाई वह इस प्रकार थी[1]।

सैय्यद अहमद खाँ ने दुर्ग को सुदृढ़ बनाकर उसे भलीभाँति सुरक्षित रखा यहाँ तक की मिर्जाओं को घेरा उठा लेना पड़ा[2]। विद्रोही पराजित कर दिए गए । शेर खाँ फौलादी जूनागढ़ की और मिर्जा लोग दक्षिण की ओर चले गए[3]। यह पट्टन का किला सैय्यद अहमद खाँ बारहा को सौंप दिया गया[4]।

1- इब्राहीम हुसेन मिर्जा भारत वर्ष की तरफ विद्रोह करने के विचार से प्रेरित था और मुहम्मद हुसेन मिर्जा शेर खाँ फौलादी के साथ पट्टन का घेरा डालने वाला था, ताकि बादशाह उनकी गतिविधियों से चिन्तित होकर अहमदाबाद की ओर आ जाए । सैय्यद अहमद खाँ ने अपने आपको पट्टन के किले में बंद किया और इन विद्रोहियों का वीरता से सामना किया । यहाँ तक की विद्रोहियों का घेरा उठा देने को विवश होना पड़ा ।

2- मआसिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद भाग-1 पृ० 164

3- मिर्जा बन्धुओं के विस्तृत विवरण के लिए देखिये - अकबरनामा अंग्रेजी अनुवाद भाग-3 पृ० 36

4- मुन्तखुबुत्तवारीख अनुवाद भाग-2 पृ० 152

इससे प्रकट होता है कि अहमद ख़ाँ बारहा ने अपनी योग्यता बहादुरी कार्यशीलता एवं सच्चाई से मुगल सम्राट को प्रभावित कर दिया था और वह अकबर के विश्वसनीय उमरावों की श्रेणी में आ गया था ।

सैय्यद कासिम व सैय्यद हाशिम बारहा जो सैय्यद महमूद के बेटे थे[1] इन्होंने भी अकबर के राज्य काल में विभिन्न अभियानों में भाग लिया[2] और बादशाह की सेवा में रहे ।

सैय्यद कासिम ख़ाँ अकबर के राज्य काल के सत्रहवें वर्ष में ख़ाने आलम[3] के साथ मुहम्मद हुसैन मिर्ज़ा[4] का सामना करने के लिए भेजा गया । मुहम्मद हुसैन मिर्ज़ा पराजित कर दिया गया और वह दक्षिण की तरफ भाग गया[5]।

1- मआसिरउल उमरा अंग्रेजी अनुवाद भाग-2 पृ॰ 494

2- वही

3- ख़ाने आलम की जीवनी के लिए देखिये - ब्लाकमेन पृ॰ 410-411

4- मुहम्मद हुसैन मिर्ज़ा की वंशावली के लिए देखिये- मुन्तख़बुत्तवारीख़ लोकृत अंग्रेजी अनुवाद पृ॰ 87

5- मुगल दरबार भाग-2 पृ॰ 408, 410

सैय्यद हाशिम बारहा को 1576 में अजमेर विजय के लिए नियुक्त किया गया ।

मेवाड़ विजय अकबर के लिए सम्मान का प्रश्न बन गया था, क्योंकि अन्य सभी राजपूत शासकों ने उसके सम्मुख समर्पण कर दिया था । अतः अकबर ने मेवाड़ के विरुद्ध अभियान में कुंवर मानसिंह को नियुक्त किया और उनके साथ चुन चुन कर विश्वास पात्र व्यक्तियों जैसे गाज़ी खाँ बदख्शी, ख्वाजा ग्यासुद्दीन, अली आसफ खाँ, सैय्यद हाशिम बारहा एवं सैय्यद राजू बारहा को नियुक्त किया[1]।

3 अप्रैल, 1576 को कुंवर मानसिंह एक बड़ी सेना के साथ जिसमें उक्त व्यक्ति भी सम्मिलित थे, अजमेर से रवाना हुए । मार्ग में सिवाने के किले पर अधिकार करने का प्रयास किया गया । इस दुर्ग पर चन्द्रसेन का अधिकार था और फत्ता राठौड़ दुर्गाध्यक्ष था । सैय्यद कासिम बारहा से हाशिम बारहा को विशेष रूप से इस किले पर विजय प्राप्त करने के लिए नियुक्त किया गया। यद्यपि सिवाने[2] का

1- अकबरनामा अंग्रेजी अनुवाद भाग-3 पृ॰ 236,237
स्मिथ ने लिखा है "सोलहवी शताब्दी के अन्तिम चरण में अकबर का साम्राज्य सर्वाधिक शक्तिशाली था और उसका साम्राज्य धरतीतल पर असीम धनवान था । सन् 1576 में भी उसका कोष अपार रहा होगा । दारिद्रयग्रस्त मेवाड़ की वीरातिवीर स्वामी ही हिन्दुस्तान की जाज्वल्यमान सेवा का सामना करने का सहास कर सकता था । स्मिथ पृ॰ 148

2- सिवाना - सरकार जोधपुर में स्थित है और सिवाना का दुर्ग अजमेर के प्रमुख दुर्गों में से है ।

घेरा लम्बे समय तक चला तथापि सैय्यदों की वीरता से दुर्ग विजित कर लिया गया और इसकी सुरक्षा का भार भी सैय्यदों पर सौंप दिया गया[1]। राजा मानसिंह मंडलगढ़ होते हुए मोही के रास्ते जून 1576 के मध्य बानस नदी के दक्षिण तट पर स्थित खमनोर[2] नामक गाँव में पहुँचे ।

खमनोर से आगे पहाड़ी प्रदेश आरम्भ होता है । अतः मानसिंह ने वहाँ की आवश्यक जानकारी प्राप्त कर उसके अनुरूप अपनी सैनिक रचना निश्चित करने के लिए बानस नदी के उत्तरी किनारे पर स्थित मुलीला ग्राम के पास अपना पड़ाव डाला । जब महाराणा प्रताप को उसका पता चला तो वह गोगुन्दा होता हुआ लोह सिंह पहुँचा ।

जब मानसिंह को महाराणा प्रताप के लोह सिंह तक पहुँचने तक का समाचार प्राप्त हुआ तो वह युद्ध की तैयारी करने लगा । मुलीला से दक्षिण में खमनोर गाँव और हल्दीघाटी पहाड़ियों के उत्तरी सिरे तक प्रायः समतल भूमि थी, जिससे होकर बहने वाली बानस नदी के दक्षिण किनारे पर हल्दीघाटी से होकर निकलने वाले मार्गों का मुँह बन्द करने के उद्देश्य से अपनी सेना की व्यूह रचना की ।

1- अकबरनामा भाग-3 अंग्रेजी अनुवाद पृ॰ 238

2- <u>खमनोर</u> - गोगुन्दा से 17 मील उत्तर पूर्व में स्थित है यह गाँव हल्दीघाटी के मुख पर है और गोगुन्दा के आधीन है ।

इस युद्ध में सबसे प्रमुख भाग सैय्यद हाशिम खाँ बारहा द्वारा लिया गया[1]। सैय्यद हाशिम पच्चीस नव युवक योद्धाओं के साथ सेना के अग्र भाग में नियुक्त था और इस सबका नेतृत्व कर रहा था । शाही सेना के प्रमुख और महत्वपूर्ण दाहिना पार्श्व सैय्यद अहमद खाँ बारहा के नेतृत्व में बारहा के सैय्यदों को सौंपा गया था । प्रचण्ड युद्ध होने पर इन दोनों सैय्यदों ने बहुत वीरता से सामना किया था था[2]। यद्यपि युद्ध में सैय्यद हाशिम घोड़े से गिर गए तथापि सैय्यद राजू द्वारा पुनः घोड़े पर सवार कर दिया गया[3]। अकबर के राज्य काल के इक्कीसवें वर्ष में सैय्यद हाशिम बारहा सिरोही[4] के शासक सुल्तान देवराह[5] जिसने अकबर के विरुद्ध विद्रोह कर दिया था, उसका सामना करने को भेजा गया । इस युद्ध में सैय्यद हाशिम खाँ बारहा ने बहुत वीरता दिखाई और उसे प्रशंसा मिली[6]।

1- हल्दीघाटी लेख शिवदत्त बराहठ श्री नटनागर शोध संस्थान (मालवा)

2- वही

3- अकबरनामा भाग-3 पृ॰ 245

4- सिरोही - राजपूताना में सिरोही राज्य की राजधानी है ।
देखिये - इम्पीरियल गजेटियर भाग-2,3 पृ॰ 28,37
सिरोही राज्य के विस्तृत विवरण के लिए देखिये-सिरोही राज्य का इतिहास लेखक-गौरी शंकर हीरा चन्द ओझा

5- देवराह अबुल फजल ने अकबरनामा में सिरोही के शासक के लिए सुल्तान तथा राय दोनों ही शब्दों का प्रयोग किया है ।
अकबरनामा अंग्रेजी अनुवाद भाग-2 पृ॰ 26 278

6- मआसिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद भाग-2 पृ॰ 294

उक्त घटना का विवरण देते हुए अबुल फजल ने लिखा है कि बादशाह को इस बात की सूचना मिली कि सिरोही का शासक देवराह राय विद्रोह की ओर उन्मुख है तब अकबर ने राय, राय सिंह तथा अन्य वीर व्यक्तियों के साथ सैय्यद हाशिम बारहा को विद्रोहियों को दंडित करने के लिए भेजा । उन्हें यह आदेश दिया गया था कि वह नम्रता पूर्वक मृदु तथा उदार भाषा का प्रयोग करें, ताकि विद्रोहियों को आज्ञा पालन के मार्ग पर लाया जा सके और यदि समझौते से काम निकल सके तो युद्ध न करें अन्यथा विद्रोहियों का दमन करे । ऐसा ज्ञात होता है कि राय देवराह ने शाही सेवा स्वीकार कर ली[1]। सैय्यद हाशिम तथा राज राय सिंह ने द नदोत[2] को अपना निवास स्थान बनाया और विद्रोहियों को अपने आधीन कर लिया । अकबर के राज्य काल के पच्चीसवें वर्ष राजा मालदेव के पुत्र चन्द्रसेन ने अकबर के विरुद्ध विद्रोह किया तो सैय्यद कासिम बारहा व सैय्यद हाशिम बारहा इन दोनों को भी उसका सामना करने को नियुक्त किया[3]।

इन दोनों भाईयों ने वीरता से युद्ध किया और चन्द्रसेन को युद्ध भूमि से भागने के लिए विवश किया । इस वर्ष जब मुजफ्फर खाँ गुजराती ने विद्रोह किया तो दोनों भाईयों को इस विद्रोह का दमन

1- अकबरनामा अंग्रेजी अनुवाद भाग-2 पृ॰ 278

2- नदोत- गुजरात में स्थित है ।

3- मआसिर उल उमरा पृ॰ 494

करने के लिए नियुक्त किया[1]। सैय्यद हाशिम इस युद्ध में मारे गए[2]। इनको एक हजार का मनसब प्रदान किया गया था[3]। इनके भाई सैय्यद कासिम घायल हुए । तत्पश्चात् सैय्यद कासिम बारहा पट्टन की सुरक्षा के लिए नियुक्त किए गए[4]।

सैय्यद कासिम बारहा ने कच्छ के[5] जमींदारों के विरुद्ध वीरता से युद्ध किया ।

अकबर के राज्य काल के सैंतीसवें वर्ष जब खाने आजम कोका को गुजरात में नियुक्त किया और सुल्तान मुजफ्फर खाँ से युद्ध करना पड़ा तो उस युद्ध में सैय्यद कासिम बारहा ने भी बहुत वीरता से भाग लिया[6]।

1- मआसिर उल उमरा पृ• 494

2- अकबरनामा भाग-3 पृ• 425
   ब्रिवेज अनुवाद भाग-3 पृ• 634
   मुन्तखबुत्तवारीख भाग-2 पृ• 342
   मआसिर उल उमरा भाग-2 पृ• 495

3- मआसिर उल उमरा अनुवाद भाग-2 पृ• 495

4- मआसिर उल उमरा अनुवाद भाग-2 पृ• 495

5- वही

6- वही

1595 में सैय्यद कासिम ने सुल्तान मुराद के साथ दक्षिण अभियान में वीरता से भाग लिया[1]। 1595 में सैय्यद कासिम खाँ की मृत्यु हो गई[2]। इन्हें एक हजार पाँच सौ सवार का मन्सब प्रदान किया[3]।

सैय्यद राजू[4] बारहा जो अकबर के अमीरों में से थे तथा इन्हें एक हजार का पद प्राप्त था[5]।

इक्कीसवें वर्ष में कुँवर मानसिंह अधीनस्थ राणा प्रताप का सामना करने को भेजे गए थे[6]।

अकबर के राज्य काल के उन्नीसवें वर्ष में जब यह सूचना प्राप्त हुयी कि राणा प्रताप पर्वत की घाटी से निकल कर उत्पात कर रहे हैं तो जगरनाथ के नेतृत्व में एक सेना राणा के बढ़ते हुये उत्पात को समाप्त करने के लिये भेजी गयी । जिसके साथ सैय्यद राजू को भी भेजा गया[7]।

1- मआसिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद भाग-2 पृ॰ 495

2- वही
ब्लाकमैन आइन पृ॰ 335,337
अकबरनामा भाग-2 पृ॰ 265 ब्रिवेज अनुवाद

3- मआसिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद पृ॰ 495

4- ब्लाकमैन आइन भाग-1 दूसरा एडीशन पृ॰ 501-502

5- मआसिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद भाग-2 पृ॰ 580

6- अकबरनामा भाग-3 पृ॰ 236,237
ब्रिवेज अनुवाद भाग-3 पृ॰237
मआसिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद भाग-2 पृ॰ 580

7- मआसिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद भाग-2 पृ॰ 580

राणा प्रताप को इसकी सूचना मिलने पर वह पुनः पहाड़ी पर चला गया । सैय्यद राजू को कुछ व्यक्तियों के साथ मण्डलगढ़ छोड़ दिया तथा उसने राणा के विरुद्ध अभियान किया । राणा उसका सामना नहीं कर सका तो दूसरी घाटी से निकल कर उत्पात करने लगा । सैय्यद राजू उससे युद्ध करने के लिए आगे बढ़ा तो राणा, सितूर की तरफ लौट गया । यद्यपि मुगल सेना की विजय नहीं हुई, तथापि राणा के उपद्रवों का अस्थाई रूप का अन्त हुआ[1]।

सैय्यद राजू ने गरीब कृषकों की राणा के अत्याचारों से रक्षा की[2]।

अकबर के राज्य काल के तीसवें वर्ष में पुनः जगरनाथ के साथ राणा के निवास स्थान पर आक्रमण किया और राणा को वहाँ से भागना पड़ा[3]।

1591 में सुल्तान मुराद को मालवा का सूबेदार नियुक्त किया उसके साथ सैय्यद राजू को भी मधुकर के विरुद्ध भेजा गया[4]।

1- अकबरनामा भाग-3 पृ॰ 66।

2- मआसिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद भाग-2 पृ॰ 580

3- वही

4- वही

सुल्तान मुराद से मिलने म के लिए वहाँ के सब सरदार गए, परन्तु राजा मधुकर शाह बहाना करके नहीं गया । शाहजादे ने उस पर चढ़ाई कर दी । जब शाही आदेशानुसार शहजादा वापिस बुला लिया गया तो सैय्यद राजू को सेना के साथ वहाँ छोड़ दिया गया ।

चालीसवें वर्ष में वह अहमद नगर अभियान के लिए भेजा गया । वहाँ उसने बहुत वीरता से युद्ध किया और 1595 ई० में इसी युद्ध में सैय्यद राजू की मृत्यु हुई । इसके पश्चात् उसकी जागीर उसके पुत्रों को प्रदान कर दी गई[1]।

इन सैय्यदों के अलावा सैय्यद बायजीद, सैय्यद जमाल-उद्दीन, सैय्यद छज्जू बारहा, सैय्यद लाद तथा सैय्यद अब्दुल्ला खाँ ने भी अनेक अभियानों में रहकर अपनी वीरता का परिचय दिया ।

सैय्यद बायजीद अकबर के राज्य काल के तैंतीसवें वर्ष में गुजरात अभियान में नियुक्त किए गए थे और इस अभियान में इन्होंने अपनी वीरता का परिचय दिया था[2]।

1- मासिर उल उमरा भाग-2 पृ० 580
अकबरनामा भाग-3 अनुवाद पृ० 1047

2- आइने अकबरी भाग-3 पृ० 553

सैय्यद जमालउद्दीन बारहा जो सैय्यद अहमद के पुत्र थे, इन्होंने भी खान जमन के साथ युद्ध में वीरता का परिचय दिया था[1]। इनकी मृत्यु चितौरा में एक खान के फटने से हुई थी[2]।

सैय्यद अब्दुल्ला खाँ बारहा, जो मीर खवन्दा के पुत्र थे, यह भी सम्राट अकबर की सेवा में थे तथा इन्हें भी सात सौ का मनसब मिला था[3]।

राज्य के नवें वर्ष आपको अन्य अफसरों के साथ अब्दुल्ला खाँ उजबेग जो मालवा से गुजरात चले गए थे का पीछा करने के लिए नियुक्त किया गया तथा खान कलान की नियुक्ति भी इस कार्य के लिए, इनके साथ की गई[4]।

राज्य के अठारहवें वर्ष इनको मालवा के अभियान में मुजफ्फर खान के साथ भेजा गया[5]।

1- आइने अकबरी पृ॰ 476

2- आइने अकबरी पृ॰ 408

3- मासिर उल उमरा भाग-। पृ॰ 82

4- मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद भाग-। पृ॰ 82

5- वही

उन्नीसवें वर्ष जब सम्राट स्वयं पूर्वी जिलों में गए तब इनकी नियुक्ति भी सम्राट के परिचायक के रूप में की गई[1]। तत्पश्चात् जब ख़ान कलान को बंगाल विजय के लिए नियुक्त किया गया तो यह भी उनके साथ गए[2] तथा इस युद्ध में वीरता का प्रदर्शन किया । वहाँ से यह किन्हीं कारणों से दरबार वापिस आ गए ।

राज्य के इक्कीसवें वर्ष आपको सम्राट के आने की सूचना देने के लिए भेजा गया । इसी वर्ष के मध्य में ही आपने विजय की सूचना दी तथा दरबार में आपका यथोचित आदर सत्कार किया गया[3]।

पच्चीसवें वर्ष ख़ान कलान के साथ आपको पुनः बंगाल विद्रोह के दमन के लिए भेजा गया[4]।

शहबाज ख़ान तथा मंसूर ख़ान के मध्य युद्ध में सैय्यद अब्दुल्ला ख़ाँ सेना के वाम भाग में थे । बिहार सूबे की

1- मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद भाग-1 पृ० 82

2- वही

3- वही

4- वही

स्थिति ठीक न होने के कारण राज्य के इक्तीसवें वर्ष इनको
कासिम खान के पास काश्मीर भेजा गया । राज्य के चौतीसवें
वर्ष इनकी मृत्यु इस सूबे में ज्वर के कारण हुई[1]। आइने अकबरी
के अनुसार इनकी मृत्यु का कारण काश्मीरियों द्वारा इन पर
आक्रमण बताया जाता है तथा यह कहा गया है कि इनकी मृत्यु आप
तीस सौ योद्धाओं के साथ वीर गति को प्राप्त हुए[2]।

इसी प्रकार सैय्यद छज्जू बारहा जो सैय्यद महमूद
के भाई थे, अपनी वीरता के लिए प्रसिद्ध थे , इन्होंने भी अनेक
अभियानों में वीरता का परिचय दिया । इनकी मृत्यु 962 में
हुई । इनका मजार आज भी मझेरा में पाया जाता है[3]।

सैय्यद लाद ने भी अकबर के समय गुजरात अभियान
में सहायता की तथा दक्षिण अभियान में भी सहायता की[4]।

यद्यपि अकबर के राज्य काल में बारहा के सैय्यदों ने
विभिन्न अभियानों में भाग लेकर अपनी वीरता का यथाशक्ति
प्रदर्शन किया । साथ ही उस काल में इन्होंने राजनीति में सक्रिय
भाग लिया हो, इसका समसमायिक लेखों में उल्लेख नहीं मिलता ।

1- मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद भाग-1 पृ. 82

2- आइने अकबरी पृ. 465

3- आइने अकबरी पृ. 477

4- आइने अकबरी पृ. 526

परन्तु 1608 में जब राजा मानसिंह तथा मिर्जा अजीज कोका द्वारा खुसरो को अकबर का उत्तराधिकारी बनाने व सलीम के उत्तराधिकार का विरोध करने का प्रयास किया गया तो सैय्यद वंश के जिन व्यक्तियों ने इसका विरोध कर सलीम के राज्यारोहण का समर्थन किया, उनमें सैय्यद खाँ बारहा का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इसका कारण यह नहीं था कि सलीम उसका प्रिय पात्र था अथवा वे सलीम के व्यवहार से सन्तुष्ट थे, अपितु इसका कारण यह था कि उनके विचार से चगताई कानून तथा प्रथा के अनुसार पुत्र के रहते हुए पात्र को उत्तराधिकार देना उक्त नियमों का खुले आम उल्लंघन करना था।

0
00000

अकबरी राज्य के अन्तिम वर्ष व सैय्यद

अकबर के राज्य काल के अन्तिम वर्ष में उसके पुत्र सलीम ने विद्रोह कर दिया । यद्यपि प्रारम्भ से ही अकबर ने सलीम को अपना उत्तराधिकारी बनाने का विचार अभिव्यक्त किया था तथा उक्त विचार को स्वरूप प्रदान करने के लिए ही 1577 में सलीम को दस हजारी का मन्सब प्रदान किया गया था[1]। यह मुराद तथा दानियाल जिनको कृमशः सात हजार तथा छः हजार का मनसब प्रदान किया गया था[2], उनकी तुलना में अधिक था और मुराद और दानियाल की अपेक्षा अधिक प्रिय होने का प्रतीक था ।

इसी प्रकार 1585 में जब सलीम, मुराद तथा दानियाल तीनों को ही बादशाह द्वारा विशिष्ट सुविधाएं प्रदान की गई, मनसब अभिवृद्धि में सलीम को विशेष रूप से उच्च मनसब मिला । सलीम को बारह हजार का मनसब प्रदान किया गया और दानियाल तथा मुराद को कृमशः नौ हजार तथा सात हजार का मनसब मिला[3]। इन शाहजादों को तुमान तोग[4] भी प्रदान किया गया ।

1- अकबरनामा भाग-3 पृ॰ 308

2- अकबरनामा भाग-3 पृ॰ 308

3- मुन्तखबुत्तवारीख अनुवाद भाग-2 पृ॰ 354

4- तुमानतोग - जो राजकुमारों को प्रदान किया गया था, एक प्रकार का झंडा था जो उच्च पद का सूचक था । तुमानतोग बहुमूल्य रत्नों से अलंकृत होता है । यह छत्र तोग की अपेक्षा अधिक लम्बा होता है तथा इसे बड़े-बड़े उमरावों को प्रदान किया जाता है । ब्लाकमैन कृत आइने अकबरी भाग-2 पृ॰ 57 हिन्दी अनुवाद पृ॰ 50

यद्यपि सलीम एक बहुत ही महत्वाकांक्षी व्यक्ति था, तथापि अगले तेरह वर्षों तक पिता तथा पुत्रों के संबंध में कोई कटुता उत्पन्न नहीं हुई । सलीम के राज्य विरोधी होने का कोई संकेत इस काल में नहीं मिलता । परन्तु ऐसा ज्ञात होता है कि सलीम एक महत्वाकांक्षी युवक था, राज्य सिंहासन प्राप्त करने का उत्सुक था और शीघ्रातिशीघ्र इस दिशा में कार्य करना चाहता था । सम्भवतः सलीम को यह संदेह हो गया था कि कहीं बादशाह उसकी अपेक्षा किसी अन्य पुत्र को अपना उत्तराधिकारी घोषित न कर दें । सलीम के इस संदेह का कारण संभवतः सलीम का अपना चरित्र था । वह बहुत अधिक मद्यपान करता था, साथ ही ऐसा ज्ञात होता है कि उसकी संगति भी अच्छी नहीं थी ।

1597 में राजकुमार दानियाल को जो अभी तक इलाहाबाद में था, दक्षिण अभियान के लिए भेजा गया[1]। सलीम को मेवाड़ के राणा के विरुद्ध भेजा गया और उसकी सहायता के लिए शाहबाज खाँ को नियुक्त किया । सलीम ने इस कार्य में कोई विशेष अभिरुचि नहीं दिखाई और इसी बीच बंगाल में उपद्रव प्रारम्भ हो गए । 13 नवम्बर, 1599 को शाहबाज खाँ की मृत्यु हो गई[2]। सलीम ने बिना अपना कार्य पूर्ण किए इलाहाबाद की ओर प्रस्थान किया तथा शाहबाज खाँ कम्बू जो एक धन सम्पन्न व्यक्ति था, उसकी एक करोड़ की सम्पत्ति

1- अकबरनामा भाग-3 अंग्रेजी अनुवाद पृ. 1132-1133

2- अकबरनामा अंग्रेजी अनुवाद भाग-3 पृ. 1142

भी हस्तगत कर ली । 2 अगस्त, 1600 को ‹ एक सफर एक हजार नौ हिजरी › को इलाहाबाद पहुँचा[1]। ऐसा ज्ञात होता है कि सलीम की गतिविधियों ने राजा मानसिंह को जो उसके साथ था, असन्तुष्ट कर दिया था तथा इलाहाबाद से राजा मानसिंह बंगाल चला गया[2]।

शाहजादे सलीम ने पूर्ण स्वतंत्र अनुत्तरदायित्वपूर्ण व्यवहार करना आरम्भ किया । कड़ा, मानिकपुर, कोड़ा, घाटमपुर आदि क्षेत्रों पर अधिकार ही नहीं किया अपितु शाही कर्मचारियों को हटा कर अपने अधिकारी नियुक्त करने आरम्भ कर दिये । उसने इलाहाबाद को अपना कार्य स्थल बनाया तथा अपने सहयोगी कुतुबुद्दीन खाँ को बिहार का सूबेदार बनाया । लाल बेग को जौनपुर सरकार प्रदान की गई तथा कालपी पर यतीम बहन को नियुक्त किया गया[3]। मानसिंह को स्वयं भी अपनी बहन मानबाई से जो सलीम की पत्नी थी से उत्पन्न खुसरो को अकबर का उत्तराधिकारी बनाने की आकांक्षा थी और सलीम के अनुत्तरदायित्वपूर्ण व्यवहार ने स्थिति को और भी कठिन बना दिया था । अकबर की दक्षिण में अनुपस्थिति का सलीम ने दुरुपयोग किया था ।

1- अकबरनामा भाग-3 पृ. 1155, 1533 अनुवाद 83।

2- अकबरनामा भाग-3 पृ. 1174 डीलायेट पृ. 164

3- इकबालनामा फारसी पृ. 33 तुजुक रोजर्स कृत अंग्रेजी अनुवाद पृ. 24 बनारसीदास अर्द्ध कथा छन्द 149, 167

सलीम जैसा महत्वाकांक्षी व्यक्ति शीघ्र ही साम्राज्य प्राप्त करना चाहता था[1]। तथापि 1601 तक सलीम की गतिविधियों ने सक्रिय रूप ग्रहण नहीं किया था, परन्तु 1601 में सलीम ने पूर्ण रूप से विद्रोह कर दिया । 1601 में सलीम ने इलाहाबाद में स्वतन्त्र दरबार स्थापित किया और बिहार के कोष से तीस लाख रुपया निकाल कर एक बहुत बड़ी सेना एकत्रित कर ली[2] तथा तीस हजार सेना के साथ मार्ग में लूटमार मचाता हुआ, आगरे की ओर बढ़ा ।

यद्यपि सलीम द्वारा इस प्रकार इलाहाबाद में अपनी स्वतंत्र सत्ता का प्रयत्न करना शाही सत्ता की अवमानना थी, तथापि अकबर ने सलीम के विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं की और सलीम को एक स्नेह युक्त पत्र भेजा । ऐसा ज्ञात होता है कि सलीम को इस पत्र को पढ़कर कुछ प्रतिक्रिया हुई और उसने बादशाह की शरण में जाने का निश्चय किया ।

सलीम ने यह भी कहना प्रारम्भ किया कि वह अपने पिता के प्रति सम्मान प्रदर्शित करना चाहता है । जब बादशाह को इस परिस्थिति का ज्ञान हुआ तो बादशाह ने सलीम को पत्र भेजा कि "यदि तुम वास्तव में आदर प्रकट करना चाहते हो तो अकेले आओ और अपने साथियों को अपनी-अपनी जागीरों में वापिस भेज दो और यदि

1- इतिहास कार बदायूनी सलीम पर यह भी आरोप लगाता है कि उसने बादशाह अकबर को विष दे दिया था ।

2- मासीरे जहाँगीरी पृ॰ 13
मुन्तखबुत्तवारीख पृ॰ 220-221

तुम्हें संदेह हो तो वापिस इलाहाबाद चले जाओ, वहाँ अपने हृदय को सन्तुष्ट करो और जब तुम्हें आत्म विश्वास हो जाए तब दरबार में उपस्थित हो ।" इस स्नेह युक्त पत्र का सलीम पर प्रभाव पड़ा और उसने मीर सद्रे जहाँ को, जो बादशाह के प्रतिनिधि रूप में था, और जो सलीम के साथ रहता था, बादशाह के पास भेजा और क्षमा माँगते हुए निवेदन किया कि वह कर्त्तव्य परायण और पितृ-भक्त है और रहेगा तथा वह स्वयं इलाहाबाद की ओर रवाना हो गया। परन्तु जब वह इलाहाबाद पहुँचा तो उसे शाही फरमान प्राप्त हुआ कि उसे बंगाल और उड़ीसा का सूबेदार नियुक्त किया गया और उसे भी यह निर्देश दिया गया था कि वह अपने आदमियों को इन प्रान्तों का शासन अपने हाथ में लेने के लिए रवाना कर दें । राजा मानसिंह को भी इस आशय का पत्र लिखा गया था कि मानसिंह इन प्रान्तों को शाहजादों को सुपुर्द करके दरबार में आ जाए[1]। सलीम ने इस दिशा में कार्य करने की कोई भी रुचि नहीं दिखाई और अपने किसी भी कर्मचारी को बंगाल अथवा उड़ीसा नहीं भेजा । यह एक प्रकार से शाही आज्ञा का खुला विरोध था । सलीम इतने से सन्तुष्ट नहीं हुआ, अपितु उसने स्वयं को स्वतन्त्र शासक के रूप में उद्घोषित कर दिया । यही नहीं उसने फरमान भी प्रेषित करना आरम्भ किया । अपने सहयोगियों को पदवी तथा जागीर भी प्रदान करनी आरम्भ की[2]।

1- तकमील ए अकबरनामा -इलियट एण्ड डाउनसन जि॰4 पृ॰ 105

2- मासीरे जहाँगीरी पृ॰ 113
इलाहाबाद आरकाइवस से छपी कृति मुगल फरमान में सलीम द्वारा इलाहाबाद से प्रेषित फरमान ।

ऐसा ज्ञात होता है कि सम्भवतः अपनी शक्ति को बढ़ाने के लिए उसने गोआ में पुर्तगाली अधिकारियों से सहायता प्राप्त करने की चेष्टा की[1]।

अकबर को इस बात की सूचना मिलने पर अबुल फजल को, जो अकबर का बहुत विश्वास-पात्र था तथा दक्षिण में नियुक्त था, बुलाकर सलीम के पास भेजा गया । परन्तु 1602 में सलीम के इशारे पर वीर सिंह बुंदेला द्वारा अबुल फजल की हत्या कर दी गई । यद्यपि बादशाह को इस घटना से अत्यन्त शोक पहुँचा तथापि सलीम के विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं की गई तथा सुल्तान सलीमा बेगम के प्रयत्नों के फलस्वरूप एक बार पुनः पिता और पुत्र में समझौता हो गया ।

यद्यपि प्रत्यक्ष रूप में तो ऐसा ज्ञात होता था कि अकबर तथा सलीम में समझौता हो गया था, परन्तु सलीम राज्य सत्ता प्राप्त करने के लिए अधीर था और उसमें विद्रोह की भावना पूर्ववत थी, क्योंकि 1597 में अकबर ने मेवाड़ पर चढ़ाई करने का निश्चय किया तो सलीम को इस कार्य का भार सौंपा गया । सलीम मेवाड़ नहीं जाना चाहता था । अकबर जानता था कि यदि उसे अधिक सेना और कोष दिया जाएगा तो उसकी शक्ति में अभिवृद्धि हो जाएगी । अतः उसने सलीम को इलाहाबाद जाने का आदेश दिया । तब सलीम ने पुनः स्वतन्त्रता पूर्वक व्यवहार करना आरम्भ किया ।

1- वाक्याते असद बेग इलियट एण्ड डाउन्सन कृत अनुवाद भाग-6 पृ० 169

ऐसा ज्ञात होता है कि इस पूरे काल में सैय्यद भाईयों ने राजनीति में कोई सक्रिय भाग नहीं लिया और न ही उनके द्वारा सलीम के साथ सहयोग का ही कोई उल्लेख मिलता है ।

सलीम के इस अनुत्तरदायित्वपूर्ण व्यवहार ने दरबार में अकबर के विश्वास पात्र अमीरों, उमरावों तथा अन्य कर्मचारियों को असन्तुष्ट कर दिया था । अबुल फजल की हत्या के कारण उदार विद्वान भी उससे असन्तुष्ट थे, फलस्वरूप दरबार में एक दल बन गया था जो सलीम के स्थान पर खुसरू को गद्दी पर बैठाना चाहता था । खुसरू के सहयोगी में राजा मानसिंह, मिर्जा अजीज कोका प्रमुख थे । दोनों मिलकर खुसरू को राज सिंहासन पर बैठाना चाहते थे, क्योंकि खुसरू मानसिंह की बहन का पुत्र और अजीज कोका का दामाद था । सलीम ने अपने पिता के विरुद्ध विद्रोह किया था, इससे इन दोनों (मानसिंह, अजीज कोका) ने सलीम के विरुद्ध षड्यन्त्र करने का निश्चय किया । अजीज कोका एवं मानसिंह भी बड़े कार्य कुशल और शक्ति शाली थे । इन्होंने निश्चय किया कि जब सलीम दरबार में आए तो उसे गिरफ्तार कर लिया जाए, परन्तु मीर जियाउलमुल्क कजवनी द्वारा सलीम को इस घटना की सूचना देने के कारण षड्यन्त्र विफल हो गया[1]। अब मिर्जा अजीज कोका और मानसिंह ने प्रत्यक्ष रूप से अमीरों तथा उमरावों को एकत्र कर खुसरू के पक्ष में उत्तराधिकार के

1- वाक्याते असद बेग इलियट एण्ड डाउन्सन कृत अनुवाद भाग-6 पृ० 169

प्रश्न को हल करना चाहा । दरबार में कुछ अमीरों द्वारा इसका विरोध किया गया । ऐसा ज्ञात होता है कि पहली बार बारहा के सैय्यदों ने दरबार में घटित होने वाली इन घटनाओं में सक्रिय रूप से भाग लिया और खुसरू के राज्यारोहण का विरोध किया, परन्तु यह प्रयत्न सफल नहीं हो पाया । सैय्यद खाँ बारहा जो बड़ा उमराव था, ने जहाँ एक तरफ राजा मानसिंह और अजीज कोका के प्रयत्नों को विफल कर दिया था, वहाँ दूसरी तरफ सलीम के उत्तराधिकार को निश्चित कर दिया था । जब सलीम ने यह देखा कि स्थिति उसके पक्ष में है और सम्राट की रूग्णावस्था ने गम्भीर रूप ग्रहण कर लिया है तो वह बड़े-बड़े सरदारों के साथ निर्भय होकर मरणासन्न सम्राट के सम्मुख उपस्थित हुआ तथा सम्राट के चरणों में प्रणाम किया । सम्राट ने संकेत द्वारा सलीम को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर अंतिम साँस ली ।

----o----

अकबर के राज्य काल में सैय्यदों द्वारा प्राप्त विशिष्ट पद

नाम	वर्ष	पद व पदवी	मनसब	पुरस्कार	ऐतिहासिक स्रोत
सैय्यद महमूद खाँ बारहा	प्रथम वर्ष	-	-	सरदारी	मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद पृ. 360 मुगल दरबार पृ. 229, 37
	-	-	2000	-	मुगल दरबार पृ. 229, 37 मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद पृ. 360
सैय्यद हाशिम खाँ बारहा	-	-	1000/-	-	मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद भाग-2 पृ. 495
सैय्यद कासिम खाँ बारहा	1595	-	1000/500 सवार	-	मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद पृ. 495
सैय्यद राजू बारहा	-	-	1000/-	-	वही

अध्याय - 3

-: जहाँगीर का राज्य काल सैय्यदों के उत्थान का प्रारम्भ :-

20 जमादुउस्सानी 1014 हिजरी/24 अक्टूबर, 1605 को सलीम का राज्यारोहण संस्कार सम्पन्न हुआ[1]। उसने नुरूउददीन मुहम्मद जहीरउददीन गाजी का विरुद ग्रहण किया[2]। जहाँगीर ने अपने विभिन्न सहयोगियों को उच्च पदों पर नियुक्त कर सम्मानित किया तथा उन्हें ऊँचे मनसब प्रदान किए[3]। यद्यपि सैय्यद खाँ बारहा तथा अन्य सैय्यदों ने जहाँगीर के उत्तराधिकार में विशिष्ट भूमिका निभाई थी। तथापि उनके किसी विशिष्ट पद पर नियुक्त किए जाने का उल्लेख समसामयिक स्रोतों में नहीं मिलता। सम्भवतः इसका कारण यह रहा हो कि जहाँगीर ने विशिष्ट पद उन व्यक्तियों को प्रदान किए थे,

---

1- डा॰ बेनी प्रसाद ने लिखा है कि सलीम छत्तीस वर्ष की अवस्था में आगरे में बृहस्पतिवार 24 अक्टूबर सन् 1605 को सिंहासन पर बैठा। लेकिन वाकियात ए "जहाँगीरी में लिखा है कि मैं अड़तीस वर्ष की अवस्था में आगरे में बृहस्पतिवार 8 जुम॰ दस्सानी 1014 हिजरी (12 अक्टूबर सन् 1605) को गद्दी पर बैठा।
तुजुके जहाँगीरी रोजर्स कृत अंग्रेजी अनुवाद भाग-1 पृ॰ 1
वाकियात इलियट एण्ड डाउन्सन जि॰-6 पृ॰ 168-73

2- वही

3- वही पृ॰ 21 लाल बेग का मनसब 1500 से बढ़ाकर 4,000 का कर दिया गया उसे बिहार का सूबा प्रदान किया गया तथा 2,000 रुपये दिये गये। वीर सिंह बुंदेला को 3,000 का मनसब प्रदान किया गया

जिन्होंने अकबर के विरुद्ध विद्रोह में प्रारम्भ से ही उसका साथ दिया था[1]। उदाहरणार्थ जियाउद्दीन कजवीनी के विषय में उल्लेख करते हुए जहाँगीर कहता है कि "मैंने कजवीन के जियाउद्दीन को जिसने मेरी सेवा, मेरे राजकुमार काल में की थी, और मेरे प्रति स्वामी भक्ति (निष्ठा) प्रदर्शित की थी, एक हजार का पद दिया"। इसी प्रकार वीर सिंह देव बुंदेला के विषय में उल्लेख करता है कि "वीर सिंह देव बुंदेला ने अबुल फजल को मृत्यु घाट उतार कर उसका सिर मेरे पास इलाहाबाद भेजा"। जहाँगीर के अनुसार अबुल फजल ने अकबर को अपने षड्यंत्र और कुचक्रों द्वारा सलीम के विरुद्ध कर दिया था । अबुल फजल को मरने के पुरस्कार स्वरूप शासक बनने पर जहाँगीर ने उसे पुरस्कृत किया[2]। राज्यारोहण संस्कार के पश्चात् जहाँगीर ने वीर सिंह बुंदेला को 3,000 का मनसब प्रदान किया[3]। सम्भवतः इसका कारण यह भी था कि सैय्यद वंश के लोगों द्वारा न तो इस काल में जहाँगीर के साथ सक्रिय सहयोग व्यक्त किया गया था और न ही उन्होंने सलीम के राज्यारोहण का समर्थन, उसको सहयोग देने की दृष्टि से किया था । यद्यपि सलीम के राज्यारोहण का समर्थन सैय्यद महमूद खाँ बारहा द्वारा चगताई कानून के समर्थन में किया गया था, व्यक्तिगत में सलीम के लिए नहीं परन्तु इसका लाभ सलीम को अवश्य पहुँचा था , तथापि ऐसा ज्ञात होता है कि बारहा के सैय्यदों को सलीम का पूर्ण विश्वास

1- तुजुक जहाँगीरी रोजर्स कृत अंग्रेजी अनुवाद भाग-1 पृ॰ 24

2- तुजुक जहाँगीरी रोजर्स कृत अंग्रेजी अनुवाद भाग-1 पृ॰ 24-25

3- वही पृ॰ 24

प्राप्त था, जिसकी पुष्टि सैय्यद अली असगर खाँ बारहा के राज्य काल के प्रथम वर्ष में दी गई सैफ खाँ की उपाधि तथा 3000 के मनसब से स्पष्ट होती है[1]।

जहाँगीर लिखता है कि "मैने अली असगर बारहा को जिनकी वीरता और उत्साह में जोड़ नहीं है सैफ खाँ की पदवी देकर सम्मानित किया। ये सैय्यद महमूद खाँ बारहा के जो मेरे पिता के पुराने अमीरों में से थे, उनके पुत्र हैं और इस प्रकार इन्हें अपने सम्बन्धियों के बराबर का पद मिला। यह एक बहुत वीर युवक है और उन विश्वास पात्र व्यक्तियों में से हैं जो सदैव खेल में और अन्य स्थानों में मेरे साथ गया। इसने अपने जीवन काल में किसी मादक पदार्थ का सेवन नहीं किया, और चूँकि अपनी युवावस्था में इसने इस प्रकार संयम का परिचय दिया है अतः मुझे विश्वास है कि यह अवश्य ही प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा[2]।"

जहाँगीर के राज्य काल में भी यद्यपि सैय्यद वंशीय व्यक्तियों में कुछ ही लोगों का उल्लेख मिलता है, तथापि विभिन्न महत्वपूर्ण अभियानों में उनकी नियुक्ति इस बात की ओर संकेत करती है कि सैय्यद वंश के व्यक्ति जहाँगीर के प्रिय पात्रों में से थे। जहाँगीर के काल में सैय्यद वंशीय जिन व्यक्तियों का उल्लेख मिलता है उसमें

1- तुजुके जहाँगीरी रोजर्स कृत अंग्रेजी अनुवाद पृ॰ 32

2- तुजुके जहाँगीरी भाग-1 पृ॰ 32
जहाँगीरनामा हिन्दी अनुवाद पृ॰ 68

सैय्यद अली असगर खाँ[1] बारहा, अब्दुला सैय्यद बारहा[2] अबुल वहाब सैय्यद बारहा, अली मुहम्मद बारहा, इज्जत खाँ बारहा[3], कबीर बारहा[4] कासिम बारहा नसीब बारहा, सैय्यद अली बारहा,[5] सैय्यद हिजब्र खाँ बारहा,[6] आलम खाँ बारहा[7], दिलेर खाँ बारहा[8] आदि हैं ।

1- तुजुके जहाँगीरी रोजर्स कृत अंग्रेजी अनुवाद भाग-। पृ॰ 24
जहाँगीरनामा पृ॰ 62 मासिर उल उमरा पृ॰ 693

2- मासिर उल उमरा भाग-। अंग्रेजी अनुवाद पृ॰ 693

3- तुजुके जहाँगीरी पृ॰ 24।

4- जहाँगीरनामा पृ॰ 204
तुजुके ए जहाँगीरी अंग्रेजी अनुवाद पृ॰ 322

5- जहाँगीरनामा पृ॰ 350

6- हिजब्र खाँ बारहा की जीवनी के लिए देखिये -
मासिर उल उमरा भाग-। अंग्रेजी अनुवाद पृ॰ 627

7- आलम खाँ बारहा की जीवनी के लिए देखिये -
मासिर उल उमरा भाग-। अंग्रेजी अनुवाद पृ॰ 176, 177

8- जहाँगीरनामा हिन्दी अनुवाद पृ॰ 101

जहाँगीर लिखता है कि 31 मार्च, 1606 को रविवार को दो घड़ी रात्रि बीतने पर खुसरू अभागे तथा स्वार्थी उपद्रवियों और राजपूतों के झुंड के साथ हमारे पास से भागकर पंजाब की ओर चल दिए । खुसरो के विद्रोह के विस्तृत वर्णन को देखिये - तुजुके जहाँगीरी रोजर्स कृत अनुवाद पृ॰ 52,54,55,59,62,64, 65,70,73,74।

जहाँगीर के राज्यकाल के प्रथम वर्ष में ही राजकुमार खुसरो ने विद्रोह कर दिया।

जहाँगीर द्वारा खुसरो का पीछा करने के लिए जो सेना भेजी गई उसमें सैय्यद अली असगर बारहा भी उपस्थित थे। लाहौर के समीप शाही सेना तथा खुसरो के सहयोगियों में युद्ध हुआ। इस युद्ध में सैय्यद अली असगर बारहा ने बहुत अधिक वीरता से युद्ध किया, इन्हें सत्रह घाव लगे[1]। अपनी इस वीरता के उपलक्ष्य में इन्हें दो हजार का मनसब तथा एक हजार सवार प्रदान किया गया[2] तथा जहाँगीर के राज्य काल के चौथे वर्ष में इनके मनसब में अभिवृद्धि कर इन्हें दो हजार पाँच सौ जात और एक हजार तीन सौ पचास सवार का पद मिला, साथ ही इन्हें सरकार हिसार का फौजदार भी नियुक्त किया गया[3]।

जहाँगीर के राज्यकाल के चौथे वर्ष में दक्षिण अभियान का कार्य राजकुमार परवेज ने किया[4]। चूँकि दक्षिण से प्राप्त सूचना के

1- तुजुके जहाँगीरी रोजर्स कृत अनुवाद पृ. 64

2- मासिर उल उमरा भाग-2 अंग्रेजी अनुवाद पृ. 693

3- तुजुके जहाँगीरी रोजर्स कृत अनुवाद पृ. 157
मासिर उल उमरा भाग-2 पृ. 693

4- जहाँगीरनामा पृ. 226-227

अनुसार उक्त अभियान में मुगलों की अधिक प्रगति नहीं हो रही थी[1]। अतः जहाँगीर ने स्वयं दक्षिण जाने का निश्चय किया, परन्तु बाद में अमीरों तथा राजभक्त मनुष्यों से सम्मति करने पर खाने जहाँ को दक्षिण विजय का भार सौंपा गया । उसके साथ अनेकों महत्त्वपूर्ण सरदार जैसे राजावीर सिंह देव, शुजात खाँ, राजा विक्रमाजीत आदि भेजे गए । ऐसा ज्ञात होता है कि सैय्यद सैफ खाँ बारहा को भी इस अभियान में भाग लेने के लिए भेजा गया था, क्योंकि वह महल के खास मनुष्यों में से था[2]। दक्षिण में सैफ खाँ बारहा की गति विधियों

1- जहाँगीरनामा पृ॰ 231 इसी महीने की 6 ता0 परवेज ने बुहरानपुर पहुँचने के पहले खान खाना तथा अन्य सरदारों का प्रार्थना पत्र आया कि दक्षिण में सब इक्ट्ठे होकर उपद्रव कर रहे हैं ।"अब हमने देखा की परवेज तथा उसके साथ भेजी गई सेना को उसी कार्य पर नियत होते हुए भी उन्हें अभी और भी सहायता की आवश्यकता है, तब हमने सोचा कि हमें स्वयं वहीं जाना चाहिए और अल्लाह की कृपा से उस कार्य से अपना सन्तोष कर लेना चाहिए और अब इसी बीच आसफ खाँ काँ भी प्रार्थना पत्र आया कि हमारा वहाँ जाना नित्य बढ़ते हुए, साम्राज्य के विस्तार के लिए लाभदायक है । आदिल खाँ के पास बीजापुर से भी एक प्रार्थना पत्र आया कि यदि दरबार में कोई विश्वास पात्र सरदार नियत होकर यहाँ आये जिससे वह अपनी इच्छाऐं तथा सत्य कह सके और जो उन्हें हमारे तक पहुँचा सके तो बहुत कुछ आशा है कि उसमें उन लोगों को लाभ हो ।"

2- जहाँगीरनामा पृ॰ 233 महल के खास मनुष्यों में से हमने छः सात सहस्त्र सवार उसके साथ भेजे, जैसे सैफ खाँ बारहा, हाजी बेग, उजबेग मुबारक, मुबारक का भतीजा, मुलामुल्ला, अन्य मसबदार एवं दरबारी थे ।

से जहाँगीर सन्तुष्ट था । अतः उसने उसे एक झंडा प्रदान किया[1]। यद्यपि दक्षिण में मुग़ल सेना को सफलता प्राप्त नहीं हुई तथा खान-खाना और खाने जहाँ दोनों ही में पारस्परिक वैमनस्यता के कारण खान-खाना को वापिस बुला लिया गया[2], तथापि ऐसा ज्ञात होता है कि बारहा के सैय्यदों ने इस काल में योग्यता से कार्य किया । जिसका संकेत जहाँगीर द्वारा सैय्यद अली बारहा के मनसब में अभिवृद्धि किए जाने से मिलता है । जहाँगीर ने अपनी आत्मकथा में उल्लेख किया है कि "हमने सैय्यद अली बारहा की सेवा से प्रसन्न होकर उसे पदोन्नति दी और उसके पहले एक हजारी पाँच सौ सवार के मनसब में पाँच सदी दो सौ सवार बढ़ा दिया[3]"। सैय्यद मुजफ्फर खाँ बारहा, जिसका नाम अबुल मुजफ्फर था, उसने भी दक्षिणियों के विरुद्ध वीरता दिखाई । यह युद्ध क्षेत्र में घायल हो गया[4]।

जहाँगीर के राज्य काल के आठवें वर्ष में जब खुर्रम को राणा अमर सिंह का विद्रोह दमन करने को भेजा गया[5] उस समय सैफ खाँ बारहा भी उक्त अभियान में सम्मिलित था तथा ऐसा ज्ञात होता है

1- जहाँगीरनामा पृ॰ 242
तुजुके जहाँगीरी रोजर्स कृत अनुवाद 172

2- जहाँगीरनामा पृ॰ 249

3- वही

4- मआसिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद पृ॰ 443

5- राणा अमर सिंह के वंश के विस्तृत विवरण के लिये देखिये - जहाँगीरनामा पृ॰ 318-319
मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद पृ॰ 693

कि सैफ खाँ बारहा ने राणा के विरुद्ध युद्ध में वीरता का परिचय दिया और खुर्रम की प्रार्थना पर जहाँगीर ने इनके मनसब में 5 सदी 2 सौ सवार की अभिवृद्धि की[1]।

जहाँगीर के राज्य काल के दसवें वर्ष में सैय्यद वंशीय जिन व्यक्तियों के मनसब में अभिवृद्धि हुई, अथवा जिन्हें पुरस्कृत किया गया, उनमें सैय्यद सैफ खाँ बारहा, सैय्यद अली बारहा सैय्यद अब्दुला बारहा थे। सैय्यद अली बारहा का मनसब पाँच सदी, तीन सौ सवार से बढ़ाकर ड़ेढ हजारी एक हजार सवार कर दिया गया[2]।

सैय्यद अली बारहा को हाथी भी प्रदान किया गया[3]। दक्षिण के कार्य में जाने वाले बहुत से मनुष्यों के मनसब में वृद्धि की गयी। सैय्यद अब्दुला बारहा के मनसब में एक सौ पचास सवार बढ़ाए गए जिससे वह बढ़कर सात सदी तीन सौ सवार का हो गया[4]। सैफ खाँ बारहा को डंका दिया और उनका मनसब बढ़ाकर तीन हजारी दो सौ सवार कर दिया[5]।

1- जहाँगीरनामा पृ॰ 350

2- जहाँगीरनामा पृ॰ 362

3- वही

4- जहाँगीर नामा पृ॰ 365

5- जहाँगीरनामा पृ॰ 365
जहाँगीरनामा पृ॰ 322, "बाबा खुर्रम की प्रार्थना पर हमने सैफ खाँ बारहा का मनसब पाँच सदी दो सौ सवार से, दिलावर खाँ का इसी परिणाम से कृष्ण सिंह का 500 सवार से और सफराज खाँ का पाँच सदी तीन सौ सवार से बढ़ा दिया।"

जहाँगीर के राज्य काल के अगले वर्षों में भी सैय्यदों ने दरबार में विभिन्न गतिविधियों में भाग लिया और जहाँगीर बादशाह उन्हें समय समय पर पुरस्कृत करता रहा ।

सैय्यद आलम खाँ बारहा जो हिजब्र खाँ के भाई थे जहाँगीर के राज्य काल में एक हजार पाँच सौ का मनसब वह छः सौ सवार प्राप्त हुआ[1]। सैय्यद दिलेर खा बारहा भी जहाँगीर के साथ में एक अधिकारी थे उन्हें बड़ोदा की फौजदारी प्राप्त हुई थी[2]।

सैय्यद जहाँ अपनी वीरता के लिये विख्यात थे, वहीं संभवत: उनमें से कुछ उद्दण्डता में भी अपना सानी नहीं रखते थे, जिसका ज्वलन्त प्रमाण सैय्यद इज्जत खाँ बारहा के व्यवहार से स्पष्ट होता है । जहाँगीर के राज्य काल में के अठाहरवें वर्ष में सैय्यद कबीर बारहा का भाई जो शाहजादा परवेज का एक सेवक था, उसका एक लोहार से झगड़ा हो गया और झगड़ा इतना बढ़ गया कि सैय्यदों और राजपूतों में युद्ध छिड़ गया । सैय्यद कबीर भी यह सुनकर तीस-चालीस सवारों के साथ आया । इधर राजा गिरधर ने जब यह समाचार सुना तो उसने सब राजपूतों को बुलाकर दृढ़ता से घर के फाटक बन्द कर दिए । सैय्यदगण फाटकों पर आग लगाकर अन्दर घुस गए और राजा गिरधर अपने छब्बीस सेवकों के साथ मारा गया तथा अनेक लोग घायल हुए । इसमें कई सैय्यद भी मारे गए । इस घटना से राजपूत बहुत असन्तुष्ट

1- मासिर उल उमरा भाग-2 अंग्रेजी अनुवाद पृ. 176 हिन्दी अनुवाद पृ. 493

2- मासिर उल उमरा पृ. 493 भाग-1
अंग्रेजी अनुवाद पृ. 493, हिन्दी अनुवाद पृ. 47।

हो गए और वह युद्ध के लिए तैयार हो गए । दुर्ग के बाहर उपद्रव बहुत बढ़ गया । महाबत ख़ाँ यह समाचार सुनकर सैय्यदों को दुर्ग के भीतर ले जाकर तथा राजपूतों को शान्त करने का प्रयत्न करने लगा । इधर शाहजादा भी ख़ान आलम के गृह पर पहुँच कर राजपूतों को समय के अनुसार समझाया । महाबत ख़ाँ राजा गिरधर के घर गया और उनके पुत्रों के साथ शोक प्रकट किया। इसने बहाने से सैय्यद कबीर को पकड़वा कर कैद कर दिया, लेकिन राजपूत इससे शान्त न हुए और कुछ समय बाद सैय्यद कबीर को मरवा डाला[1]। यह घटना सैय्यद इज्जत ख़ाँ बारहा और जलाल ख़ाँ गक्खर की है, जो बंगश की सेना में थे और महाबत ख़ाँ के आदेश से इन्हें अफगानों से लगान वसूल करना था । इज्जत ख़ाँ जो बहुत ही वीर था, उसे जलाल ख़ाँ ने जो कुछ समय रुकने की राय दी थी स्वीकार नहीं की और सैय्यदों को युद्ध के लिए प्रोत्साहित किया । अफगानों ने इन्हें चारों तरफ से घेर लिया । सैय्यद इज्जत ख़ाँ की उद्दण्डता के कारण शाही सेना पर ऐसी कठोर घटना घटी । बादशाह ने यह समाचार सुन कर इज्जत ख़ाँ का एक पुत्र जो बहुत छोटा था, इज्जत ख़ाँ के प्राण न्योछावर करने के बारे में सोचकर इस पुत्र को मनसब व जागीर दी[2]।

1- तुज़ुके जहाँगीरी पृ॰ 322
   जहाँगीरनामा पृ॰ 204

2- तुज़ुके जहाँगीरी पृ॰ 241
3 जहाँगीरनामा पृ॰ 670

जहाँगीर के राज्य काल का उत्तरार्द्ध
तथा सैय्यदों की भूमिका

1622 में जहाँगीर के राज्य काल में राजकुमार खुर्रम ने विद्रोह कर दिया[1]। ऐसा ज्ञात होता है कि इस विद्रोह में जिन अमीरों ने खुर्रम का साथ दिया उनमें सैय्यद दिलेर खाँ बारहा भी था[2]। 18वें वर्ष में जब जहाँगीर तथा खुर्रम के मध्य संघर्ष हुआ तथा खुर्रम गुजरात की ओर गया और वहाँ पर अपने सहयोगी अब्दुला खाँ को नियुक्त किया तथा उसका खोजा अहमदाबाद नगर में पहुँचा तब सैफ खाँ (उपनाम सफी खाँ) ने जिसे उस नगर के शासन में कुछ अधिकार था, साहस दिखलाकर खोजे को निकाल दिया और नगर को अपने अधिकार में ले लिया तथा दिलेर खाँ को बादशाह का पक्ष ग्रहण करने को बाध्य किया ।

सैय्यद मुजफ्फर खाँ ने भी इस विद्रोह में खुर्रम का साथ दिया । जिस समय खुर्रम अपने पिता से अलग होकर दक्षिण चला गया और महाबत खाँ के शाहजादा परवेज के साथ नर्मदा नदी पार करने पर बुहरानपुर नगर में ठहरने की अपनी सामर्थ्य न देखकर कुतबुलमुल्क के राज्य के सिका कोल की राह से होता हुआ, बंगाल की ओर गया

1- शाहजहाँ के विद्रोह के लिए देखिये -
तुजुके जहाँगीरी रोजर्स कृत अनुवाद पृ. 233,234,235,237

2- पृ. 47। मासिर उल उमरा पृ. 94 हिन्दी अनुवाद

तथा इब्राहीम खाँ फतेह जंग से युद्ध हुआ । तब इसने भी उक्त युद्ध में बहुत प्रयत्न किया और वीरता दिखलाई । यह पूरे विद्रोह काल तक शाहजादा के साथ रहा । अपनी सेवा तथा स्वामी भक्ति से शाहजादे के हृदय में इसने स्थान कर लिया था[1]।

इस प्रकार से जहाँगीर के शासन काल में भी बारहा के सैय्यदों ने निरन्तर अपने सैनिक गुणों का परिचय देते हुए काफी उन्नति की ।

1- मासिर उल उमरा भाग-1 अंग्रेजी अनुवाद पृ॰ 79।
मुगल दरबार भाग-3 पृ॰ 129

जहाँगीर

नाम	वर्ष	पद व पदवी	मनसब	अन्य पुरस्कार	ऐतिहासिक स्रोत
सैय्यद अली असगर	प्रथम वर्ष	"सैफ खाँ"	3000/-	-	तुजुके जहाँगीरी रोजस कृत अंग्रेजी अनुवाद पृ. 32
	-	-	2000/1000	-	तुजुके जहाँगीरी रोजस कृत अंग्रेजी अनुवाद पृ. 157 मासिर उल उमरा भाग-2 अंग्रेजी अनुवाद पृ. 693
	चौथे वर्ष	"हिसार का फौजदार	2500/1350	-	तुजुके जहाँगीरी पृ. 157 जहाँगीरनामा पृ. 226,227 मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद भाग-2 पृ. 693

नाम	वर्ष	पद व पदवी	मनसब	अन्य पुरस्कार	ऐतिहासिक स्रोत
सैय्यद सैफ खाँ बारहा	-	-	-	झंडा	जहाँगीरनामा पृ. 282
	-	-	500/200 पाँच सदी दो सौ सवार की अभिवृद्धि	-	जहाँगीरनामा पृ. 350
	-	-	1000/500	डंका	जहाँगीरनामा पृ. 249
	-	-	3000/200 सवार	-	वही पृ. 365
सैय्यद अली बारहा	-	-	5 सदी दो सौ सवार की वृद्धि	-	जहाँगीरनामा पृ. 365
	दसवें वर्ष	-	5 सदी दो सौ सवार बढ़ाकर, छः हजारी एक हजार सवार कर दिया ।	हाथी	वही

नाम	वर्ष	पद व पदवी	मनसब	अन्य पुरस्कार	ऐतिहासिक स्रोत
सैय्यद अब्दुल्ला खाँ बारहा	-	-	150 सवार बढ़ाये गए । सात सदी तीन सौ सवार 700/300	-	जहाँगीरनामा पृ॰ 365
सैय्यद आलम अली खाँ	-	-	1500/600	-	मासिर उल उमरा भाग-2 अंग्रेजी अनुवाद पृ॰ 176 हिन्दी अनुवाद पृ॰ 493
सैय्यद दिलेर खाँ बारहा	-	"बड़ौदा की फौजदारी	-	-	मासिर उल उमरा भाग-1 अंग्रेजी अनुवाद पृ॰ 493 हिन्दी अनुवाद पृ॰ 471

अध्याय - 4

- शाहजहाँ के काल में सैय्यदों की भूमिका -

फरवरी 4, 1628 को शाहजहाँ का राज्यारोहण संस्कार आगरा में सम्पन्न हुआ[1] तथा उसने अबुल मुजफ्फर शिहाबुद्दीन मुहम्मद साहब किरान सानी का विरुद ग्रहण किया, प्रथानुकूल राज्यारोहण के पश्चात् पुरस्कार प्रदान किये गये व उपाधियाँ वितरित की गईं[2], उनलोगों को जो युवराज काल से शाहजहाँ के सक्रिय सहयोगी रहे थे तथा विद्रोह काल में उसका साथ दिया था, पुरस्कृत किया गया[3]। इनमें सैय्यद वंशीय दिलेर खाँ बारहा[4] खाने जहाँ बारहा[5], शुजात खाँ बारहा[6] आदि प्रमुख थे ।

1- शाहजहाँ के राज्यारोहण संस्कार के विस्तृत विवरण के लिये देखिये - लाहोरी कृत बादशाहनामा भाग-1 पृ. 82-99 हिस्ट्री आफ शाहजहाँ आफ देहली (बनारसी प्रसाद सक्सेना) पृ.63

2- वही

3- शाहजहाँ के विद्रोह के विस्तृत विवरण के लिये देखिये, तुजुके जहाँगीरी रोजर्स कृत अंग्रेजी अनुवाद भाग-2, पृ. 231, 236, 247, 249-50

4- मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद पृ. 171, 172

5- मुगल दरबार भाग-3 पृ. 129 मासिर उल उमरा भाग-1 अंग्रेजी अनुवाद पृ. 781

खाने जहाँ बारहा पूरे विद्रोह काल में शाहजहाँ के साथ रहा था । 1623 में शाहजहाँ अपने पिता से अलग होकर दक्षिण चला गया[1], महाबत खाँ व शाहजादा पर्वेज के साथ नर्वदा नदी पार करने पर बुरहानपुर नगर में ठहरने की अपनी सामर्थ्य न देखकर कुतबुलमुल्क के राज्य के तिलंगाने की राह से होता हुआ, वह बंगाल की ओर गया तथा वहाँ इब्राहीम खाँ फतेह जंग से युद्ध हुआ[2]। इस समय खाने जहाँ ने भी युद्ध में बहुत प्रयत्न किया और वीरता दिखाई[3]।

जहाँगीर की मृत्यु के उपरान्त हुए उत्तराधिकार युद्ध में जान अन्ततः शाहजहाँ विजयी हुआ तथा राज्यारोहण के पश्चात् उसने अपने सहयोगियों को यथोचित पुरस्कार प्रदान किये इनमें खाने जहाँ बारहा को राज्यकाल के प्रथम वर्ष में चार हजारी, तीन हजार सवार का मनसब[4] झंडा, डंका, सुनहले जीन सहित खास तबेले का घोड़ा व

1- शाहजहाँ के पलायन के विस्तृत विवरण के लिये देखिये - इकबालनामाए जहाँगीरी पृ० 209 तुजुके जहाँगीरी रोजर्स कृत अंग्रेजी अनुवाद भाग पृ० डा० बनारसी प्रसाद द्वारा रचित शाहजहाँ का इतिहास पृ० 47

2- तुजुके भाग-2 रोजर्स कृत अंग्रेजी अनुवाद पृ० 299 अमले सालिह डा०बनारसी प्रसाद द्वारा रचित शाहजहाँ का इतिहास पृ० 47-49

3- इकबालनामाए जहाँगीरी पृ० 289, 294, 296, 298 इंगलिश फैक्टरीज इन इण्डिया (1624-1629) पृ० 171, 172

4- बादशाहनामा भाग-1 पृ० 117 मुगल दरबार भाग-3 पृ० 129 मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद भाग-1 पृ० 792 (1199 संस्करण)

एक लाख रुपया देकर सम्मानित किया गया[1] तथा ग्वालियर का दुर्गाध्यक्ष नियुक्त कर उसके अधीनस्थ परगने जागीर में दिए गए[2]।

दिलेर खाँ बारहा जहाँगीर के समय बड़ौदा का फौजदार था । जहाँगीर के राज्यकाल के अठारहवें वर्ष शाहजहाँ के विद्रोह के समय उसके सहयोगियों में था, परन्तु सफी खाँ द्वारा बादशाह का पक्ष ग्रहण करने के लिये बाध्य किया गया था[3]। जहाँगीर की मृत्यु के पश्चात वह पुन: शाहजहाँ की सेवा में चला गया[4] और जब शाहजहाँ ने जुन्नेर से कूचकर नर्मदा नदी पार किया तब वह उस प्रान्त के कुल अधीनस्थ अफसरों से पहिले आकर सेवा में उपस्थित हुआ । वह बादशाह के साथ राजधानी आया और जलूस के पहिले वर्ष में उसने चार हजारी 2500 सवार का मनसब खिलअत, जड़ाऊ, खंजर, डंका, निशान तथा हाथी पाया[5]। उसे अपने ताल्लुके पर जाने की आज्ञा हुई। तीसरे वर्ष

1- मुगल दरबार भाग-3 पृ॰ 129

2- मासिर उल उमरा भाग-1 अंग्रेजी अनुवाद पृ॰ 892
मुगल दरबार भाग-3 पृ॰ 129

3- शाहजहाँ ने अब्दुला खाँ को गुजरात का शासक नियुक्त किया तथा उसका खोजा अहमदाबाद नगर में पहुँचा, सैफ खाँ उपनाम सफी खाँ ने साहस पूर्वक खोजे को निकाल दिया व नगर पर अधिकार कर लिया यही नहीं अपितु दिलेर खाँ को जो बड़ौदा का फौजदार था, बादशाह का पक्ष ग्रहण करने के लिये विवश किया । देखिये- मासिर उल उमरा भाग-1 अंग्रेजी अनुवाद पृ॰ 492, मुगल दरबार पृ॰

4- वही

5- मुगल दरबार भाग-1 मासिर उल उमरा भाग-1 अं॰अनुवाद 472

में जब बादशाह दक्षिण आये तब यह गुजरात से दरबार आया और इसके मनसब में 500 सवारों की वृद्धि हुई[1]। शुजात खाँ बारहा जिसका वास्तविक नाम सैय्यद जाफर था तथा प्रमुख अमीरों में से गिना जाता था । शाहजहाँ की सेवा में नियुक्त था तथा अपनी वीरता व साहस के बल पर वह शीघ्र ही शाहजहाँ के विश्वस्त प्रिय पात्रों में प्रसिद्ध हो गया था । जब शाहजहाँ परवेज़ तथा महाबत खाँ द्वारा बनारस के निकट पराजित कर दिया गया तो उसने बंगाल जाने का निश्चय किया । इस युद्ध में सैय्यद जाफर सेना के अग्रिम दस्ते में था परन्तु बिना युद्ध किए ही वह युद्ध क्षेत्र से भाग निकला । परन्तु शाहजहाँ ने सफलता प्राप्त न होती देखकर ईरान की ओर जाने का निश्चय किया। उस समय शुजात खाँ ने शाहजहाँ का साथ छोड़ दिया व जहाँगीर की सेवा में चला गया ।

राज्यारोहण के उपरान्त शाहजहाँ ने प्रारम्भ में शुजात खाँ को कोई पद अथवा सम्मान प्रदान नहीं किया । शाहजहाँ के राज्यकाल में जिन सैय्यदों को दरबार में पद, मनसब पुरस्कार आदि प्राप्त हुए उनमें सैय्यद अबुल मुजफ्फर खाने जहाँ बारहा[2], दिलेर खाँ बारहा[3], शुजात खाँ बारहा[4], शिहाबुद्दीन बारहा[5], सैय्यद मुजफ्फर बारहा[6],

---

1- मुगल दरबार भाग-1, मासिर उल उमरा भाग-1 अंग्रेजी अनुवाद पृ॰ 472

2- मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद भाग-1 पृ॰ 792

3- वही भाग पृ॰ 493

4- वही भाग-2 पृ॰ 857

5- वही पृ॰ 375, 376

6- वही पृ॰ 355

सैय्यद नजाबत खाँ बारहा, सैय्यद मुजफ्फर खाँ बारहा[1], सैय्यद लश्कर खाँ बारहा[2], शेर खाँ बारहा, अब्दुल्ला खाँ बारहा आदि थे[3]।

सैय्यद अबुल मुजफ्फर बारहा ने अपनी सेवा तथा स्वामिभक्ति से शाहजहाँ के हृदय में स्थान प्राप्त कर लिया था। राज्यारोहण के पश्चात् शाहजहाँ ने उसे पुरस्कृत तो किया ही साथ ही विभिन्न महत्त्वपूर्ण अभियानों पर भी नियुक्त किया। राज्यकाल के प्रथम वर्ष में ही महाबत खाँ के साथ जुझार सिंह बुंदेला[4] को दंड देने के लिए नियुक्त किया गया[5]। जिसने विद्रोह मचा रखा था और जब महाबत खाँ, खानखाना की प्रार्थना पर[6] उसके दोष क्षमा किए गए तब उसके

1- मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद भाग-1 पृ॰ 859

2- वही

3- वही पृ॰ 79

4- जुझार सिंह बुंदेला के विद्रोह के लिए देखिये - मासिर उल उमरा भाग-2 पृ॰ 214, फारसी भाग-1 पृ॰ 756 अंग्रेजी

5- मासिर उल उमरा भाग-1 पृ॰ 792 अंग्रेजी अनुवाद
शाहजहाँनामा हिन्दी पृ॰ 52
मुगलदरबार पृ॰ 130

6- जुझार सिंह मुगल सेना के निरन्तर पीछा किए जाने के कारण तंग आ गया। उसने महाबत खाँ को पत्र लिखा की यदि मेरे अपराध क्षमा कर दीजिए तो मैं जीवन भर दरगाह में रहकर बन्दगी करूँगा। महाबत खाँ ने बादशाह को अर्जी लिखी और बादशाह ने जुझार सिंह के अपराध क्षमा कर दिए।
शाहजहाँनामा पृ॰ 53

राज्य का वह भाग जो उसके मनसब के वतन से अधिक था, लेकर इनको तथा अन्य सरदारों के वेतन में दे दिया गया[1]। दूसरे वर्ष जब खान जहाँ लोदी हकूमस्य शंका के कारण आगरे से भागा तब अबुल मुजफ्फर ख्वाजा अबुल हसन तुरबती के साथ पीछा करने को भेजा गया[2]। अबुल मुजफ्फर सर्तकता तथा फुर्ती से उसी रात अपने सरदारों की प्रतीक्षा न कर रवाना हो गया । चम्बल नदी के किनारे धौलपुर के पास पहुँचकर खानजहाँ लोदी से युद्ध किया[3]। इस युद्ध में अबुल मुजफ्फर बारहा का पौत्र मुहम्मद शफी उन्नीस सैय्यदों के साथ मारा गया[4] और पचास आदमी इसके मित्र आदि में से घायल हुए । जब बादशाह ने यह समाचार सुना तब उक्त खाँ को बुलाकर 1000 सवार बढ़ाए और सुनहले जीन का खास तबेले का घोड़ा और खास हाथी देकर सम्मानित किया[5] तथा तीसरे वर्ष खिलअत जड़ाऊ जमधट और सोने की जीन सहित खास ब तबेले का घोड़ा और खास हल्के का हाथी देकर उसे बादशाही सेना का हरावल नियत किया, जो आज़म खाँ के अधीन

1- बादशाहनामा भाग-1 पृ॰ 255

2- मुगल दरबार भाग-3 पृ॰ 131 मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद भाग-1 पृ॰ 800

3- शाहजहाँनामा हिन्दी पृ॰ 55
मुगल दरबार पृ॰ 130

4- मासिर उल उमरा भाग-1 अंग्रेजी अनुवाद पृ॰ 792
मुगल दरबार पृ॰ 130

5- वही

खानजहाँ लोदी को दंड देने भेजी गई थी[1]। अबुल मुजफ्फर बारहा के गुणों से प्रभावित होकर उन्हें बादशाह ने खिलअत, फूलकटार सहित जड़ाऊ जमधट और सोने के साज सहित खास तबेले का घोड़ा देकर सम्मानित किया तथा उनके मनसब में एक हजारी अभिवृद्धि कर पाँच हजारी 800 सवार का कर दिया[2]। जब निजामशाही प्रान्त में बादशाही सेना पहुँची और खानजहाँ लोदी ने वहाँ ठहरने की अपना सामर्थ्य नहीं देखा और मालवा का रास्ता लिया तब उक्त खाँ, जो अपनी पुरानी सेवा और वीरता के लिए प्रसिद्ध था, खास खिलअत अच्छी तलवार और खास तबेले का कपचाक घोड़ा पाकर उसका पीछा करने को नियत हुआ[3]। अब्दुल्ला खाँ बहादुर भी अलग दूसरी सेना के साथ इसी कार्य पर नियत हुआ था और यह आज्ञा पहुँची थी कि यदि उक्त बहादुर वहाँ पहुँच जाय तो दोनों सेना मिलकर उन उपद्रवियों को नष्ट करें। सय्यद अबुल मुजफ्फर खाँ ने अकबरपुर उतार से फुर्ती से नर्बदा नदी पार कर खबर देने वालों को भेजा और मालवा के अन्तर्गत मोजा ताल गाँव में अब्दुल्ला खाँ बहादुर भी आ मिला। शाही सेना के बांधव प्रान्त के मोजा नीमी[4] पहुँचने पर उसके उस ओर

1- मुजफ्फर खाँ आजम खाँ की फौज का हरावल था, परन्तु उसके नाभि के ऊपर सूजन के कारण घोड़े पर सवार नहीं हो सकता, तब जगजीवन जर्राह उसकी दवा करने के लिए भेजा गया कि कष्ट के कम होने पर उसे दरबार लावे। जर्राह के द्वारा सूजन के चीरे जाने पर बहुत दोष पच गया, उक्त खाँ कुछ दिन दवा करने के लिए ठहर कर स्वयं दरबार आया। देखिये - शाहजहाँ नामा पृ. 60

2- मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद भाग-1 पृ. 793
मुगल दरबार पृ. 131 बादशाहनामा भाग-1 पृ. 316

3- मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद भाग-1 पृ. 793
मुगल दरबार पृ. 131

4- नीमी - जो साहिन्द से पन्द्रह कोस और इलाहाबाद के तीस कोस

जाने का पता मिला । सैय्यद मुजफ्फर खाँ, जो शाही सेना का हरावल था, पहिले उसके पास तक पहुँच कर वीरता दिखलाई । खान जहाँ लोदी कुछ आदमियों के मारे जाने पर भागा, सेना के बहादुरों ने पीछा नहीं छोड़ा और दो दिन बाद उस तक पहुँचकर फिर युद्ध आरम्भ किया । वह सैय्यद मुजफ्फर खाँ के हरावल से युद्ध कर मारा गया[1]। सैय्यद अब्दुल्ला का पुत्र तथा सैय्यद मुजफ्फर खाँ का नाती सैय्यद माखन 27 आदमियों के साथ मारे गए[2] । इसके अनन्तर उक्त खाँ ने दरबार पहुँचकर 1000 सवार बढ़ने से पाँच हजारी 5000 सवार का मनसब और 'खानजहाँ' की पदवी पाई[3]। चौथे वर्ष इसके मनसब में 1000 सवार दो अस्पा और सेह अस्पा कर दिए गए और यह यमीनुद्दौला के साथ आदिल शाह बीजापुरी को दंड देने पर नियत हुआ[4]। पाँचवें वर्ष में बादशाह की सेवा में उपस्थित होने पर इसके मनसब के एक सहस्त्र सवार और दो अस्पा सेह अस्पा नियत किए गए[5]। छठे वर्ष भी इसी प्रकार की कृपा हुई । इसके अनन्तर शाहजादा मुहम्मद शुजा के साथ परिन्दा की चढ़ाई पर गया उस कार्य में इसने बहुत प्रयत्न किए और वीरता दिखलाई । जब परिदा

1- मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद भाग-1 पृ॰ 793

2- वही

3- मासिर उल उमरा भाग-1 अंग्रेजी अनुवाद पृ॰ 793

4- वही

5- वही

की विजय करना रुक गया और शाहजहाँ की आज्ञानुसार शाहजादा दरबार की ओर चला तब सैय्यद खानजहाँ फुर्ती से आगरा सेवा में पहुँच गया[1]। आठवें वर्ष में उसके मनसब के बचे हुए सवार भी दो अस्पा सेह अस्पा हो गए[2] । इसी वर्ष विद्रोही जुझार सिंह[3] बुंदेला को दण्ड देने के लिए यह अन्य सरदारों के साथ नियत हुआ । इसके अनन्तर जब जुझार सिंह लड़ भिड़ कर बरार प्रान्त के पास देवगढ़ की ओर चला गया तब अब्दुल्ला खाँ बहादुर फिरोज जंग तथा खान दौरा इसका पीछा करने पर नियत हुए तब सैय्यद खानजहाँ आज्ञानुसार विजित प्रान्त का प्रबन्ध करने और गड़े हुए कोषों का पता लगाने के लिए चौरागढ़ के पास ठहर गया । इसके अनन्तर जब शाहजहाँ दौलताबाद की सैर करने की इच्छा से नर्वदा नदी पार कर उसके किनारे ठहरा हुआ था तब उसने सेवा में पहुँच कर सुनहले कार चोबी किए चार कपड़े का खास खिलअत, फूल कटार सहित जड़ाऊ जमधट जड़ाऊ तलवार और

1- मासिर उल उमरा भाग-1 अंग्रेजी अनुवाद पृ॰ 792
   मुगल दरबार पृ॰ 132

2- वही

3- बादशाह ने जुझार सिंह के पूर्व अपराधों को जलूस के दूसरे वर्ष (1628) में क्षमा कर दिया, तब से वह दक्षिण में नियुक्त कर दिया गया था । कुछ दिन पूर्व वह महाबत खाँ से छुट्टी लेकर अपने वतन आ गया था और अपने बेटे विक्रमाजीत को दक्षिण में छोड़ दिया। यहाँ उसने गढ़ा के जमींदार प्रेम नरायण पर चढ़ाई की और उसे मारकर चौरागढ़ का किला, उसका माल व खजाना ले लिया । अतः बादशाह ने उसके विरुद्ध सेना भेजने का निश्चय किया । विस्तृत विवरण के लिए देखिये - शाहजहाँ नामा पृ॰ 98

एक लाख रुपया नकद पुरस्कार पाया[1]। नवे वर्ष में खास खिलअत अच्छी तलवार खास तबेले का घोड़ा पाकर अन्य सरदारों के साथ बीजापुर के आदिल शाह को दंड देने भेजा गया और बीड की ओर से धरावर में पहुँचकर वहाँ लूट मार करता शोलपुर की ओर गया । रास्ते में जाते समय सेना भेजकर सराधुन विजय कर लिया । रेहान शोलापुरी की जागीर के महलों पर आक्रमण कर धारासेन[2]कस्बे में थाना स्थापित किया और बीजापुरियों से खूब लड़ाई हुई । उक्त खाँ ने स्वयं वीरता दिखलाकर हर बार शत्रुओं को परास्त किया[3]।

जब बीजापुर प्रान्त के बहुत सा भाग वीरान हो गया और बरसात आ पहुँची तब उक्त खाँ छावनी डालने की इच्छा से धारवर लौट गया । इसके उपरान्त जब आदिल खाँ ने अधीनता स्वीकार कर ली तब यह आज्ञानुसार दरबार पहुँचा । उसी वर्ष के अन्त में जब बादशाह ने आगरे की ओर जाने का निश्चय किया और दक्षिण में खान देश बरार, तैलिंगाना का बार और निजामुल मुल्क के राज्य के कुछ अंश पर शाहजहाँ मुहम्मद औरंगजेब बहादुर को नियत किया, तब सैय्यद खान जहाँ खिलअत खास पाकर तब तक के लिए शाहजादे के साथ

1- मासिर उल उमरा भाग-1 अंग्रेजी अनुवाद पृ॰ 794
मुगल दरबार पृ॰ 133

2- धारासेन - धारासयुन बादशाह नामा में कहा गया है ।

3- मासिर उल उमरा पृ॰ 794
मुगल दरबार पृ॰ 133

नियुक्त किया गया[1], जब तक खानजमाँ बहादुर जुनेर दुर्ग आदि विजय कर लौट न आवे ।

दसवें वर्ष में दरबार पहुँचकर ग्वालियर भेजा गया जो उसके अधीन था। ग्यारहवें वर्ष में यह फिर दरबार पहुँचा और जब बादशाह लाहौर की ओर जाने का विचार कर रहे थे, तब यह आज्ञानुसार अपनी जागीर के काम पर चला गया । चौदहवें वर्ष लाहौर से सेवा में पहुँचकर एक हजारी एक हजार सवार बढ़ने से इसका मनसब छः हजारी व सवार पाँच हजार सवार दो अस्पा सेह अस्पा हो गया[2]।

इसी समय राजाबासु के पुत्र राजा जगत सिंह ने विद्रोह मचाया, जिसे दण्ड देने और उसके दुर्गों को विजय करने के लिए यह ससैन्य नियत हुआ । विदा होते समय इसे खास खिलअत और खास तबेले के सोने तथा सुनहले जीन सहित दो घोड़े और हाथी तथा हथिनी और एक लाख रुपया सहायतार्थ मिला । बादशाह की आज्ञानुसार वर्षा ऋतु लाहौर में व्यतीत कर, उसके बाद वह लवान और मच्छी भवन घाटियाँ पार कर दुर्ग नूरपुर से आधा कोस पर जाकर ठहरा । मोर्चे जमाने और खान खोदने में इसने बहुत प्रयत्न किया । यद्यपि दुर्ग के कई बुर्ज टूटे, पर दुर्ग वालों ने इन बुर्जों के पीछे दीवालें खींच ली थीं, इसलिए रास्ता नहीं मिला । इस पर बादशाह की

1- मासिर उल उमरा भाग-1 अंग्रेजी अनुवाद पृ० 794
मुगल दरबार पृ० 134

2- मासिर उल उमरा भाग-1 अंग्रेजी अनुवाद पृ० 794
मुगल दरबार पृ० 134

आज्ञा आने पर दुर्ग मऊ विजय करने में बड़ी वीरता दिखलाई और बराबर युद्ध करते हुए दुर्ग वालों को ऐसा घबरा दिया कि शाही सेना दूसरी ओर से दुर्ग में घुस गई और जगत सिंह भाग गए। इसके पुरस्कार में इसे एक सहस्त्र सवार और दो अस्पे सेह अस्पे दिए गए। इसके पश्चात् राजा जगतसिंह के क्षमा प्रार्थी होने पर जब उसका दोष क्षमा कर दिया गया तब उक्त खाँ शाहजादा मुराद के साथ दरबार आया[1]।

इसी वर्ष जब ईरान के शाह के कँधार विजय करने के लिए आने का समाचार सुनाई पड़ने लगा, तब शाहजादा दाराशिकोह उसे दमन करने को नियत हुआ। खानजहाँ भी खास खिलअत, जड़ाऊ, तलवार, खास तबेले के सोने तथा सुनहले जीन सहित दो घोड़े और हाथी खास पा करके शाहजादे के साथ नियत हुआ[2]।

इसी बीच शाह शफी के मरने का समाचार मिला। सोलहवें वर्ष में उक्त खाँ को अपनी जागीर ग्वालियर जाने की आज्ञा मिली। सत्रहवें वर्ष फिर यह सेवा में उस समय पहुँचा जब शाहजहाँ अजमेर क जा रहा था। यह आगरे का अध्यक्ष बनाया गया। बादशाह के लौटने पर कुछ दिन दरबार में रहने से अनन्तर अठ्ठारवें वर्ष में जागीर जाने की इसने छुट्टी पाई[3]। सैय्यद दिलेर खाँ बारहा शाहजहाँ

1- मुगल दरबार पृ॰ 134

2- वही

3- मासिर उल उमरा पृ॰ 795 भाग-1 अंग्रेजी अनुवाद
मुगल दरबार पृ॰ 135

के समय विभिन्न अभियानों में रहा, वह ख्वाजा अबुल हसन तुर्बती के साथ संगमनेर[1] विजय करने के लिए भेजा गया[2]। चौथे वर्ष में यह आजम खाँ की सेना में नियुक्त हुआ जो परेन्दा के पास थी[3]। छठे वर्ष में 1042 हि॰ (सन् 1632-33 ई॰) में उनकी मृत्यु हो गई[4]। इनके पुत्र सैय्यद हसन को भी दरबार में अच्छा मनसब मिला। इनका मनसब 1500 सवारों का था। दूसरे पुत्र सैय्यद खलील को पाँच सदी दो सौ सवार का मनसब मिला[5]। सैय्यद हसन गुजरात अहमदाबाद में गोधरा सरकार के फौजदार तथा जागीरदार नियत हुए।

शाहजहाँ के राज्यकाल के पाँचवे वर्ष में शुजात खाँ बारहा को चार हजार पैदल व दो हजार सवार के मनसब पर नियुक्त किया और "शुजात खाँ" की पदवी दी[6]। छठे वर्ष मोहम्मद शुजा के साथ परेन्दा[7]

1- बादशाहनामा 300 इलियट भाग-7, 10
संगमनेर तथा संगमेश्वर एक ही स्थान के लिये उपयुक्त किया गया है।

2- मासिर उल उमरा पृ॰ 494, अंग्रेजी अनुवाद भाग-1
मुगल दरबार पृ॰ 47।

3- वही

4- मासिर उल उमरा पृ॰ 494 अंग्रेजी अनुवाद भाग-1
मुगल दरबार पृ॰ 47।

5- वही

6- बादशाहनामा भाग-1 पृ॰ 439, 440
मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद पृ॰ 857

7- परेंदा के विषय में देखिये - बादशाहनामा भाग-2 पृ॰ 33, 46,
खाफी खाँ पृ 102
मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद पृ॰ 857

के किले के घिराव के लिए नियुक्त हुए । इन्होंने महाबत खाँ से कहा की किसी भी तिथि को तय करके किला जीत लिया जाए, पर महाबत खाँ घेरे को जारी रखना चाहता था, परन्तु वहाँ की परेशानी देखकर शुजा ने फौजो को वापिस बुला लिया । अतः महाबत खाँ ने वापिस जाने का निर्णय कर लिया और किले की जीत न हो सकी[1]।

शासन काल के दसवें वर्ष शाहजहाँ ने सैय्यद जाफर बारहा को इलाहाबाद का सूबेदार नियुक्त किया[2]। इलाहाबाद की समस्याओं को सुलझाने में सैय्यद जाफर ने बड़ी मेहनत की[3]। 1642 ई॰ में इनका स्वर्गवास हो गया, यह बहुत अच्छे प्रवक्ता थे । शाहजहाँ इनका बहुत ध्यान रखते थे । इनके बेटे सैय्यद मुजफ्फर बारहा[4] के एक हजार पाँच सौ पैदल व आठ सौ सवार के मनसब पर नियुक्त थे, इनको हिम्मत खाँ का खिताब दिया गया[5]।

इनके दूसरे बेटे सैय्यद वनजावत खाँ एक हजार पैदल व पाँच सौ सवार के मनसब पर नियुक्त थे[6]।

1- मासिर उल उमरा पृ॰ 857

2- वही

3- वही

4- नवे वर्ष में इन्हें एक हजार पाँच सौ सवार का मनसब दिया ।

5- मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद पृ॰ 858, 859
मुगल दरबार पृ॰ 386

6- वही

सैय्यद शहाबुद्दीन शाहजहाँ के समय में आठ सौ पैदल और छः सौ सवार के मनसब पर नियुक्त किए गए[1]। उन्नीसवें साल शाहजहाँ ने मुराद बख्श के द्वारा इनका खिलअत और एक घोड़ा अपनी तरफ से प्रदान किया| ईरानियों के साथ भी यह बहादुरी से लड़े । इससे तेहरवें वर्ष इनका मनसब बढ़ाकर पन्द्रह सौ पैदल व छः सौ सवार कर दिया गया । अट्ठाइसवें वर्ष यह चित्तौड़ पर नियुक्त हुए । तीसवें साल औरंगजेब की सहायता के लिए दक्षिण गए । यहाँ दक्षिण के सैय्यद शहाबुद्दीन ने अनेकों विशेष कार्य किए । जिससे इक्कीसवें वर्ष इनका मनसब बढ़ाकर ढाई हजार पैदल व बारहा सौ सवार कर दिया गया । इनको "शेर खाँ" की उपाधि मिली । ये मन्दसोर इन्दोर के किले के फौजदार नियुक्त हुए[2]।

सैय्यद मुजफ्फर खाँ बारहा व सैय्यद लश्कर खाँ बारहा दोनों जो सैय्यद खाने जहाँ लोदी के पुत्र थे, को शाहजहाँ द्वारा एक हजारी दो सौ पचास स्वारों का मनसब देकर सम्मानित किया और हर प्रकार के दरबारी कार्य के मुतसद्दी नियत कर दिया ।

बीसवें वर्ष जब बादशाह लहोर के दुर्ग का अध्यक्ष नियुक्त हुए और जब इन दोनों युवक सैय्यदों को कुछ योग्यता और अनुभव प्राप्त हो गया तब शाही आज्ञा से उन्नति के मार्ग पर शीघ्रता से बढ़ने को

1- मासिर उल उमरा भाग-2 पृ. 375,376

2- देखिये - मासिर उल उमरा भाग-2 अंग्रेजी अनुवाद पृ. 375-76

प्रोत्साहित किए गए[1] और लहौर के दुर्ग के अध्यक्ष नियत हुए[2] । बाइसवें वर्ष बादशाह जब काबुल गया तो लहौर[3] शहर इन लोगों के निरीक्षण में पुनः छोड़ दिया[4]।

तीसरे वर्ष जब बादशाह ने एक सेना मीर जुमला के सेनापतित्व में दक्षिण के सूबेदार शाहजाद मुहम्मद औरंगजेब बहादुर के साथ बीजापुर पर भेजी, जब सैय्यद शेरजमाँ भी उस सेना में नियत हुआ[5]। अभी इस चढ़ाई का कार्य पूरा नहीं हुआ था की दारा शिकोह ने शाहजहाँ को बहका कर सहायक सेना को लौट आने की आज्ञा भेज दी[6]। बहुत से सरदारों तथा मनसबदारा ने शाहजादे से बिना पूछे समान बाँधकर हिन्दुस्तान का मार्ग लिया तथा थोड़े लोग सौभाग्य से शाहजादे की सेवा में रहने की इच्छा से दरबार नहीं गए । शेरजमाँ भी इन्हीं में से एक थे ।

1- मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद पृ॰ 355

2- मुगल दरबार पृ॰ 386

3- लहौर अमल सलीह भाग-3 पृ॰ 72

4- मुगल दरबार पृ॰ 386
मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद पृ॰ 355

5- मुगल दरबार पृ॰ 387

6- मासिर उल उमरा पृ॰ 355

जब शाहजादे ने साम्राज्य पर अधिकार करने के विचार से तैयारी की और नर्मदा नदी पार की तब उनका मनसब बढ़ा दिया गया[1] और मुजफ्फर खां[2] की पदवी पाई,* अपने पिता के नाम से सम्मानित हुए । भयानक युद्धों में शहजादे के साथ रहकर यह राज भक्त बन गए ।

सताइसवें वर्ष पुनः इनके मनसब में वृद्धि कर दी गई और दो हजार जात और सात सौ सवार का मनसब दिया । आठ्इसवें वर्ष जमाल उलमुल्क सह उल्लाह खाँ के साथ चितौड़ अभियान में गए और तीसवें वर्ष यह मुअज्जम खान के साथ दक्षिण गए । सुल्तान औरंगजेब की सेवा में अपनी योग्यता का अच्छा परिचय दिया| इनका मनसब दो हजार पाँच सौ जात और एक हजार सवार का कर दिया गया और इनको सैफ खाँ[3] का खिताब दिया और मन्दसौर का फौजदार नियुक्त किया[4]।

1- मासिर उल उमरा पृ० 356
सादते बारहा पृ० 7

2- आलमगीर नामा पृ० 47,54
मासिर उल उमरा पृ० 356

* मुगल दरबार पृ० 387

3- अमल सलीह भाग-3 पृ० 273
मासिर उल उमरा पृ० 84।

4- मासिर उल उमरा पृ० 84।

शेर खाँ सैय्यद शहब बारहा जो सैय्यद इज्जत खाँ के पुत्र थे। शाहजहाँ के काल के प्रमुख उमरा, में से थे। शाहजहाँ के काल में दसवें वर्ष में इन्हें आठ सौ जात और छः सौ सवार का मनसब दिया गया[1]। तेरहवें वर्ष पुनः इनके मनसब में दो सौ की वृद्धि कर दी गई थी[2]। शाहजहाँ के राज्यकाल के उन्नीसवें वर्ष में सुल्तान मुराद के साथ बाल्क अभियान के लिए नियुक्त किए गए थे और इस अभियान में जाते समय इन्हें और सवार दिए गए[3]। बाइसवें वर्ष में कंधार अभियान से सुल्तान मुहम्मद औरंगजेब बहादुर के साथ यह भी गये वहाँ से यह रुस्तमखान के साथ कुलीज खाँ को दबाने के लिए गए थे और ईरानियों के साथ इन्होंने वीरता से युद्ध किया। तेइसवें वर्ष में इनके मनसब में डेढ़ हजार जात और छः सौ सवार की वृद्धि कर दी गई। पच्चीसवें वर्ष पुनः इस अभियान में शहजादे के साथ गए और छब्बीसवें वर्ष पुनः सुल्तान दारा शिकोह के साथ इसी अभियान में गए।

इस प्रकार शाहजहाँ के शासन काल में भी बारहा सैय्यदों ने अपनी योग्यता, वीरता, एवम् कार्यकुशलता का प्रदर्शन किया। यद्यपि इस काल में उन्हें किसी केन्द्रीय पद की प्राप्ति नहीं हुई तथापि विभिन्न प्रान्तीय पदों पर उनकी नियुक्ति, मनसब में अभिवृद्धि इस बात की परिचायक है है कि सैय्यदों की उन्नति का क्रम बना रहा।

1- मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद पृ० 84।

2- वही

3- वही

1- सैय्यद खान जहाँ बारहा - ग्वालियर का दुर्गाध्यक्ष[1] आगरे का अध्यक्ष[2] ।

2- सैय्यद दिलेर खाँ बारहा - बड़ौदा का फौजदार[3]

3- सैय्यद शुजात खाँ बारहा - इलाहाबाद का सूबेदार[4]

4- सैय्यद शाहबुद्दीन - मन्दसौर इन्दौर के किले का फौजदार[5]।

5- सैय्यद मुजफ्फर खाँ बारहा - लहौर के दुर्ग के अध्यक्ष[6]
सैय्यद लश्कर खाँ बारहा

6- शेर खाँ सैय्यद शहाब बारहा - मन्दसौर का फौजदार[7]

1- मासिर उल उमरा भाग-। अंग्रेजी अनुवाद पृ॰ 78।
मुगल दरबार भाग-3 पृ॰ 129

2- वही

3- मासिर उल उमरा भाग-। अंग्रेजी अनुवाद पृ॰ 493
मुगल दरबार पृ॰ 47।

4- मासिर उल उमरा पृ॰ 859

5- मासिर उल उमरा पृ॰ 859

6- वही

7- सादते बारहा पृ॰ ।

शाहजहाँ के काल में सैय्यदों द्वारा प्राप्त विशिष्ट पद, पुरस्कार व मनसब

नाम	वर्ष	विशिष्ट पद व पदवी	मनसब जात/सवार	अन्य पुरस्कार	ऐतिहासिक स्रोत
खान जहाँ बारहा दिलेर खाँ बारहा	1	ग्वालियर का दुर्गाध्यक्ष	4000/3000	झंडा, डंका सुनहले जीन सहित खास तबेले का घोड़ा	शाहजहाँनामा (हिन्दी) पृ. 47 मुगल दरबार भाग-3 पृ. 129
	3	बादशाही सेना का हरावल		खिलअत जड़ाऊ जमधट सोने की जीन सहित खास तबेले का घोड़ा	बादशाहनामा भाग-1 पृ. 117 मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद भाग-1 पृ. 792
	4	-	5000/4000	खिलअत, फूलकटारा सहित जड़ाऊ जमधट सोने के साज सहित घोड़ा	बादशाहनामा भाग-1 पृ. 255 मुगल दरबार भाग-3 पृ. 129 मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद भाग-1 पृ. 792
		खाने जहाँ की पदवी	5000/5000		बादशाहनामा भाग-1 पृ. 316 मुगल दरबार भाग-3 पृ. 129
	5		5000/5000		मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद भाग-1 पृ. 792

नाम	वर्ष	विशिष्ट पद व पदवी	मनसब	अन्य पुरस्कार	ऐतिहासिक स्त्रोत
खाने जहाँ बारहा	8	-	5000/5000 2 - 3 अस्पा	-	मुगल दरबार पृ॰ 132
	-	-	-	सुनहले कार चोबी किए हुए चार कपड़े का खास खिलअत फूल कटारा सहित जड़ाऊ जमधट जड़ाऊ तलवार एक लाख रुपया नकद	मुगल दरबार पृ॰ 132
	9	-	-	खास खिलअत अच्छी तलवार खास तबेले का घोड़ा	वही
	14	-	1000 सवार बढ़कर 6000/5000 दो अस्पा सेह अस्पा	-	वही
	17	आगरे का अध्यक्ष	-	सहल सवार और दो अस्पा सेह अस्पा	वही
		-	6000/6000 2 - 3 अस्पा	-	शाहजहाँ नामा (हिन्दी) पृ॰ 302

नाम	वर्ष	विशिष्ट पद व पदवी	मनसब	अन्य पुरस्कार	ऐतिहासिक स्रोत
सैय्यद दिलेर खाँ बारहा	1	-	4000/500	खिलअत जड़ाऊ खंजर डंका निशान हाथी	मुगल दरबार भाग-1 मासिर उल उमरा भाग-1 अंग्रेजी अनुवाद पृ. 472
	3	-	500 सवार की वृद्धि	-	वही
सैय्यद हसन (पुत्र)	-	-	1500 सवार	-	वही
	-	गोंडस सरकार का फौजदार तथा जागीरदार	-	-	वही
सैय्यद खलील (पुत्र)	-	5 सदी 200 सवार	-	-	वही

नाम	वर्ष	विशिष्ट पद व पदवी	मनसब	अन्य पुरस्कार	ऐतिहासिक स्रोत
सैय्यद जाफर खाँ या शुजात खाँ बारहा	5	"शजात खाँ"	4000/2000	-	बादशाहनामा भाग-1 पृ.439,440 मासिर उल उमरा पृ. 857
	10	इलाहाबाद का सूबेदार	-	-	मासिर उल उमरा पृ. 857
सैय्यद मुजफ्फर बारहा (पुत्र)	-	हिम्मत खाँ	1500/800	-	मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद पृ. 858-859
सैय्यद वनजावत खाँ	-	-	1000/500	-	वही

नाम	वर्ष	विशिष्ट पद व पदवी	मनसब	अन्य पुरस्कार	ऐतिहासिक स्रोत
शहाबुद्दीन बारहा	-	-	800/600	-	सादते बारहा पृ. 3
	13	-	1500/600	-	वही
	19	-	-	खिलअत व एक घोड़ा प्रदान किया	वही
	21	शेर खाँ	2500/1200	-	वही
	21	इन्दौर मन्दलोर	-	-	वही

नाम	वर्ष	विशिष्ट पद व पदवी	मनसब	अन्य पुरस्कार	ऐतिहासिक स्रोत
सैय्यद मुजफ्फर व सैय्यद लश्कर बारहा	–	–	1000/250	–	मासिर उल उमरा पृ. 355 मुगलदरबार पृ. 386
	20	लहौर के दुर्ग के अध्यक्ष	–	–	वही
	22	पुन: लहौर के दुर्ग के अध्यक्ष	–	–	वही
		"मुजफ्फर खाँ"	–	–	वही

नाम	वर्ष	विशिष्ट पद व पदवी	मनसब	अन्य पुरस्कार	ऐतिहासिक स्त्रोत
शहाब बारहा	10	-	800/600	-	मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद पृ. 841
	13	-	200/200 की वृद्धि	-	वही
	19	-	1000/800	आदर सूचक वस्त्र सवार	वही
	23	-	1500/600	-	वही
	28	-	200/700 की वृद्धि	-	वही
	-	-	2500/100	-	वही
	-	शेख खाँ	-	-	अमले सालेह भाग-3 पृ. 272 मासिर उल उमरा पृ. 841
	-	मन्दसौर का फौजदार	-	-	वही

अध्याय - 5

शाहजहाँ के राज्यकाल के अन्तिम वर्ष एवं सैय्यदों की भूमिका

1658 में शाहजहाँ गम्भीर रूप से रूग्ण हो गया और शीघ्र ही उसके पुत्रों में उत्तराधिकार के लिए संघर्ष छिड़ गया । उत्तराधिकार सम्बन्धी इस युद्ध में सैय्यद वंशीय व्यक्तियों में अधिकांश दारा के सहयोगी रहे । ऐसा ज्ञात होता है कि वास्तव में उनका सहयोग शाही सत्ता के प्रति था न कि व्यक्तिगत रूप से दारा के प्रति । कुछ सैय्यदों ने अवश्य शुजा व औरंगजेब का साथ दिया ।

दारा का साथ देने सैय्यद वंशीय व्यक्तियों में सैय्यद कासिम बारहा[1], सैय्यद शेर खाँ बारहा[2], सैय्यद सलावत खाँ बारहा[3], सैय्यद मसूद बारहा[4], सैय्यद सालार बारहा[5], सैय्यद नजाबत बारहा[6]

1- आलमगीरनामा पृ० 126, मासिर उल उमरा भाग-2 पृ०6883
फारसी मासूरी 100 अकील खान पृ० 101, हातिम खान पृ० 54,66

2- आलमगीरनामा पृ; 65,95 हातिम खान पृ० 119,299,
मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद भाग-2 पृ० 667,668

3- हातिम खान पृ० 47, आलमगीरनामा पृ० 170

4- आलमगीरनामा पृ० 207,268

5- हातिम खान पृ० 21, आलमगीरनामा पृ० 65

6- आलमगीरनामा पृ० 96, हातिम खान पृ० 290

सैय्यद गैरत खाँ बारहा[1], सैय्यद मुनव्वर बारहा[2], सैय्यद मकबूल आलम बारहा[3], सैय्यद आयन बारहा[4], सैय्यद नाहर खाँ बारहा[5] थे ।

शुजा के समर्थकों में सैय्यद कासिम बारहा[6], सैय्यद आलम बारहा[7], नुरूल हसन बारहा[8], थे । मुराद के समर्थकों में सैय्यद हसन बारहा[9], सैय्यद शेखन बारहा[10], सैय्यद मंसूर बारहा[11], आदि थे ।

1- मामुरी 18 "ब" आलमगीरनामा पृ॰ 178, 180

2- आलमगीरनामा पृ॰ 96, हातिम खान पृ॰ 29ब

3- आलमगीरनामा पृ॰ 96, हातिम खान पृ॰ 29ब

4- वही

5- मामुरी पृ॰ 99, हातिम खान पृ॰ 32 ब, आलमगीरनामा पृ॰ 104

6- हातिम खान पृ॰ 54ब, आलमगीरनामा पृ॰ 250,257,303

7- आलमगीरनामा पृ॰ 239,257, 258, बादशाहनामा पृ॰ 11,727 अकील खान पृ॰ 103, 129

8- आलमगीरनामा पृ॰ 499,504, बादशाहनामा भाग-2 पृ॰ 738 अकील खान पृ॰ 124

9- आलमगीरनामा पृ॰ 139, 140

10- आलमगीरनामा पृ॰ 107, हातिम खान पृ॰ 33, बादशाहनामा पृ॰ 117 फुतुहाते आलमगीरनामा अंग्रेजी अनुवाद पृ॰ 23

11- आलमगीरनामा पृ॰ 139,140, फुतुहाते आलमगीर अंग्रेजी अनुवाद पृ॰ 23, हातिम खान पृ॰ 41

औरंगजेब के समर्थकों में सैय्यद शेर जमाँ बारहा[1] तथा इरादत खाँ बारहा थे[2]।

शेर खाँ सैय्यद शिहाब बारहा, जिन्हें 'शेर खाँ' की पदवी मिली थी[3], प्रारम्भ में दारा के साथ थे, परन्तु जब दारा की पराजय हो गई और वह भाग निकला तो खजवा के युद्ध में जो शुजा तथा औरंगजेब के मध्य हुआ था, शेर खाँ ने औरंगजेब का साथ दिया[4]।

शाहजहाँ के राज्य काल के तीसवें वर्ष जब शाहजादा मुहम्मद औरंगजेब बीजापुर अभियान के लिए भेजा गया था तो शेर जमाँ भी उसके साथ था[5]। अभियान पूर्ण होने से पूर्व ही शाही सेना को वापस आने का शाही आदेश मिला । अतः बहुत से मनसबदार बिना शाहजादे औरंगजेब के अनुमति लिए वापस आ गये[6]। परन्तु शेर जमाँ औरंगजेब के ही साथ रहा और जब औरंगजेब ने साम्राज्य प्राप्ति की लालसा से तैयारी की व नर्वदा नदी पार की, तो शेर जमाँ के मनसब में अभिवृद्धि

1- मासिर उल उमरा भाग-2 अंग्रेजी अनुवाद पृ॰ 84।
आलमगीरनामा पृ॰ 47, 54, 61, 92
हातिम खान पृ॰ 14अ 18, 289

2- मामूरी पृ॰ 98ब

3- अमले सालेह भाग-3 पृ॰ 272 , मासिर उल उमरा भाग-2 अं॰अनु॰पृ॰84

4- आलमगीरनामा पृ॰ 115
मासिर उल उमरा भाग-2 पृ॰ 84। अंग्रेजी अनुवाद

5- मासिर उल उमरा भाग-2 पृ॰ 355, आलमगीरनामा पृ॰ 29

6- वही

की गई व उसे अपने पिता की ही भाँति मुजफ्फर खाँ की पदवी प्राप्त हुई[1]। भयानक युद्धों के हरावली में रह कर वह दृढ़ राजभक्तों का अग्रणी बन गया[2]।

सैय्यद आलम बारहा[3] शुजा के समर्थकों में से था । सैय्यद आलम ने शुजा की ओर से दोनों ही युद्धों में भाग लिया । दूसरा युद्ध जो बंगाला की सीमा पर हुआ था, उसमें आलम बारहा की कठिनाई से प्राण रक्षा हुई । तत्पश्चात् जब शुजा ने अराकान की ओर प्रस्थान किया तो बारहा के दस सैय्यदों व बारहा मुगल सेवकों के सिवा उसके साथ कोई भी शेष न रहा था[4]।

शहमत खान सैय्यद कासिम बारहा प्रारम्भ में दारा शिकोह की सेना में थे तथा दारा की ओर से इलाहाबाद सूबे की देख-रेख किले में रहकर करते थे[5]। जब दारा शिकोह पराजय के पश्चात् पंजाब गये तब, औरंगजेब ने खान दौरान सैय्यद को इलाहाबाद किले की विजय के लिए नियुक्त किया[6]। मुहम्मद शुजा ने औरंगजेब से संधि के अनुसार बिहार सूबे का शासन ग्रहण कर लिया तथा मुहम्मद शुजा ने रोहतास तथा चुनार के किलों को दारा शिकोह के निर्देशानुसार अपने अधिकार में कर लिया[7]।

1- आलमगीरनामा पृ॰ 47,54
मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद भाग-2 पृ॰ 356

2- मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद भाग-2 पृ॰ 356

3- अमले सालेह भाग-3 पृ॰ 325, आलमगीरनामा पृ॰ 239 से 252
बादशाहनामा भाग-2 पृ॰ 727

4- यद्यपि मासिर उल उमरा भाग-1 में पृ॰ 177 अंग्रेजी अनुवाद में 10 सैय्यदों का उल्लेख किया गया है, तथापि सैय्यद आलम बारहा के अतिरिक्त अन्य नामों का उल्लेख नहीं मिलता ।

5- मासिर उल उमरा भाग-2 अंग्रेजी अनुवाद पृ॰ 730

6- वही

7- वही

इस समय औरंगजेब पंजाब में दारा शिकोह का पीछा कर रहे थे । सैय्यद कासिम शुजा के साथ युद्ध क्षेत्र में थे । परन्तु उनकी पराजय के पश्चात् सैय्यद इलाहाबाद वापिस आ गये । मुहम्मद शुजा के आने के पश्चात् उन्होंने किले का समर्पण करने से मना कर दिया । जब उन्हें मुहम्मद सुल्तान तथा मुअज्जम जो मुहम्मद शुजा का पीछा करने के लिए नियुक्त किए गये थे के अग्रसर होने की सूचना मिली तब उन्होंने खान दौरान से संधि कर उन्हें किले को समर्पित कर दिया[1]। राजा की आज्ञानुसार पहले वर्ष में वे आदर देने के हेतु दरबार गये । वहाँ पर उनको 1000 घुड़सवारों के साथ 3000 का पद द्वारा सम्मानित किया गया[2] तथा उन्हें "शहामत खान" की उपाधि से विभूषित किया[3]। दूसरे वर्ष ये राजनीन के थानेदार नियुक्त हुए[4]। चौथे वर्ष ये काबुल के सूबे पर नियुक्त किये गये[5]। छठे वर्ष इन्हें पुनः उन्नति दी गई तथा काबुल के किले की देखरेख के लिए नियुक्त किए गए[6]। इस देश में यह बहुत समय तक रहे । चौबीसवें वर्ष में इनकी मृत्यु हो गई[7]। इनके भाई

1- मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद भाग-2 पृ. 730
आलमगीरनामा पृ. 285, 286

2- मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद भाग-2 पृ. 730
आलमगीरनामा पृ. 303,304

3- वही

4- वही

5- मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद पृ. 731

6- आलमगीरनामा पृ. 341, मासिर उल उमरा पृ. 731

7- वही

के पुत्र नुसरत यार खान बारहा , मुहम्मद शाह के समय ऊँचे मनसब पर नियुक्त थे ।

सैय्यद मंसूर खाँ बारहा भी सैय्यद खान जहाँ शाह जहानी के पुत्र थे । यह युवा मनसबदार और जागीरदार थे[1]। जब शाहजादा मुराद बख्श गुजरात का प्रांताध्यक्ष नियत हुआ, तब सैय्यद मंसूर को इनके साथ कर दिया कि वहीं से यह मक्का जाकर अपने दोषों की क्षमा याचना करें । तीसवें वर्ष में वहाँ से लोटने पर शाहजादे की प्रार्थना पर इसे एक हजारी चार सौ सवार का मनसब देकर गुजरात में नियुक्त कर दिया[2]।

पुनः शाहजादें के साथ महाराजा जसवंत सिंह के युद्ध में तथा दारा शिकोह की प्रथम लड़ाई में प्रयत्न करने से इनका मनसब बढ़ा और "खाँ" की पदवी मिली[3]।

जब मुरादबख्श आलमगीर बादशाह के द्वारा बन्दी बना लिया गया तब इन्हें तीन हजारी डेढ़ हजार सवार का मनसब मिला और यह खलीलुल्ला खाँ के साथ भेजा गया जो दाराशिकोह का पीछा करने पर नियत हुआ था[4]।

1- मुगल दरबार पृ० 189

2- वही

3- वही

4- मुगल दरबार पृ० 190 {इसके बाद इनका कोई वर्णन नहीं मिलता}

सैय्यद मुनव्वर बारहा ने जो सम्राट की सेवा में था, दारा-शिकोह के विरुद्ध युद्ध में भाग लिया तथा उनकी नियुक्ति वाम भाग में थी, जिनमें मुख्यतः सैय्यद अंग रक्षक थे ।

सैय्यद सलावत खाँ बारहा जिनका नाम सैय्यद सुल्तान था तथा इख्तियास खान की पदवी प्राप्त की थी[1], दारा के कृपा पात्र थे । चौबीसवें वर्ष में उनकी नियुक्ति पंजाब सूबे में राजकुमार दारा के प्रति-निधि के रूप में हुई थी[2]। इसी वर्ष उन्हें चार सौ घुड़सवारों के साथ दो हजार का पद दिया गया और सलावत खाँ की उपाधि भी दी गई[3]। इनका स्थानान्तरण राजकुमार की सलाह पर इलाहाबाद सूबे में प्रतिनिधि राज्यपाल के रूप में हुआ[4]। एक लम्बे समय तक सूबे की देखभाल की तथा बहुत से विरोधियों का दमन किया ।

पच्चीसवें वर्ष[5] में इनको एक ध्वज प्रदान किया गया । सत्ताइसवें वर्ष में इनका पद लगातार बढ़ते हुए पन्द्रह सौ घुड़सवारों के साथ दो हजार पहुँच गया तथा इनको नगाड़ा भी प्रदान किया गया[6]।

1- मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद पृ० 699
ये सैय्यद बायजीद के पुत्र थे जो सैय्यद हाशिम के पुत्र थे । सैय्यद हाशिम प्रसिद्ध सैय्यद महमूद खान कुन्डली वाले के पुत्र थे ।

2- मासिर उल उमरा पृ० 699

3- मासिर उल उमरा पृ० 700

4- मासिर उल उमरा पृ० 699

5- वही
अमले सालेह भाग-3 पृ० 235

6- मासिर उल उमरा पृ० 699

तीसवें वर्ष में सैय्यद सलाबत ख़ाँ बारहा ने इलाहाबाद के निकटवर्ती बन्धू के जमींदार अनूप सिंह से संधि की तथा उनके निर्देशन से अनूपसिंह ने राज सेवा स्वीकार की[1]। राज्य के इक्तीसवें वर्ष में दारा शिकोह के बड़े लड़के सुलेमान शिकोह ने एक बड़ी सेना के साथ शुजा के विरूद्ध कूच कर दिया । शुजा सम्राट शाहजहाँ की बीमारी के विषय में सुनकर एक विशाल शक्तिशाली सेना के साथ बंगाल से आगरा के लिये चल दिये थे । हालाँकि दूतों ने सम्राट के ठीक होने की सूचना राजकुमार शुजा को दी, तथापि उसने इस सूचना पर ध्यान न दिया तथा इसके लिये अपने बड़े भाई को दोषी ठहराया । दारा शिकोह ने बिना सूझबूझ के अपने सभी प्रमुख व्यक्तियों को सुलेमान शिकोह के साथ भेज दिया[2]। उसने सैय्यद सलाबत ख़ाँ तथा अनेक सैय्यदों को जिनकी वीरता पर उसको पूर्ण विश्वास था को भी भेज दिया । उसके पश्चात् दारा शिकोह की जब युद्ध में आलमगीर से पराजय हुई तो सुलेमान शिकोह यह जानकर आश्चर्य चकित हुए तथा इलाहाबाद में अपने पिता के अधिकारियों की एक सभा बुलाई । परन्तु दुर्भाग्यवश कोई निष्कर्ष न निकलने पर बारहा के सैय्यदों ने अपनी सलाह दी जिसके अनुसार सुलेमान शिकोह को पहले चाँदपुर मदीना जाना था, उसके पश्चात् पारनीह तथा सहारनपुर तथा वहाँ से पंजाब होते हुए अपने पिता से लाहौर में मिलना था । लखनऊ से आगे जाने पर युद्ध की एक टुकड़ी मदीना के करोरी से मालगुजारी

1- मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद पृ. 700
अमले सालेह भाग-3 पृ. 231

2- मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद पृ. 700
अमले सालेह भाग-3 पृ. 278

एकत्रित करने के लिए भेजी गई[1]। जब करोरी ने इसका विरोध किया तब सुलेमान शाह की आज्ञा से सेना ने करोरी के परिवार एवं सम्पत्ति पर धावा बोल दिया। करोरी तथा उसके पुत्र को बन्दी बनाया गया तथा सेना ने जान माल को भी क्षति पहुँचाई। सैय्यद सलाबत खान ने अपनी सूझबूझ तथा पूर्वज्ञान से यह निश्चित किया कि सुलेमान शिकोह के साथ जाना बुद्धिमानी न होगी तथा उसने वहाँ से भागकर आलमगीर की सेना का साथ दिया[2]। आलमगीर ने जब दारा शिकोह का पीछा करते हुए नियास नदी को पार किया उसी समय सैय्यद सलाबत खान उससे मिल गया तथा दो-तीन दिनों में ही अपने सौभाग्यवश हुसामउद्दीन खान के बाद बरार का राज्य पाल बनने का अवसर मिल गया[3]। शेरखान सैय्यद शिहाब बारहा सैय्यद इज्जत खान के पुत्र थे[4]।

सत्ताइसवें वर्ष में इनकी दो हजार पैदल तथा सात सौ घुड़सवारों की पदोन्नति की गई[5]। अट्ठाइसवें वर्ष में ये जुम्लत उल मुल्क सादुल्ला खाँ के साथ चितौड़ के किले की दुर्ग रचना के विनाश के लिए गये तथा तीसवें

1- मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद पृ॰ 700

2- मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद पृ॰ 700

3- वही ﴾ यह नहीं विदित है कि इसके पश्चात् उनका क्या हुआ ﴿

4- इनका विस्तृत विवरण चौथे अध्याय के पृ॰ ? में किया गया है।

5- मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद भाग-2 पृ॰ 84।

वर्ष में वे मुअज्जम खान के साथ दक्षिण गए । जहाँ उन्हें औरंगजेब के साथ कार्य करने का सौभाग्य मिला[1]। इक्तीसवें वर्ष में उनका मनसब बढ़ाकर बारह सौ घुड़सवार तथा ढाई हजार पैदल कर दिया गया तथा उनको "शेरखान" की उपाधि प्रदान की गई[2]। मन्दसौर के फौजदार बनकर उनकी जीवन क्रिया चरम उत्कर्ष पर पहुँची । सामूगढ़ के युद्ध में वह दारा शिकोह के साथ थे, परन्तु उनकी हार के पश्चात् उन्होंने औरंगजेब के यहाँ शरण ली[3]। सुल्तान शुजा के साथ युद्ध में आपने तथा जुल्फिकार खान मुहम्मद ने अग्न्यस्त्रों में प्रमुख भाग लिया[4]।

इस प्रकार सैय्यदों का प्रभाव दिन प्रति दिन बढ़ता जा रहा था ।

1- मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद भाग-2 पृ॰ 84।

2- मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद पृ॰ 84।
अमले सालेह भाग-3 पृ॰ 272

3- मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद पृ॰ 84।
आलमगीरनामा पृ॰ 115

4- खजवा के युद्ध में आलमगीरनामा पृ॰ 245
मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद पृ॰ 84।

औरंगजेब के राज्य काल का आरम्भ व सैय्यदों का क्रिया कलाप

औरंगजेब 21 जुलाई सन् 1658 में सिंहासन पर बैठा, लेकिन उसके सिंहासनारोहण की रीतिविधि 5 जून सन् 1659 को ही हुई । उसने अब्दुल मुजफ्फर महीउद्दीन मोहम्मद औरंगजेब बहादुर आलमगीर बादशाह-ए-गाजी का विरुद धारण किया[1]।

बहादुरपुर[2], धरमत[3] तथा सामूगढ़[4] के युद्धों के पश्चात् उत्तराधिकार के इस युद्ध में औरंगजेब का समर्थन कुछ ही सैय्यदों ने किया था तथापि उसके राज्यारोहण के पश्चात् तथा पूरे राज्य काल में सैय्यदों के पदों व मनसबों पर नियुक्ति इस तथ्य को इंगित करती है कि औरंगजेब को सैय्यदों की स्वामी भक्ति व उनकी वीरता के गुणों का पूर्ण आभास था । साथ ही कुछ सैय्यदों ने युद्ध के मध्य में ही औरंगजेब के साथ सहयोग कर लिया था । अतः औरंगजेब ने उनके पूर्ववर्ती कार्यों पर दृष्टि न डाल कर उन्हें अपना कृपा पात्र बना लिया था । सम्भवतः वह यह भी समझता

1- सरकार कृत शार्ट हिस्ट्री आफ औरंगजेब पृ० 95,96

2- उत्तराधिकार संबंधी युद्ध के विस्तृत विवरण के लिए देखिये -सरकार कृत शार्ट हिस्ट्री आफ औरंगजेब पृ० 43,54

3- वही पृ: 57, 59

4- वही पृ० 62,63

था कि उत्तराधिकार युद्ध में जिन सैय्यदों ने दारा का साथ दिया था वह वास्तव में शाही सत्ता के समर्थक थे, राजकुमार विशेष के नहीं । साथ ही उच्च वंशीय होने के नाते वह उन्हें आदर व कृपा का पात्र समझता था । इसका आभास उसकी वसीयत से भी मिलता है[1]। परन्तु उनके उच्च पदों पर नियुक्त न किये जाने में ऐसा भी ज्ञात होता है कि औरंगजेब उनकी ओर से पूर्णतः निशंक नहीं था, सम्भवतः उसे भय था कि अधिक शक्तिशाली होने पर सैय्यद स्वयं सत्ता प्राप्त करने का प्रयास न करें[2]।

1- "बारहा के सैय्यद पूज्य हैं, एवं उनके प्रति तुम्हारा वर्ताव कुरान की इस आयत के अनुसार होना चाहिए । पैगम्बर के निकट सम्बन्धियों को उनके अधिकार के अनुसार सब कुछ दो । पुनः उनका आदर करने तथा उनके प्रति कृपा दिखाने में कभी ढिलाई न करो, पवित्र आयत में लिखा है " मैं कहता हूँ कि इसके लिए बदले में(मेरे) सम्बन्धियों के प्रति प्रेम के सिवाय मैं तुमसे और कुछ नहीं चाहता तदनुसार उस घराने के प्रति स्नेह (मुहम्मद साहब) के पैगम्बर का उपहार मात्र है एवं उनके प्रति वह प्रदर्शित करने में भूल न करो और उसका फल तुम्हें इस लोक तथा परलोक दोनों में ही मिलेगा ।"

2- "बारहा के इन सैय्यदों के साथ अपने व्यवहार में तुम्हें पूरी-पूरी सावधानी बरतनी चाहिए । हृदय में उनके प्रति पूरा प्रेम रखो किन्तु प्रत्यक्ष रूप में कभी उनको ऊँचा पद न दो, क्योंकि एक बार शासन में पूर्ण शक्ति प्राप्त कर लेने के बाद स्वयं सम्राट बनने की इच्छा होने लगती है । यदि कभी तुमने यत्किंचित् भी उनके हाथ में शासन सौंपा तो उसका परिणाम तुम्हारा अपमान होगा"। देखिये -सरकार कृत एनेक्डोटस आफ औरंगजेब पृ० 50

"बारहा के सैय्यदों के प्रति शासन में ढील देना अपनी बरबादी करना है, क्योंकि ये लोग जरा सी ढिलाई पर अहंकारी हो जाते हैं और हम चुनी दीगरे नीस्त (हमारे जैसा दूसरा नहीं) कहावत को चरितार्थ करने लगते हैं और आज्ञाकारिता के मार्ग से विचलित होकर अतिक्रमण करने लगते हैं"। देखिये (अहकाम-ए- आलमगीरी) सरजदुनाथ सरकार द्वारा सम्पादित पृ० 32

सैय्यद मुनव्वर ख़ाँ बारहा ने औरंगजेब के समय में ऊँचा पद प्राप्त किया था, इन्हें 'ख़ान' का ख़िताब प्रदान किया गया और इन्हें दक्षिण अभियानों के लिए नियुक्त किया गया । शिवाजी के साथ युद्धों में सैय्यद मुनव्वर जयसिंह के साथ रहकर युद्ध करते थे[1]। इन्होंने शत्रुओं का सामना सफलता पूर्वक किया । दसवें वर्ष यह अफसरों की गिनती में नियुक्त हुए थे, जो मोहम्मद मुअज्ज़म के गर्वनर होने के समय में थे ।

बारहवें वर्ष यह ग्वालियर के फौजदार के पद के लिए नियुक्त हुए[2] तथा जलालपुर ढनुआ के फौजदार नियुक्त हुए थे[3]। थोड़े समय के लिए यह आगरे के गर्वनर नियुक्त हुए थे[4]। परन्तु यहाँ की स्थिति यह सम्भाल न सके और इन्हें इस पद से हटा दिया गया और फिर यह बुहरानपुर के कार्य कलापों को देखने के लिए नियुक्त हुए[5]। इसी के पश्चात इन्हें 'लश्कर ख़ाँ' की पदवी मिली[6]। बत्तीसवें वर्ष यह बीजापुर के राज्यपाल

1- मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद पृ० 356
आलमगीरनामा पृ० 47,54

2- मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद पृ० 356

3- मासिर ए आलमगीरी पृ० 163
मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद पृ० 356

4- मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद पृ० 356

5- मासिर-ए-आलमगीरी पृ० 163
मासिर उल उमरा पृ० 356

6- मासिर-ए-आलमगीरी पृ० 314
मासिर उल उमरा पृ० 356

नियुक्त हुए । इनके पुत्र वजीहउद्दीन अली खाँ किले के सेना नायक नियुक्त हुए[1]। सैय्यद दलेर खाँ बारहा ने भी औरंगजेब के काल में अनेक अभियानों में भाग लिया। यह औरंगजेब के काल में बड़ौदा की फौजदारी पर नियुक्त हुए थे[2]। परन्तु शाहजहाँ और औरंगजेब से नोक-झोंक हो जाने के कारण बड़ौदा की फौजदारी पर ख्वाजा अब्दुल्ला खाँ को नियुक्त किया[3] गया। औरंगजेब ने अपने राज्यकाल में दलेर खाँ के मनसब में चार हजार पाँच सौ के सवार बढ़ा दिए[4] और खिलअत मुरसा खन्जर अलम व नक्कारा और एक सुन्दर हाथी प्रदान किया[5]।

औरंगजेब के राज्य के तीसरे वर्ष में जब बादशाह गुजरात में था, तो इनके मनसब में पाँच सौ की बढ़ोत्तरी हुई और ख्वाजा अबुल हसन के साथ मिलकर सागमनेर[6] पर कब्जा किया । चौथे वर्ष इन्होंने आलम खाँ जो परेन्दा में था, वहाँ तैनात कर स्वयं अपने कस्बे में चले गए । सन् 1046 हिजरी में इनकी मृत्यु हुई[7]।

1- मासिर उल उमरा पृ० 356
मासिर-ए-आलमगीरी पृ० 328,329

2- मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद भाग-1 पृ० 493

3- वही पृ० 494

4- वही

5- वही

6- सागमनेर को सामेश्वर भी कह सकते हैं ।
बादशाहनामा भाग पृ० 300 इलियट 7 पृ० 10
मासिर उल उमरा पृ० 494

7- मासिर उल उमरा पृ० 494

औरंगजेब के राज्य काल में सैय्यद अब्दुल्ला खाँ, जिन्हें सैय्यद मियाँ भी कहते हैं, ने अनेक महत्त्वपूर्ण अभियानों में भाग लिया । पहले यह शाह आलम बहादुर की सेवा में था, परन्तु अपने राज्य काल के छब्बीसवें वर्ष में औरंगजेब ने इसे एक हजारी छः सौ सवार का मनसब दिया[1]।

अट्ठाइसवें वर्ष में उक्त शाहजादे के साथ हैदराबाद के शासक अबुल हसन को दंड देने पर नियत होकर युद्ध में अच्छा कार्य किया और इस युद्ध में यह घायल भी हुए । जब शत्रु शाहजादे के दीवान वृंदावन को घायल कर उसके हाथी को हाँकते हुए ले जा रहे थे, तब अब्दुल्ला खाँ ने उन पर धावा किया और उन्हें पराजित कर वृंदावन को छुड़ा लिया । बीजापुर के घेरे में शाहजादा पर उसके पिता को शंका हुई और उसके बहुत से साथी हटा दिए गए । इसी के साथ अब्दुल्ला खाँ के लिए फर्मान निकला और यह कैद कर लिया गया । परन्तु रूहुल्ला खाँ के कहने से यह छोड़ दिया गया ।

गोलकुण्डा के घेरे के समय जब रूहुल्ला खाँ बीजापुर बुलाए गए तब अब्दुल्ला खाँ इसका नायब होकर आया और कुछ दिन बाद यहाँ का अध्यक्ष बनाया गया ।

बत्तीसवें वर्ष जब यह समाचार मिला कि शंभा भोंसला का भाई रामा राहिरीगढ़ से भाग गया जिसे जुल्फिकार घेरे हुए था और जिसने पूर्वोक्त शासक अबुल हसन के राज्य में शरण लिया है तब अब्दुल्ला खाँ को

1- मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद भाग-1 पृ० 79
फतुहात-ए आलमगीरी पृ० 160

आदेश मिला कि उसे खोज कर कैद कर ले । अब्दुल्ला खाँ ने बहुत प्रयत्न किए फिर भी रामा निकल भागा[1]। इतनी सेना के बावजूद भी बादशाह इससे प्रसन्न नहीं हुआ और इसे बीजापुर से हटा दिया[2]।

औरंगजेब के समय में सैय्यद मियाँ ने बीजापुर तथा अजमेर के सूबेदार के रूप में भी कार्य किया[3]। सैय्यद मियाँ के दोनों बड़े पुत्र हुसेन अली तथा सैय्यद अब्दुल्ला खाँ अपनी वीरता से औरंगजेब के शासन काल में ही प्रसिद्ध हो चुके थे और प्रभाव शाली अमीरों में अपना स्थान बना चुके थे[4]। सन् 1700 ई0 में सैय्यद अब्दुल्ला खाँ ने मराठा सरकार हनुमन्त से युद्ध करके उसके पड़ाव को लूटा और उसके भाजे जानोजी को बन्दी बना कर उसे मुसलमान होने के लिए बाध्य किया । इससे प्रसन्न होकर औरंगजेब ने दो खिलअत एवं कटारे उसे भेजी, किन्तु मनसब में वृद्धि के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया[5]। औरंगजेब के समय सैय्यद अब्दुल्ला नन्दौरबार और

1- मासिर उल उमरा हिन्दी अनुवाद पृ० 150

2- वही

3- चिंतन शोध वार्षिकी पृ० 35

4- शाह नवाज खाँ, मासिर उल उमरा अनु० भाग-2 पृ० 481,491

5- सतीशचन्द्र पृ० 88

सुल्तानपुर का फौजदार नियुक्त हुआ था[1] और इनका छोटा भाई हुसैन अली खाँ प्रारम्भ में रणथम्भोर तथा बाद में हिण्डौना व बयाना का फौजदार रहा[2]। इस प्रकार औरंगजेब के काल में भी सैय्यद निरन्तर प्रगति की ओर बढ़ते जा रहे थे और सैय्यद मियाँ के दोनों पुत्रों का तो इतना अधिक प्रभाव हो गया था कि 1713 से 1721 तक का युग 'सैय्यद बन्धु' युग के नाम से जाना जाता है ।

1- एनकडोटस आफ औरंगजेब पृ० 82

2- इर्विन भाग-1 पृ० 203
एनकडोटस आफ औरंगजेब पृ० 82

नाम	वर्ष	पद व पदवी	मनसब	अन्य पुरस्कार	ऐतिहासिक स्रोत
मुराद बख्श के समय					
सैय्यद मंसूर	तीसवें वर्ष	गुजरात की देखभाल के लिए नियुक्ति	एक हजारी चार सौ सवार	1000/400	मुगल दरबार पृ॰ 199
	-	"खाँ"	मनसब से बढ़ोती	-	मुगल दरबार पृ॰ 199
			तीन हजारी डेढ़ हजार सवार का मनसब मिला	3000/1500	वही पृ॰ 190
सैय्यद सुल्तान दारा के समय					
सैय्यद सलावत खाँ बारहा	-	इख्तियास खाँ की पदवी	-	-	मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद पृ॰ 699
	चौबीसवें वर्ष	पंजाब सूबे के देखरेख तथा प्रतिनिधि के रूप में	2000/4000	-	वही
		सलावत खाँ की उपाधि	-	-	वही

नाम	वर्ष	पद व पदवी	मनसब	अन्य पुरस्कार	ऐतिहासिक स्रोत
	-	इलाहाबाद का राज्यपाल	-	-	मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद पृ॰ 699
	पच्चीसवें वर्ष	-	"एक ध्वज"	-	वही अमले सालेह भाग-3 पृ॰ 135
	सताइसवें वर्ष	-	पन्द्रह सौ घुडसवार-के साथ दो हजार का मनसब व नगाड़ा प्रदान किया गया		मासिर उल उमरा पृ॰ 699
	-	"बरार" का राज्यपाल	-	-	वही पृ॰ 701

नाम	वर्ष	पद व पदवी	मनसब	ऐतिहासिक स्त्रोत
सैय्यद हुसैन अली खाँ बारहा	-	-	2000	तजकिराउस सलातीन चकताई कामवर खाँ पृ॰ 87
सैय्यद नुरुउद्दीन अली खाँ बारहा	-	-	-	-

बहादुर शाह ने सैय्यद अब्दुल्ला खाँ बारहा को अजमेर का सूबेदार बनाना चाहा परन्तु उसने अस्वीकार कर दिया ।

औरंगजेब के राज्य काल में

नाम	वर्ष	पद व पदवी	मनसब	पुरस्कार	ऐतिहासिक स्रोत
औरंगजेब					
सैय्यद अब्दुल खाँ बारहा	26	-	एक हजार छः सौ सवार का मनसब	-	फतुहात-ए आलमगीरी पृ. 160 मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद भाग-1 पृ. 79
	33	नन्दोर का फौजदार	-	-	मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद भाग-1 पृ. 80
सैय्यद हुसेन अली खाँ बारहा	-	रणथम्भौर का राज्यपाल	3000	-	मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद भाग-1 पृ. 629
	अंतिम वर्ष	हिन्डौन और बयाना का फौजदार (हिन्डौन, बयाना से 12 कोस की दूरी पर स्थित है।)	-	-	मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद भाग-1 पृ. 629

नाम	वर्ष	पद व पदवी	मनसब	अन्य पुरस्कार	ऐतिहासिक स्त्रोत
		पिछले अध्याय में 21 वर्ष तक का वर्णन है ।			
शेरखान सैय्यद शिहाब बारहा	23	-	पन्द्रह सौ पैदल छः सौ घुड़सवार 1500/600	चाँदी की जीन	मासिर उल उमरा पृ॰84।
	25	-	-	-	
	27	-	2000 पैदल तथा 700 घुड़सवार	-	वही
	31	"शेरखान"	1200 घुड़सवार 2500 पैदल	-	वही

नाम	वर्ष	पद व पदवी	मनसब	अन्य पुरस्कार	ऐतिहासिक स्रोत
सैय्यद मुनव्वर	-	"खान"	-	-	मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद पृ. 356
	12	ग्वालियर के फौजदार	-	-	वही
	21	रथा, महोबा तथा जलालपुर धन्डसा के फौजदार	-	-	मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद पृ. 356 मासिर ए आलमगीरी पृ. 163
	-	आगरे के गर्वनर	-	-	वही पृ. 356 वही पृ. 150
	-	"लश्कर खाँ" की पदवी	-	-	मासिर उल उमरा पृ. 356 मासिर ए आलमगीरी पृ. 314
	32	बीजापुर के राज्यपाल	-	-	मासिर ए आलमगीरी पृ. 320, 329 वही 356

नाम	वर्ष	पद व पदवी	मनसब	पुरस्कार	ऐतिहासिक स्रोत
शेरजमा	-	"मुजफ्फर खाँ"	-	-	आलमगीरनामा पृ. 47,54 मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद भाग-2 पृ. 356
शहमतखान	-	इलाहाबाद के किले की देखरेख के लिए नियुक्ति	-	-	मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद भाग-2 पृ. 730
	-	1000 घुड़सवारों के साथ 3000 का पद "शहमत खान" की उपाधि	3000/1000	-	मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद भाग-2 पृ. 730 आलमगीरनामा पृ. 303,304
	दूसरे वर्ष	राजनीन के थानेदार	-	-	वही 730 वही 341
	चौथे वर्ष	काबुल के सूबेदार नियुक्ति	-	-	मासिर उल उमरा अं.अनुवाद पृ. 341
	छठे वर्ष	पुनः काबुल पर नियुक्ति	-	-	मासिर उल उमरा अनुवाद पृ. 731 आलमगीरनामा पृ. 731

अध्याय - 6

औरंगजेब की मृत्यु तथा उसके पुत्रों में उत्तराधिकार युद्ध में सैय्यदों की भूमिका

यद्यपि सैय्यद वंशीय व्यक्तियों ने अकबर से लेकर औरंगजेब के काल तक विभिन्न अभियानों में भाग लेकर अपनी वीरता व साहस का परिचय दिया था[1], तथापि उक्त काल में केन्द्र में किसी भी महत्वपूर्ण पद पर इस वंश के किसी व्यक्ति की नियुक्ति नहीं हुई। प्रान्तों में व अन्य महत्वपूर्ण पदों पर भी उनकी नियुक्तियों का विवरण बहुत कम हुआ। इसका कारण सैय्यद वंशीय व्यक्तियों में योग्यता का अभाव नहीं था, अपितु संभवतः इसका कारण यह था कि इस समय दरबार में असद खाँ तथा जुल्फिकार खाँ जैसे योग्य व्यक्ति व उनके वंशज विद्यमान थे, जो न केवल सैन्य संचालन में अपितु प्रशासन के क्षेत्र में भी अत्यन्त कुशल थे। उक्त पदों के लिये तकनीकी ज्ञान भी उनको प्रचुर मात्रा में था। मुगल वंश के साथ हुए वैवाहिक सम्बन्धों ने इस वंश की प्रतिष्ठा को और भी बढ़ा दिया था[2]। संभवतः यही कारण था कि सैय्यद वंशीय व्यक्ति इस काल में अधिक ख्याति नहीं अर्जित कर सके थे। परन्तु तत्पश्चात् उन्होंने दरबारी राजनीति में विशेष भूमिका निभाई तथा फर्रुखसियर के काल तक आते हुए इन्होंने विशिष्ट उमरावों में स्थान प्राप्त कर लिया[3]।

1- मासिर पृ. 489-91।
पार्टीस एण्ड पॉलिटिक्स सतीशचन्द्र पृ. 87
सैय्यद वंशीय किसी भी व्यक्ति की मुगल शासकों के परिवार में वैवाहिक संबंध का उल्लेख नहीं मिलता।

2- वही

3- वही

3 मार्च, 1707[1] को दक्षिण में अहमदनगर में सम्राट औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्रों में उत्तराधिकार का युद्ध प्रारम्भ हो गया । औरंगजेब के पाँच पुत्र थे[2], जिनमें से सबसे बड़े पुत्र मुहम्मद सुल्तान की 14 दिसम्बर, 1667 को मृत्यु हो गई थी[3] तथा चौथे पुत्र शहजादे अकबर की 1706 में मृत्यु हो गई थी । इस प्रकार उत्तराधिकार संबंधी संघर्ष औरंगजेब के तीन पुत्रों के मध्य हुआ[4]। उनमें सबसे बड़ा पुत्र मुहम्मद मुअज्जम था । बीस वर्ष की आयु में ही दक्षिण का सूबेदार बना दिया गया था, विभिन्न अभियानों पर भी वह नियुक्त किया गया था । 1676 में उसे "शाह आलम" की उपाधि प्रदान की गई थी । इस प्रकार प्रशासनिक और सैनिक दोनों ही क्षेत्रों का उसे पर्याप्त अनुभव था[5]।

1- नुस्खा ए दिलकुशा अंग्रेजी अनुवाद पृ. ? फारसी 16।

2- मासिरे आलमगीरी उत्तर मुगलकालीन भारत पृ. 159-60

3- द रेन ऑफ मुहम्मदशाह पृ. 3

4- वही

5- विस्तृत विवरण के लिये देखिये - मासिरे आलमगीरी पृ. 153 जर्नल ऑफ इण्डियन हिस्ट्री वर्ष 1922-23 में लिखित जे.एन.सरकार कृत लेख "अर्ली लाइफ ऑफ बहादुरशाह" पृ. 4-9

यद्यपि 1687 ई० में गोलकुण्डा के शासक के साथ गुप्त रूप से पत्र व्यवहार करने पर उसे बन्दी बना लिया गया था, तथापि 1695 में उसे सम्मान सहित मुक्त कर दिया था और 1699 में वह काबुल का सूबेदार नियुक्त किया गया[1] तथा 1700 में पंजाब का सूबेदार पद पर नियुक्त हुआ[2]। इस प्रकार शाह आलम की स्थिति भी काफी सुदृढ़ हो गई थी । औरंगजेब के दूसरे पुत्र आजम ने भी विभिन्न अभियानों में अपनी वीरता का परिचय दिया । अतः 1681 में "शाह अलीजाह" की उपाधि प्राप्त हुई[4]। दक्षिण अभियानों में भी इसका योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा था । यही नहीं अपितु शाह आलम के बन्दी बनाए जाने पर वह औरंगजेब का उत्तराधिकारी समझा जाने लगा था[5]। वह एक बहुत ही चतुर कूटनीतिज्ञ था और उसने यह प्रचार कर रखा था कि सिंहासन प्राप्ति का वह इच्छुक नहीं है और औरंगजेब

1- डा० सतीशचन्द्र कृत उत्तर मुगल कालीन भारत पृ० 33

2- वही - औरंगजेब ने शाह आलम से कहा "क्योंकि मेरे जैसे पिता तुमसे प्रसन्न है । ताज अवश्य तुझे ही मिलेगा ।"
मासिरे आलमगीरी पृ० 371,372 सरकार कृत स्टडीज इन औरंगजेबरेन 56,58

3- वही पृ० 33

4- वही पृ० 34

5- मासिरे आलमगीरी पृ० 318 स्टोरियों दी मोगल पृ०318,319 उत्तर मुगल कालीन भारत पृ० 34

के मरने पर वह फकीर बन जाएगा । वह कामबख्श बीजापुर और हैदराबाद का सूबेदार था[1], पर उसने किसी विशेष प्रतिभा का परिचय नहीं दिया । ऐसा ज्ञात होता है कि औरंगजेब अपने पुत्रों के बीच आपसी वैमनस्य से परिचित था[2] और इसी कारण फरवरी 1707 में जब वह रुग्ण हुआ तो उसने आजम को मालवा की ओर कामबख्श

1- उत्तर मुगल कालीन भारत पृ. 35

2- औरंगजेब ने अपनी मृत्यु शैय्या पर पड़े हुए देख लिया था कि संघर्ष होने वाला है। उसको रोकने के लिए उसने चाहा कि वह अपने तीन जीवित पुत्रों में साम्राज्य का निष्पक्ष रूपेण विभाजन कर दे । उसके तीन लड़के उसकी मृत्यु के समय एक दूसरे से ही नहीं उससे भी दूर रहे । इस समय मोअज्जम काबुल में था, परन्तु कामबख्श और आजम दोनों पास में थे । इसलिए उसने कामबख्श को बीजापुर और आजम को मालवा जाने का हुक्म दिया और उसने यह भी बताया कि जाने में कितना समय लगेगा और कौन से रास्ते से जाना होगा । सियारुल मुताखरीन में लिखा है, "इन निश्चित निर्देशों का यह उद्देश्य था कि कामबख्श अपने बड़े भाई मुहम्मद आजम से इतनी दूर रहे की उससे कोई खतरा नहीं । उसके सात दिन के बाद उसने दूसरे लड़के को भी दिन निकलने के चार घंटे बाद मालवा के लिए रवाना होने का निर्देश दिया और कहा रोज पाँच कोस चलना है । प्रति मंजिल पर दो दिन ठहरना चाहिए एवं प्रति तीसरे दिन कूच करना चाहिए।" इस आदेश का यह प्रयोजन बताया कि उसकी मृत्यु से इलाके में जो गड़बड़ हो उसको शान्त करने की शाहजादे में शक्ति हो । उसका यह अनुभव था कि पिता की मृत्यु के समय वह पास में ही हो, जिससे वह उत्तराधिकार अपने हाथ में ले सके । परन्तु वास्तव में बादशाह का उद्देश्य यह था कि उस समय साहस शाहजादा उससे बहुत दूर हो ताकि वह निर्बलता की अवस्था में कुछ न कर सके और जैसे औरंगजेब ने अपने पिता को कैद कर लिया था, वैसे उसको भी गिरफ्तार न कर लें ।

को हैदराबाद की ओर भेज दिया था । आजम जो केवल कुछ दूर जा पाया था, औरंगजेब की मृत्यु की सूचना मिलने पर वापस चला आया और औरंगजेब का अंतिम संस्कार पूर्ण करके उसने 17 मार्च, 1707 को विधिवद्‌ स्वयं को बादशाह घोषित कर दिया[1] और अपने नाम के सिक्के ढलवा दिये । उसने 'अबुल फैज कुतुबुद्दीन मोहम्मद गाजी' की उपाधि धारण कर ली[2]। यद्यपि आजम को बहुत से महत्वपूर्ण अमीरों का सहयोग प्राप्त था, जिनमें औरंगजेब का वजीर असद खाँ उसका पुत्र जुल्फिकार खाँ, राम सिंह हाड़ा दलपत बुंदेला तरकियत खाँ आदि प्रमुख थे, तथापि बहुत अमीर जैसे गाजीउद्दीन फिरोज जंग उसके पुत्र चिन क्लीच खाँ आदि उसके पक्ष में नहीं थे[3]।

1- उत्तर मुगल कालीन भारत पृ॰ 36
सियारउलमुताखरिन पृ॰ 1-2

2- सिक्कों पर लिखा था -
"सिक्काहज द दरजहाँ बदौलत ओजाह बादशाह एम मालिक आजमशाह । सिक्यतः पद और भाग्य के साथ संसार में राज्यों से सम्राट आजमशाह ने ढलवाया है।" (इरविन पृ॰ 11)

3- उन अमीरों में से भी आसदखाँ तथा जुल्फिकार खाँ गृह युद्ध में सम्मलित नहीं होना चाहते थे । इरादत खाँ तारीखे मुबारक शाही के लेखक ने अमीरों का योगदान न देने के कारण बताते हुए लिखा है कि आजम बहुत ही घमन्डी व्यक्ति था और किसी का भी परामर्श नहीं मानता था । साथ ही शिया मत के प्रति उसके झुकाव के कारण तूरानी अमीर, जो सुन्नी थे, उससे असन्तुष्ट थे । यही नहीं मनसब मोहम्मद आजम के फौज के हरावल में सैय्यद अब्दुला खाँ हुसेन अली खाँ और सैफुद्दीन अली खाँ और दूसरे बारहा के सैय्यद भी सम्मिलित थे ।

आजम ने साम्राज्य के पुराने अमीरों को पुरस्कार मनसब आदि देकर संतुष्ट कर लिया[1] तथा पूर्ण रूप से तैयारी करके उसने मुअज्जम का सामना करने का निश्चय किया ।

शाहजादे कामबख्श ने जो उस समय बीजापुर में था औरंगजेब की मृत्यु का समाचार पाकर स्वयं को बादशाह घोषित कर दिया । उसने अपने नाम का सिक्का चलवाया व खुतबा पढ़वाया[2]।

औरंगजेब की मृत्यु का समाचार मिलते ही शाह आलम भी जमरूद से रवाना हो गया[3] और सेना के साथ प्रयाग शीघ्रता के साथ कूच

1- खिलअत मनसब व साथ ही साथ उच्च पद प्रदान करने का वचन दिया गया ।

2- इर्विन पृ॰ 5। सिक्कों पर यह इबारत अंकित थी "दर दकिन जद सिकाहबर खुर्शीद ओ माह बादशाह कामबख्श दीन पनाह"

3- सभी सरदार उसके साथ थे, परन्तु फतहउल्ला खाँ जो काबुल का फौजदार था, साथ नहीं था । मोअज्जम का एक पुत्र अजीमुश्शान उस समय बिहार में थे और दूसरा मोईजुद्दीन थट्टा में थे । शाहजादा अजीजुद्दीन मोईजुद्दीन का नायब था और मुल्तान में नियुक्त था, इन सबको शाह आलम ने आदेश दिये कि आगरा के पास शाहजादा अजीमुश्शान से मिले । मोअज्जम ने जानिसार खाँ नामक एक सेनापति को पाँच छः हजार सवारों के साथ आगरा की ओर रवाना किया । इस प्रकार शाह आलम ने शाही राजधानी के पास अपने एक सेनापति और तीन शाहजादों की अध्यक्षता में एक बड़ी सेना एकत्र करने का आयोजन किया ।

करता हुआ लाहौर आया[1]। 4 मई, 1707 को उसने स्वयं को औपचारिक रूप से बादशाह घोषित कर बहादुर शाह का विरुद ग्रहण किया[2] तथा अपने नाम का खुतबा पढ़वाया व अपने नाम के सिक्के ढलवाये[3]। यही नहीं अपितु उसने पुरस्कार आदि भी वितरित किये[4]। इसी समय आजम शाह

1- यहाँ मुनीम खाँ उससे मिलने आया तो उसे चालीस लाख रुपया भेंट किया और अपने सैनिक तोपखाना एवं सैनिक सामान जो उसने औरंगजेब की मृत्यु का समाचार मिलने पर इकट्ठा किये थे, उसके सामने उपस्थित किये। मुनीम खाँ ने लाहौर और पेशावर के बीच के इलाके में तैयारी प्रारम्भ कर दी थी तथा औरंगजेब की मृत्यु पर शाहआलम को राजधानी बुलाया था।

2- इरविन पृ॰ 20

3- यह निर्देश दिया गया कि रुपये की तौल एक माशा अधिक हो और इस तौल के लाखों रुपये ढाले गये। लेकिन तनख्वाह देने और व्यापारिक लेन-देन में इस रुपये का मूल्य पुराने रुपये के बराबर ही माना जाता था। इसलिए बन्द कर दिया गया।
इलियट एण्ड डाउसन पृ॰ 383

4- शाह आलम के आदेश पर चार करोड़ रुपया निकाला गया। सब शाहजादों को तीन तीन लाख रुपया दिया गया। असद खाँ को भी एक लाख रुपया दिया गया। सब पुराने नौकरों तथा सिपाहियों को पुरस्कार दिये गए। सब मिलाकर दो करोड़ रुपये बाँटे गए।

नर्मदा पार करके ग्वालियर तक पहुँचा था। शाह आलम ने उसे पत्र लिखा और अपने पिता की वसीयत को दुहराया। परन्तु आजम के मरने पर 18 रबी उल अव्वल 1119 हिजरी / 10 जून 1707 को आगरा के निकट जाजो[2] नामक स्थान पर उत्तराधिकार का युद्ध प्रारम्भ हुआ।

1- यह वसीयत औरंगजेब के हाथ की लिखी हुई थी और इसमें साम्राज्य का विभाजन किया गया था। शाह आलम ने लिखा कि " दक्षिण के छः सूबों में से मैं तुमको चार सूबे छोड़ दूँगा और अहमदाबाद का सूबा भी दे दूँगा। इसके सिवाय मैं तुमको एक या दो अन्य सूबे भी दूँगा, क्योंकि मैं चाहता हूँ कि मुसलमानों का रक्त-पात न हो। इसलिए तुमको चाहिए कि पिता की वसीयत पर संतोष करो। जो तुमको दिया जा रहा है उसको स्वीकार करो और ऐसी कोशिश करो कि युद्ध न हो।" ऐसा भी कहा जाता है कि उसने निम्नलिखित सन्देश भी भेजा था - "यदि तुम इससे अधिक माँग करोगे और अपने पिता की वसीयत का पालन नहीं करोगे और चाहोगे कि तलवार खिंच जाये और साहस और वीरता के द्वारा निर्णय हो तो इससे यह होगा कि अपनी लड़ाई के कारण हजारों आदमी तलवार के घाट उतर जायेंगे। इसलिए यह बेहतर होगा कि तुम और मैं आपस में निपट लें और अपने जीवन की बाजी लगायें।" जब बड़े भाई का यह पत्र और सन्देश छोटे भाई के पास पहुँचा तो उसने उत्तर दिया - "मेरे ख्याल में इस मूर्ख ने सादी की उन पंक्तियों को नहीं पढ़ा जिनमें लिखा है कि एक कम्बल पर दस साधू तो सो सकते हैं, परन्तु एक देश में दो नरेश नहीं रह सकते।"
इलियट डाउन्सन भाग-17 पृ. 316

2- जाजो आगरा से बीस मील दूर दक्षिण में स्थित है। विस्तृत विवरण के लिये देखिये - खफी खाँ मृत, मुन्तखबुल लुबाब पृ. 575
श्री धर रचित जंगनामा पृ. 20-24
नुस्खा ए दिलकुशा फोलियों पृ. 162-63 पर आजम की गतिविधियों का विस्तृत विवरण दिया गया है। कामराज कृत आजम उल हर्ब मीलामक प्रतिलिपि।

यह युद्ध आजम तथा शाह आलम के मध्य हुआ था । आजम को चारों तरफ अशुभ चिन्ह दिखाई दे रहे थे। उसके पक्ष के बहुत से सैनिकों की मृत्यु हो गई थी । सेना की संख्या व धन दोनों ही दृष्टियों से शाह आलम की स्थिति आजम से अधिक सुदृढ़ थी,[1] फिर भी आजम तीन चार सौ सहयोगियों के साथ अन्त तक लड़ता रहा ।

उत्तराधिकार युद्ध में बारहा के सैय्यदों की भूमिका -

इस युद्ध में बारहा के सैय्यदों ने बहुत वीरता दिखाई । बारहा वंश के प्रसिद्ध भाई सैय्यद अब्दुल्ला खान और हुसेन अली खाँ जो अपनी बहादुरी के लिए प्रसिद्ध थे, जिनके पूर्वजों ने प्रत्येक शासन में बड़ी वीरता से काम किया था, अपने हाथियों से कूद कर पैदल लड़ाई लड़ने को तैयार हो गए ।

1- शाह आलम ने आगरे के किले की कुछ भारी तोपों का साथ लिया था, इस प्रकार अपनी फौजी शक्ति और भी बढ़ा दी थी । तेजी से चलने से आजम ने भारी तोपे दक्षिण में ही छोड़ दीं थी और बची कुची सेना की दशा ग्वालियर में लम्बे रास्ते की कठिनाई और भीषण गर्मी से बुरी हो गई थी । अतः जाजो के रण क्षेत्र में आजम के लिए विजय प्राप्त करना सम्भवतः नगण्य था ।

शाह आलम के तोप खाने के सामने आजम की कुछ न चली । पराजय निकट देखकर जुलफिकार खाँ ने आजम को समझाया कि इस समय वह मैदान छोड़ दे और दूर चला जाए । जब भाग्य साथ दे तो पुनः इस क्षति का निवारण करे, परन्तु आजम ने इस मन्त्रणा को अस्वीकार कर दिया, शायद वह दारा की तरह दर दर की ठोकर नहीं खाना चाहता था ।

दोनों पक्षों का बड़ा संहार हुआ । हुसैन अली को बहुत से घाव लगे[1] और वह बेसुध होकर जमीन पर गिर पड़ा और अत्यधिक घायल हुआ । इनके तीसरे भाई सैय्यद नजमुद्दीन अली खाँ बारहा की मृत्यु इसी समय हुई[2] । इसी समय हसन अली को अपने पिता को 'अब्दुला खाँ' का पद मिला[3] । आजमशाह भी अन्त में मृत्यु को प्राप्त हुआ और इसके दूसरे पुत्र की भी मृत्यु हो गई । यद्यपि जाजो के युद्ध में बहुत से अमीरों ने शाह आलम का साथ नहीं दिया था, तथापि सत्ता हाथ में आने पर[4] बहादुर शाह ने उदारतापूर्ण नीति अपनाई, उसने मोहम्मद आजम के सरदारों के प्रति अनुदारता न दिखाकर उनका स्वागत किया । शुजात खाँ बारहा को अजमेर की सूबेदारी पर नियुक्त किया गया[5] । सैय्यद फतेह मोहम्मद खाँ बारहा ग्वालियर का किलेदार बनाया गया[6]।

1- इर्विन इरविन लेटर मुगलस् पृ॰ 204

2- वही

3- वही

4- बहादुर शाह को दूसरा युद्ध 13 जनवरी 1709 को कामबख्श के साथ लड़ना पड़ा अंततः विजयश्री बहादुरशाह को ही मिली ।

5- तजकिरातउस सलातीने चगताई कामवर खाँ पृ॰ 14

6- वही

और रमजान महीने की । ता0 को सैय्यद हुसेन अली खाँ बहादुर को तीन हजार रुपया और नकद इनाम दिया[1]। 29 ता0 को सैय्यद अब्दुला खाँ बहादुर और सैय्यद हुसेन अली खाँ बहादुर को अलग अलग दो हजार सवार के साथ चार हजार का मनसब दिया और आलम और नक्कारे दिये[2] । यहीं से धीरे-धीरे इनका प्रभाव बढ़ने लगा । महोर्रम महीने की 8 ता0 को सैय्यद हुसेन अली खाँ को बिहार का सूबेदार बनाया गया[3]।

सैय्यद अब्दुला खाँ बारहा व सैय्यद हुसेन अली खाँ ने औरंगजेब के समय से ख्याति प्राप्त करना प्रारम्भ कर दी थी[4]। कुछ समय तक सैय्यद अब्दुला खाँ जहाँदार शाह की सेवा में मुल्तान में रहा था और छोटा भाई हुसेन अली खाँ बारहा हिंडौना व बयाना का फौजदार रहा[5]। जाजो के युद्ध में दोनों भाईयों ने बहादुर शाह के पक्ष में युद्ध में भाग लिया, परन्तु बहादुर शाह के राज्य काल में इन सैय्यदों की विशेष उन्नति नहीं हुई । इसका कारण सम्भवतः यह हो सकता था कि इस समय अन्य अनेक अमीर बहुत वीर और महत्वाकांक्षी

1- तजकिरातउस सलातीने चगतई कामवर खाँ पृ. 14

2- वही पृ. 25

3- वही पृ. 26

4- मासिर 489-91, पार्टीस एण्ड पोलिटिक्स पृ. 87
सतीशचन्द्र 30 मुगलकालीन भारत पृ. 97

5- जहीरूद्दीन मलिक द्वारा उद्धृत- द रेन आफ मुहम्मद शाह पृ. 32

थे । अतः हो सकता है कि बहादुरशाह का सैय्यदों की वीरता पर ध्यान न गया हो, परन्तु वह सैय्यदों से किसी न किसी रूप में प्रभावित अवश्य रहा होगा, जिसका प्रमाण उसके नाम के आगे 'सैय्यद' की उपाधि का खुतबे में उल्लेख होने से मिलता है[1]।

यद्यपि बहादुर शाह ने अजमेर के अभियान के समय अब्दुला खाँ को अजमेर की सूबेदारी प्रदान करनी चाही, परन्तु अब्दुला खाँ ने इसे स्वीकार नहीं किया । बहादुर शाह के पश्चात् उसके चारों पुत्रों में सिंहासन के लिए युद्ध प्रारम्भ हो गया[2]।

1- तज्किरातउस सलातीने चग़ताई पृ० 143

शाह आलम बहादुर शाह को खुतबे पर सैय्यद की उपाधि से विभूषित किया गया । इतिहास में यह प्रकट होता है कि उनसे तैमूर के घराने का उदय हुआ तबसे बल्कि गौरी वंश की स्थापना के समय में सिवाय ख्रिज खाँ के अन्य किसी बादशाह ने खुतबे में या अपने वंश में सैय्यद की उपाधि का उपयोग नहीं किया था ।

2- बहादुर शाह के चार पुत्र थे । ज्येष्ठ पुत्र जहादरशाह था । वह निर्बल और विलासी था और शासन के विषय में कभी कोई कष्ट नहीं करता था न ही उसे उमरावों की चिन्ता थी । दूसरा पुत्र अजीमउश्शान था। वह शिष्ट राजनीतिज्ञ था, और बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा का गर्वनर रह चुका था । जाजो के युद्ध में उसने वीरता का परिचय दिया था । परन्तु इसका पिता हमेशा इसे संदेह से देखता था । रफीउश्शान तीसरा पुत्र पिता के साथ रहता था और उनका प्रेम पात्र था । राजकाल में वह ध्यान नहीं देता था । चौथा पुत्र खुजिस्ता अख्तर जहाँशाह था। शासन में अपने भाईयों की अपेक्षा सबसे बड़ा हाथ रखता था और मुनीम खाँ का मित्र था । अतः वजीर के पद पर नियुक्त था ।

बहादुर शाह के चारों पुत्रों में अजीमुश्शान सबसे योग्य था । दरबार में उसका प्रभाव भी था । वह सैय्यद बन्धुओं की वीरता से परिचित था तथा साथ ही सम्भवत: वह यह भी समझता रहा हो कि भविष्य में उनकी सहायता से वह अपना पक्ष सुदृढ़ कर सकता है । सम्भवत: इसी कारण उसने 1708 में हुसैन अली को बिहार में अपना नायब सूबेदार नियुक्त किया[1] तथा 1711 में अब्दुल्ला खाँ को इलाहाबाद का नायब सूबेदार नियुक्त किया[2]। जुल्फिकार खाँ के प्रयत्नों के फलस्वरूप अजीमुश्शान को अधिक सफलता नहीं मिल पाई[3] थी तथा उत्तराधिकार के युद्ध में विजयश्री अन्तत: जहाँदार शाह को मिली । तथापि उसकी अयोग्यता के कारण राज्यकाल वस्तुत: हिंसा व रक्तपात से परिपूर्ण रहा, साथ ही उसे राजनीतिक कठिनाइयों एवम् आर्थिक अव्यवस्था का भी सामना करना पड़ा । उसकी कठिनाइयों में अभिवृद्धि के लिये बहुत अधिक सीमा तक अजीमुश्शान का पुत्र फर्रुखसियर उत्तरदायी था । फर्रुखसियर उस समय अजीमाबाद में था । जब अजीमुश्शान ने लाहौर से हुसैन अली खाँ

1- मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद भाग-1 पृ. 631
तजकिरातउस सलातीने चग़ताई पृ. 26
उत्तर मुगलकालीन भारत पृ. 87

2- तजकिरातउस सलातीने चग़ताई पृ. 32

3- जुल्फिकार खाँ ने अजीमुश्शान के विरुद्ध तीनों भाईयों का एक गुट बनाया । इस तरह दरबार में सबसे शक्तिशाली शाहजादा एवं सबसे शक्तिशाली अमीर खुले रूप से एक एक दूसरे के विरोधी हो गये । इस प्रकार बहादुर शाह की मृत्यु के बाद लाहौर का गृह युद्ध इसके पूर्व मुगल शाहजादों द्वारा आपस में लड़े गए, युद्धों से भिन्न था । विस्तृत विवरण के लिये देखिये -
उत्तर मुगल कालीन भारत पृ. 72

को बुलाने के लिये दूत भेजा तो उसने चाहा कि शीघ्रतापूर्वक अपने पिता की सहायता के लिये रवाना हो जाए[1]। अतः युद्ध सामग्री व यात्रा का सामान जुटाने में व्यस्त हो गया । हुसेन अली उस समय सूबे के आसपास के क्षेत्र के मामलों का निर्णय करने के लिये राजगीर के कोहिस्तान की ओर गया हुआ था[2]। इसी मध्य अजीमुश्शान व उसके भाईयों में हुए युद्ध में अजीमुश्शान की मृत्यु हो गई तथा उसकी सेना के प्रायः तीन चार हजार व्यक्ति अस्त्रहीन अवस्था में ख्वाजा फखरूद्दीन व मीर इशहाक सहित पटना पहुँचे[3]।

लाहौर की वस्तुस्थिति का समाचार पाकर फर्रुखसियर ने उस क्षेत्र के कुछ शुभचिन्तकों व सहयोगियों की राय से अपने नाम का खुतबा पढ़वाया व सिक्के ढलवाये[4] और वे लोग, जो अजीमुश्शान की मृत्यु के बाद उसके पास पहुँचे थे, उन सबके प्रति कृपा प्रदर्शन कर एक सेना का गठन किया ।

1- जहाँदारनामा पृ. 40
डा० सतीश के अनुसार उसने बहादुर शाह के मरते ही अपने पिता को बादशाह घोषित कर दिया था । देखिये - उत्तर मुगल कालीन भारत पृ. 88

2- जहाँदारनामा पृ. 40

3- वही
जंगनामा पृ. 3

4- वही
इस समय तक जहाँदार शाह उत्तराधिकार युद्ध में विजयी घोषित होकर सिंहासन पर आसीन हो गया था । जंगनामा के लेखक के अनुसार फर्रुखसियर पहले तो बहुत दुखी हुआ और उसने आत्मघात का विचार किया परन्तु बाद में अपनी माँ की दृढ़ता से साहस ग्रहण कर उसने स्वयं को शासक घोषित किया । देखिये - जंगनामा पृ. 3

फर्रुखसियर की इस घोषणा ने हसन अली को असन्तुष्ट कर दिया था[1]। अतः फर्रुखसियर ने उसे विनम्र व विनीत पत्र लिखकर अपनी ओर मिलाने का प्रयास किया व उसकी माँ ने हुसैन अली को 'मदारुल-महाम' बनाने का वचन देकर अपनी ओर मिला लिया[2] तथा इस प्रकार फर्रुखसियर व हुसैन अली में समझौता हो गया तथा फर्रुखसियर

1- जहाँदारनामा पृ. 40
सम्भवतः हसन अली इस लिये असंतुष्ट था कि फर्रुखसियर ने इस विषय में उससे परामर्श नहीं किया था । देखिये - उत्तर मुगल कालीन भारत पृ. 80

2- जंगनामा पृ. 3
जहाँदारनामा के लेखक के अनुसार एक दिन फर्रुखसियर ने हुसैन अली को अपने साथ लाकर अन्तःपुर के परदे से बाहर पूर्व आग्रह के साथ उसका हाथ पकड़ कर अपने पास बिठाया और फर्रुखसियर की माता ने सहायता से सम्बद्ध ताकीद वाली कसमों और प्रस्तावित प्रणों के साथ उक्त सैय्यद से वचन लेकर सल्तनत मिल जाने पर हुसैन अली खाँ को मदारुल महाम बनाने के बारे में अपनी ओर से पक्का वचन दिया और मुहम्मद फर्रुखसियर की पाँच वर्षीय पुत्री ने परदे से बाहर आकर हुसैन अली खाँ का दामन पकड़कर अपने सिर पर रखकर कहा कि सहायता सैय्यदों के हिस्से में आई है और मैं आपकी कृपा के साये में आई हूँ और आपके सैय्यद होने और वीरता के लिए यह अनिवार्य है कि आप हमारी सहायता करें । हुसैन अली खाँ की आँखों में आँसू आ गए । उसके हाथ और पाँव को छुआ और उसको कन्धे पर उठाकर अधिकाधिक उसके आत्म सन्तोष में व्यस्त हो गया और कहा कि जब तक शरीर में जान है तुम्हारे पिता के अधिकारों की रक्षा करूँगा ।

ने अपने सहयोगियों को खिताब व मनसब आदि प्रदान किये । हुसेन अली खाँ फर्रुखसियर की सेना की कमी व आर्थिक कमजोरी के कारण चिन्तित था तथा उसको सुदृढ़ बनाने के लिये प्रयत्नशील था । उसने सर्वप्रथम इस दिशा में अपने भाई अब्दुला खाँ सैय्यद हसन अली खाँ से सहयोग प्राप्त करना चाहा । अतः विजारत की खिलअत के साथ आकृष्ट करने वाला फरमान प्रेषित करवाया[1]। परन्तु अब्दुल्ला खाँ ने इन स्थितियों की जानकारी के पश्चात् जहाँदर शाह के आधिपत्य और वैभव के कारण फर्रुखसियर के समर्थन व सहायता से इन्कार कर दिया[2] तथा हुसेन अली खाँ को भी फर्रुखसियर का साथ न देने के लिये लिखा[3]। अन्ततः हुसेन अली की प्रार्थना पर उसने फर्रुखसियर से सहयोग करना स्वीकार कर लिया[4]।

1- जहाँदारनामा पृ॰ 41

2- वही

क्योंकि उसके पास लश्कर और तोपखाना और खजाना और सल्तनत का वैभव आदि फर्रुखसियर से सौ गुना अधिक था और उच्च श्रेणी के उमरा जैसे नवाब असदखान और जुल्फिकार खान उसके साथ थे, इस कारण उससे भयभीत होकर फर्रुखसियर के समर्थन और सहायता से इन्कार कर दिया ।

3- वही पृ॰ 42

4- वही

जहाँदार शाह के राज्यकाल में शासक और उमरा की असावधानी के कारण पूरी सल्तनत में गड़बड़ और अराजकता का दौर था । मालवा और दोआब के क्षेत्र में पच्चीस व्यक्तियों ने विद्रोही होकर डकैती और लूटमार शुरू कर दी । ये डाकू और पथमार कभी-कभी सूबेदारों के क्षेत्र पर भी हाथ मारते थे और कभी आपस में भी लड़ते थे । इन 25 डाकुओं के साथ 10-12 हजार विद्रोही थे[1]।

अब्दुल्ला खाँ ने उन विद्रोहियों को अपने पास बुलाया और उनमें से कुछ सैय्यदों और दूसरे लोगों से बड़े इनाम मनसब और जागीर देने का वादा किया[2]। चूँकि फर्रुखसियर के प्रताप का सितारा प्रकाशमान था, तो उसी अर्थ संकट जहाँदार शाह का काका अहमदबेग जो धनवान और प्रभुत्व शाली था, वह कोकलताश के अत्याचार से दुखी होकर सैय्यद अब्दुल्ला खाँ की ओर आकृष्ट हुआ और ख्वाजा मुहम्मद आसिम को जुल्फिकार खाँ की शत्रुता का काँटा उसके दिल में चुभता था । अप्रकट रूप से अब्दुल्ला खाँ द्वारा फर्रुखसियर का आज्ञाकारी और समर्थक होने के कारण अब्दुल्ला खाँ साहसी हो गया और खुलकर फर्रुखसियर का साथ देने के लिए युद्ध पर सचेष्ट हो गया[3]।

1- जहाँदारनामा पृ॰ 42

2- वही

3- वही

जब अब्दुल्ला खाँ के विद्रोह की सूचना जुल्फिकार खान को मिली तो उसने चिन्तित होकर राजी मुहम्मद खान को जो शाहजादे की सेना के साथ मुकर्रर हुआ था, सैय्यद अब्दुल्ला खाँ के चले जाने के कारण इलाहाबाद की सूबेदारी पर मुकर्रर कराया[1]।

फर्रुखसियर अब्दुल्ला खाँ की ओर से सन्तुष्ट हो जाने के पश्चात् जो कुछ युद्ध सामग्री थी और जो कुछ मार्ग में हाथ आई उसके साथ इलाहाबाद की ओर रवाना हुआ । जब फर्रुखसियर की इलाहाबाद के निकट पहुँचने की सूचना राजी मुहम्मद खाँ[2] को मिली तो उसने सोचा कि यदि अब्दुल्ला खाँ फर्रुखसियर से मिल गया तो फिर कुछ न हो सकेगा । यह विचार आते ही सैय्यद अब्दुल गफ्फार को आठ हजार सवारों के साथ इलाहाबाद की ओर भेजा और पड़ाव पर पड़ाव करता हुआ, उसके पीछे तेज चलता रहा । सैय्यद अब्दुल गफ्फार जिस समय कस्बा मानिकपुर के निकट पहुँचा तो अब्दुल्ला खाँ की सरकार के बख्शी नुरूलहसन खान ने सैय्यद अब्दुल गफ्फार का रास्ता रोक कर अपनी कम सेना द्वारा उसकी बहुत बड़ी सेना से युद्ध आरम्भ कर दिया । नुरूलहसन खान पराजित होने ही वाला था कि सैय्यद नजमुद्दीन अली खान ने दीवान रतन चन्द्र और दो सौ सवारों के

1- सैय्यद अब्दुल गफ्फार उसकी नियाबत और सहायता हेतु मुकर्रर हुआ । तत्पश्चात् शाहजादा 40 हजार सवार ख्वाजा हुसेन 15 हजार सवार और राजा गोपल सिंह भदेरिया 8 हजार सवार के साथ शाहजादा की मुलजिमत में महिमा और वैभव के साथ रवाना हुए ।

2- जहाँदारनामा पृ० 42

साथ पहुंचकर शत्रु पर जोरदार हमला कर दिया । सैय्यद अब्दुल गफ्फार युद्ध में हार कर भाग कर एक मंजिल पीछे हट कर राजी मुहम्मद का इन्तजार करने लगा । नजमुद्दीन अली खान ने भी उसी स्थान पर पड़ाव डाला । जब सैय्यद अब्दुल गफ्फार के हारने की सूचना जुल्फिकार खान को मिली, उसी समय चार हजारी जात के मनसब पर दो हजारी वृद्धि और बहाली, सूबा इलाहाबाद पर स्थित रहने का फरमान स्वयं अन्य कृपाओं और खिलत और जड़ाऊ सरपेच और मोत्तियों की माला के साथ उक्त सैय्यद के पास रवाना किया, किन्तु समय को कुछ और ही मंजूर था, इसलिए इस युक्ति से भी कार्य सिद्ध न हुआ[1]।

अब्दुल गफ्फार के पराजित होने के पश्चात् बादशाह और उमरा व्याकुल हो गए तो सैय्यद अब्दुल्ला खान को अपनी ओर मिलाने का प्रयत्न किया, किन्तु इसमें सफलता प्राप्त नहीं हुई । तत्पश्चात् सूचना मिली कि फर्रुखसियर इलाहाबाद में प्रवेश कर मय अब्दुला खान और उन जमीदारों के जो विद्रोह करके उससे मिल गए हैं, आगरा जाने का निश्चय कर चुका है[2]। शाहजादा अअज्जुद्दीन कोल से इटावा पहुंचा और ननवाजी के फौजदारों और जमीदारों को अपने पास बुलाया[3] । अली असगर खान पुत्र कारतलब खान आलमगीरी तीन हजार सवारों और उन सात लाख रुपये के साथ जो उसने एकत्रित किये थे, शाहजादे के पास पहुंचा । फिर प्रबन्ध करके कोड़ा की ओर पहुंचा । छबीलाराम फौजदार

1- जहांदारनामा पृ॰ 44

2- जहांदारनामा पृ॰ 45

3- वही

से मिला । छबीलाराम और उसका बड़ा भाई दयाराम दोनों कोकलताश द्वारा हुसेन खान से मिले और रात के समय पाँच हजार सवार और तोपखाने के साथ इलाहाबाद की ओर रवाना हुए । सरबुलन्द खान ने छबीलाराम का पीछा किया, किन्तु वह रास्ता बदल कर मकनपुर के रास्ते से जो इलाहाबाद के निकट था, सैय्यद अब्दुल्ला की सेवा में उपस्थित हो गया । जहाँदारशाह ने कलीजखान वल्द गजिउद्दीन, फिरोज जंग आलमगीरी को दस हजार सवारों के साथ आगरा भेजा ताकि समय आने पर शाहजादा की सहायता करे[1]।

फर्रुखसियर को युद्ध सामग्री हाथ आ गई थी, वह दोनों बारहा सरदारों और दूसरे लड़ाकू सरदारों और अफगानों के साथ कूच पर कूच करता हुआ इटावा के निकट पहुँचा । छबीलाराम रात के समय मकनपुर से आकर सेना में शामिल हो गया । सरबुलन्द खान ने सेना के चन्दावल से छेड़छाड़ करके आगरा का रास्ता लिया । अब्दुल्ला खान ने उसको अपने पास से भगा दिया । ग्राम बमरकी, में जो कोड़ा से सन्निकट और अज्जुद्दीन की सेना से पड़ाव का स्थान था, पड़ाव डाला । उक्त शाहजादे ने पचास हजार योद्धा सवारो और तोपखाने के साथ उस स्थान से कूच किया|आगरा के क्षेत्र खजुआ के स्थान पर फर्रुखसियर के आगमन की प्रतिक्षा करने लगा । अब्दुला खान वीरता के साथ आगे बढ़ा । अब्दुल्ला खान इस शुभ सूचना से प्रसन्न हुआ और उसी

1- जहाँदारनामा पृ॰ 47

जुल्फिकार खान और कोकलताश और अब्दुल सैय्यद जैसे अनुभवी सरदारों में से किसी ने भी बादशाह का साथ देकर शाहजादे के साथ आना गवारा नहीं किया । केवल चीन कलीजखान शाहजादा के सहायता हेतु पीछे आ रहा था ।

दिन कूच करके खन्दक से चार मील की दूरी पर 28 जमदीउयल अव्वल को भौर चाल का निरीक्षण करके विभिन्न स्थानों पर नस्ब करके उसी समय आग बरसाना शुरू कर दिया । दो रात दिन युद्ध होता रहा[1]। शत्रुओं का जोर बढ़ता जा रहा था । शाहजादे ने लड़ाई से भागने के बारे में कुछ सरदारों से परामर्श किया, पर इससे सेना में निराशा फैल गई । इसी समय शत्रु की सेना ने आक्रमण किया, लूटमार आरम्भ करके बहुत सा सामान प्राप्त किया[2]। अब्दुल्ला खान ने अपनी सेना के सरदारों को अस्त्र शस्त्र इनाम देकर सम्मानित किया और इनकी निर्धनता

1- जहाँदारनामा पृ॰ 47

इसी बीच शाहजादे के दिल में यह बात बिठाई गई कि बादशाह ने लालकुँवर का दिल रखने के लिए आपको शक्तिशाली शत्रु के सामने भेजा है ।

2- जहाँदारनामा पृ॰ 48

बहुत अधिक गल्ला और नकद राशि तोपखाना और हाथी खाना और खजाने आदि फर्रुखसियर की सरकार में आ गए ।

अब्दुल्ला खाँ ने कहा कि कलीज खाँ के आने से पूर्व इन बच्चों के युद्ध को बच्चों के खेल की तरह समाप्त कर देना चाहिए ।

समाप्त हो गई[1]। इस समय फार्रुखसियर के वैभव और महिमा में बहुत वृद्धि हो चुकी थी । अब्दुल्ला खाँ के शुभ चिन्तकों, जाट, जमींदारों और लुटेरे अफगानों को मनसब और जागीर की आशा पर अपनी ओर मिला लिया और 40 हजार सवारों और प्यादों का लश्कर बनाकर जहाँदार शाह की प्रतीक्षा करने लगा[2]।

जहाँदारशाह को जब शाहजादा अजीजुद्दीन के पराजय की सूचना मिली तो उसकी सल्तनत के सदस्यों के होश उड़ गये और सैनिकों और युद्ध सामग्री के लिए खजाने के दरवाजे खोल दिए गए ताकि मुकाबले का पूर्ण प्रबन्ध हो[3]। प्रबन्ध करके जहाँदारशाह ने विशाल सेना के साथ

1- जहाँदारनामा पृ० 48

आम सैनिकों ने जो निर्धनता और फाके की आग में जल रहे थे, शाहजादे के लश्कर की लूट मार से नकद और हर प्रकार की सामग्री से भन्डार एकत्रित कर लिए ।

शाहजादा अजीजुद्दीन बहुत व्याकुलता और परेशानी के साथ अपने कुछ सेवकों को साथ लेकर गिरता पड़ता अकबराबाद पहुँचा और कलीजखान जो दो दिन पूर्व ही आगरा में आया था, उससे मिला । शाहजादे ने घटना को बादशाह से अवगत कराया और दक्षिण की ओर जाने का निश्चय स्पष्ट किया । किन्तु कलीज खान बादशाह के आने तक शाहजादे को किसी न किसी प्रकार रोकता रहा और जहाँदारशाह को भी इस घटना से सूचित कर दिया । फार्रुखसियर ने इस विजय के पश्चात् उस क्षेत्र के विद्रोही और काम के आदमियों को मनसब और जागीर का वादा करके बुला लिया ।

2- जहाँदारनामा पृ० 49

3- जहाँदरशाह नामा पृ० 50
तजकिरातउस सलातीने चकताई कामवर खाँ पृ० 166

कूच किया[1]

बादशाह ने नगर से निकलने के पश्चात् बाग रिवज़ाबाद में पहला पड़ाव किया ।

जहाँदारशाह व फर्रुखसियर में युद्ध व सैय्यदों की भूमिका -

12 जिलहिज्ज को सैय्यद अब्दुला खान ने सेना के हरावल को दरिया पार करवाया और उस किनारे पर पहुँच कर किनारे से सिकन्दरा के बड़े मैदान पर अधिकार कर लिया[2]। बादशाह को इसकी खबर न थी । बादशाह को जब खबर हुई तो वहीं सेना पहुँची और युद्ध प्रारम्भ हो गया[3]। सैय्यद हुसैन अली खाँ तीरों से घायल होकर

1- जुल्फिकार खान कोकलताश खान खानजहान राजी मुहम्मदखान मुरतजाखान रजाकुली खान, मुहम्मद अमीनखान और बिहरामन्दखान जैसे अनुभवी सरदारों को साथ लिया और फत्तुल्लाखान को पाँच हजार सवारों के साथ लालकुँवर की सवारी के साथ चलने पर नियुक्त किया ।

2- तजकिरातउस सलातीने चकताई पृ. 168
जहाँदारशाहनामा पृ. 51

3- जहाँदारशाहनामा पृ. 52

भी लड़ता रहा[1] मुहम्मद अमीन खान आदि ने आग्रह किया कि हुसैन अली खान युद्ध में मारा गया[2] और अब्दुला खान लड़ाई से अलग हो गया, किन्तु फर्रुखसियर उन दोनों की प्रतीक्षा करता रहा । अब्दुल्ला खाँ 12 हजार सवारों के साथ युद्ध करता रहा । जहाँदारशाह की सवारी के हाथी की आँख में कुछ लगने से वह बिगड़ गया । बादशाह घोड़े पर बैठा ही था कि लाल कुँवर उसकी तलाश में वहाँ पहुँची और घोड़े पर से खींचकर अपने हाथी पर बिठाकर अकबराबाद का रास्ता लिया[3]। बादशाह के जाते ही सेना में भगदड़ मच गई और

1- जहाँदारशाहनामा पृ॰ 53

सूचना देने वालों की जबानी मालूम हुआ कि फर्रुखसियर की सेना के आगे चलने वाले 8 हजार सवार छोटी तोपों के साथ जौन नदी के किनारे पहुँच गए हैं और उसको पार करना चाहते हैं । राजीखान को आदेश हुआ कि वह दरिया को पार करके दलदल में फँसकर वापिस हुई । इसमें दो दिन बर्बाद हुए ।

2- तजकिरातउस सलातीने चकतई कामवर खाँ पृ॰170
जहाँदारशाहनामा पृ॰ 57

3- जहाँदारशाहनामा पृ॰ 58

जानीखान की हत्या के पश्चात् बादशाह की सेना भाग गई, किन्तु मल्हारखान चार हजार सवारों के साथ लड़ता रहा और उसका कत्ल हो गया ।

फर्रुखसियर को विजयश्री प्राप्त हुई[1]।

1- जहाँदारशाहनामा पृ० 60

जहाँदारशाह की पराजय का प्रमुख कारण उसका अपना चरित्र था, बड़े-बड़े अमीर व सरदार अब इससे घृणा करने लगे थे। जहाँदारशाह की पराजय चाहते थे। जहाँदारशाह ने केवल 11 मास राज्य किया। जहाँदारशाह ने पराजय के पश्चात् नवाब असदखान आसिफद्दौला से जाकर विनम्रता से सहायता माँगी। उक्त नवाब ने बादशाह को सहायता दी और एरक के गढ़ में सुरक्षित कर दिया। इसी बीच फर्रुखसियर का फरमान बादशाह को बन्दी बनाने के बारे में पहुँचा। इस आदेश को पाते ही नवाब ने तुरन्त ही जहाँदारशाह को त्रिपोलिया के ऊपर कैद कर दिया और फिर यहीं पर इसका कत्ल हुआ।

औरंगजेब की मृत्यु और उसके पुत्रों में उत्तराधिकार का युद्ध

नाम	वर्ष	पद व पदवी	मनसब	ऐतिहासिक स्रोत
सैय्यद फतेह मोहम्म खाँ बारहा	-	ग्वालियर का किलेदार	-	तजकिरातउस सलातीन चक़ताई कामवर पृ॰ 16
सैय्यद हुसेन अली खाँ बहादुर	-	-	3000 रुपये का इनाम	वही पृ॰ 23
सैय्यद अब्दुल्ला खाँ बहादुर	29 ता०	-	2000 सवार 4000 मनसब अलम नक्कारे	वही पृ॰ 25
सैय्यद हुसेन अली खाँ बहादुर	29 ता	-	2000 सवार 4000 मनसब अलम नक्कारे	वही पृ॰ 25
	मोहरम 4 ता० को	बिहार का सूबेदार		वही पृ॰ 26

नाम	वर्ष	पद व पदवी	मनसब	ऐतिहासिक स्रोत
सैय्यद अब्दुल्ला खाँ बारहा	1702 जमादी उल अव्वल की 12 ता॰ को	इलाहाबाद का सूबेदार	-	कामवर खाँ तजकिरातुस सलातीन चकताई पृ॰ 32
सैय्यद हुसेन अली खाँ बारहा	-	"हिंडोना" व बयाना का सूबेदार	-	उत्तर मुगल कालीन भारत सतीशचन्द्र पृ॰ 87
सैय्यद हुसेन खाँ बारहा	-	"मेवात" के फौजदार	-	तजकिरातुस सलातीन चकताई पृ॰ 34 कामवर
सैय्यद अहमद सईद खाँ	-	-	-	-
सैय्यद गैरत खाँ	-	-	-	-

बहादुर शाह के काल ‡ 1707

नाम	वर्ष	पद व पदवी	मनसब	पुरस्कार	ऐतिहासिक स्रोत
शुजात खाँ बारहा	बहादुर शाह के लिए 20 ता0 1119 हिजरी	अजमेर का सूबेदार	-	-	तजकिरातुस सलातीन चकताई कामवर खाँ पृ॰ 20
सैय्यद फतेह मुहम्मद	"	"ग्वालियर" का किलेदार	-	-	वही पृ॰ 14
सैय्यद हुसेन अली खाँ	1 ता0 को	-	3000/- का इनाम	-	वही
सैय्यद अब्दुल्ला खाँ बारहा	-	अजमेर की सूबेदारी चाही परन्तु इसने अस्वीकार कर दी	4000/2000	अल्म नक्कारे	वही पृ॰ 25
सैय्यद हुसेन अली खाँ बारहा	8 ता0	"बिहार" का नायब सूबेदार	-	-	वही पृ॰ 25 उत्तर मुगल कालीन भारत सतीशचन्द्र पृ॰ 81

अजीमुशान

नाम	वर्ष	पद व पदवी	मनसब	पुरस्कार	ऐतिहासिक स्रोत
सैय्यद हुसैन अली खाँ बारहा	अजीमुशान	बिहार का नायब सूबेदार	–	–	मासिर उल उमरा अंग्रेजी अनुवाद भाग-1 पृ.631 तजकिरातउस सलातीन चकताई पृ.26 उत्तर मुगल कालीन भारत पृ.87
सैय्यद अब्दुल्ला खाँ	"	इलाहाबाद का नायब सूबेदार	–	–	उत्तर मुगल कालीन भारत पृ.8 तजकिरातउस सलातीन चकताई पृ.87

अध्याय - 7

फार्रुखसियर के राज्यकाल का आरम्भ व बारहा सैय्यदों की गतिविधियाँ

फार्रुखसियर के राज्यारोहण में सैय्यद अब्दुल्ला खाँ व सैय्यद हुसेन अली ने प्रमुख भूमिका निभाई तथा यह कथन अनुचित न होगा कि बारहा के इन सैय्यद बन्धुओं के सहयोग से ही फार्रुखसियर गद्दी पर बैठा[1]। अतः राज्यारोहण के पश्चात् उसने दोनों भाइयों को दरबार में उच्च पद प्रदान किये ।

सैय्यद अब्दुल्ला खाँ को वजीर का पद प्रदान हुआ तथा उन्हें 'कुतुबुलमुल्क' की पदवी दी गई[2]। सैय्यद हुसेन अली खाँ को 'मीर बख्शी' का पद व 'अमीरुल उमरा' की पदवी मिली[3] तथा सात हजार जात

1- फार्रुखसियर के विस्तृत विवरण के लिये देखिये -
मुन्तखबुत्तवारीख भाग-2 पृ॰ 707-708
जहाँदारनामा पृ॰ 40-42
उत्तर मुगलकालीन भारत पृ॰

2- जंगनामा पृ॰ 8
तारीखे फार्रुखसियर पृ॰ 446
तजकिरातउस सलातीने चकतई पृ॰ 17
हिन्दुस्थानया अर्वाचीन इतिहास नट नागर शोध संस्थान सीतामऊ पृ॰127

3- कामवर खाँ तजकिरातउस सलातीने चकतई पृ॰ 21
हिन्दुस्थानया अर्वाचीन इति॰ नट नागर शोध संस्थान सीतामऊ पृ॰ 127
उत्तर मुगलकालीन भारत पृ॰ 89
पार्टीस एण्ड पोलिटिक्स पृ॰ 96

व सात हजार सवार का मनसब दोनों को ही प्राप्त हुआ[1]। सैय्यद अब्दुला खाँ को मुल्तान[2] तथा हुसेन अली खाँ बिहार की सूबेदारी प्रदान की[3] और उन्हें यह आदेश दिया गया कि वह अपने सूबों का शासन अपने नायब द्वारा करें । इन सैय्यदों के रिश्तेदारों को भी ऊँचे पद दिए गए । सैय्यद अब्दुल्ला खाँ के मामा मुजफ्फर खाँ को अजमेर का सूबेदार नियुक्त किया गया[4] । अधिकाँश अमीरों को उन्हीं के पदों पर रहने दिया गया । सैय्यदों में यह आशा की थी कि वह बादशाह को अपने हाथ में खिलौना बनाकर रखेंगे । वह अपने महल में सुख भोगने में ही व्यस्त रहेगा व वास्तविक राज्य सत्ता उनके हाथों में रहेगी ।

1- पार्टीस एण्ड पौलिटिक्स पृ॰ 96
तजकिरातउस सलातीने चकतई कामवर पृ॰ 16

2- जंगनामा पृ॰ 17
उत्तर मुगल कालीन भारत॰सतीशचन्द्र पृ॰ 90

3- तजकिरातउस सलातीने चकतई पृ॰ 103
उत्तर मुगलकालीन भारत॰सतीशचन्द्र पृ॰ 90

4- उत्तरमुगल कालीन भारत॰सतीशचन्द्र पृ॰ 90
पार्टीस एण्ड पौलिटिक्स पृ॰ 96

परन्तु वास्तविकता इसके विपरीत रही तथा फार्रुखसियर निरन्तर उनको समाप्त करने की योजना बनाता रहा[1]।

बादशाह द्वारा असद खाँ व जुल्फिकार खाँ के प्रति किये दुर्व्यवहार ने सैय्यदों को असंतुष्ट कर दिया था[2]। यद्यपि कुछ नियुक्तियाँ सैय्यद अब्दुल्ला के परामर्श से की गई थी तथापि वह इनसे सन्तुष्ट नहीं थे[3] । नीतियों को लेकर भी सैय्यद बन्धुओं व बादशाह के विचारों

1- सैय्यद बन्धुओं का विचार था कि पुराने आलमगीरी तथा बहादुरशाही अमीरों का सहयोग राज्य की प्रतिष्ठा बढ़ाने व उसे स्थायित्व प्रदान करने में सहयोगी होगा । अतः उसके साथ सद्भावपूर्ण व्यवहार किया जाए । परन्तु फार्रुखसियर ने इसे नहीं माना । जुल्फिकार खाँ को फाँसी दी गई व असद खाँ को अपमानित किया । सैय्यद बन्धु इससे बहुत असन्तुष्ट थे, जिसकी पुष्टि हुसेन अली द्वारा कहे वचनों से होती है कि बादशाह कृतज्ञता नहीं जानता, निष्ठा नहीं समझता अपने वचन में अस्थिर ही नहीं है, अपितु उसे तोड़ने में उसे शर्म भी नहीं आती । देखिये - डा॰ सतीश चन्द्र कृत उत्तर मुगलकालीन भारत पृ॰ 90

2- सैय्यद अब्दुल्ला खाँ की परामर्श से चीन कुलीच खाँ को 7000/7000 का मनसब प्रदान किया तथा "निजामुलमुल्क" का खिताब प्रदान किया और दक्षिण का सूबेदार नियुक्त किया । अब्दुस्मद खाँ को 7000/7000 का मनसब देकर लाहौर का सूबेदार बनाया तथा अमीर खाँ को बख्शी नियुक्त किया । अतः इन सब नियुक्तियों से सैय्यद बन्धु के मन में असन्तोष की भावना जागृत हुई ।

3- हिन्दुस्थानच्या अर्वाचीन इतिहास मराठी रियासत (1707-1720) पृ॰ 126

बादशाह शिकारी चे निमित्त करून वार वार बाहेर जाई आणी तिकडे सैय्यदांचा नाशाचा कोही तरी गुप्त बेतकरी, असाहा प्रकार सारखा सदा सात वर्ष चाल्ला

में मतभेद था । उदाहरणार्थ राजपूत समस्या के समाधान के लिए सैय्यद हुसैन अली सौहार्दपूर्ण नीति अपनाने के पक्ष में था, जबकि फार्रुखसियर राजपूतों के साथ सहयोग की नीति साम्राज्य के लिए अहितकर समझता था । फार्रुखसियर के राज्यारोहण के तुरन्त बाद ही अजीत सिंह तथा जय सिंह ने बादशाह की अधीनता स्वीकार करते हुए बधाई सूचक पत्र भेजे थे । यह पत्र हुसैन अली द्वारा बादशाह के सम्मुख प्रस्तुत किए गए[1]। राजा अजीत सिंह द्वारा सौ मुहर व जय सिंह द्वारा सौ मुहर भी प्रदान की गई[2]। यद्यपि सैय्यद हुसैन अली के परामर्श से बादशाह ने अजीत सिंह व जय सिंह व अन्य राजाओं को दरबार में उपस्थित होने के लिए पत्र प्रेषित किये, परन्तु वास्तव में ऐसा ज्ञात होता है कि फार्रुखसियर जय सिंह तथा अजीत सिंह इन दोनों शासकों को भी अलग अलग करना चाहता था। सम्भवत: वह इन दोनों के सहयोग को राज्य के लिए घातक समझता था । उसने जय सिंह को मालवा की सूबेदारी व अजीत सिंह को थट्टा की सूबेदारी पर नियुक्त किया[3] । इससे पूर्व

1- फार्रुखसियर ने इन शासकों को दरबार में बुलाया । राजपूत राजा दरबार में उपस्थित होने में भयभीत थे । सम्भवत: इसका कारण जुल्फिकार खाँ तथा असद खाँ के प्रति किया गया दुर्व्यवहार था तथापि उन्होंने बादशाह को यह वचन दिया कि शाही आज्ञानुसार उन्हें जहाँ भी नियुक्त किया जाएगा वह सेना में प्रस्तुत रहेंगे । देखिये अखबरात व जयपुर रिकार्ड्स सीतामऊ क्रमांक 22 ता॰ 24 मोहर्रम सोमवार फरवरी 1713

2- देखिये अखबरात व जयपुर रिकार्ड्स सीतामऊ संग्रह क्रमांक 22 ता॰ 24 मोहर्रम सोमवार फरवरी 1713
राजा अजीत सिंह सौ मोहर एक हजार रुपये
मिर्जाराजा जय सिंह सौ मुहर एक हजार रुपये

3- तारीखे सलातीने अफगाने पृ॰ 179

अजीत सिंह ने मालवा की सूबेदारी पर नियुक्त किये जाने की प्रार्थना की थी, अतः उसने यहाँ जाने से इन्कार कर दिया[1]। शाही आज्ञा की अवहेलना से फार्रुखसियर असन्तुष्ट था और उसने अजीत सिंह के विरुद्ध युद्ध करने का निश्चय किया । पहले फार्रुखसियर ने स्वयं सेना का नेतृत्व करना चाहा , परन्तु बाद में सैय्यद हुसेन अली को इस अभियान पर नियुक्त किया । फार्रुखसियर सैय्यद बन्धुओं की बढ़ती शक्ति से बहुत चिन्तित था, व राजपूतों व सैय्यदों के मध्य मनमुटाव पैदा करना चाहता था और हुसेन अली के मारवाड़ जाते ही उसने अजीत सिंह को गुप्त रूप से पत्र लिखकर हुसेन अली के विरुद्ध कार्यवाही करने के लिए प्रेरित किया[2]। हुसेन अली पहले ही से राजपूत राजाओं का सहयोग प्राप्त करने का प्रयास कर रहा था[3] तथा 1714 में हुसेन अली और

1- इबरतनामा के लेखक के अनुसार जब अजीत सिंह व जयसिंह को दरबार में बुलाया गया तो उन्होंने बादशाह को बधाई पत्र भेजे, परन्तु दरबार में उपस्थित नहीं हुए तथा विशेष कृपाओं की माँग की जिनमें मालवा तथा गुजरात की सूबेदारी तथा 7000 मनसब की भी माँग की ।

2- सियारुल मुताखरीन पृ०
उत्तर मुगलकालीन भारत पृ० 93
हिन्दुस्थानया अर्वाचीन इतिहास पृ० 126
बादशाह ने हुसेन सैय्यदास त्याजवर रवाना केले आणी आतुन अजित सिंगाहा पत्र लिहिलेकी तुम्ही हुसेन सय्यदास मारुन टाकले महराजे त्याची सम्पत्ति आम्ही तुम्हास देहऊ

हुसेन अली को बादशाह की सूचना का पता चल गया । मीतुल वारीदात के लेखक के अनुसार अजीत सिंह ने मिथ्या रक्तपात से देश की रक्षा करने के लिए स्वयं ही बादशाह के पत्र के बारे में हुसेन अली को सूचित कर दिया

3- हुसेन अली इस विषय में गुप्त रूप से जगजीवन राम से परामर्श कर रहा था ।

और अजीत सिंह के बीच एक समझौता हुआ[1] । समझौते के अनुसार - अजीत सिंह ने अपनी कन्या का विवाह फार्रुखसियर के साथ करने तथा अपने पुत्र अभय सिंह को मीर बख्शी के साथ दरबार में भेजने तथा आवश्यकता पड़ने पर स्वयं दरबार में उपस्थित होने का वचन दिया । इसके अनुसार अजीत सिंह ने थट्टा जाना स्वीकार कर लिया और पेशकश देना स्वीकार किया । कन्या का विवाह भी फार्रुखसियर से करना स्वीकार किया । वास्तव में इससे महत्वपूर्ण वह गुप्त समझौता था जो अजीत सिंह व हुसैन अली के बीच हुआ था । इसके अनुसार यह निश्चय हुआ कि जैसे ही अजीत सिंह थट्टा जाएगा और कुछ दूर पहुँचेगा वैसे ही उसे गुजरात की सूबेदारी की नियुक्ति का आदेश दिया जायगा । यह समझौता सैय्यद बन्धुओं और राजपूतों के बीच मैत्री पूर्ण सहयोग का प्रारम्भ था[2]। इस घटना से जहाँ एक ओर सैय्यद बन्धुओं एवम् राजपूतों के बीच मैत्री पूर्ण सम्बन्ध स्थापित हुए वहीं बादशाह व सैय्यद बन्धुओं के बीच मनमुटाव भी प्रत्यक्ष परिलक्षित होने लगा[3]।

1- हिन्दुस्थानया अर्वाचीन इतिहास मराठी रियासत पृ॰126
अजीत सिंगाने शरण जाउन तह केला आणी आपली मुलगी इन्द्रकुमारी बादशाहस दिल्ली ।

2- इबरतनामा फोलियो 60, मीराते वारिदात 509-510 शाहनामा ए मुनव्वर कलम ।

3- अपनी अयोग्यता और सैय्यदों के बल का ध्यान न देकर फार्रुखसियर ने सैय्यदों के दिल में शक पैदा कर दिया । फार्रुखसियर का कृपा पात्र ढाके का काजी था, जिसे उसने मीर जुमला की पदवी दी थी । मीर जुमला का बढ़ता प्रभुत्व सैय्यदों का अपमान था । अतः इस तरफ से सैय्यदों को जागरूक होना पड़ा ।

सैय्यद बन्धुओं की स्वयं की स्थिति भी दरबार में बहुत अच्छी नहीं थी । इसका कारण मूल रूप से अमीरों के एक दल का उनके विरूद्ध होना व स्वयं उनमें शासकीय योग्यता का अभाव होना था[1]। सैय्यद बन्धुओं के प्रभाव को कम करने के लिये फार्रूखसियर ने अपने प्रिय पात्रों का दल गठित करना आरम्भ कर दिया था ताकि आवश्यकता पड़ने पर इन बन्धुओं को पद मुक्त किया जा सके[2]। सैय्यद हुसैन अली को फार्रूखसियर ने पहले ही अजीत सिंह पर चढ़ाई के लिए मारवाड़ भेज दिया था ताकि वह दिल्ली से दूर रहे[3]।

सैय्यद हुसैन अली खान इस बात को भलि भाँति जानता था कि राजधानी से अधिक समय तक दूर रहना उसके हित में न होगा । उसे अब्दुल्ला खाँ द्वारा प्रेषित पत्र भी प्राप्त हुआ, जिसमें उसे शीघ्र ही दरबार आने के लिए कहा गया था[4]।

1- मीर जुमला खान दौरान महमद अमीर खान कौर दरबारी सय्यदाचे विरूध होते देखिये - हिन्दुस्थानचा अर्वाचीन इतिहास पृ. 126

अब्दुल्ला खाँ प्रशासनिक कार्यों के प्रति पूर्ण रूप से उदासीन था व अपने वित्तीय कार्यों का भार दीवान रतन चन्द्र को सौंप दिया था, जो कार्य कुशल होते हुए भी लालची व दम्भी था । अतः बहुत अप्रिय था । देखिये -उत्तर मुगलकालीन भारत पृ. ?

2- इनमें प्रमुख मीर जुमला था, उसे 7000/7000 का पद व बंगाल की सूबेदारी दी गई थी, साथ ही 5000 सवार रखने की अनुमति दी गई थी ।

3- फार्रूखसियर ने अजीत सिंह को गुप्त रूप से पत्र लिखा कि वह सन्धि करने में ज्यादा से ज्यादा समय लगाए ।

4- उत्तर मुगल कालीन भारत पृ. 96

उधर राजा अजीत सिंह ने भी अपने हित के लिए फार्रुखसियर की बात पर ध्यान न दिया था । अजीत सिंह व हुसैन अली में तुरन्त सन्धि हो गई[1]। सैय्यदों ने दरबार में उपस्थित होने से मना कर दिया था । यह लोग चाहते थे कि मीर जुमला दिल्ली में न रहे[2]। सैय्यद हुसैन अली खान को दक्षिण में भेजा गया । 20 मई 1715 को सैय्यद हुसैन अली ने दक्षिण के लिए कूच किया । दक्षिण के सभी कार्य, जागीरदारों की नियुक्ति एवं पदच्युति, तथा दुर्गों के रक्षकों की नियुक्ति तथा स्थानान्तरण, पूर्ण अपने हाथ में ले लिया था। यह सब इसने फार्रुखसियर से पहले ही तय कर लिया था । अतः शक्ति का प्रथम संघर्ष समाप्त हुआ । बाह्य रूप से इसका प्रतिफल सैय्यदों की विजय थी , क्योंकि बादशाह ने सैय्यदों की सब शर्तें मन्जूर की थी[3]।

1- जंगनामा पृ॰ 17

2- जंगनामा पृ॰ 18

मीर जुमला बादशाह का बड़ा कृपा पात्र था। इसका असली नाम अब्दुल्ला था । फार्रुखसियर ने अपने राज्यारोहण के पश्चात् इसे "मीर जुमला" की उपाधि दी थी । यह बड़ा उदार व ईमानदार था। वह नहीं चाहता था कि हिन्दुस्तान का शासन बारहा के सैय्यदों के हाथ में आ जाए। परन्तु जब सैय्यदों का बढ़ता प्रभाव देखा तो उसे ईर्ष्या होने लगी और वह इनके खिलाफ बादशाह का कान भरने लगा । बादशाह ने मीर जुमला को शाही मुहर लगाने का भी आदेश दिया और कहा कि मीर जुमला का हस्ताक्षर एवं कथन मेरा हस्ताक्षर व कथन है। अतः दिन प्रतिदिन मीर जुमला का प्रभाव बढ़ रहा था और यह सैय्यदों का अपमान था ।

3- उत्तर मुगल कालीन भारत पृ॰ 97-98

सैय्यद हुसेन अली खाँ ने यह बात स्पष्ट कर दी थी कि यदि मीर जुमला बंगाल से बुलाया गया और मेरे भाई सैय्यद अब्दुल्ला खाँ के अधिकारों में कोई भी कमी हुई तो मैं तुरन्त ही तीन सप्ताह के भीतर दक्षिण से दिल्ली आ पहुँचूँगा[1]।

फार्रुखसियर सैय्यद हुसेन अली से सदैव ही घबराता था और उसे समाप्त कर देने के लिए प्रयत्नशील था और इसने दाऊद खाँ पन्नी को इस आशय का पत्र लिखा था[2]। दाऊद खाँ ने सैय्यद हुसेन अली को ललकारा। 7 दिसम्बर को हुसेन अली और दाउदखाँ का युद्ध हुआ। जिस समय सैय्यद हुसेन अली खाँ अकबरपुर के पास पहुँचा तो उसने सुना कि अहमदाबाद का सूबेदार दाउदखाँ खान देश का सूबेदार नियुक्त होकर बुरहानपुर आ गया है। साथ ही यह पता लगा कि दाउदखाँ को गुप्त रूप से ऐसा आदेश दिया गया कि न तो वह हुसेन अली से मिले और न आज्ञा माने। तब हुसेन अली ने दाऊद से कहलाया कि "दक्षिण की सूबेदारी मेरे पास है, इसलिये तुमको आज्ञा भंग नहीं करनी चाहिए और मुझसे शीघ्र ही मिलना चाहिए और या फिर तुम बादशाह के पास चले जाओ जिसमें कोई गड़बड़ी न फैले और मुसलमान का रक्त पात न हो।"

1- जंगनामा पृ० 18
खाफी खाँ 742 सतीशचन्द्र कृत उत्तर मुगल कालीन भारत पृ० 98

2- फार्रुखसियर ने गुजरात के सूबेदार दाउदखाँ पन्नी को जो अपनी वीरता के लिए प्रसिद्ध था, लिखा की वह मराठों से लड़ने के बहाने सदैव हुसेन अली को बुलाए और छल कपट से सैय्यद हुसेन अली का बल क्षीण कर दे।

परन्तु दाउदखाँ ने हुसैन अली की बात न मानी[1]। दाउद खाँ और हुसैन अली खाँ लड़ने को तैयार हो गए[2]। इस युद्ध में दाऊद खाँ पराजित हुआ और मारा गया । सैय्यद हुसैन अली ने बादशाह की आज्ञा का उल्लंघन करके मराठों पर चढ़ाई कर दी । इधर सिक्खों ने भी परिस्थितियों से लाभ उठाया । उधर मराठे भी जोर पर थे । अतः अनिष्ट की आशंका से सैय्यद हुसैन अली ने साहू से सन्धि कर ली[3]। हुसैन अली दस हजार महाराष्ट्र की सेना के साथ दिल्ली आया|फार्रुखसियर को यह सन्धि अस्वीकृत थी । अतः फार्रुखसियर और सैय्यदों में विद्रोह और भी बढ़ गया[4]। इधर मीर जुमला का दिल्ली आना सैय्यद अब्दुल्ला को अच्छा नहीं लगा[5]।

1- क्योंकि शाही फरमान का बल ज्यादा था और नीमा जी सिन्धिया की सहायता की आशा थी ।

2- हुसैन अली के पास पन्द्रह हजार सवार और दाऊद के पास कुल तीन हजार थी बुरहानपुर के लाल बाग के मैदान में लड़ाई हुई। दाऊद खाँ बड़ी वीरता से लड़ा । इस युद्ध में दाऊद के बहुत व्यक्ति मारे गए । हुसैन अली की ओर से मीर मुसरिफ ने उसका सामना किया , परन्तु यह मारा गया और हुसैन अली की सेना में त्राहि-त्राहि फैल गई । परन्तु संयोग से दाऊद को एक गोली लगी और वह समाप्त हो गया । निमाजि सिन्धिया दूर से युद्ध देख रहा था, वह पराजित पक्ष को लूटने की प्रतीक्षा कर रहा था । मराठों ने दाऊद खाँ का शिविर लूट लिया । परन्तु सारा कोष हुसैन अली के हाथ आया । फार्रुखसियर को इसके मरने का बहुत दुख हुआ ।

3- उत्तर मुगल कालीन भारत पृ॰ 99
जंगनामा पृ॰ 19

4- जंगनामा पृ॰ 20

5- वही
एक दूसरा कश्मीरी व्यक्ति जिसको एकुन्दद्दौला की पदवी मिली थी बादशाह का कृपा पात्र होना भी सैय्यद अब्दुल्ला खाँ को बहुत खटका|बादशाह ने अब्दुल्ला खाँ के शत्रुओं से मेल बढ़ाना प्रारम्भ कर दिया। सभी सरदार इस कश्मीरी एकुन्दद्दौला की प्रधानता से चिढ़ गए थे और अब्दुल्ला खाँ से मिल गए थे ।

सैय्यद हुसैन अली खान भी दक्षिण से सेना लेकर आ गया । जय सिंह ने अब्दुल्ला खाँ से समझौता करने के लिए बादशाह से कहा परन्तु बादशाह का सैय्यद अब्दुल्ला से बैर प्रकट करने का सहास न हुआ, इधर सैय्यद अब्दुल्ला खाँ व सैय्यद हुसैन अली ने नगर में अधिकार कर लिया और फार्रुखसियर को ढूँढ कर पकड़ लिया और गुप्त रीति से इन्हें मरवा दिया[1]।

1- जंगनामा पृ० 20

फार्रुखसियर के जीवन का दुखांत नाटक स्वयं उसी के व्यवहार का परिणाम था, जैसा खाफी खाँ कहता है " अपने शासन के आरम्भ से ही वह अपने लिए विपत्तियाँ उत्पन्न करने लग गया था, उसमें न अपनी निश्चय शक्ति थी और न उसको कामकाज का ही अनुभव था । उसको दूसरों की सम्मति पर आश्रित रहना पड़ता था, जबकि न उसमें विवेक था न दृढ़ता । वह धूर्तों की बात सुनते समय सावधान नहीं रहता था ।"

हिस्ट्री आफ इण्डिया पृ० 623

एलफिस्टन के अनुसार फार्रुखसियर बड़ी योजनाओं को समझ नहीं सकता था और छोटी योजनाओं की अपनी असली प्रकृति के कारण सहायता के बिना पूरा नहीं कर सकता था । यदि वह बुद्धिमान होता तो सैय्यदों की सलाह बिना कोई कार्य नहीं करता । सैय्यदों की सहायता से इसका राज्य सफल होता । परन्तु फार्रुखसियर ने गलत सहारा लिया, मीर जुमला, जय सिंह, एतकदखाँ, मोहम्मद अमीन खाँ, खानदौरा और अनेक लोगों का भरोसा किया, जिससे इसका विनाश हुआ। अनेक लेखकों ने सैय्यद बन्धुओं की आलोचना की है, लेकिन सैय्यद बन्धुओं में व्यक्तिगत बुराईयाँ चाहे जैसी भी हो, परन्तु फार्रुखसियर के विषय में इन लोगों ने इतना अपराध नहीं किया, जितना कहा जाता है । फार्रुखसियर को सैय्यद बन्धुओं की कृपा से तख्त प्राप्त हुआ था ।

चारण कृत सूरज प्रकाश भाग-2 षष्टम प्रकरण पृ० 9

खाफी खाँ कहता है कि दोनों भाई अपने काम में मीरजुमला के विषैले और उत्तेजित हस्ताक्षर को धैर्य के साथ सहन नहीं कर सकते थे धैर्य की भी सीमा होती है, धैर्य समाप्त होने पर तो किसी का भी वश नहीं चल पाता । सैय्यदों का भी धैर्य समाप्त हो गया था ।

कुतुबुल्मुल्क अब्दुल्ला खाँ ने फार्रुखसियर के पश्चात् राजकुमार रफीउद्दरजात को गद्दी पर बिठाया[1]। हुसैन अली ने प्रारम्भ में सैय्यद अब्दुल्ला खाँ के इस कार्य का विरोध करना चाहा, परन्तु बाद में अब्दुल्ला खाँ के कार्य का समर्थन किया[2]। रफीउद्दरजात के सिर पर शाही सिक्के ढाले गए तथा खुतबा पढ़ा गया, बहुत बड़ी संख्या में प्रतिष्ठित

1- शाहनामा ए मुनव्वर कलम अंग्रेजी अनुवाद पृ. 44
तसकरातीनउस सलातीने चकतई पृ. 26
सूरज प्रकाश पृ. 9
राजरूपक पृ. 42, मराठी रियासत पृ. 25

राजरूपक के लेखक के अनुसार इस कार्य में अजीत सिंह का भी सहयोग सैय्यद बन्धुओं को प्राप्त था, तथा रफीउद्दरजात के काल में अजीत सिंह भी बहुत प्रभावशाली हो गये थे । अब राजा लोग महाराजा के द्वार पर आते हैं बादशाहत तीनों के हाथ में है - एक तो महाराजा अजीत सिंह जी और दो सैय्यद भाई । दोनों सैय्यद भाई अजीत सिंह के गुण गाते हैं और मोतियों से बाँधते हैं ।

हिन्दुस्तान-चा अर्वाचीन इतिहास में सरदेसाई ने भी अजीत सिंह के इस विषय में सैय्यदों से सहयोग करने के विषय में लिखा है ।

2- तजकिरातउस सलातीने चकतई पृ. 263
कामवर खाँ के अनुसार कुतुबुल्मुल्क सैय्यद अब्दुल्ला खाँ ने राजकुमार रफीउद्दरजात को गद्दी पर बिठाया था । जब हुसैन अली को इसका पता चला तो वह चार पाँच हजार सैनिकों को लेकर अमीरूल उमरा की हवेली में ठहर गया । उसका इरादा अपने भाई का विरोध करना था, क्योंकि उसने बादशाही खजाने व हथियारों पर कब्जा कर लिया था व फार्रुखसियर के अमीरों की जागीरें जब्त करके अपने मित्रों को दे दी थी । संभवत: दोनों में तलवार चल जाती, परन्तु रतन चन्द्र बकूल के समझाने पर कि यदि वह आपस में विरोध करेंगे तो चकतई अमीर उनको समाप्त कर डालेंगे, हुसैन अली ने अब्दुल्ला का साथ दिया ।

उमराओं व शक्तिशाली मनसबदारों ने आकर बादशाह के प्रति श्रद्धा अर्पित की। जो अमीर इस अवसर पर उपस्थित हुए उनके प्रति कड़ी कार्यवाही की गई[1]। यद्यपि सैय्यद बन्धुओं ने इस प्रकार इस राज्यारोहण में प्रमुख भाग लिया था व बादशाह की गतिविधियों पर उनका पूर्ण नियन्त्रण था तथापि प्रमुख प्रशासनिक पदों पर विशेष परिवर्तन नहीं किया गया था[2]।

निजामुल्मुल्क जिसे फार्रुखसियर द्वारा मालवा का सूबेदार नियुक्त किया था, सैय्यदों की गतिविधियों से अत्यन्त चिन्तित व भयभीत भी था[3]। अतः उसने सैय्यद बन्धुओं से मालवा जाने की आज्ञा माँगी । स्वयं अब्दुल्ला खाँ व हुसेन अली खाँ भी निजामुलमुल्क के प्रति सशंक थे । अतः उन्होंने उसे मालवा जाने की अनुमति दे दी थी । फार्रुखसियर को पदच्युत करने पर भी सैय्यदों के सामने समस्या न केवल पुराने अमीरों की अपितु तैमूरी राजकुमारों की भी थी, जिनमें से कई आगरे के किले में बन्दी थे तथा पुराने अमीरों के सहयोग से अपना आधिपत्य जमाने का प्रयास कर सकते थे ।

1- मुहम्मद मुराद काश्मीरी एतकाद खाँ की सम्पत्ति जब्त कर ली गई व उसे अपमानित किया गया । इसी प्रकार सादात खाँ के सैय्यदों के ही समान स्थान दिये जाने की माँग करने पर उसे आश्वस्त दरबार में बुलाया गया । कामवार खाँ के अनुसार उसको विश्वास दिलाने के लिये पवित्र कुरान पर शपथ ली गई । परन्तु दरबार में उपस्थित होने पर उसे कारागार में डाल दिया गया । उसकी पन्द्रह लाख रुपये की सम्पत्ति जब्त कर ली गई व उक्त सम्पत्ति को सैय्यदों ने आपस में बाँट लिया । देखिये - शाहनामा ए मुनव्वर कलम पृ॰45 तजकिरातउस सलातीने चकताई पृ॰ 265

2- उत्तर मुगल कालीन भारत पृ॰ 118

3- उत्तर मुगल कालीन भारत पृ॰ 127

राजकुमार मुहम्मद अकबर के पुत्र नेकुसियर को अपने दो भतीजों के साथ बाल्यावस्था से ही (आगरा) अकबराबाद के किले में बन्द था[1]। सैय्यद बन्धुओं को यह भय था कि कहीं निजामुलमुल्क उक्त राजकुमार के साथ सहयोग कर विद्रोह की ओर उन्मुख न हो । अतः उन्होंने अपने सम्बन्धी गैरत खाँ[2] को पाँच हजारी जात व सवार का मनसब देकर आगरा का सूबेदार नियुक्त किया तथा उसकी सहायतार्थ शमशेर खाँ व संजर खाँ को भी भेजा गया[3]। इसी बीच नेकुसियर ने कुछ लोगों के सहयोग से स्वयं को आगरे के किले में बादशाह घोषित कर दिया[4] तथा गैरत खाँ के महल पर गोले बरसाये । गैरत खाँ भयभीत होकर निकल भागना चाहता था परन्तु संजर खाँ तथा शमशेर खाँ द्वारा भर्त्सना किये

1- पार्टीज एण्ड पोलिटिक्स पृ॰ 144
उत्तर मुगल कालीन भारत सतीशचन्द्र पृ॰ 119
तजकिरातउस सलातीने चकतई पृ॰ 272

2- गैरत खाँ सैय्यद हुसेन अली खाँ की बहन का लड़का था

3- शाहनामा मुनव्वर कलम पृ॰ 86

4- तारीखे सलातीने चकतई पृ॰ 272

शाहनामा ए-मुनव्वर कलम के लेखक के अनुसार नेकुसियर अपने दो भतिजों के साथ आया व किले के दरवाजे के ऊपर बने (बंगला) में बैठ गया । लोगों ने उसका स्वागत किया, मित्र सेन ने राजकुमार पर स्वर्ण मुद्राएं निछावर की तथा विभिन्न दिशाओं से सैनिकों ने आकर सेवा की इच्छा व्यक्त की ।

सूरज प्रकाश पृ॰ 9

किये जाने पर व साहस दिलाने पर उसे पूरी घटना की सूचना अब्दुल्ला खाँ को भेजी[1]।

1- शाहनामा ए-मुनव्वर कलम पृ॰ 47

"किबला तथा काबा के परिचायकों को सम्मान देने के पश्चात् राजकुमार निकोसियर ने जो छूढ़ अकबराबाद में बन्दी था, कुछ अन्य व्यक्तियों के साथ विद्रोह कर दिया । पच्चीसवें जुमादा द्वितीय में वे सिंहासन पर बैठे । उन्होंने राजकीय कोष को अपने कब्जे में लिया, कोतवाल को पदच्युत किया तथा अपने कोतवाल भी उनके स्थान पर नियुक्त किये तथा एक सेना का गठन आरम्भ किया । जिसमें भर्ती के लिए सभी दिशाओं से व्यक्तियों ने आना प्रारम्भ किया । किले की कर्मचारियों ने उनका साथ दिया तथा नाना प्रकार की आपत्ति प्रारम्भ कर दी कि वे मुझ पर आक्रमण करना चाहते हैं । फिर भी मैं संजर खान तथा शमशेर खाँ की सहायता से अपने स्थान पर दृढ़ हूँ तथा सम्राट को सौचेत करना अपना कर्तव्य समझता हूँ । सम्राट के सभी आज्ञाओं का यथायोग्य पालन किया जाएगा ।"

इस पत्र के वाहक सैय्यद अब्दुल्ला खाँ तथा सैय्यद हुसेन अली खाँ दिल्ली में पत्र देने के पश्चात् अत्यन्त घबड़ा गए तथा आपस में सलाह किया । यह निश्चय किया गया कि उनमें से एक निश्चित स्थान पर शीघ्र जायें । तदनुसार सैय्यद हुसेन अली खाँ एक सेना के साथ विद्रोह दमन के हेतु अकबराबाद की ओर अग्रसर हुए, जैसे ही वे बट से बाहर आए, हाथी के पीठ से नक्कारे नीचे गिर गए । एक जबाबी पत्र सैय्यद गैरत खाँ तथा एक प्रशंसा का पत्र संजर खाँ तथा शमशेर खाँ को भेजा गया जो निम्न प्रकार है :- "समृद्धशाली तथा भाग्यशाली सैय्यद गैरत खाँ, आप भगवान की संरक्षता में रहें । आपके पत्र जिसमें आपने नेकूसियर के विद्रोह तथा संजर खाँ तथा शमशेर खाँ की सहायता का वर्णन किया है का भली प्रकार अवलोकन किया गया तथा समझा गया । हमारी सेना आपकी सहायता हेतु अग्रसर है तथा भगवान की अनुकम्पा से शीघ्र ही वहाँ विद्रोह के दमन के लिए पहुँच जाएगी । आप किले का घिराव जारी रखें । इसके अतिरिक्त कुछ और नहीं लिखना है ।

॥ शेष अगले पृष्ठ पर ॥

सैय्यद अब्दुल्ला खाँ तथा हुसैन अली खाँ को जब दिल्ली में इस घटना की सूचना गैरत खाँ के व्यक्तिगत दूत द्वारा प्रेषित पत्र से मिली तो उन्होंने गैरत खाँ को एक पत्र प्रेषित किया व दूसरा पत्र संजर खाँ व शमशेर खाँ को उनकी प्रशंसा में भेजा[1]। साथ ही इस विद्रोह के दमन का उत्तरदायित्व सैय्यद हुसैन अली ने लेकर आगरा की ओर प्रस्थान किया[2]। तीन महीने तक किले का घेरा पड़ा रहने के पश्चात् रसद आदि की समस्या से ग्रस्त होकर किलेदार ने हथियार डाल दिये । नेकूसियर बन्दी बना लिया गया[3]।

॥ पूर्व पृष्ठ का शेष भाग ॥

संजर खाँ तथा शमशेर खाँ के पत्र निम्न प्रकार है -

"राज्य तथा सरकार के सहायक संजर खाँ तथा शमशेर खाँ को भगवान भलीभाँति रखे । इस पत्र द्वारा आप लोगों द्वारा सैय्यद गैरत खाँ को दी गई, साहसी सहायता का वर्णन प्राप्त हुआ । वीरो भगवान आपका भला करें । आप लोगों द्वारा दी गई साहसी सहायता हमारी आशाओं से पर्याप्त है । भगवान की अनुकम्पा से हमारी सेना आपकी सहायता के हेतु शीघ्र ही अकबराबाद पहुँच जायेगी । आप लोगों को दया तथा लाभ दिए जायेंगे । कृपा कर आप वहाँ का वर्णन लिखते रहे । इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं ।"

1- संजर खाँ व शमशेर खाँ की प्रशंसा की गई ।

2- शाहनामा ए मुनव्वर कलम पृ॰ 49
इसमें हुसैन अली का तीस हजार घुड़सवार तथा बहुसंख्या में पैदल सेना के साथ आगरा पहुँचकर किले का घेरा डालना लिखा है । तजकिरातउस सलातीने चकतई पृ॰ 272 में भी सैय्यद हुसैन अली का रजब को आगरा प्रस्थान करने का विवरण है । परन्तु डा० सतीशचन्द्र द्वारा उत्तर मुगल कालीन भारत में अब्दुल्ला खाँ के इस अभियान पर जाने का वर्णन है ।

सूरज प्रकाश पृ॰ 9

3- वह बन्दी बनाकर सलीमगढ़ भेज दिया गया और ।। मार्च, 1723 को इसकी मृत्यु हो गई । मित्रसेन ने भी आत्मघात कर दिया ।

सूरज प्रकाश पृ॰ 9

इसके पश्चात् रफीउददौला 20 रजब 1131 हिजरी (मई सन् 1719) को गद्दी पर बैठा[1] तथा शाहजहाँ द्वितीय की उपाधि धारण की । इस समय भी सब कार्य सैय्यदों के हाथ में ही था । इसके नाम का केवल खुतबा पढ़ा जाता था व सिक्के ढाले जाते थे । इसके ऊपर सैय्यद हिम्मत खाँ बारहा का नियन्त्रण था, जो हर समय इनके साथ रहते थे[2]। इनकी 3 महीने और कुछ दिन राज्य करने के बाद 17 या 18 सितम्बर सन् 1719 को मृत्यु हो गई[3]।

1- तजकिरातउस सलातीने चकतई पृ० 273
सूरज प्रकाश पृ० 9

2- कामवर पृ० 410,413

बादशाह का बाहर जाना, खाना पीना, शिकार पर जाना, मस्जिद जाना, अमीरों से बात करना सब कुछ सैय्यदों के नियन्त्रण में था । अपने जीवन काल में एक बार ही महल से निकलने दिया था, जब उसने आगरे की ओर कूच किया था ।

उत्तर मुगल कालीन भारत सतीशचन्द्र पृ० 118
विस्तृत विवरण के लिए देखिये - खाफी खाँ पृ० 816,818,831,842

3- इरविन इस मत को स्वीकार नहीं करता कि इन शाहजादों को विष देकर या अन्य किसी साधनों से मारा गया था । इससे सैय्यदों को कोई लाभ नहीं था । उनकी मृत्यु दुर्बल स्वास्थ्य व अत्यधिक अफीम खाने से हुई थी । देखिये- इरविन पृ० 430,432

इसके शासन की सबसे मुख्य घटना यह थी कि अजीत सिंह अपनी लड़की जो फार्रुखसियर की विधवा थी, शाही हरम से वापिस ले गया और पुनः हिन्दू बना लिया[1]। रफीउददौला के पश्चात सैय्यद अब्दुल्ला खाँ ने गुलाम अली खाँ बारहा जो सैय्यद खान जहाँ का पुत्र था, उसे फतेहपुर भेजा और वहाँ से दूसरा शाहजादा बुलाया गया[2]।

यह शाहजादा जहाँशाह का पुत्र और औरंगजेब का पौत्र शाहजादा मोहम्मद रोशन अख्तर था जो 15 सितम्बर सन् 1719 को सिंहासन पर बैठा[3]। अबुलमुजफ्फर नासिर-उददीन मोहम्मद शाह बादशाह गाजी[4] के नाम के सिक्के ढाले गए और मस्जिदों में हिन्दुस्तान के बादशाह के नाम का खुतबा पढ़ा गया[5]। इसकी भी देखरेख सैय्यदों के हाथ में थी[6]।

1- इलियट एण्ड डाउनसन भाग-7 पृ. 483
तजकिरातउस सलातीने चकताई पृ. 279
उत्तर मुगल कालीन भारत पृ. 122
खाफी खाँ ने सैय्यदों की इस कार्यवाही को अभूतपूर्व कहा है ।

2- मुनतखब उलुबाब पृ. 839, दा रेन आफ मुहम्मदशाह पृ. 57
मीरात ए अहमदी भाग-II पृ. 28

3- तजकिरातउस सलातीने चकताई कामवर खाँ पृ. 283

4- वही
दी रेन आफ मुहम्मद शाह पृ. 57

5- मुनतखब उलुबाब भाग-2 पृ. 840-41
दी रेन आफ मोहम्मदशाह पृ. 57
तजकिरातउस सलातीने चकताई पृ. 283

6- इलियट एण्ड डाउनसन भाग-7 पृ. 495,96
उत्तर मुगल कालीन भारत पृ. 118

पुराने द्वार रक्षकों एवं व्यक्तिगत सेवकों को उनके पुराने पदों पर पुन: नियुक्त किया गया, किन्तु राज्य के सभी मामलों में बादशाह शक्तिहीन बना रहा और उसका अधिकार तथा प्रभाव नाम मात्र को था[1]।

1- सतीशचन्द्र उत्तर मुगल कालीन भारत पृ० 118, 119
सियारुल मुताखरीन के लेखक गुलाम हुसैन के अनुसार -

इस सम्राट के राज्यारोहण से सिंहासन के सोपानों की प्रतिष्ठा बढ़ गयी । उस समय सोने और चाँदी की मुद्राएं उछाली गयी थी । उसके नाम से ये सिक्के और भी सम्मानित हो गए थे । उसने अब्दुल फतह नासिरुद्दीन मोहम्मदशाह'की उपाधि धारण की । पहले खाद्य पदार्थ का भाव बहुत ऊँचा था। अब इस घड़ी से वह उतरने लगा और पुन: प्रत्येक बाजार में सब वस्तुओं की कमलता दृष्टिगोचर होने लगी । पिछले तीन बादशाहों का शासन काल इतना अल्प था कि उससे इतिहास में केवल गड़बड़ी सी हुई, इसलिए यह निश्चय किया गया कि इतिहास के पन्नो में इन तीन बादशाहों का उल्लेख नहीं किया जाए और तीनों के समय का समावेश मोहम्मदशाह के शासन काल में कर दिया जाए । इस प्रकार उसके शासन का आरम्भ फार्रुखसियर की मृत्यु से माना गया है । सैय्यदों के नियन्त्रण के विषय में गुलाम हुसैन लिखते हैं कि युवक बादशाह ने इस नियन्त्रण को धैर्य पूर्वक स्वीकार किया, क्योंकि वह समझता था कि स्थिति कितनी नाजुक है । इसलिए वह वजीर की इच्छा का कभी विरोध नहीं करता था । उसमें इतनी समझ थी कि वह सब भाँति वजीर का आदर करता था और उसके प्रति सद्भावना रखता था । परन्तु लेखक यह कहने से भी नहीं चूका है कि इतने पर भी बादशाह की गतिविधि पर पूर्ववत् निगरानी होती रही, उसमें किसी प्रकार की कमी नहीं आयी क्योंकि महीने में एक या दो बार जब भी वह वायु सेवनार्थ बाहर जाता तो सैय्यदों के आदमी उसे घेरे रहते थे । पल भर भी उसको आँखों से ओझल नहीं होने देते थे और महल में एक दो कोस की दूरी पर स्थित बाग बगीचों और दूसरे स्थानों से उसको आगे नहीं ले जाते थे और अँधेरा होने से पहले वापिस ले आते थे ।

सियारुल मुताखरिन पृ० 130, 32

फार्रुखसियर और अन्य राजाओं के समय

नाम	वर्ष	पद व पदवी	मनसब	पुरस्कार	ऐतिहासिक स्रोत
सैय्यद अब्दुल्ला खाँ बारहा	-	"वजीर" का पद कुतबुलमुल्क	-	-	जंगनामा पृ. 8 तारीखे फार्रुखसियर पृ.446 तजकिरातुस सलातीन चकताई पृ. 17 हिन्दुस्तान या अर्वाचीन पृ. 127 नट नागर शोध संस्थान सीतामऊ पृ. 127
		"मुल्तान की सूबेदारी	-	-	जंगनामा पृ. 17 उत्तरमुगल कालीन भारत पृ. 90
सैय्यद हुसेन अली खाँ बारहा	-	"मीरबख्शी" अमीरूल उमरा	-	-	वही पृ. 21 मुगल कालीन भारत पृ. 89
		बिहार की सूबेदारी	-	-	तजकिरातुस सलातीन चकताई पृ. 183 उत्तरमुगल कालीन भारत पृ. 90

नाम	वर्ष	पद व पदवी	मनसब	अन्य पुरस्कार	ऐतिहासिक स्रोत
सैय्यद शुजात खाँ बारहा	-	-	5000/5000	-	शाहनामा मुनव्वर कलम पृ॰ 96
सैय्यद फतेह खाँ मोहम्मद	-	ग्वालियर का किलेदार	-	-	तजकिरातउस सलातीन चकताई पृ॰ 14
सैय्यद नियाज खाँ	-	-	-	-	-

नाम	वर्ष	पद व पदवी	मनसब	पुरस्कार	ऐतिहासिक स्त्रोत
सैय्यद मुजफ्फर खाँ बारहा	-	अजमेर की सूबेदारी	-	-	उत्तर मुगल कालीन भारत पृ॰ 90
सैय्यद आलम अली खाँ बारहा	-	-	-	-	-
सैय्यद दिलावर अली खाँ बारहा	-	-	4000/4000	-	शाहनामा मुनव्वर कलम पृ॰ 63
सैय्यद हिम्मत खाँ बारहा	-	" संरक्षक "	-	-	उत्तर मुगल कालीन भारत पृ॰ 118
सैय्यद गैरत खाँ बारहा	-				
सैय्यद जमालुद्दीन खाँ	-		7000/7000	-	शाहनामा मुनव्वर कलम पृ;96
सैय्यद नजउद्दीन खाँ	-	-	5000/5000	-	शाहनामा मुनव्वर कलम पृ॰ 97

नाम	वर्ष	पद व पदवी	मनसब	ऐतिहासिक स्त्रोत
सैय्यद सैफउद्दीन अली खाँ बारहा	-	5000/5000 पैदल	-	शाहनामा मुनव्वर कलम पृ॰ १६
सैय्यद शहमत खान	-	5000/5000	-	" पृ १७
सैय्यद रिफात खाँ	-	7000/7000	-	" पृ १८
सैय्यद सलाबत खाँ	-	-	-	"
सैय्यद मुजफ्फर अली खाँ	-	-	-	"
सैय्यद अकबर अली खाँ	-	-	-	"

अध्याय - 8

बारहा के सैय्यद व तत्कालीन राजनीतिक घटनाएँ

फार्रुखसियर के राज्यारोहण से लेकर शाहजादे मुहम्मद की मृत्यु तक इन दस वर्षों का इतिहास वास्तव में "सैय्यद बन्धुओं" की गतिविधियों का इतिहास है । इसलिए इन बन्धुओं को इतिहास में शासक बनाने वाले कहा गया । परन्तु इसका आशय यह नहीं है कि सैय्यदों को इस काल में सबका पूर्ण सहयोग प्राप्त रहा । वास्तव में सैय्यदों को अपना प्रभाव अक्षुण्य बनाये रखने के लिए बहुत संघर्ष करना पड़ा । फार्रुखसियर के राज्य काल के प्रारम्भ में ही सैय्यदों को इलाहाबाद[1] के सूबेदार छबीलाराम नागर[2] का विशेष विरोध सहना पड़ा । वह फार्रुखसियर का सहयोगी रहा था व सैय्यदों से उसके सम्बन्ध मैत्री पूर्ण नहीं रहे थे । सैय्यदों के प्रभुत्व काल के समय इलाहाबाद का दुर्ग छबीलाराम नागर के पास था । सैय्यद उक्त दुर्ग को प्राप्त करना चाहते थे । अतः छबीलाराम ने विद्रोह कर दिया ।

1- इलाहाबाद सदैव से ही महत्वपूर्ण रहा था । यहाँ का दुर्ग सुदृढ़ता के कारण सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण था, साथ ही बंगाल तथा दिल्ली जाने वाले मार्ग पर स्थित होने के कारण उसका महत्त्व और भी अधिक था । देखिये - डा॰ सतीशचन्द्र कृत उत्तर मुगल कालीन भारत पृ॰ 120
तजकिरातउस सलातीने चकतई पृ॰ 290

2- छबीलाराम नागर इलाहाबाद का गवर्नर था और फार्रुखसियर का पुरान सेवक था, वह सदैव से ही सैय्यदों को संदेह की दृष्टि से देखता था ।
उत्तर मुगल कालीन भारत पृ॰ 120

अब्दुला खाँ ने एक पत्र लिख कर छबीलाराम नागर को इलाहाबाद किले पर अधिकार करने का औचित्य सिद्ध करना चाहा तथा सैय्यद शाह अली खाँ बारहा को दस हजार सेना के साथ इलाहाबाद के किले पर अधिकार करने के लिए भेज दिया गया[1]। छबीलाराम को संतुष्ट करने के लिए उसे बदले में अवध की सूबेदारी देने का आश्वासन दिया गया तथा इस आशय से अब्दुल्ला खाँ ने छबीलाराम को पत्र भी लिखा, जिसमें उससे दरबार में उपस्थित होने तथा ऐसा सम्भव न हो सकने पर अपने भतीजे गिरधर बहादुर को दरबार में भेजने को कहा गया था[2]। समझौते पूर्ण पत्रों के साथ ही साथ शक्ति प्रदर्शन का भी अवलम्ब किया गया व इस आशय से अब्दुल्ला खाँ के नेतृत्व में 9000 सेना इलाहाबाद भेजी गई[3]।

1- बालमुकुन्दनामा डा० सतीशचन्द्र कृत अंग्रेजी अनुवाद पृ० 26-27 पत्र संख्या-3

अब्दुल्ला खाँ ने यह पत्र प्रेषित कर छबीलाराम को आश्वस्त करना चाहा कि सैय्यद शाह अली खाँ को वास्तव में सेना के साथ भेजे जाने का उद्देश्य शाही खजाने की बनारस से सूबा इलाहाबाद तक सुरक्षा करना था तथा राजा को वह सदैव अपना सहयोगी मानते रहे थे व वृहद मार्ग पर होने के कारण किले पर अधिकार सुरक्षात्मक दृष्टि से आवश्यक था ।

2- वही पत्र एक पृ० 27

3- शाहनामा ए-मुनव्वर कलम अंग्रेजी अनुवाद पृ० 56

छबीलाराम पर न तो शक्ति प्रदर्शन का व न तो समझौते की वार्ता का कोई प्रभाव पड़ा । किले का भार अपने भतीजे गिरधर बहादुर पर छोड़ कर उसने शाही सेना से युद्ध का निश्चय किया परन्तु शीघ्र ही पक्षाघात के कारण उसकी मृत्यु हो गई[1]। गिरधर बहादुर ने इलाहाबाद में सैय्यदों से संघर्ष का निश्चय किया[2]।

इस प्रकार की सूचना मिलने पर सैय्यद अब्दुल्ला खाँ व हुसेन अली खाँ अत्यन्त चिन्तित हुए तथा आपस में भली भाँति परामर्श करने

1- शाहनामा ए मुनव्वर कलम अंग्रेजी अनुवाद पृ॰ 56
तजकिरातउस सलातीने चकतई पृ॰ 290
उत्तर मुगल कालीन भारत पृ॰ 199

सैय्यद अब्दुल्ला खाँ ने गिरधर बहादुर को खिलअत भेज कर समझौता करना चाहा परन्तु गिरधर बहादुर ने इस पर कोई ध्यान न देकर इलाहाबाद किले को सुदृढ़ता से बन्द कर युद्ध की तैयारियाँ प्रारम्भ कर दी । किले के पास उसके पूर्व तथा दक्षिण गंगा तथा सरस्वती नदियाँ थी, अतः राजा गिरधर बहादुर ने इन नदियों के दक्षिण किनारे एक नहर खुदवाई तथा इसे उत्तर गंगा से मिला दिया । इस प्रकार किले के सभी ओर पानी होने से वह अत्यन्त सुरक्षित हो गया । उसने रसद का पर्याप्त मात्रा में बन्दोबस्त किया तथा एक विशाल सेना गंगा तथा जमुना नदियों के पूर्व में रखी तथा इस प्रकार बंगाली कोष का रास्ता बन्द किया । किले के पश्चिमी ओर, जहाँ पर सरस्वती नदी का पानी नव निर्मित नहर के द्वारा उत्तर की ओर ले गए थे, उन्होंने क्रम से मिट्टी के गढ़ों की रचना की तथा वहाँ पर बहुत से सैनिकों को रखा तथा इस प्रकार प्रतिरोध का कार्य पूर्ण किया ।

2- शाहनामा मुनव्वर कलम पृ॰ 56

के पश्चात् उन्होंने हैदर कुली खाँ को इलाहाबाद भेजने का निश्चय किया[1]। हैदर कुली खाँ अपनी चतुर युक्तियों के बावजूद भी किले पर विजय प्राप्त करने में असमर्थ रहा । यद्यपि वह कई बार किले के अन्दर सैनिकों के साथ प्रविष्ट हुआ तथा राजा गिरधर बहादुर से मिला[2], परन्तु जब समझौते की वार्ता असफल रही तो अन्ततः युद्ध प्रारम्भ हो गया । सैय्यद अब्दुल्ला खाँ व हुसैन अली खाँ किले पर अधिकार न होने से बहुत चिन्तित हुए तथा उन्होंने इस समस्या पर प्रत्येक दृष्टिकोण से विचार कर यह निष्कर्ष निकाला

1- शाहनामा ए मुनव्वर कलम पृ॰ 57-..

सैय्यद बन्धुओं ने इसके साथ ही कालपी में मुहम्मद खाँ बंगश, जो सैय्यद अब्दुल्ला खाँ का विशेष विश्वास पात्र था, तथा इटावा के फौजदार हसन खाँ को अपनी सेनाओं के साथ शीघ्रता शीघ्र इलाहाबाद आने तथा उक्त खानों के पहुँचने के पूर्व किले का घेराव आरम्भ करने का आदेश दिया । इन लोगों को अपनी कुशलतानुसार राजा गिरधर बहादुर को बन्दी बनाने अथवा बध करने का आदेश दिया । हैदर कुली शेर अफगान खान, मुहम्मद खान, बादशाह हसन खान प्रत्येक 40,000 सवारों तथा उससे अधिक पैदल सैनिकों के साथ इलाहाबाद पहुँचे तथा अपने खेमे किले के पश्चिमी ओर स्थापित किये ।

2- शाहनामा ए मुनव्वर कलम अंग्रेजी अनुवाद पृ॰ 57

कि यथा साध्य शान्ति पूर्ण समझौते की नीति अपनाया जाना श्रेयस्कर रहेगा परन्तु उसमें सफलता न होने पर युद्ध का ही विकल्प शेष रहेगा[1]।

1- शाहनामा ए मुनव्वर कलम अंग्रेजी अनुवाद पृ• 57-58

समय समय पर गोले तथा बन्दूकों की गोलियाँ हैदर कुली खाँ, शेर अफगान तथा हसन खान की सेनाओं पर पड़ी । अपनी ओर से सैनिक खाईयों से किले की दीवार तक पहुँच सके । इनका यह मत था कि अकबराबाद का किला समझौता वार्ता से ही चार माह बाद लिया गया था तथा इलाहाबाद का किला, अकबरा-बाद के किले से हीन न था, परन्तु उससे अधिक सुदृढ़ था । अकबराबाद में अफसरी आस ने विद्रोह कर दिया, परन्तु उनमें भी आपस में मतभेद थे । न तो उनके पास युद्ध सामग्री थी और न ही एक नेता था । इलाहाबाद के किले में एक महान नेता था तथा पर्याप्त मात्रा में रसद तथा गोला बारूद था । सबसे बड़ी बात यह थी कि बंगाल का कोष के रास्ते (जो कि राज्य का मुख्य आश्रय था)में विद्रोह के कारण अवरोध पैदा हुआ । किले की फतह हुई जो समस्याएँ कम होगी । कथित सूबेदार का कोष जो पटना पहुँच गया था, वह दरबार में भी पहुँचाया जा सकता था, जिससे कि बहुत समस्याओं का समाधान हो सकता था, इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए उन लोगों ने गिरधर बहादुर के पास उसका एक विश्वास पात्र भेजने का निश्चय किया ।यह भी निश्चित किया गया कि उनमें से एक जमुना पार करेगा तथा नदी के उस पार डेरा डालेगा । यदि समझौता हो गया तो ठीक है नहीं तो सेना आगे बढ़कर किले पर आक्रमण करेगी, कोई फल निकलना चाहिए । तदनुसार सैय्यद अब्दुल्ला खाँ तथा सैय्यद हुसेन अली खाँ ने अपने मुख्य कार्यकर्ता रतन चन्द,जिनके पास "राजा" की उपाधि थी,को चुना तथा उन्हें सम्मानित कर 500 सवारों तथा उससे अधिक पैदल के साथ जाने की अनुमति दी । हुसेन अली खाँ अपना डेरा जमुना के किनारे ले गया और वहीं रुक गया ।

परन्तु गिरधर बहादुर ने भी सैय्यद विरोधी नीति का अनुसरण किया । यद्यपि अब्दुल्ला खाँ ने पुनः समझौते की वार्ता प्रारम्भ की, परन्तु कुछ लाभ न होता देखकर अन्ततः हैदर कुली के नेतृत्व में सेना गिरधर बहादुर का दमन करने के लिए भेजी[1]। दीर्घकाल तक युद्ध के पश्चात् पुनः सन्धि वार्ता प्रारम्भ हुई । गिरधर बहादुर ने इलाहाबाद के किले पर अधिकार छोड़ कर गोरखपुर की फौजदारी व अवध की सूबेदारी स्वीकार कर ली[2]। सैय्यदों ने उसे पाँच हजार का पद व राजा की उपाधि प्रदान की[3] तथा तीस लाख रुपये इनाम में दिये[4]।

1- कामवर खाँ तजकिरातउस सलातीने चकताई पृ॰ 29।
उत्तर मुगलकालीन भारत पृ॰ 121

2- तजकिरातउस सलातीने चकताई पृ॰ 29।

इन सैय्यद भाइयों ने यह खुशखबरी सुनकर विजय का नक्कारा बजाया और अब्दुल्ला जो अब तक बहुत परेशान था और बादशाह के सम्मुख नहीं गया था, यह सुखद संवाद पाकर बादशाह के सम्मुख उपस्थित हुआ ।

3- शाहनामा ए मुनव्वर कलम पृ॰ 35
बालमुकुन्द नामा पत्र संख्या 4 पृ॰ 8
दा रेन आफ मुहम्मद शाह पृ॰ 39

4- वही पृ॰ 121
शिवदास 68, खाफी खाँ पृ॰ 846
बालमुकुन्द नामा डा॰सतीशचन्द्र पाँशया नं॰ 8, 19, 4
तजकिरातउस सलातीने चकताई पृ॰ 290

राजपूत शासकों व सैय्यदों के सम्बन्ध

राजपूतों के साथ सैय्यद बन्धु प्रारम्भ से ही मैत्री पूर्ण सम्बन्ध रखने के पक्ष में थे । वास्तव में हुसैन अली के परामर्श के कारण ही फार्रुखसियर ने राजा जय सिंह, अजीत सिंह और संग्राम सिंह के प्रति मैत्री पूर्ण भाव प्रदर्शित किये थे[1]।

अजीत सिंह ने भी फार्रुखसियर की अपेक्षा सैय्यदों की मैत्री को अधिक महत्व दिया था[2]। फार्रुखसियर को राज्य च्युत करने के पश्चात सैय्यदों ने अपनी शक्ति सुदृढ़ करने के लिए अजीत सिंह से अपने सम्बन्ध मैत्री पूर्ण बनाये रक्खे । अजीत सिंह की इच्छानुसार जज़िया कर हटा दिया गया[3] तथा उसकी पुत्री को जिसका विवाह फार्रुखसियर के साथ हुआ था पुन: अजीत सिंह को वापिस कर दिया[4] और उसे धर्म बदलने

1- देखिये शोध ग्रन्थ का अध्याय सात पृ० 165

2- देखिये शोध ग्रन्थ का अध्याय सात पृ० 169

3- फार्रुखसियर के समय अन्य अमीरों ने जज़िया कर बन्द कर दिया था, परन्तु इसके कुछ प्रतिद्वन्दियों ने पुन: इसे आरम्भ कर दिया और कुछ समय तक चला । परन्तु जब तक सैय्यदों की शक्ति रही यह कर स्थायी नही हो सका । फार्रुखसियर ने हुसैन अली की सलाह पर जज़िया कर हटाने का निश्चय किया था तथा युद्ध क्षेत्र में विजयी होने पर इस विषय में सक्रिय कार्य किया । इस कार्य में हसन अली व हुसैन अली दोनों की सहमति थी ।

अखबरात 12 अप्रैल 1713

4- उत्तर मुगल कालीन भारत पृ० 112

की भी आज्ञा दे दी थी[1]। अजीत सिंह को अजमेर[2] की सूबेदारी प्रदान की गई । प्रारम्भ में मेवाड़ के महाराणा संग्राम सिंह के साथ भी सैय्यदों के सम्बन्ध सोहार्दपूर्ण रहे थे[3]। परन्तु फार्रुखसियर की मृत्यु के उपरान्त संग्राम सिंह सैय्यद विरोधी नीति अपना चुका था[4]।

1- खाफी खाँ ने इस कार्य की प्रशंसा की है तथा अभूतपूर्व कहा है । काजीयों ने इस्लाम धर्म को छोड़ना अवैध बताया है, परन्तु सैय्यदों ने इस पर ध्यान नहीं दिया ।

2- अजमेर मुसलमानों का तीर्थ स्थान रहा था, अतः अजमेर की सूबेदारी किसी शहजादे या ऊँचे अमीरों को दी जाती थी । परन्तु सैय्यदों ने अजीत सिंह को अजमेर की सूबेदारी देकर उसकी प्रतिष्ठा और बढ़ा दी थी ।

3- फार्रुखसियर के गद्दी से हटने तक सैय्यदों और महाराजा के सम्बन्ध मैत्री पूर्ण थे । सैय्यदों के प्रभाव से ही फार्रुखसियर ने महाराणा को सात हजार जात व सात हजार सवार का मनसब तथा आठ करोड़ दाम इनाम में प्रदान किया था । यह राजपूत राजाओं के अनुसार बड़ा ऊँचा मनसब था जो किसी भी राजपूत राजा को नहीं मिला था । अजीत सिंह के विरुद्ध अभियान के समय राणा ने हुसेन अली की सहायता की थी । 1717 में सैय्यदों ने राणा को रामपुरा का क्षेत्र प्रदान किया ।

विस्तृत अध्ययन के लिए देखिये -डॉ० सतीशचन्द्र द हिस्टौरिकल लेटर्स आफ महाराणा संग्राम सिंह ।
उत्तर मुगल कालीन भारत पृ० 128

4- देखिये प्रोसीडिंग्स आफ इण्डियन हिस्ट्री कांग्रेस 1960

जयसिंह प्रारम्भ से ही सैय्यद विरोधी था[1] और अब उसे संग्राम सिंह का भी सहयोग प्राप्त हो गया था । यद्यपि सैय्यदों ने महाराणा संग्राम सिंह को पत्र लिखा कि वह जय सिंह का साथ न दे पर संग्राम सिंह पर इस पत्र की कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई । वह न केवल जय सिंह की सहायता करता रहा, अपितु पारस्परिक सम्बन्धों को सुदृढ़ बनाने के लिए जय सिंह से वैवाहिक सम्बन्ध भी स्थापित किये थे[2] ।

1- जय सिंह हुसेन अली से असन्तुष्ट था। यद्यपि 1715 में सैय्यद हुसेन अली ने ही जय सिंह को मालवा की सूबेदारी दिलाई थी । सम्भवत: इसका कारण यह था कि कोटा बूंदी राज्य के गृह युद्ध में हुसेन अली के हस्तक्षेप के कारण जय सिंह के बहनोई बुध सिंह को राज्याधिकार से वंचित कर दिया था, जाजो के युद्ध में बुध सिंह बहादुर शाह के पक्ष में था, जबकि राम सिंह हाडा के पुत्र भीमसिंह ने आजमशाह का पक्ष लिया था । अत: बुधसिंह को पुरस्कार स्वरूप 54 अन्य दुर्गों के साथ कोटा का दुर्ग भी प्रदान किया था, परन्तु भीमसिंह ने दुर्ग छोड़ने से इन्कार कर दिया । फार्रुखसियर के राज्यारोहण के समय भीमसिंह दरबार में पहुँचा व हुसेन अली की कृपा प्राप्त करने का प्रयास किया जबकि बुधसिंह ने न केवल दरबार में उपस्थित होने की आज्ञा की अवहेलना की अपितु हुसेन अली ने अजीत सिंह के साथ युद्ध में व्यस्त रहने का लाभ उठा कर कोटा पर अधिकार कर लिया । शीघ्र ही भीमसिंह ने कोटा व बूंदी पर अधिकार कर लिया। हुसेन अली ने उसके इस अधिकार की पुष्टी की ।

2- उत्तर मुगल कालीन भारत-सतीशचन्द्र पृ०
जोधपुर राज्य की ख्यात द्वितीय खण्ड पृ० 176

अजीत सिंह का सैय्यदों के साथ सद्व्यवहार जयसिंह व संग्राम सिंह दोनों को ही अच्छा नहीं लगता था[1]। सैय्यद इन शासकों की विरोधी नीति से चिन्तित थे । सर्वप्रथम उन्होंने जयसिंह की शक्ति का दमन करना चाहा परन्तु बाद में अजीत सिंह की मध्यस्थता से समझौता हो गया[2]। सैय्यदों के इतने प्रयत्न के पश्चात् भी राजपूत राजाओं ने सैय्यदों को पूर्ण रूप से सहयोग नहीं दिया, राजपूत राजा सैय्यदों की राजनीतिक गतिविधियों से दूर रहे[3]। इसका मुख्य कारण सम्भवत: यह रहा हो कि वह सैय्यदों की स्थिति को कमजोर करना चाहते हों ।

1- जय सिंह सैय्यद विरोधी प्रारम्भ से ही था तथा आगरा के विद्रोह के समय नेकूसियर का साथ देने के लिए टोड़ा तालाब, जो आगरा के से 80 मील दूरी पर था, पड़ाव डाले हुए था । यही नहीं अपितु सैय्यद विरोधी अमीरों का उसने संरक्षण भी प्रदान किया था । सैय्यदों के लिए कठिनाईयाँ उत्पन्न करने में उसके बहनोई बुधसिंह का भी योगदान था । वास्तव में बुन्देलों ने उसी की राय पर इलाहाबाद में छबीलाराम का साथ दिया व हैदर कुली खाँ से भी युद्ध किया था ।
देखिये - उत्तर मुगलकालीन भारत पृ॰ 123

2- सैय्यद बन्धुओं ने अजीत सिंह के माध्यम से जयसिंह को अपनी ओर मिलाया । अजीत सिंह ने अपनी कन्या सूरज कुँवर का विवाह जयसिंह से किया और बीजक की फौजदारी दी, परन्तु अन्दर से जयसिंह सैय्यदों का साथ नहीं देना चाहता । अजीत विलास 101 जोधपुर लौटते समय अजीत सिंह ने मनोहरपुर गौड़ों के यहाँ अपनी लड़की का नाम इदुर कुँवर बाई लिखा है ।

राजरूपक के अनुसार चैत्र मास 1776 के ज्येष्ठ वादि को राजा की कन्या सूरज कुँवर को ब्याही गई थी ।

3- मराठों के विद्रोह के समय अजीत सिंह से गुजरात सँभालने को कहा पर वह राजी नहीं हुआ इसका कारण था कि वह बीकानेर प्राप्त करना चाहता था (सतीशचन्द्र) उत्तर मुगलकालीन भारत पृ॰ 123

सैय्यद बन्धु तथा मराठे

बहादुर शाह की मृत्यु के पश्चात् मुगल दरबार में जो तीव्र व क्षणिक परिवर्तन हुए उससे मराठा राजनीति को विशेष बल मिला था । फार्रुखसियर के शासन काल के 6 वर्षों के बीच सैय्यद बन्धुओं व फार्रुखसियर के मध्य निरन्तर तनावपूर्ण स्थिति बनी रही[1]।

मुगल वंश की फूट का लाभ मराठों को पूर्णतया प्राप्त हुआ तथा वह विभिन्न दिशाओं में अपना प्रसार करने में व्यस्त हो गए । पारस्परिक द्वेष भावना व एक दूसरे के विरुद्ध षड्यन्त्र रचते हुए भी सम्राट फार्रुखसियर व सैय्यद दोनों ही मराठों के बढ़ते प्रभाव से चिन्तित थे तथा विशेष रूप से मालवा से उन्हें बाहर निकाल देना चाहते थे जो इस समय मराठों की गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र बना हुआ था । उत्तर दक्षिण के मध्य मालवा मुख्य राज्य मार्ग था[2]। अतः साम्राज्य की सुरक्षा के लिए यह अत्यन्त आवश्यक था कि साम्राज्य विरोधी तत्व वहाँ सक्रिय न होने पाए ।

1- फार्रुखसियर व सैय्यद बन्धुओं के सम्बन्धों के लिए देखिये अध्याय-7 पृ. विस्तृत विवरण के लिए देखिये मराठों का नवीन इतिहास खण्ड-2

2- हिन्दुस्तानच्या अर्वाचीन इतिहास पृ. 131

सैय्यद बन्धु तथा मराठे

बहादुर शाह की मृत्यु के पश्चात् मुगल दरबार में जो तीव्र व क्षणिक परिवर्तन हुए उससे मराठा राजनीति को विशेष बल मिला था । फार्रुखसियर के शासन काल के 6 वर्षों के बीच सैय्यद बन्धुओं व फार्रुखसियर के मध्य निरन्तर तनावपूर्ण स्थिति बनी रही[1]।

मुगल वंश की फूट का लाभ मराठों को पूर्णतया प्राप्त हुआ तथा वह विभिन्न दिशाओं में अपना प्रसार करने में व्यस्त हो गए । पारस्परिक द्वेष भावना व एक दूसरे के विरुद्ध षड्यन्त्र रचते हुए भी सम्राट फार्रुखसियर व सैय्यद दोनों ही मराठों के बढ़ते प्रभाव से चिन्तित थे तथा विशेष रूप से मालवा से उन्हें बाहर निकाल देना चाहते थे जो इस समय मराठों की गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र बना हुआ था । उत्तर दक्षिण के मध्य मालवा मुख्य राज्य मार्ग था[2]। अतः साम्राज्य की सुरक्षा के लिए यह अत्यन्त आवश्यक था कि साम्राज्य विरोधी तत्व वहाँ सक्रिय न होने पाए ।

1- फार्रुखसियर व सैय्यद बन्धुओं के सम्बन्धों के लिए देखिये अध्याय-7 पृ. विस्तृत विवरण के लिए देखिये मराठों का नवीन इतिहास खण्ड-2

2- हिन्दुस्तानचा अर्वाचीन इतिहास पृ. 131

1715 में फार्रुखसियर ने सैय्यद हुसैन अली को दक्षिण में नियुक्त किया था। इस नियुक्ति में उसका उद्देश्य दोहरा लाभ उठाना था[1]। प्रारम्भ में तो सैय्यद हुसैन अली ने मराठा शक्ति रोकने का प्रयत्न किया तथा निजाम की नीति को ध्यान में रखते हुए चौथ व सरदेशमुखी की माँग को अस्वीकार किया[2] और मराठा शक्ति रोकने के लिए सैनिक अभियान प्रारम्भ किए। परन्तु वह सफल न हो सका[3]। दो वर्ष तक सैय्यद हुसैन अली मराठों की आक्रात्मक गतिविधियों के दमन में व्यस्त रहा, परन्तु इसे इस बात का भी पूर्ण आभास था कि सम्राट उसके प्रति षडयन्त्र कारी नीति अपना रहा है। अतः वह उस ओर से भी अपनी सुरक्षा के प्रति सतर्क रहा तथा हुसैन अली मराठों की आक्रात्मक कार्यवाहियों के दमन में प्रयत्नशील रहा।

अन्ततः इस उद्देश्य से उसने अपने मित्रों तथा अनुचरों के साथ परामर्श किया और इस निश्चय पर पहुँचा कि उसकी सफलता का एक मात्र अवसर इसी में है कि वह मराठों और विशेषकर शाहू और उसके समर्थकों की सद्भावना तथा सहयोग प्राप्त कर ले[4]।

1- वास्तव में फार्रुखसियर जहाँ एक तरफ मराठों की ओर से संशक था वही सैय्यद बन्धुओं के प्रभाव से भी स्वयं को मुक्त करना चाहता था। फलतः उसने दक्षिण के भूमि पतियों को अपने कर्मचारियों को लगान न देने के लिए गुप्त पत्र लिखे। ताकि सैय्यद हुसैन अली को कठिनाई का सामना करना पड़े।

2- उत्तर मुगलकालीन भारत/सतीशचन्द्र पृ. 110

3- वही
इसका कारण यह था कि मराठे सदैव छापा मार नीति से युद्ध करते थे।

4- मराठों का नवीन इतिहास पृ. 30

अब्दुल्ला खाँ की स्थिति भी दिल्ली में निरन्तर बिगड़ती जा रही थी । अतः उसने हुसैन अली को दक्षिण से वापस बुलाया[1]। सोचा कि दिल्ली जाने से पूर्व वह मराठों के विरुद्ध केवल अपना युद्ध ही बन्द न कर दे, वरन् उनकी मित्रता तथा सैनिक सहायता भी प्राप्त कर ले । आत्म-रक्षा की भावना तथा सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए हुसैन अली ने शाहू की सहायता प्राप्त करने का निश्चय किया था। उसने शंकर जी मल्हार जो शाहू का प्रतिनिधि था, उसकी मध्यस्थता में समझौता की वार्ता प्रारम्भ की,। जो शाहू द्वारा स्वीकृत कर ली गई[2] । समझौते की शर्तों

1- सैय्यद अब्दुला ने ही आपली फौज वाढविली प्रसंग लववस्य छात छाई वर येणार आना सुभार दिसु लागला म्हूपुन अब्दुल्ला ने माऊ हुसेन यास ताबड़ ताबे दिल्ली से बोल विले वरील तहास अनुसुरन हुसेन अली ने मराठ्यायी फौज आपल्या मदतीस आर्विली ।

मराठी रियासत 5 बुध्य श्लोक शाहू पेरवा बालाजी विश्वनाथ । गोविन्दसखाम देसाई ‖ 1707 1720 ‖

2- सम्भवतः शाहू ने हुसेन अली की सहायता करना इसलिये स्वीकार किया था कि वह चौथ तथा सरदेशमुखी एकत्र करने के अधिकार की शाही मान्यता चाहता था ।

देखिये जहीरुद्दीन मालिक कृत रेन आफ मुहम्मद शाह पृ. 44

को[1] औपचारिक मान्यता के लिये फार्रुखसियर के पास भेजा गया । वह हुसेन अली के बढ़ते प्रभाव से चिन्तित था । अतः उसने अमीन खाँ को कुछ अन्य अमीरों के साथ मालवा भेजा[2]। उधर शाहू ने बिना समझौते के शर्तों को शाही मान्यता प्राप्त हुए चौथ और सरदेशमुखी वसूल करना प्रारम्भ कर दिया[3]। साथ ही पन्द्रह हजार सेना हुसेन अली के पास भेजी[4]।

1- बरचे दिवस छल होब न शेबरी हुसेन अलीटया मफित शाहू व बादशाह याया तह मुकर आत्मा तो आना । (1) शिवा जीच्या वेल ये स्वराज्य तमाम् गडकोट सुधा शाहूये हवाली करावें । (2) अली कडे मराठे सरदारानी निकल ले प्रदेश म्हणजे खान पेश, गाँड वरहाउ हैदराबाद कर्नाटक या भागातले यादीत नमूद केल्या प्रमेण भोगलानी सोडन देऊन ते मराठ्याच्यां स्वराज्यन्त दाखल करावे । भाग लाच्या दक्षिणे तीलमुल खानर चौथाई व सरदेशमुखी चे हक्क मराठ्यानी स्वतः वसूल करावे या चौथाई चे बदल्यात आपली पधरा हजार फौज मराठ्यानी बादशाह चे मदतीरा ढेवाती अणि सरांश मुखी चे बदल्यात भोग लाये, मुलखात मराठ्यानी चो या वेरारेया बदोबस्त करावा (4) कोल्हापुरच्यां समाजीए शाहू ने उपद्रव करवं नये । (5) मराठ्यानी दरसाल बादशाहसदहा लाएं रूपये घडवी धरवी आणि (6) शाहू चीमातु श्री कुटव समाजीया दासी पुत्र मदनसिंग कौरा दिल्लीस बादशाहये का बजात आलो त्यास सोडू न स्वदेशी पावते करावे असायातहातील कलमाया मुख्य मतलब होता । थोड्या बहुत फरकाने दातहरा 1718 त हुसेने अली ने मजूर केला । भाग त्याजवळ थे बादशाहा कर्मान पुढे याकमाये होते शाहने हान हलगटो अमालात आणढ्या सुरूवात केली आणि स्वामीचे स्वराज्य देखील ढाणीपाताशहरी स्वामीस बहाल केलें आहे व्याच्यासनद ऐशियास मगेलाई तर्फेया ऐवज भोगला कडे हजुर वसूल देवे । उनसे शाहये हुक्म ता । अगस्त सन् 1718 में औहत,

2- उत्तर मुगल कालीन भारत पृ॰ 112

3- उत्तर मुगलकालीन भारत पृ॰ 111, 112

4- देखिये पार्टीज एण्ड पौलिटिक्स पृ॰ 132

यद्यपि दक्षिण में शक्ति स्थापना के बदले में शाहू की चौथ और सरदेशमुखी एकत्रीकरण करने की अनुमति साम्राज्य के हित में थी, परन्तु आर्थिक परिणाम राज्य के लिए घातक था । हुसेन अली खाँ बाला जी विश्वनाथ सहित एक शक्तिशाली मराठा सेना के साथ 16 फरवरी, 1719 को दिल्ली पहुँचा[1]। और हुसेन अली ने तो दक्षिण में अपने प्रथम दो वर्षों में मराठों की बागलान तथा खानदेश में न घुसने देने का कठोर प्रयत्न किए, परन्तु अन्त में जब सैय्यद बन्धुओं को यह ज्ञात हुआ कि अपने ही स्वामी की ओर से उनके अपने जीवन तथा स्थिति के विषय में भारी संकट उपस्थित है तो वे अपनी नीति बदलने तथा मराठों की मित्रता प्राप्त करने के लिए विवश हुए[2]।

इस समझौते को अधिक दृढ बनाने के लिए सैय्यद हुसेन अली ने उन्हें दक्षिण की चौथ एवं सरदेश मुखी के लिए फरमान भी प्रदान किए[3]।

1- मराठी रियासत 5 पुण्य श्लोक, पेशवा बालाजी विश्वनाथ गोविन्द (1707, 1720)

अब्दुल्ला ने माऊ हुसेन यास ताबडतीब दिल्लीस बोला किले वरील तहास अनुसूरन हुसेनअली ने मराठ्याची फौज आपल्या मदतीस आणिली हे सर्वती बादशाहये नावाने करीत होता दिल्लीस जाव्याये है कारस्थान शाहू व बालाजी यानी आगावर घेतले दा प्रकार घड विख्यात शंकराजी मल्हार बरोबर खंडी वल्लाह यादवराव, मुनशी इत्यादि अनेके गहस्थ प्रमुख होते खंडेराव दामडे उदाजी पवार व का होजी भोसले यास फौजबरोबर जाव्यायी आज्ञा शाहू ने केले कान्होजी स्वत: गेला नाही स्थान आपले बधु सताजी व राबू भोसले यास पाठ किले बाला जी ने आपला पुत्र बाजीराव व बालाजी ने महादेव भानु फडवोस यास बरोबर जेतले ।

2- नवयुग का उदय मराठों का इतिहास पृ॰ 31

2- उत्तर मुगलकालीन भारत सतीशचन्द्र पृ॰ 124

मराठा सैनिक जो राजधानी में ठहरे थे दिल्ली से चले गए । अब उत्तर भारत में कोई भी मराठा सैनिक नहीं रह गया था ।

दक्षिण में सैय्यदों के अधिकार को बनाए रखने में मराठों ने पूरा सहयोग दिया । दक्षिण में सैय्यद हुसैन अली खाँ बारहा ने अपने भतीजे सैय्यद आलम अली को यह आदेश दिया था कि वह शंकर जी के परामर्श से कार्य करे[1]। शाहू के साथ शंकर जी के अच्छे सम्बन्ध होने के कारण सैय्यद हुसैन अली के साथ भी शाहू के अच्छे सम्बन्ध थे । इतना सब होने के पश्चात् भी मालवा व गुजरात से बराबर आक्रमण होते थे[2] और सैय्यद मराठों से मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाये रखने में पूर्ण सफल नहीं हुए ।

1- उत्तर मुगल कालीन भारत (सतीशचन्द्र) पृ० 111

2- सम्भवत: इसका कारण यह रहा हो कि मराठे बहुत अधिक महत्वकांक्षी थे और वह इन कठपुतली राजाओं के राज्य में अपना प्रभाव बढ़ाना चाहते हो । दूसरे यह भी विचार है कि मराठे मालवा व गुजरात की चौथ व सरदेश मुखी प्राप्त करना चाहते थे । अत: सदैव ही सैय्यदों से संघर्ष होने की सम्भावना बनी थी ।

पार्टीस एण्ड पोलिटिक्स पृ० 149, ग्राट एण्ड डफ [illegible] 365,366
उत्तर मुगलकालीन भारत पृ० 125

सैय्यद बन्धु तथा जाट समस्या

सैय्यद बन्धु जाटो से भी मैत्री पूर्ण सम्बन्ध बनाये रखना चाहते थे । जाटों का बढ़ता प्रभाव राजपूत राजा जय सिंह के लिए भी चिन्ता का कारण बना हुआ था[1]। अपने शासन काल के प्रारम्भ में ही फार्रुखसियर ने छबीलाराम नागर को आगरे का सूबेदार नियुक्त करते समय यह आदेश दिया था कि वह जाटों का दमन करे, परन्तु उसे सफलता प्राप्त न हो सकी । सम्भवत: इसका कारण यह था कि जाटो के नेता चूड़ामन को सैय्यदों का समर्थन प्राप्त था[2]। छबीलाराम के पश्चात् खाने दौरा को उसके स्थान पर नियुक्त किया गया तथा उसने चूड़ामन को दरबार में उपस्थित किया[3]।

1- उत्तर मुगल कालीन भारत पृ० 106

क्योंकि चूड़ामन जाट जयसिंह के राज्य की सीमा के पास अपनी शक्ति का विकास कर रहा था ।

2- उत्तर मुगलकालीन भारत पृ० 105, 106
पार्टीस एण्ड पौलिटिक्स पृ० 123

3- वही पृ० 106, इबरतनामा पृ० 135
पार्टीस एण्ड पौलिटिक्स पृ० 123

चूड़ामन मज्जा का पुत्र था तथा जाटो का एक शक्तिशाली नेता था । यह कुछ समय तक लूटमार में व्यस्त रहा, किन्तु जाजो के युद्ध के पश्चात् मुनीम खाँ के माध्यम से वह बहादुर शाह के समक्ष उपस्थित हुआ । यह सिक्खों के विरुद्ध अभियान में भी बहादुर शाह के साथ था । लाहौर के युद्ध में अजीमुशान की तरफ से था, परन्तु इसने लूटमार के अलावा कोई कार्य भी नहीं किया । चूड़ामन जहाँदारशाह की तरफ से फार्रुखसियर से लड़ा, परन्तु फिर पुन: लूटमार शुरू कर दी । फार्रुखसियर ने इसे कुचलने का प्रयत्न किया, परन्तु सफलता नहीं मिली । इसने "थून" को अपना गढ़ बनाया ।

1715 में जयसिंह को चूड़ामन को दबाने का भार सौंपा गया[1]। यद्यपि जयसिंह ने एक बड़ी सेना के साथ यह अभियान संभाला तथापि उसे सफलता न मिली[2]। अन्ततः समझौते की नीति का अवलम्ब लिया

1- इबरतनामा पृ० 135
उत्तर मुगलकालीन भारत(सतीशचन्द्र) पृ० 107

इस कार्य की राय सैय्यद अब्दुल्ला खाँ से नहीं ली गई थी। बादशाह जयसिंह से बहुत प्रसन्न हुए कि उन्होंने यह कार्य अपने ~~कर्ज~~ हाथ में लिया।

2- इबरतनामा पृ० 135

1716 में उक्त कार्य को पूरा करने के लिए जयसिंह रवाना हुए। राजा बुधसिंह व राजाभीम सिंह भी इनके साथ रवाना हुए। अब्दुल समद खाँ बहादुर खाँ इस कार्य में साथ देने के लिए लाहौर से बुलाया सैय्यद खानजहाँ बारहा जो अजमेर का सूबेदार था भी चूरामन जाट के विरुद्ध रवाना हुए। राजा जयसिंह, सैय्यद खाँ जहाँ, सैय्यद नुसरत यार खाँ अकबराबाद का नायब सूबेदार, ~~नुसरत यार खाँ अकबराबाद~~ का नायब सूबेदार बराबर डेढ़ वर्ष तक चूड़ामन का घेरा डाले रहा तथा 1211 हिजरी के प्रारम्भ में सैय्यद खान जहाँ बारहा नवाब कुतुबुल मुल्क बहादुर और नवाब अमीरुल उमरा बहादुर जो राजा जयसिंह के साथ चूड़ामन जाट को दबाने में लगे हुए थे, चूड़ामन को विश्वास दिलाकर राजा के सम्मुख लाए। परन्तु इतनी मेहनत के पश्चात् भी जयसिंह को सफलता न मिल सकी। खान जहाँ बारहा के अच्छे अच्छे साधन राजा के ~~तक~~ काम को आगे बढ़ाते रहे और इसकी सफलता में अड़चन डालते रहे।

राजा ने जाट समस्या पर कुतुबुलमुल्क से कोई सलाह नहीं ली। तभी से इसका दिल बदल गया था और वह राजा के कार्यों में रुकावट और अड़चने डालता रहा। खान जहाँ बारहा कुतुबुलमुल्क के इशारों से चूड़ामन का साथ छिपकर देता रहा।

(फुटनोट का शेष भाग अगले पृष्ट पर)

गया[1]। यह समझौता एक प्रकार से सैय्यद बन्धुओं की विजय का प्रतीक था । अभाग्यवश सैय्यदों को राजपूत, मराठों, जाटों का सहयोग पूर्ण रूप से प्राप्त न हो सका जबकि सैय्यद बन्धु इन सभी से मित्रता बढ़ाकर रहना

---

§ पूर्व पृष्ठ का शेष भाग §

जयसिंह को सफलता न मिलने से वह इतना लम्बा समय बीतने पर सम्राट नराज हो गया, क्योंकि बादशाह समझता था कि शीघ्र ही यह इसे दबा देगा । इन्हीं दिनों कुतुबुलमुल्क ने एक दो बार इशारों से तानाकशी से शाही सेवा में अर्ज करता था कि चूडामन जाट को मिटाना व बरबाद करना आसान काम नहीं है । बादशाह भी न सोच सका बल्कि लाइलाज होकर नवाब से राय ली कि किस ढंग से इस कार्य में कामयाबी प्राप्त हो ।

1- उक्त नवाब ने शाही सेवा में अर्ज किया कि चूडामन की गल्तियों को क्षमा कर दिया जाए जिस पर साठ लाख रूपया चूडामन जाट के तकसीर पर बतौर पेश कर सरकार वालों से नियुक्त किया जाए । चूडामन भी जो दौड़ धूप से तंग आ गया उसने तत्काल ही यह रकम स्वीकार कर ली और नवाब कुतुबुलमुल्क की अर्ज पर शाही आदेशानुसार राजा को लिखा गया कि चूडामन जाट मोहिम से हाथ उठा लें । युद्ध समाप्त हुआ और सैय्यद खान जहाँ बारहा के नाम आदेश जारी हुआ कि चूडामन को शाही सेवा में लेकर हाजिर हो । राजा को इस बात से बहुत दुख हुआ, लेकिन मजबूरी वश चुप रहा । इबरतनामा पृ.177

19 जमादियुल अव्वल को चूडामन जाट ने नवाब कुतुबुलमुल्क के जरिये उपस्थित होकर शाही मुलाजिमत की और बादशाह की मुलाजिमत की । इबरतनामा पृ. 178

ऊपरी दिल से तो बादशाह सैय्यदों से खुश था, परन्तु अन्दर से और भी नफरत करने लगा ।

सैय्यदों का जाटों के साथ समझौता बादशाह का अपमान था और अब सैय्यदों और जाटों का एक नया गुट बन गया, जो की फार्रुखसियर के लिए हानिकारक था ।

चाहते थे । प्रारम्भ में कुछ सफलता भी मिली, परन्तु बाद में यह सफल न हो सके[1]।

निजामुलमुल्क[2] के बढ़ते हुए प्रभाव से सैय्यद बन्धु बहुत सशंकित थे । कोई भी अमीर इनकी सत्ता स्वीकार करना अपना अपमान समझता था

1- इसके अनेक कारण थे, अमीर लोग सैय्यदों के बढ़ते प्रभाव से ईर्ष्या रखते थे और इन्हें घृणा की दृष्टि से देखते थे । दोनों भाईयों में मत भेद प्रारम्भ हो गया था । हुसैन अली अधिक दुर्धर्ष था । फार्रुखसियर के मरने पर हुसैन अली ने खजाने पर अधिकार कर लिया । जिससे दोनों भाईयों में विरोध हो गया । दीवान रतन चन्द्र को भी लेकर इन दोनों भाईयों में विरोध हो गया था । इसके प्रभाव से सैय्यद बन्धु अत्याचार करने लगे थे।

2- निजामुलमुल्क मीर कमरूद्दीन गाजीउद्दीन का लड़का था । इसका जन्म 11 अगस्त, 1671 में हुआ था । तेरह वर्ष की अवस्था में शाही सेवा में प्रवेश किया । {1690-91} में इन्हें चीन कलीच खाँ की उपाधि मिली, औरंगजेब की मृत्यु के समय यह बीजापुर के फौजदार थे, बहादुर शाह ने इसे अवध का सूबेदार और गोरखपुर का फौजदार नियत किया । इनका मनसब 6000/6000 सवार का हुआ । इनके पिता की मृत्यु पर 7000/7000 सवार का मनसब दिया । फार्रुखसियर के समय इन्हें फिर से उन्नति मिली । पहले इन्होंने 'खानखाना' की और फिर 'निजामउलमुल्क बहादुर फतहजंग' की उपाधि मिली । निजामुलमुल्क आसफ जहाँ भाग-5 पृ० 14, इरविन लेटर मुगल्स पृ० 17 निजामुलमुल्क को लेकर दोनों भाइयों में मतभेद था, इन्हीं कारणों से सैय्यद बन्धुओं को निजामुलमुल्क के विद्रोह का सामना करना पड़ा और यहीं से इनका पतन प्रारम्भ हो गया ।

सैय्यद हुसैन अली खाँ के आग्रह से निजामुलमुल्क को बिहार के स्थान पर मालवा की सूबेदारी दी गई थी[1]। निजामुलमुल्क के मालवा जाने के पश्चात् सैय्यदों के हाथ में उसको दबाने के लिए कुछ नहीं था[2]। निजाम ने सभी अमीरों को बड़ी बड़ी धनराशि देकर अपने पक्ष में कर लिया था[3]। निजाम के मालवा पहुँचने पर कुतुबुलमुल्क को यह ज्ञात हुआ कि निजाम राजा जयसिंह से भी गुप्त रूप से मेल कर रहा था । यह सैय्यद अब्दुल्ला खाँ को अच्छा नहीं लगा । दूसरे महरमत खान[4] ने मालवा जाते समय हुसैन अली से मिलने से इन्कार कर दिया था, यह भी हुसैन अली खाँ का अपमान था[5]।

1- फार्रुखसियर को गद्दी से हटाने के बाद अब्दुल्ला खाँ ने निजामुलमुल्क को बिहार का सूबेदार नियुक्त किया इसका विचार था कि निजाम "जोरतलब" के जमींदारों में लगा रहेगा और अपनी शक्ति नहीं बढ़ाएगा । 1719 में वह मालवा के लिए सपरिवार रवाना हो गया । निजाम ने भविष्य सोच कर मालवा की सूबेदारी ली थी और यह भी तय किया था कि उसे मालवा से हटाया नहीं जाएगा । 15 मार्च, 1719 को वह उज्जैन के लिए रवाना हुआ और साथ ही अपनी सम्पत्ति और परिवार ले गया ।

2- निजामुलमुल्क आसफ जहाँ भाग-5 पृ० 14
इरविन लेटर मुगल्स पृ० 17

3- इलियट एण्ड डाउसन भाग-7 पृ० 488

4- महामत खान अमीर खान का पुत्र था ।

5- निजामुलमुल्क आसफ जहाँ पृ० 108

सैय्यद हुसेन अली ने एक फरमान जारी किया[1] । अब सैय्यद हुसेन अली मालवा को अपना प्रधान केन्द्र बनाना चाहता था[2]। सैय्यद हुसेन अली निजामुलमुल्क को उसके बढ़ते प्रभाव के कारण सजा देना चाहता था इसने सैय्यद दिलावर अली खाँ को तोप खाने और सवारों के साथ निजाम के विरूध भेजा[3]। जब सैय्यद दिलावर नर्मदा नदी पार करके निजाम

1- निजाम को मालवा वापिस बुलाया गया । फरमान में लिखा था कि दक्षिण की रक्षा करने के लिए हुसेन अली खाँ मालवा की सूबेदारी अपने हाथ में ले लेगा और निजामुलमुल्क बताए की अकबराबाद, इलाहाबाद, मुल्तान और बुहरानपुर में से कहा कि सूबेदारी लेना चाहता है । परन्तु निजाम मालवा छोड़ने को तैयार नहीं था, उसका कहना था कि सैय्यदों का आदेश उसको दिए वचन को तोड़ना है । खाफी खाँ 85।

2- इसका कारण था कि वह मराठों के कार्य कलापों का पूर्ण नियन्त्रण रखना चाहता था ।

3- जब निजामुलमुल्क को इस बात की सूचना मिली तो उसने एक स्थाई डिप्टी को मालवा सूबे में नियुक्त कर दक्षिण की ओर अग्रसर हुए । दक्षिणियों तथा जागीरदारों ने निजाम का साथ दिया । इसकी तैयारी से सैय्यद बन्धु बहुत चिन्तित थे कि यह सब कैसे हुआ आपस में परामर्श के अनुसार सैय्यद हुसेन अली खाँ जिसके पास 4000/जात 4000 सवार का मनसब था, को एक पत्र लिखा तथा उन्हें इलाहाबाद सन्धि के पूर्व 20,000 सवार और 20,000 पैदल तथा क्षेत्र के चुने हुए अमीरों के साथ राजा भीमसिंह की सहायतार्थ राजपूतों के क्षेत्र में भेजा तथा इन्हें इनके सहयोग के साथ मालवा के फौजदार निजामुल-मुल्क का पीछा करने को भेजा । राजा भीम सिंह, राजा गजसिंह नखारी तथा अन्य सेनानायकों के साथ सैय्यद दिलावर अली खान सैय्यद हुसेन अली खाँ के लिखित निर्देशानुसार निजामुलमुल्क के पीछे पड़ गया ।

के खेमे से 5 कुरोह पर अपना खेमा गाड़ा, निजाम के मृदु स्वभावनुसार निजाम ने दिलावर अली खाँ को लिखा कि मुसलमानों में लड़ाई ठीक नहीं है तथा इस उद्देश्य को त्यागने तथा वापिस जाने की राय व्यक्त की । सैय्यद दिलावर अली खाँ ने इस बात का ध्यान नहीं दिया[1]। परन्तु एकाएक बिजली गिरने से दिलावर अली के खेमे के व्यक्ति तथा जानवरों की मृत्यु हो गई । सैय्यद दिलावर तथा निजाम की सेना के बीच गहरी खाई थी। अगर उसमें सैनिक छिप जाते तो दिखाई नहीं दे सकते थे। निजाम ने तोपे खाइयों में छिपा दी । दिलावर अली खाई से होकर निकलना चाहता था । जैसे ही वह खाई में घुसा निजामुलमुल्क ने तोपों की वर्षा प्रारम्भ कर दी, अनेक सेना नायकों के साथ सैय्यद दिलावर अली खाँ वीर गति को प्राप्त हुए[2]।

सैय्यद दिलावर अली की मृत्यु व निजामुलमुल्क के सैनिकों द्वारा लूट पाट के समाचार ने सैय्यदों को विचलित कर दिया तथा गम्भीर रूप से स्थिति का अवलोकन करने के पश्चात् उन्होंने सैय्यद आलम अली खाँ[3]

1- शाहनामा मुनव्वर कलम पृ: 63
हलांकि निजामुलमुल्क लड़ना नहीं चाहता था, सैय्यद दिलावर अली खान अपने उद्देश्य को त्यागने के पक्ष में नहीं था ।

2- शाहनामा मुनव्वर कलम पृ. 63
निजामुलमुल्क आसफ जहाँ पृ.
राजा गजसिंह व भीम सिंह भी वीरगति को प्राप्त हुए । इनकी सेना हार कर भाग गई । निजाम की यह एक बड़ी विजय थी, जिसमें सैय्यद दिलावर खान के 12,000 सैनिक मारे गए और इतने ही घायल हुए निजाम के सैनिकों ने खूब लूट पाट की जिससे उन लोगों को बड़ा संतोष हुआ ।

3- सैय्यद आलम अली खाँ सैय्यद नुरुद्दीन अली के ज्येष्ठ पुत्र थे, वह इन दोनों सैय्यद बन्धुओं का भतीजा था, पन्द्रह वर्ष की आयु में वह दक्षिण का हाकिम नियुक्त किया गया था ।

को स्थिति से अवगत कराते हुए पत्र भेजा[1] तथा बादशाह के नाम से एक शाही फरमान तैयार किया गया[2]। साथ ही हुसैन अली ने निजामुलमुल्क

1- क्योंकि सैय्यद आलम अली ख़ाँ के सम्बन्धियों तथा नातेदारों के सम्मान तथा वहाँ पर स्थित नकद एवं अन्य सम्पत्ति की सुरक्षा का प्रश्न था, समीपवर्ती निजामुलमुल्क द्वारा उनको क्षति पहुँचाने की आशंका थी । कालोचितता तथा परिस्थिति की यह माँग थी कि इनसे किसी भी दर पर संधि की जाए तथा उन्हें शान्त किया जाए ।

2- एक पत्र सैय्यद आलम अली ख़ान को इस स्थिति को सूचित करते हुए लिखा जाए जिससे कि वे पहले से ही सचेत हो जाय तथा परिवार के सम्मान एवं सुरक्षा की परिरक्षिता के हेतु उचित पूर्वोपाय कर ले । परामर्श के उपरान्त उन लोगों ने सैय्यद आलम अली ख़ान को पत्र लिखने का निश्चय किया । उन लोगों ने एक सम्राट के नाम फरमान भी तैयार किया । फरमान को लिखकर निजामुलमुल्क को भेजा गया जो निम्न प्रकार है :-

कुलीनता एवं शासक पद के वीरता तथा शास्त्रों के कौशल में सुप्रसिद्ध दयालुता एवं उदारता के योग्य,अनगिनत अनुग्रहों के अभिप्राय, राज्य के स्तम्भ, आपको शाही कृपा की प्राप्ति हो । यह अवगत हुआ है कि राज्य के स्तम्भ ने मालवा सूबे को जहाँ उनकी नियुक्ति हुई थी, बिना शाही आज्ञा के छोड़ दिया है तथा आगे अग्रसर हो गए हैं, इससे आश्चर्य एवं अचरज हुआ कि उस राज्य भक्त के हृदय में क्या गुजरी होगी तथा आशंकाएँ आई होगी| जो कुछ भी हुआ उसे अर्जदाश्त द्वारा दरबार में सूचित करना चाहिए था, तदुपरान्त जो भी निर्देश एवं निषेधाज्ञा आपको दी जाती उसका पालन करना चाहिए था । ऐसी कौन सी समस्या या विषय है जिसे राज्य के श्रेष्ठ ने विचारार्थ निवेदन किया हो तथा जिसे स्वीकृत नहीं किया गया हो तथा जिसका समर्थन न किया गया हो । यदि वे आनन्द यथा अथवा आखेट के लिए दक्षिण जाने के इच्छुक थे तो इस विषय में अनुरोध

{फुटनोट का शेष भाग अगले पृष्ठ पर}

॥ पूर्व पृष्ठ का शेष भाग ॥

करना चाहिए था । यह कैसे सम्भव था कि आपको आज्ञा न दी जाती , परन्तु यदि वे उस क्षेत्र का नियन्त्रण एवं निरीक्षण स्वयं करना चाहते थे, तो उनको इस आशय से अनुरोध करना चाहिए था । उनके अनुरोध को स्वीकृत किया जाता तथा असनाद, तथा दस्तावेज, शाही कार्यालय को तैयार कर भेज दिये जाते । यह पूर्ण सनद निष्कपट व्यक्तियों के हाथ में होता तथा अदूरदर्शी, हानिकारक व्यक्तियों से बचत हो जाती । यदि स्थिति की आवश्यकतानुसार प्रमाणिक पत्र भेजने में कुछ बिलम्ब हो जाता तो उनको कुछ क्षण प्रतीक्षा करनी चाहिए थी, हलाँकि निष्कपट निष्ठा के कारण उस राज्य भक्त के हृदय की पवित्रता पर हमें पूर्ण विश्वास है । फिर भी मिथ्यावादियों से भय लगता है । दुष्ट प्रकृति के दक्षिणियों द्वारा विद्रोह के समाचार पुण्य दरबार में पहुँचने पर हमारी यह इच्छा थी कि दक्षिण के सूबों की देख रेख तथा सत्ता आपको ही सौंप दी जाती । भगवान की अनुकम्पा से यह कार्य स्वतः ही सम्पन्न हो गया । भगवान की परोपकारिता इस तथ्य की पुष्टि करती है कि कथित कार्य किसी अपरिचित की सहायता से परिपूर्ण हो जाए तथा इच्छा की पूर्ति होनी चाहिए । सनद जिससे प्रसिद्ध एवं श्रेष्ठ परिवार से सम्बद्ध की नियुक्ति दक्षिण सूबों की सरकार एवं शासन के लिए की थी, तैयार हो गया है और अब रास्ते में है । यह आवश्यक है कि आप शासन का प्रबन्ध करें तथा नियमों एवं अधिनियमों को प्रवृत्त करें । आप ऐसे भी प्रयत्न करें, जिससे आपत्ति के समय की गड़बड़ियों का उपचार हो सके । सैय्यद आलम अली खाँ बख्शी उलमम्मालिक, अमीरूल उमरा, हुसैन अली खाँ, बहादुर के सम्बन्धियों के साथ वहाँ पर स्थित है । उनकी सुरक्षित वापसी यात्रा के लिए उन्हें एक रक्षक प्रदान किया जाए, क्योंकि वे बहुत दिनों से बाहर है, इसको अति आवश्यक समझा जाए । उसके अतिरिक्त और कुछ नहीं लिखना है ।

को भी एक पत्र प्रेषित किया । सम्राट ने सैय्यद आलम अली खाँ जो औरंगाबाद में था, की रक्षा के लिए फरमान भेजा[1]।

सैय्यद आलम अली को सैय्यदों ने यह पत्र लिखा कि निजाम ने सैय्यद दिलावर को मार दिया है तथा उसकी चालीस हजार घोड़ों तथा चालीस हजार पैदल सेना को लूट लिया और तितर बितर कर दिया है । अतः सैय्यद आलम को आदेश दिया गया कि समय पाकर वह निजामुलमुल्क को समाप्त कर दे[2]।

1- शाहनामा मुनव्वर कलम पृ. 68,69

निजामुलमुल्क तथा सैय्यद दिलावर के युद्ध के पूर्व (जिसमें दिलावर खान मारे गए थे) सैय्यद सैफुद्दीन अली खाँ, जो सैय्यद अब्दुल्ला खाँ के भाई का लड़का था, की माँ हिन्दुस्तान की ओर चल पड़ी । सैफुद्दीन के साथ एक बड़ी सेना और सौदागर तथा मुसाफिर थे । सैय्यद हुसैन अली खाँ के बख्शी, सैय्यद दिलावर खाँ तथा निजामुलमुल्क के मध्य युद्ध की सूचना प्राप्त करके वे बुहरानपुर एक दिन रुके, क्योंकि उनको निजामुलमुल्क के हस्तक्षेप का भय था । उसने अपना विश्वास पात्र दूत निजामुलमुल्क के पास भेजा तथा उनसे रक्षक देने का आग्रह किया । निजामुलमुल्क ने सद्व्यवहार का परिचय देकर रक्षक प्रदान किया । उसने रक्षकों से कहा कि वह सैय्यद सैफुद्दीन की माँ को अपनी माँ समझते हैं तथा उन्हें आदेश दिया कि उनको अत्यन्त सावधानी एवं दायित्व से किसी सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दें । अहवाल पृ. 157, शिवदास 152, खाफी खाँ 444, 851, 854

2- मेरी गोद का लड़का आलम अली और मेरा परिवार इस मुल्क में आना चाहते हैं, कृपा करके उनके साथ सैनिक नियुक्त किए जाए । शाहनामा मुनव्वर कलम पृ. 60

सैय्यद हुसेन अली के लिखित आदेशानुसार सैय्यद आलम अली खाँ ने शीघ्र ही तीस हजार सवारों तथा बहुत बड़ी पैदल सेना एकत्रित की[1]। सैय्यद आलम अली को दक्षिण के जमींदारों एवं नेताओं ने सहयोग दिया[2]।

1- शाहनामा मुनव्वर कलम पृ. 69-70

इस सेना में उसने उदार वेतन चाँदी, सोना देकर अपने पक्ष में कर लिया ।

जब सैय्यद हुसेन अली की पत्र तथा फरमान, जिसमें सरकार के दक्षिण सूबों के राज-काज का वर्णन तथा जिसमें सैय्यद आलम अली खाँ को रक्षक देने का आदेश था, निजामुलमुल्क को औरंगाबाद के पास प्राप्त हुआ तो उसने एक "फरमान-इ-बारी" का निर्माण कराया तथा फरमान को प्राप्त कर पूर्ण गर्व एवं सम्मान से अपने मुकुट पर रख दिया तथा नगाड़े बजवाए एवं इस घटना को अत्यन्त उल्लास से मनाया ।

2- दक्षिणियों को सैय्यद आलम अली से अलग करने के आशय से एक फरमान जिस पर वहाँ के गाजी की मुहर पड़ी थी, की प्रतिलिपियाँ निजामुलमुल्क ने सैय्यद आलम अली को भेजी । जिसमें उन्हें लिखा कि संसार के सम्राट ने उसे दक्षिण के सभी सूबों का शासन सौंप दिया है, परन्तु यह सुना गया है कि आलम अलीखाँ जो शुद्धता और कुलीनता के प्रतीक हैं, ने एक महान सेना का संगठन कर लिया है । अतः उन्हें यह सौहार्दभाव से सूचित किया जाता है कि उन्हें इतना धन सेना पर व्यय करने की आवश्यकता नहीं है तथा उन्हें चाहिए कि वह अपनी महान सेना का विघटन कर दें । परन्तु यदि वे हिन्दुस्तान पर विजय की इच्छा रखते हैं तो उनके मित्र की यह सेना पर्याप्त है । फरमान की प्रतिलिपि प्राप्त होने पर दक्षिण के अधिकतर ब जमींदारों व नायकों ने आलम अली खाँ का साथ छोड़ दिया और निजामुलमुल्क के पक्ष में हो गए । निजामुलमुल्क ने शाही फरमान तथा सैय्यद हसन अली खाँ के पत्र का यह उत्तर दिया कि हलाँकि वे बिना सम्राट के आदेश तथा सनद के दक्षिण चले गए थे, परन्तु जब उन्हें शाही फरमान इस आशय से प्राप्त हुआ तो उन्होंने यह अपना कानूनी अधिकार समझा तथा औरंगाबाद की ओर कूच कर किया ।
शाहनामा मुनव्वर कलम पृ. 70

सैय्यद आलम अली की सहायता के लिए हुसैन अली ने शाहू व बालाजी को भी पत्र लिखे[1]। 9 अगस्त को बालापुर के तीन मील पर युद्ध हुआ और सैय्यद आलम अली औ इस युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए[2]।

जब सैय्यदों को आलम अली की मृत्यु का समाचार मिला तो वह बहुत दुखित हुए और सोच नहीं पा रहे थे कि क्या करें। इन सैय्यदों ने आपस में परामर्श किया तथा एक भाई ने दक्षिण तथा दूसरे ने शाहजहाँ-नाबाद जाने का निर्णय किया[3]।

1- निजामुलमुल्क ने भी यह प्रकट किया की वह वहाँ से सेना हटाकर मक्का यात्रा पर जा रहा है और 1720 में 20 जुलाई को सूबा बरार में सेकाँव के पास अपना डेरा डाला।

2- इसका सर काट डाला गया और तीरों की बौछार हुई कामवर के अनुसार (886, 899) आलम अली को मराठों ने राय दी थी कि यह औरंगाबाद के पास रुके और हुसैन अली का इन्तजार करे और दुश्मनों को गैरिका युद्ध करने दे। पर अपने घमण्ड में आलम अली ने यह राय अस्वीकार कर दी।

दक्षिण के इतिहास में खडवा और बालापुर की लड़ाई से स्थिति बदल गई और उसके पश्चात् निजाम और उसके कुटुम्ब का शासन वहाँ जम गया।

निजामुलमुल्क आसफ जहाँ पृ॰ 136

3- शाहनामा मुनव्वर कलम पृ॰ 77
निजामुलमुल्क आसफ जहाँ पृ॰ 126

दक्षिण में इन्हें निजामुलमुल्क से बदला लेना था तथा वहाँ के परिवारों की देख रेख तथा वहाँ के शासन को सुचारु रूप से देखना था ।

शाहजहाँबाद में बन्दी राजकुमार की सुचारु रूप से देखभाल करें तथा वहाँ के सूबों की रक्षा करें और रुक कर अगले समाचारों की प्रतीक्षा करें[1]। भाग्यवश सैय्यद हुसैन अली खाँ बहादुर, सैय्यद गैरत खाँ आदि बहन तथा भाई के लड़के सम्राट के साथ दक्षिण चले गए जबकि सैय्यद अब्दुल्ला खाँ अनेक अमीरों के साथ शाहजहाँबाद के लिए चल दिए । हैदर कुली खाँ को शाही तोप खाने का नेतृत्व दिया गया, इन्होंने सुचारु रूप से इसकी व्यवस्था की । सैय्यद अब्दुल्ला खाँ ने मुहम्मद अमीन खाँ, सैय्यद गैरत खाँ सैय्यद जमालुद्दीन खान उसकी बहन के लड़के शमसामुद्दौला खान ए दौरान बहादुर, जफर खान, बहादुर, संजर खान बालाशाही, राजा गोपाल सिंह, हैदर कुली खाँ, राजा रतन चन्द्र तथा अन्य महान अमीरों तथा सम्राट के विजयी परिचायकों के बड़े मनसबदारों का अभिनन्दन किया तथा सैय्यद हुसैन अली के साथ दक्षिण गए तथा नन्द गाँव बरसाना पर डेरा डाला । हुसैन अली खाँ के साथ 80 लाख रूपया कथित अमीर एवं मनसबदार थे[2]।

1- यदि भगवान की अनुकम्पा से दक्षिण में कुछ अनुचित न हुआ हो तो दूसरे भाई को शाहजहाँबाद के किले से एक "तौर" लाना चाहिए तथा बदला लेना चाहिए, हालाँकि स्थिति की आवश्यकतानुसार तथा दूरदर्शितानुसार दोनों भाईयों का पृथक होना बुद्धिमानी न थी ।
शाहनामा मुनव्वर कलम पृ. 77

2- शाहनामा मुनव्वर कलम पृ. 77-78

इसके बाद इन्होंने अपना डेरा अकबराबाद और फतेहपुर के मध्य लगाया[1]। अमीरूलउमरा ने अपने बहन के पुत्र सैय्यद गैरत खाँ को हैदर अली खाँ के स्थान पर शाही तोप खाने का नेतृत्व करने का प्रस्ताव रखा, क्योंकि हैदर अली खाँ मुगल था तथा मुगल एवं अमीरूलउमरा में शत्रुता थी, अन्ततः इस युद्ध में हुसैन अली को सहायता न मिल सकी ।

1- यहाँ पर एक अद्भुत घटना हुई । हमराज जट्टी नामक एक तपस्वी राजा रतनचन्द्र का मित्र था, कथित राजा को इस तपस्वी राजा के आग्रह पर अपने एक परिचायक के साथ जंगल में अमीरूल उमरा जो दक्षिण में निजामुलमुल्क से बदला लेने के लिए चल दिया था, का पता लगाने गया, उस तपस्वी के साथियों ने जो इस जंगल की रक्षा करते थे, पकड़कर मारा पीटा, तथा बन्दी बना लिया, क्योंकि वह स्थान राजाओं के आखेट का स्थान था, उन लोगों ने इस पर शिकार खेलने का असत्य आरोप लगाया । हलाँकि तपस्वी ने विरोध किया कि उसे आखेट से कोई अभिप्राय नहीं है तथा वह राजा रतन चन्द्र के आग्रह ले आया है, अतः उसे छोड़ देना चाहिए । फिर भी सन्त्रियों ने उसकी कोई बात न सुनी । अन्ततः परिचारक किसी भाँति किसी प्रकार भाग कर रतन चन्द्र तथा अमीरूल उमरा के पास आया तथा सब वृतान्त सुनाया उन लोगों ने तपस्वी को छुड़वाकर अपने पास बुलाया तपस्वी ने उन्हें बताया कि गणनानुसार इस साहसिक कार्य के लिए समय शुभ नहीं है । अतः यात्रा नहीं करना चाहिए । परन्तु अमीरूल उमरा ने उसकी बात ध्यान न रख कर यात्रा प्रारम्भ रखी ।

इसी बीच मुहम्मद अमीन खाँ जो निजाम का चचेरा भाई था, सैय्यद हुसैन अली को समाप्त करने का षड्यन्त्र बना रहा था[1]। जिस दिन इसका वध होना था, मोहम्मद अमीन खाँ बीमार बन गया और हैदर बेगने जो सैय्यद हुसैन अली के पास प्रार्थना पत्र लेकर आया था, हुसैन अली को धोखे से मार दिया । अपने भाई की मृत्यु का समाचार सुनकर सैय्यद अब्दुल्ला खाँ बहुत घबरा गया[2] और कमजोर पड़ गया, फिर भी इसने

1- शाहनामा मुनव्वर कलम पृ० 81

मुहम्मद अमीन खाँ बहादुर के परिचारक तथा तूरानी मुगल और हैदर बेग खान, जो बन्दी सम्राट फार्रुखसियर के वध के समय में अत्यन्त दुखी थे तथा जो यह कहा करते थे कि मैं मृतक सम्राट के हत्यारे का वध करने वाला हूँ, ने मुहम्मद अमीन खाँ बहादुर से कहा यह कार्य मुझे सौंप दे तथा मैं इसे सम्पन्न कर दूँगा । इतिमादुद्दौला ने इस दृढ संकल्प की प्रशंसा की तथा उसे यह कार्य सौंप दिया । मीर हैदर बेग खान विनम्रता पूर्वक उस अमीर के समक्ष नतमस्तक हुआ तथा इस कार्य का उत्तर दायित्व अपने ऊपर लिया।

सम्राट मोहम्मद शाह और उसकी माँ ने भी उस समुदाय की सहायता की|बादशाह को भी आशा थी कि इस समुदाय के साथ सैय्यदों के दुःख से अन्त मिल जाएगा|हुसैन अली को इसका पता लग गया, परन्तु उसने इस तरफ ध्यान नहीं दिया । इसे अपने पर बहुत घमण्ड था, कहता था कि कौन ऐसा है जो मुझ पर हाथ उठाए । इसकी छाती पर तलवार मारी और सैय्यद हुसैन अली का अन्त हो गया । इस प्रकार भारतीय करबला में एक दूसरे हुसैन को एक दूसरे यजीद ने मार डाला ।

2- निजामुलमुल्क आसफ जहाँ पृ. 137

हिम्मत नहीं हारी और इसने राजकुमार रफीउरशान के पुत्र सुल्तान मुहम्मद इब्राहीम जो बहुत समय तक किले में बन्दी थे को मुक्त कर इनका राज्याभिषेक कराया[1]। अन्य अनेक अमीरों को अब अपनी ओर मिलाना आरम्भ किया[2] और एक सेना का निर्माण किया । बारहा के नेताओं को पत्र लिख कर बुलवाया गया[3] और सभी को यह आदेश दिया कि जो कोई भी सेवा करना चाहता है वह तुरन्त आकर अपने को भर्ती करवाए[4]। सैय्यद अब्दुल्ला खाँ

1- शाहनामा मुनव्वर कलम पृ॰ 96
तजकिरातउस सलातीने चकताई पृ॰ 32।
निजामुलमुल्क आसफ जहाँ पृ॰ 137

इनके ऊपर छतरी लगाई तथा इन्हें प्रणाम किया, राजधानी में इनके नाम के सिक्के और खुतबे पढ़े गए ।

2- राजा रतन चन्द्र ने राजकीय कोष तथा सम्पत्ति लेने के पश्चात् उसने तीव्रता से सेना की भर्ती प्रारम्भ की । इसने एक घुड़सवार को 80 रु॰ वेतन, दो सवार का 150 रुपया तथा पैदल का वेतन 10 रुपया निश्चित किया । एक माह का वेतन पहले से ही दिया गया ।

3- शाहनामा मुनव्वर कलम पृ॰ 96

4- शाहनामा मुनव्वर कलम पृ॰ 96

सभी ओर से भारी संख्या में लोग आए जिससे कुछ दिन में 50 हजार सवार तथा 50 हजार पैदल तथा सवारों की सेना प्रदान की गई । बहुत से लोग तो रथों और बैलगाड़ियों पर सवार होकर आए ।

के आग्रह पर गाजीउद्दीन खाँ ने भी अपनी सेवाएँ सुल्तान इब्राहीम को समर्पित कर दी[1]। इसी प्रकार सैय्यद नजमुद्दीन अली खाँ भी सेवा में उपस्थित हुए तथा उन्हें 7000/7000 सवार का पद प्रदान किया गया[2]। सैय्यद शुजात खाँ को 5000/5000 सवार का मनसब प्रदान किया गया[3]। सैय्यद सैफउद्दीन अली खान तथा सैय्यद शहमत खान को 5000 जात तथा 5000 पैदल का मनसब दिया गया । सैय्यद रिफात खान अपनी सेवायें देकर 7000/7000 का पद प्राप्त किया, इतबार खान, लखनऊ के दरया खान, शेख सिवागातुल्ला खान, सैय्यद सलाकत खाँ, सैय्यद मुजफ्फर खान, मासूम अली खाँ, रूस्तम अली खाँ तथा सदात खाँ ने भी सेवाएँ अर्पित की तथा सभी को पदोन्नति किया[4]। इस प्रकार सैय्यद अब्दुल्ला खाँ के पास एक लाख पैंतीस हजार सवार तथा इतने ही पैदल सैनिक सेवा में भर्ती हो गए। यह कोई भी कार्य करने को तैयार थे ।

सैय्यद अब्दुल्ला खाँ तथा सुल्तान मुहम्मद इब्राहीम एक विशाल सेना तथा मनसबदारों के साथ शाहजहाँबाद से कूच किया तथा नगर के बाहर खेमा लगाया । मुहम्मदशाह ने भी खेमा लगाया, सैय्यद अब्दुल्ला खाँ यहाँ

1- इनको 7000/7000 सवार दो अस्पा सेह अस्पा का मनसब दिया गया । अमीर उमरा की उपाधि तथा प्रथम बख्शी के पद से सम्मानित किया गया ।

2- शाहनामा मुनव्वर कलम पृष्ठ 96

3- वही

4- वही

से चलकर फरीदाबाद पहुँचा । मुहम्मद खान बक्श तथा अजीज खान ने यह सूचना सम्राट को दी[1]।

इस युद्ध में सम्राट की सेना की गोलाबारी से तथा पानी की कमी के कारण सैय्यद अब्दुल्ला खाँ के बहुत से सैनिक शाहजहाँबाद भाग गए । अब्दुल्ला खाँ स्वयं कुछ अमीरों के साथ अर्धरात्रि तक वीरता पूर्वक लड़ता रहा । युद्ध के आठ पहर चलने से दोनों ओर क्षति हुई तथा प्रातः काल तक सैय्यद अब्दुल्ला खाँ के पास केवल दस हजार सवार शेष रहे । 1132 सं॰ मुहर्रम के 14 वें दिन प्रातः काल युद्ध ने अत्यन्त क्रुद्ध रूप धारण कर लिया । समसामुउद्दौला खान-ए-दौरान बहादुर मसूर ■ जंग के साथ संजर खान शाही ने घोड़े से नीचे उतर कर बन्दूकों से लड़ाई प्रारम्भ कर दी ।

1- हैदर कुली खान, कमरूद्दीन खान, को इन लोगों ने समझा बुझाकर दरबार में लाने को कहा, आदेशानुसार ये लोग सम्राट के सामने लाए । इन अमीरों को सम्राट के समक्ष आने तथा सात हजार पैदल व सात हजार सवारों के पद प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ । सम्राट ने मुहम्मद बंगश को एक करोड़ दाम, इलाहाबाद तथा अकबराबाद के सूबे भी प्रदान किये तथा इन्हें इलाहाबाद का राज्यपाल भी नियुक्त किया । अजीज खान को संडीला के परगने तथा अवध के सूबे का भार सुपुर्द किया गया ।

बायज़ीद खान मेवाती, जिसका मेवात क्षेत्र पर प्रभाव था, को सम्राट के समक्ष आने का सम्मान प्राप्त हुआ । चूरा जाट के साथी खेमा जाट जो उस क्षेत्र के अत्यन्त प्रभावशाली जाट थे को भी सम्राट के समक्ष आने का सम्मान प्राप्त हुआ । उनको विजयी सेना के पीछे रहने तथा पीछे छूटने वाले को सहायता देने का आदेश दिया गया । ४पृ॰ 100४ शिवदास ।

सिबधातुल्ला लखनवी जो सैय्यद अब्दुल्ला खाँ के साथ थे, अपने सत्तर योद्धाओं के साथ बहादुरी से लड़कर अपने स्वामी की सेवा करते हुए, वीरगति को प्राप्त हुए । अब्दुल्ला खाँ के अधिकतर साथी वीरगति को प्राप्त हुए तथा शेष भाग गए[1]।

चूड़ामन जाट जो राजकीय सेना का परित्याग कर सैय्यद अब्दुला खान की सेना में सम्मिलित हो गया था, वे सैय्यद अब्दुल्ला खाँ के कैदी होने पर उसकी सेना को लूटकर अपने घर चला गया । इस प्रकार नवम्बर 13, 1720 को अब्दुल्ला खाँ हसनपुर[2] में पराजित हुआ और हैदर कुली खाँ के साथियों द्वारा कैद कर लिया गया[3]। अभाग्यवश 1722 में

1- हैदर कुली को जब यह ज्ञात हो गया कि सैय्यद अब्दुल्ला खाँ के पास अत्यन्त कम लोग हैं तो वह उसके हाथी पर चढ़ गया तथा अब्दुल्ला खाँ को नीचे बैठा दिया । सैय्यद अब्दुल्ला खाँ को दो तलवारों की चोट सिर तथा दाहिने हाथ पर लग गई और वह दुर्भाग्य से क्षतिग्रस्त हो गया ।

2- हसनपुर आगरा के नजदीक है ।

3- कामवर खाँ तजकिरातउस सलातीन चकताई पृ॰ 324
निजामुलमुल्क आसफ जहाँ पृ॰ 137
पार्टीस एण्ड पौलिटिक्स पृ॰ 162
उत्तर मुगलकालीन भारत पृ॰ 130

सैय्यद अब्दुल्ला खाँ का देहान्त हो गया[1]। इस प्रकार दोनों बन्धुओं को वीरगति प्राप्त हुई व इन सैय्यदों की विजारत समाप्त हुई ।

अमीरुल उमरा सैय्यद हुसैन अली खाँ व कुतुबुलमुल्क सैय्यद हुसैन अली की मृत्यु के साथ ही साथ सैय्यदों की शक्ति भी समाप्त हो गई तथा अमीरों के एक नए वर्ग का उदय हुआ । जिसका नेता निजामुलमुल्क था । यद्यपि राजनीतिक क्षेत्र में सैय्यद वंशीय व्यक्तियों को प्रभुत्व का पराक्षेप हो गया था तथापि विरोधी दल के रूप में सैय्यद वंशीय व्यक्ति कार्य करते रहे तथापि उनका प्रभाव क्षेत्र प्राय: नगण्य था ।

यद्यपि सैय्यदों ने कभी राज्य सिंहासन पर बैठने का प्रयास नहीं किया । तथापि उनके पतन का एक मुख्य कारण यह था कि दरबार के अन्य अमीर सैय्यदों को स्वामी विरोधी समझने लगे थे । दरबार में और बहार एक वर्ग उनका हमेशा विरोध करता था । इस विरोधी पक्ष में प्राय: ईरानी तूरानी और सरदार थे । ये लोग समझते थे कि सैय्यद अब हिन्दुस्तानी

1- इरविन लेटर मुगल्स पृ॰66

सियारुल मुताखरीन के लेखक कहते हैं कि इन दोनों प्रसिद्ध व्यक्तियों की योग्यता में कुछ विषमता थी । इसको सब लोग मानते थे कि छोटा भाई हुसैन अली खाँ अपने बड़े भाई से बढ़कर था, क्योंकि उदार ईश्वर ने उसको अनेक गुण दिए थे, इसके हाथ में इतनी शक्ति थी जितनी की तत्कालीन किसी शासक के पास नहीं थी । इतना ही नहीं कितने ही ऐसे लोग से बढ़ चढ कर था, जिन्होंने साम्राज्य विजय की और जिन्होंने राजकुमार और रियासतें बखशीस में दी , परन्तु उसका जीवन और शक्ति अल्पकालीन थी । यदि इसका जीवन काल लम्बा होता तो दुखद बातें हम इस समय देख रहे हैं वे इतनी अपमान जनक नहीं होती और हिन्दुस्तान के उमरावों का मान इस प्रकार धूल में न मिलता ।

हो गए हैं, हिन्दुओं का पक्ष करते हैं और उनके विचार कुरान के विपरीत हैं[1]। इस काल की एक विशेषता यह भी थी कि एक दल तो बादशाह के समर्थकों का था तथा दूसरा वजीर के मित्रों का था[2]। निर्मता सैय्यद बन्धुओं की सफलता इस वजीर पक्ष की शानदार सेना के कारण हुई थी ।

1- ओवेन ने लिखा है कि बारहा के सैय्यद बाहर से आए हुए थे, लेकिन भारत वर्ष के प्राचीन निवासी थे और वे हिन्दुस्तानी होने के गौरव का अनुभव करते थे, इसलिए उनकी सहानुभूमि सम्भवत: हिन्दुओं की साथ थी, मुगलों के साथ नहीं । क्योंकि वे उनको विजेता मानते थे । सैय्यद मुसलमान तो थे, परन्तु वे शिया थे, इसलिए उनका मुगलों के साथ मेल नहीं था । मुगल लोग प्राय: सुन्नी थे, सैय्यद औरंगजेब की प्रतिक्रियावादी और उत्पीड़क नीति से घृणा करते थे । यही कारण था कि उनकी सहिष्णुता और राजनीतिक समानता के भण्डे के नीचे जो अकबर ने कायम किया था लोग दौड़ दौड़ कर आते थे । इसी प्रकार का विचार इरविन ने भी अभिव्यक्त किया है कि दरबार में और भी अधिक दल बने हुए थे । मुगल तुरानी व ईरानी सेना की रीढ़ की हड्डी थे । सन् 1680 और 1700 के बीच के पच्चीस वर्ष के अर्से में इनकी संख्या और बढ़ गयी थी । इस समय आलमगीर स्थानीय मुसलमानों रियासतों के साथ और फिर मराठों के साथ निरन्तर युद्ध में लगा हुआ था । इसी प्रकार अफगानों और पठानों में यह बुद्धि थी कि वह अपनी स्थायी बस्तियाँ बनाकर हिन्दुस्तान में रहने लगे थे । ईरानियों और मुगलों में यह बात नहीं थी । सैनिक दृष्टि से अफगानी अच्छे माने जाते थे, ये लोग रुपये के लिए दौड़ते थे, जिसके पास अच्छा पैसा मिलता था, उससे मिल जाते थे, असभ्य और निरक्षर थे, सैनिकों के अलावा इनमें कोई गुण नहीं था ।

2- इरविन लेटर मुगल पृ॰ 275
फार्रुखसियर के काल में यह दल बहुत प्रभाव शाली हो गया ।

बादशाह का पक्ष प्रारम्भ से प्रबल नहीं था, परन्तु उसकी क्रान्ति अधिक सफल और उद्देश्यपूर्ण थी । सैय्यदों का पतन का कारण यही क्रान्ति थी[1]। सैय्यद अब्दुल्ला खाँ की मृत्यु के पश्चात् कुतबुलमुल्क का साहस कम हो गया और फिर हसनपुर में अब्दुल्ला खाँ के पराजित होने पर मृत्यु के पश्चात् सैय्यद बन्धुओं की विजारत समाप्त हो गई ।

सैय्यद अब्दुल्ला खाँ बारहा धैर्यवान था और धैर्य एवं कूटनीति से काम करना चाहता था, परन्तु हुसैन अली जल्दबाज था और वह अब्दुल्ला खाँ की नीति को व्यवहारिक समझता था । अतः इस भिन्न दृष्टिकोण से भी इसकी नीति परिपक्व नहीं हो सकी ।

1- राजनीतिक दृष्टि से फार्रुखसियर को पदच्युत करना सैय्यदों की बहुत बड़ी भूल थी । कुछ इतिहासकारों के द्वारा यह दोनों भाई दुर्भाग्य के शहीद थे ।

सैय्यदों के पतन का सम्बन्ध निजामुलमुल्क के उत्थान से भी है । निजामुलमुल्क ने यह प्रचार किया कि शाही वंश की प्रतिष्ठा की रक्षा करना है, जो सैय्यद वंशीय लोग समाप्त करना चाहते थे ।

कामवर खाँ के अनुसार

नाम	वर्ष	पद व पुरस्कार	मनसब	ऐतिहासिक स्त्रोत
सैय्यद अब्दुल्ला खाँ बारहा	-	कुतबुलमुल्क याद वफादार जाफर जंग वाजीर	7000/7000 2-3	तजकिरातउस सलातीन चकतई कामवर पृ. 16
सैय्यद हुसैन अली खाँ बारहा	-	अमीरुल उमरा बहादुर फिरोजंग मीर बख्शी	7000:7000	वही

कामवर के अनुसार

नाम	वर्ष	पद व पुरस्कार	मनसब	ऐतिहासिक स्त्रोत
सैय्यद हसन अली	–	कुतबुलमुल्क सैय्यद अब्दुल्ला खाँ बहादुर जाफर जंग सिपाह सलार यार वफादार वजीर	7000/7000	इबरतनामा कामराज बिनतमन सिंह
सैय्यद हुसैन अली	–	उमदत उल्मुल्क, अमीरुल उमरा बहादुर फिरोज जंग सिपाह सरदार मीरबख्शी	7000/7000	वही

कामवर खान

नाम	वर्ष	पद व पुरस्कार	मनसब	ऐतिहासिक स्त्रोत
सैय्यद हुसेन अली खाँ	14 मोहरमा	मीर बख्शी	-	तजकिरातउस सलातीन चकताई कामवर खाँ पृ. 19

अहवाल के अनुसार

नाम	वर्ष	पद व पुरस्कार	मनसब	ऐतिहासिक स्त्रोत
सैय्यद अब्दुल्ला खाँ बारहा	-	कुतबुलमुल्क वजीर	-	मोहम्मद कासिम औरंगाबादी अहवाल उल ख्वानी पृ. 276,277
सैय्यद हुसेन अली खाँ बारहा	-	अमीरुल उमरा मीरबख्शी	-	वही

कासिम लोहरी के अनुसार

नाम	वर्ष	पद व पुरस्कार	मनसब	ऐतिहासिक स्त्रोत
सैय्यद हसन अली खाँ	–	सैय्यद अब्दुल्ला कुतबुलमुल्क यमीन उद्दौला यार वफादार वजीर	7000/7000	इबरतनामा मोहम्मद कासिम लोहरी
सैय्यद हुसैन अली खाँ	–	मीर बख्शी	5000/–	वही

<u>यहया के अनुसार</u>

नाम	वर्ष	पद व पुरस्कार	मनसब	ऐतिहासिक स्त्रोत
सैय्यद हसन अली खाँ	-	कुतबुलमुल्क अब्दुल्ला खान वजीर	-	तजकिरातउलमुल्क मुशी मोहम्मद यहया
सैय्यद हुसैन अली खाँ बारहा	-	अमीरूल उमरा मीर बख्शी	-	वही

1719 में सैय्यद बन्धु

नाम	वर्ष	पद व पुरस्कार	मनसब	ऐतिहासिक स्रोत
सैय्यद अब्दुल्ला खाँ बारहा	–	वजीर	7000/7000	कामवर पृ० 16
सैय्यद हुसैन अली खाँ बारहा	–	मीर बख्शी	7000/7000	वही
सैय्यद खान जहान बहादुर	–	गर्वनर आफ अजमेर	6000/5000	कामवर F 371b
सैय्यद मुसरत यार खाँ बारहा	–	फौजदार आफ नरनौल मेवात	5000/5000	वही F 375a
सैय्यद गैरत खाँ (भाँजा)	–	गर्वनर आफ आगरा	–	कामवर पृ० 346 अ सियर 43 ब
सैय्यद नजमुउद्दीन अली बारहा	–	दरोगह दीवान ए खास	4000/2000	कामवर 360 ब

नाम	वर्ष	पद व पुरस्कार	मनसब	ऐतिहासिक स्त्रोत
सैय्यद निजावत अली खाँ (दत्तक पुत्र अब्दुल्ला खाँ)	-	-	-	कामवर 360 ब
सैय्यद सैफुद्दीन खाँ बारहा	-	फौजदार ऑफ मुरादाबाद	-	कामवर 350 अ
सैय्यद इब्राहीम खान सैय्यद हसन खान	-	मुल्तान के डिप्टी गर्वनर	5000	कामवर 357 व 369 ब
सैय्यद आलम अली खाँ पुत्र सैय्यद नुरूद्दीन अली खाँ	-	दक्षिण का डिप्टी गर्वनर	-	टी.एच.पी. 456
सैय्यद शुजात उल्ला खाँ भानजा सैय्यद अब्दुल्ला खाँ	-	दरोगा आफ दरोहा तहसील	-	कामवर 363 ब

नाम	वर्ष	पद व पुरस्कार	मनसब	ऐतिहासिक स्त्रोत
सैय्यद बाबर खाँ	-	-	-	मीअत उल सफा फ 43 अ
शमशेर खाँ	-	-	-	वही
आशरफ खाँ	-	-	-	वही
अमीन खाँ	-	-	-	खाफी खाँ 895
सैय्यद गुलाम अली खाँ	-	दरोगा आफ दीवान ए खास	4000/3000	वही पृ॰ 135 अ
सैय्यद हिम्मत खाँ	-	सरक्षक (रफीउद्दरजात)	-	खाफी खाँ 829,831
सैय्यद दिलावर खाँ	-	"बख्शी" हुसैन अलीखाँ	4000/4000	वही

नाम	वर्ष	पद व पुरस्कार	मनसब	ऐतिहासिक स्त्रोत
सैय्यद मुहम्मद खाँ ९१ चचेरे भाई सैय्यद हुसैन अली खाँ बारहा	-		-	खाफी खाँ 918 सियर II 433
सैय्यद करीमुल्ला	-	बख्शी हुसैन अली खाँ की सेना में	-	खाफी खाँ
शाह अली खाँ	-	इलाहाबाद का गर्वनर	6000/5000	कामवर 370 ब
सैय्यद शहमत खाँ	-	सहारनपुर का फौजदार	-	कामवर ff369d 363 ब
सैय्यद जाफर अली खाँ	-	सिकन्दराबाद का फौजदार	-	कामवर फ 375 अ
सैय्यद अब्दुल नबी	-		-	कामवर 360 ब

- निष्कर्ष -

मध्यकालीन इतिहास में उमरा वर्ग के जिन परिवारों ने विशिष्ट भूमिका निभाई उनमें बारहा के सैय्यदों को भी प्रमुख स्थान दिया जा सकता है ।

इस वंश के मूल पुरुष अबुल फराह मेसोपोटामिया से महमूद गजनी की सेना में भारत वर्ष आए थे, तत्पश्चात् भारतवर्ष आते रहे तथा अपनी वीरता व सैनिक योग्यता के बल पर शासकों के द्वारा सम्मानित किये जाते रहे ।

यद्यपि भारत वर्ष में मुस्लिम साम्राज्य की स्थापना के साथ ही इस वंश के सदस्य भी यहीं आ गये थे, तथापि सल्तनत काल में उनके योगदान का विवरण ऐतिहासिक कृतियों में उपलब्ध नहीं है । सम्भवतः इसका कारण समसामयिक इतिहासकारों द्वारा उन्हीं अमीरों की गतिविधियों का वर्णन है जो उस काल में विशिष्ट प्रभावशाली रहे ।

मुगल कालीन इतिहास में हुमायूँ के आगमन के पश्चात् ही सैय्यदों का उल्लेख मिलता है, परन्तु उनके अभियानों में भाग लेने , शाही सेवा में पद प्राप्त करने का विवरण अकबर के काल में ही उपलब्ध होता है । सर्वप्रथम अकबर ने सैय्यद महमूद खाँ बारहा को अनेक महत्वपूर्ण अभियानों में सम्मिलित किया । सैय्यद कासिम बारहा, सैय्यद हाशिम बारहा, सैय्यद छज्जू बारहा, सैय्यद राजू, सैय्यद लाद आदि ने युद्ध क्षेत्र में वीर और साहसी होने की ख्याति प्राप्त की और मुगल सेवा के अग्रिम दस्ते में नेतृत्व का पैतृक अधिकार भी प्राप्त किया ।

सम्राट अकबर के काल में सैय्यद महमूद खाँ बारहा, हाशिम बारहा, कासिम बारहा आदि ने अपनी उत्कृष्ट सेवा व वीरता के बल पर ख्याति अर्जित की, जहाँगीर के राज्यारोहण के समय उत्तराधिकार सम्बन्धी समस्या को सुलझाने में भी इस वंश ने योगदान दिया तथा खुसरो के राज्यारोहण का विरोध चगताई परम्परा के विरुद्ध ठहराते हुए सलीम का पक्ष ग्रहण किया व राजनीति में विशिष्ट भूमिका निभाई ।

यद्यपि जहाँगीर तथा शाहजहाँ के काल में भी इस वंश के सदस्य युद्ध क्षेत्र में सक्रिय रूप से भाग लेते रहे तथा उन्हें मनसब व पदों की भी प्राप्ति हुई तथा अनेक महत्वपूर्ण अभियानों में उन्होंने अपनी वीरता परिश्रम और स्वामी भक्ति का परिचय दिया, तथापि मुगल राजनीति पर उनका प्रभाव नगण्य रहा ।

औरंगजेब ने उच्च वंश से सम्बन्धित होने के नाते इस वंश के सदस्यों के प्रति आदर भाव अभिव्यक्त किया परन्तु इन लोगों के प्रति शंका था, संभवतः इसका कारण उत्तराधिकार संघर्ष में इस वंश के अनेकों सदस्यों द्वारा दारा व शुजा के साथ सहयोग किया जाना था, साथ ही संभवतः वह उनकी बढ़ती महत्त्वाकांक्षा से भी परिचित था, उसका कथन था कि बारहा के सैय्यदों के प्रति शासन में ढील देना उचित नहीं है, क्योंकि ढिलाई देने पर ये अहंकारी होकर आज्ञाकारिता के मार्ग का अतिक्रमण करने लगते हैं । तथापि औरंगजेब के काल में उनको आगे बढ़ने का अवसर न मिला हो, ऐसा नहीं था । औरंगजेब उनकी वीरता से प्रभावित था तथा इसी वंश के हुसैन अली व अब्दुल्ला खाँ को दरबार के

प्रभावशाली अमीरों में स्थान प्राप्त था ।

औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् बहादुर शाह के काल में भी उन्हें उच्च पद व मनसब प्राप्त थे तथा अजीमुश्शान द्वारा हुसैन अली को अपने सूबेदार के रूप में भी नियुक्त किया गया था ।

उत्तराधिकार युद्ध में फर्रुखसियर को बारहा के सैय्यदों का सहयोग ही प्राप्त नहीं हुआ अपितु सैय्यद बन्धुओं की वीरता तथा रणकौशलता वास्तव में फर्रुखसियर की विजय के लिये मूलतः उत्तरदायी थे । फलतः ये लोग सम्राट निर्माता कहे जाने लगे तथा उनके पद व प्रतिष्ठा दोनों में ही अभिवृद्धि हुई ।

परन्तु शीघ्र ही सत्ता के प्रश्न को लेकर बादशाह व उमरा वर्ग के इन दो प्रभावशाली स्तम्भों अब्दुल्ला खाँ व हुसैन अली के मध्य संघर्ष छिड़ गया ।

संघर्ष का प्रारम्भ 1713 में नियुक्तियों के प्रश्न को लेकर हुआ था, जिसने धीरे-धीरे विशद रूप ग्रहण कर लिया । यहाँ तक कि फर्रुखसियर ने हुसैन अली खाँ को मार डालने का भी प्रयास किया व अजीत सिंह को गुप्त रूप से लिखे गये पत्र से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि फर्रुखसियर उनके प्रभाव क्षेत्र से मुक्ति पाना चाहता था ।

बादशाह के सैय्यद बन्धुओं के प्रति बढ़ते असन्तोष का का लाभ उमराओं का दूसरा वर्ग उठा रहा था, जिनमें मीर जुमल

जैसे प्रभावशाली व्यक्ति थे । वास्तव में फार्रुखसियर येन केन प्रकारेण सैय्यद बन्धुओं की शक्ति समाप्त करना चाहता था व अपने सहयोगियों का नया दल गठित कर रहा था । परन्तु इसका परिणाम फार्रुखसियर के लिये घातक सिद्ध हुआ तथा उसे इन बन्धुओं द्वारा पदच्युत कर दिया गया ।

1719 से लेकर 1722 तक फार्रुखसियर के पश्चात् जितने भी बादशाह हुए सभी इस वंश के प्रभावशाली सदस्यों हुसैन अली व अब्दुल्ला खाँ के हाथों मात्र कठपुतली बने रहे ।

बारहा के सैय्यदों के इस वंश के इतिहास का अध्ययन करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि इस वंश के सदस्य कभी भी स्वयं सम्राट बनने की आकांक्षा नहीं रखते थे । इसमें कोई संदेह नहीं है कि फार्रुखसियर के बाद के शासक उनके हाथ की कठपुतली मात्र थे,परन्तु यह कहना अनुचित होगा कि उन्होंने सत्ता का दुरुपयोग किया । उन्होंने कभी भी कोई ऐसी नीति नहीं अपनायी जो राज्य के लिए घातक सिद्ध हो, उन्होंने जहाँ एक ओर विभिन्न अभियानों में वीरता का परिचय देकर साम्राज्य के विस्तार में सहायता दी , वही दूसरी ओर राज्य को स्थायित्व प्रदान करने के लिए राजपूतों, मराठों, जाटों आदि के सहयोग को भी प्राप्त करने का प्रयास किया । उन्होंने अपने काल में सभी वर्गों के अमीरों को समान रूप से सुविधाएँ देने का प्रयास किया । अजीत सिंह की कन्या का विवाह फार्रुखसियर से कराकर मुगल शासकों व राजपूतों के बीच पुनः मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करने की चेष्टा की, फार्रुखसियर की मृत्यु

के पश्चात् अजीत सिंह की कन्या को वापिस भेजकर उदार दृष्टिकोण का परिचय दिया ।

मराठे जैसी लड़ाकू जाति से समझौता कर मुगल साम्राज्य को स्थायित्व प्रदान करने का प्रयास किया । बारहा के सैय्यद जहाँ एक ओर पूर्णत: धार्मिक प्रवृत्ति के थे । वहाँ दूसरी ओर उनका दृष्टिकोण संकुचित न होकर उदार था । जहाँ एक तरफ उनके द्वारा उर्स के लिए तीन सौ पचास रुपये भेजे जाने का विवरण मिलता है, वहाँ दूसरी ओर इसी वंश के अब्दुल्ला खाँ द्वारा बसंत के उत्सव व होली के उत्सव में भी भाग लेने का भी विवरण मिलता है ।

सैय्यदों द्वारा एक ऐसी नीति का अनुसरण किया गया था, जो यदि कुछ समय तक चली होती तो मुगलों व राजपूतों की सम्मिलित शक्ति के विकसित स्वरूप का द्योतक होती ।

सैय्यद इस बात से भलि भाँति परिचित थे कि मुगल शासक को स्थायित्व प्रदान करने के लिए एक शक्तिशाली केन्द्रीय सरकार की आवश्यकता थी तथा साथ ही क्षेत्रीय शक्तियों के सहयोग के बिना यह कार्य सम्भव नहीं था । सम्भवत: यही कारण था कि उन्होंने इन उभरती हुई शक्तियों, जाटों, मराठों आदि के सहयोग की आवश्यकता को राज्य के स्थायित्व के लिए आवश्यक समझा । बारहा के सैय्यदों ने न केवल मुगल राजनीति में ही अपनी भूमिका निभाई, अपितु उन्होंने सामाजिक एवं साँस्कृतिक क्षेत्रों में भी अपना योगदान दिया ।

स्थापत्य कला के क्षेत्र में उनके योगदान का प्रमाण उनके द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में बनवाए गए भवन इमारते, मस्जिदें आदि है, जो जीर्णावस्था में होते हुए भी स्थापत्य कला के क्षेत्र में अपना विशिष्ट स्थान रखती है ।

कस्बा हाजा जो जानसठ में है एक दीवान खाना बड़ी हवेली और एक इमाम है, जो अब भी (आसरे कदीमा) में मौजूद है ।

कस्बा मीरानपुर (मुजफ्फरनगर) मझे में कोटला और गढ़ी बगैरा की सुन्दर इमारते जीर्णावस्था में भी मौजूद है ।

मौजा कहलात में सादात की यादगार में एक बुलन्द दरवाजा और गढ़ी की इमारते अब भी मौजूद है । इसी तरह मौजा सम्भलहेड़ा में एक दरवाजा है और इमाम बाड़े की इमारत है ।

यद्यपि प्रमुखतया बारहा के सैय्यद अपनी वीरता के लिये ही विख्यात रहे तथापि इसमें कोई सन्देह नहीं कि उनमें प्रशासनिक गुण भी प्रचुर मात्रा में थे तथा अवसर मिलने पर उन्होंने इस क्षेत्र में भी अपनी प्रतिभा का परिचय दिया । संकुचित धार्मिक दृष्टिकोण को न अपनाकर एक उदारवादी नीति का अनुसरण कर साम्राज्य की प्रगति के लिये यथासंभव प्रयास किया । शासन सत्ता को अपने हाथों में लेने में उनका उद्देश्य स्व हित की पूर्ति न होकर तैमूरी साम्राज्य की सुरक्षा करना था, जिसका दुर्बल हाथों में पड़कर विघटन अनिवार्य था ।

-----:o:-----

सैय्यदों के वंश वृक्ष

1- मुजफ्फरनगर गजेटियर में दिए गए सैय्यदों के वंश-वृक्ष ।

2- "हिस्तोरिकल अकाउन्ट आफ मुजफ्फरनगर" में दिए गए सैय्यदों के वंश-वृक्ष ।

3- सादात बारहा का तरीखी जायजा में दिए गए सैय्यदों के वंश-वृक्ष ।

"बारहा सैय्यदों का वंश वृक्ष"

तिहानपुर शाखा बारहा सैय्यदों का वंश वृक्ष

वजीर अली (पिछले पृष्ठ का शेष)
अहमद बख्श
मुहम्मद बख्श
ज़मीन अली
फरज़ंद अली
इम्तियाज अली
इनायत हुसैन, अलताफ हुसैन
जहूर हसन
अलताफ हुसैन, जुल्फिकार अली
राफिक हुसैन
बसहरत अली
इरशाद अली
विज़ारत हुसैन
अकहलक हुसैन
मुहम्मद हुसैन
मुहम्मद जन
आगा हुसैन
मुश्ताक हुसैन
अश्फाक हुसैन
अमीर अहमद
बन्दे हुसैन
सय्यद हसन
बशीर हसन
शब्बीर हसन
जमीर हुसैन
कासिम हुसैन

"बारहा सैय्यद का वंश वृक्ष"

जुल्फकार
हुसैन अली खाँ (जानसठ)
अफताब अली खाँ
मेहदी अली खाँ
हामिद अली खाँ
अब्दुला खाँ
अहमद अली खाँ
असगर अली
खुरशीद अली
चार पुत्र जीवित
मुजफ्फर अली खाँ (जानसठ)
करबाली हुसैन खान
हाशीम अली खान

"बारहा सैय्यदों का वंश वृक्ष"

तिहानपुरी

"बारहा सैय्यदों का वंश वृक्ष"

तिहानपुरी

- नासिरउद्दीन
  - अहमद
    - युसुफ खान
      - नवाब खान जहान खान
        - अबुल मुजफ्फर खान (मृत्यु 1645)
          - अबुल मंसूर खान
            - अजमेरी (मंसूरपुर)
              - गुलाम मुहम्मद
                - मासम
          - लश्कर खान
            - नसरउल्ला शाहा
              - राहत अली
                - कालान्दर अली
                  - अहमद हुसैन व तीन भाई
                    - वजीर
                      - हसन अली व आठ भाई
                    - असहरफ अली
                      - सुजात अली
                      - विलायत अली
                      - अब्दुल अली
                        - गयासुद्दीन
                        - अब्दुल मुजफ्फर
                          - मुहम्मद इसरीस
                          - मुहम्मद अब्दुल रहमान
                          - मुहम्मद युनूस
                          - मुहम्मद मुसा
                    - जफरायब अली
                      - अमन अली
            - अब्दुल समद
              - मोहसीन अली
                - यरब अली
                  - फिरोज अली
                    - निसार अली व तीन भाई
            - वाजिबउद्दीन
              - गुलाम हसन खान
                - बशीर अली खान
                  - अहसन अली खान
                    - इमदाद हुसैन
          - शेर जमन खान व मुजफ्फर खान
            - जनजमल खान

"बारहा सैय्यदों का वंश वृक्ष"

तिहानपुरी शाखा

"बारहा सैय्यदों का वंश वृक्ष"

चतरौरी

फतेहउल्ला
अता हुसेन
जफरयाब अली
जलालउद्दीन हैदर
कादिर हुसेन
इमदाद हुसेन
अलताफ हुसेन
अबुल हसन
जीवन अली
गुलाम हुसेन
सरफराज
हुसेन
फैजुल हसन
बाग हुसेन

चतरौरीब

जफरायब अली
कलन्दर अली
अतर अली खान
अली हसन खान
हुसैन अली
असगर हुसैन
नसरत हुसैन
अब्दुल कासिम
अली अहमद
हुसैन अहमद
मुहम्मद अबास
विलायत अली
सफदर हुसैन
मुहम्मद अली
मुहम्मद हसन
बसहरत हुसैन

हैदर खान
असदस अली खान (मीरानपुर)
दिलेर खान
रोशन अली खान
मसूद
कासिम रहमत खान
ताज मुहम्मद
तहव्वार अली
तजुद्दीन
फजिल
फखरुद्दीन खान

हैदर खान
अखदस अली खान (मीरानपुर)
दिलेर खान
रोशन अली खान
मसूद
कासिम रहमत खान
ताज मुहम्मद
तहवार अली
तजुद्दीन
फजिल
फकरूद्दीन खान

चितरौरी

तहवार अली
गाजीउद्दीन अली
बहादुर अली
इब्राहीम खान
सिराजउद्दीन अली खान
अशरफ
दिलावर अली
गुलाम मुस्तफा
जमायत अली
हैदर हुसैन
रुस्तम अली
इम्दाद हुसैन
तहवार अली
बशीर अली
असगर हुसैन
अहमद हुसैन
मदन अली
इहसान अली
सैय्यद अली
गुलाम अब्बास
अली हुसैन
(कृपया अगला पृष्ठ देखें)
अली हसन
युसुफ अली
मुहम्मद अली
तफज्जुल हुसैन
अफजल हुसैन
उम्मीद अली
हुसैन अली
असगर हुसैन
हैदर अली
इनायत हुसैन
मासूम अली
मसहुक अली
मुस्ताक अली
खुरशेद हसन
अली नशीर
फतेह हसन
गुलाम मुरतजा
सैय्यद अली
यकूब अली
गुलाम हुसैन
फरजंद हुसैन

चितरौरी

अली हुसैन
नियाज हुसैन
ज़मीर अली
फैयाज हुसैन
इम्तियाज हुसैन
जफ़रायब हुसैन
मुस्तजब हुसैन
शादिम हुसैन
अली मुहम्मद
मेहदी हसन
बसहज हसन
ताज मुहम्मद
शरीफ मुहम्मद
अयाज हुसैन
सज्जद हसन

तजउद्दीन
मुहम्मद जमन खान
मुकर्रम अली खान
इमाम अली
कलान्दर अली
यार अली
फतेह हुसेन
इमाम अली
शराफत अली
करामत अली
मियान गहेस
खैर अली
शरफराज अली
जिमायत अली
गुलाम अब्बास
मुमताज हुसेन
अली जिलाय
आजम अली
मुहम्मद अली
विलायत हुसेन
तजउद्दीन
अबुल हसन

चितरौरी

मुहम्मद फैज़ल
कासिम अली
नवाब शहमत खान
ताज मुहम्मद खान
गुलाम रज़ा खान
काबुल मुहम्मद खान
गुलाम नसीर खान
नसर हसन
मुहम्मद हुसैन
अबीद हुसैन
मजहर हुसैन
इरशाद हुसैन
आगा हुसैन
इब्राहीम हुसैन
मुहम्मद रज़ा
अहमद राजा
तजमुल्ल हुसैन
रियाजउल हुसैन
बंदे हुसैन
नजमुउद्दीन हसन
गुलाम हुसैन
औलाद हुसैन
गुलाम सिबतान
शहबीर हुसैन
सिराजउल हुसैन

चितरौरी
तजउद्दीन
जाफर (बदाऊँ)
हिसामउद्दीन
उमर (ककरौली)
राजू (मृत्यु 1594)
दाउद
सैय्यद खान
अबू तलीब
जमालउद्दीन - I
जलालउद्दीन - II
वाली मुहम्मद खान
गुलाम हुसैन खान
मदद अली
फजल हुसैन
मुहम्मद हुसैन
अल्ताफ हुसैन
फतेह हुसैन
गुलाम हुसैन
फैजल हसन
इब्राहीम हसन
इस्माइल हसन
शब्बीर हसन
शरीफ हसन
मुहम्मद हसन
कासिम हसन
सिराजउल हसन
अली अब्बास
रियाज हसन
शमशुद्दीन हसन
शफीक हसन
रफीक हसन
आबिद हुसैन
अमीर हुसैन
शर्फउद्दीन हसन
नजमउद्दीन
मजहर हसन
इबन हसन
अली अहमद
सागीर हसन
अली अब्बास
हदी हसन
मुरतजा हुसैन
हुसैन अली
वजीर हसन
सैय्यद हसन

जगनेरी शाखा

नजमुददीन हुसैन
जुहरा
दाउद
सत्रहवीं वंशज
इमाम बख्श
तज्जमुल हुसैन
मुहम्मद हुसैन
रिजवान हुसैन
कमरुददीन हुसैन
बहाबउददीन
जमालउददीन
फखरउददीन
कुदूस
दाउद
कासिम
फतेह हुसैन खान
यहया
फतेह अली
रावी
अकबर अली
कबीर अली
नूर अली
दखिनी
अली असगर
अली अकबर
अजमेरी
फुला
जहागरू
गुलाम अली
गुलाम नबी
जाकिर अली
असगर अली
मुराद अली
जोखू
मरदान अली
राहत अली
कुरबू
औलाद अली
नजाबत अली
सादिक अली
मुहम्मद हुसैन
कासिम अली
फतेह हुसैन
मुहम्मद हसन खान
गुलाम हुसैन खान
कासिम अली
महदी हसन आफ बिदोली
असगर हुसैन
अब्बास हुसैन

कुण्डली वाला

अबुल फजल (मकेरा)
अबुल फतह
मुहम्मद इवाज
मुहम्मद नूर
अफसरउद्दीन
अस्द अली
खुरशीद
जैनउलअबद्दीन
मीर सैय्यद
इस्माइल
माजन
अलहू
मुनव्वर
महमूद खान
मृत्यु 1574
अहमद मृत्यु 1574
और चार भाई
मुनीरउद्दीन
फजल हुसेन
अमीर हुसेन
हाशिम
मृत्यु 1582
आलम
कासिम
मृत्यु 1598
सलीम
(मेरठ)
सुजात
(बिजनौर)
हिजबार खान
मृत्यु 1638
इनायत अली
गुलाम मुहम्मद
हिदायत अली
विलायत मुहम्मद
नजाबत अली
मुहम्मद अली
अकबर अली
हाशिमपुर
इमदाद हुसेन
बिसहरात अली
बासरत हुसेन

जगनैरी शाखा

सैय्यद नजमुउददीन हुसैन
सैय्यद कमरूउददीन हुसैन
सैय्यद बहाबउददीन
सैय्यद जमालउददीन
सैय्यद फकरूउददीन
सैय्यद कुद्दूस
सैय्यद दाउद
सैय्यद कासिम
सैय्यद फतेह खान
सैय्यद यहया
सैय्यद फतेह अली
सैय्यद रबी
सैय्यद कबीर अली
सैय्यद नूर अली
सैय्यद तहावुरा अली
सैय्यद दखिनी
से• अली असगर
से• अजमेरी
सैय्यद फूला
सैय्यद बागरू
से• अली अकबर
से• गुलाम अली
सैय्यद मुरादअली
से• गुलाम नबी
सैय्यद जोखू
से• राहत अली
सैय्यद सुक्खू
से• जाकिर अली
सैय्यद मरदान अली
से• अली
सैय्यद वाजीर अली
से• नजाबत अली
सैय्यद सादिक अली
सैय्यद काज़िम अली
सैय्यद मुहम्मद हुसैन
फतेह हुसैन
सैय्यद अलताफ हुसैन
जाहिर हुसैन
सैय्यद फतेह अली
सैय्यद मेहदी हुसैन (बदोली)

चितरौरी शाखा

(कृपया अगला पृ॰ देखें)

सैय्यद अल्ताफ हुसैन
जीवन अली
सैय्यद हैदर खान (पुत्र सैय्यद सलार)
सैय्यद अकदास अली खान
सैय्यद दिलेर खान
सैय्यद रोशन अली खान
सैय्यद मसूद
सैय्यद कासिम शहमत खान
सैय्यद तेज मुहम्मद
से. तहावर अली
से. तजउद्दीन अली
सैय्यद फैजल
दिलावर अली
सैय्यद फजलउद्दीन खान
से. गाजीउद्दीन अली
से. गुलाम मुस्तफा
सैय्यद मदन अली
से. शरीउद्दीन अली
से. सिराज उद्दीन अली
जमापत अली
रुस्तम अली
×
सैय्यद अली हुसैन
सैय्यद अली हुसैन
सैय्यद युसुफ अली
सैय्यद मुहम्मद अली
से. तफज्जुल हुसैन
सैय्यद अफजल हुसैन
सैय्यद नियाज़ हुसैन
सैय्यद फैयास हुसैन
सैय्यद जामिन अली
सैय्यद मैंहदी हुसैन
सैय्यद रवाहिम हुसैन

तिहानपुरी शाखा

सैय्यद दाउद
सैय्यद अमीर कसीदउद्दीन
सैय्यद सलाल जरीन
दीवान सैय्यद अली
सैय्यद अबुल कासिम
सैय्यद मोहसिन
सैय्यद मीर मुसा
दीवान सैयान मीर
सैय्यद उमर
सैय्यद चमन
सैय्यन हसन
सैय्यद अहमद
सैय्यद शफी
सैय्यद गद्दन
सैय्यद यसीन
सैय्यद जलाल
सैय्यद शम्स
सैय्यद असगर अली
सैय्यद असद अली
सैय्यद जलालउद्दीन
सैय्यद घसीटा
सैय्यद मिहर बान अली

तिहानपुरी शाखा

सैय्यद हसन
सैय्यद मान
से॰खान
से॰युसुफ
सैय्यद सुल्तान
से॰नासिरउद्दीन
कृपया अगला पृ॰ देखें
सैय्यद कुता
सैय्यद अबु
सैय्यद हुसेन
सैय्यद फिरोज
सैय्यद हसन
से॰फिद्राज अली खान और चार भाई
से॰गुलाम मुर्तजा और दो भाई
से॰अब्बास अली दो भाई
से॰हयात अली तीन भाई
से॰ इमदाद अली दो भाई
से॰करम हुसेन व तीन भाई
सैय्यद पहर खान
से॰हैयात अली खान
से॰गुलाम अली व 2 भाई
से॰गुलाम हैदर
से॰सुमान अली
से॰ हैयत अली
से॰ इमदाद हुसेन
से॰ मुहम्मद हुसेन
से॰दौलत अली खान
से॰अब्दुल वहाब तथा 4 भाई
से॰ छज्जू 2 भाई
से॰चिराग अली
से॰ रोशन अली
से॰ नूर अली
से॰ उमर अली
से॰ मुनव्वर अली
से॰ आसिफ अली
से॰जामिन अली व दो भाई
से॰अब्दुल्ला खान
से॰ चाँद खान
से॰शुजात अली खान व दो भाई
से॰आयजीद खान
से॰ हिंयाती व सात भाई
से॰ गालिब अली व दो भाई

सैय्यद नासिरउद्दीन
सैय्यद अहमद
सैय्यद युसूफ खान
नवाब खान जहान खान उर्फ अबुल मुजफ्फर खान
सैय्यद अबुल मंसूर खान
सैय्यद लश्कर खान
सैय्यद शेर जमन खाँ या मुजफ्फर खान
सैय्यद अजमेरी
सैय्यद गुलाम मुहम्मद
सैय्यद मासम
से० नसरउल्ला
से० शाहा
से० अब्दुल समद
से० वाजिउद्दीन
से० राहत अली
मोहसिन अली व दो भाई
से० लजमान खान
से० गुलाम हसन खान व तीन भाई
से० वजीर
से० अशरफ अली
से० जफरायब अली
से० कलन्दर अली व तीन भाई
याराब अली
से० अमन अली
फिरोज अली व भाई
बख्शीश अली खान व दो भाई
से० जाफर हसन
अहमद हुसैन व तीन भाई
से० निसार अली व तीन भाई
अहसन अली खान
इमदाद हुसैन
सैय्यद शुजात अली
सैय्यद विजायत अली
सैय्यद अबुल अली
सैय्यद गैयासउद्दीन हैदर
सैय्यद अबुल मुजफ्फर

सैय्यद अहमद
सैय्यद मसूद
सैय्यद दीवान मनी
दीवान यार मुहम्मद खान
दीवान मुहम्मद शकीर
दीवान गुलाम हुसैन
सैय्यद शेर अली व तीन भाई
सैय्यद सादिक अली
सैय्यद अनवर अली
सैय्यद अली हसन
सैय्यद मुहम्मद हसन
सैय्यद फतेह अली
सैय्यद अमजद अली
सैय्यद तातर खान
सैय्यद महबूब अली
सैय्यद हिंगू
सैय्यद विलायत अली
अकबर अली एक भाई
सैय्यद गुलाम अब्बास
सैय्यद फरजंद अली
सैय्यद याकूब अली
सैय्यद युसुफ अली
सैय्यद गुलाम अली

सैय्यद उमर शहीद
शेख मुहम्मद
सैय्यद उल मेहदी
सैय्यद नासिरउद्दीन
सैय्यद मोहसिन
सैय्यद खान मीर
सैय्यद नाजिब
सैय्यन रतन
सैय्यद गुलाम हुसैन
सैय्यद जलाल
नुसरत अली
सैय्यद शेरअली
सैय्यद पीर अली
सैय्यद करमत हुसैन
सैय्यद फरजंद हुसैन
सैय्यद शेख मुहम्मद
सैय्यद उद मेहदी
नवाब अब्दुल्ला खाँ
नवाब गुलाम मुहम्मद खान
सैय्यद हुसैन अली खान
सैय्यद हसन अली खान
सैय्यद कमरुउद्दीन अली खाँ
{शेष अगले पृष्ठ पर}
सैय्यद नजउद्दीन
सै. रुकनुद्दीन
सैय्यद नुरुउद्दीन
से. दरवेश अली
से. नजाबत अली
से. कासिम अली
{शेष अगले पृष्ठ पर}
सैय्यद इमाम उद्दीन
सैय्यद जफरयाब
सैय्यद मेहदी हसन
सैय्यद अकबर अली खान
दो भाई
सैय्यद शरफउद्दीन
सैय्यद मुहम्मद हुसैन

सैय्यद कमरूउद्दीन (पिछले पृष्ट का शेष)
अली खाँ
सैय्यद कासिम
(पिछले पृष्ट का शेष)
सैय्यद मुकर्रम अली
से• वजीर अली
से• सनउल्ला
से• रुस्तम
से• जुल्फिकार
अहमद बख्श
से• महमूद बख्श
से• जामिन अली
से• फरजंद अली
से• इम्तियाज अली
से• इरशाद अली
से• विजारत हुसैन
से• बशारत अली
सैय्यद हुसैन अली खान
सैय्यद अफताब अली खान
से• अहमद अली खान
से• असार अली
से• खुरशीद अली
इमामुद्दीन (पुत्र हसन अली उपरोक्त)
सैय्यद मियान मुंगा
सैय्यद दिलावर अली खान
सैय्यद निसार अली
सैय्यद मुहम्मद अली खान
से• वाजिद अली
से• अमजद अली
से• मुशर्रफ अली
से• असरफ अली
से• मिहरालन अली
से• नजाफ अली
से• अकबर अली
से• गुलाम अली
सैय्यद फिदा हुसैन
व तीन भाई
सैय्यद गुलाम हुसैन
सैय्यद हैदर हसन

सैय्यद सैफुद्दीन अली खाँ

सैय्यद आफताब अली खाँ {खानदान रंगमहल}
सैय्यद असगार अली खाँ
सैय्यद खुर्शीद अली खाँ
सैअहम अली खाँ

सैय्यद असगार अली खाँ
सैय्यद महमूद अली खाँ
सैय्यद जाफर अली खाँ
सैय्यद मकसूद अली खाँ
सैय्यद बाकर अली खाँ
बदखतर {पुत्री}

सैय्यद फतेह अली खाँ

- सैय्यद जुल्फिकार अली खाँ
  - सैय्यद कोसर अली खाँ
  - सैय्यद अफसर अली खाँ
  - सैय्यद सरवर अली खाँ
  - सैय्यद मुनव्वर अली खाँ
  - दख्तर पुत्री
  - दख्तर पुत्री
- सैय्यद अजमत अली खाँ
  - सैय्यद राहत अली खाँ
  - दख्तर (पुत्री)
- सैय्यद अरशद अली खाँ
  - सैय्यद आफताब अली खाँ
    - दानिश अली खाँ
  - सैय्यद असद अली खाँ
    - दख्तर (पुत्री
    - दख्तर (पुत्री)
- दख्तर (पुत्री)

सैय्यद जाफर अली खाँ
सैय्यद मुबारक अली खाँ
सैय्यद रुस्तम अली खाँ
दख्तर पुत्री
दख्तर (पुत्री)

सैय्यद मुबारक अली खाँ
सैय्यद नादिर अली खाँ
दख्तर पुत्री

सैय्यद मकसूद अली खाँ
दख्तर
दख्तर
दख्तर
दख्तर
दख्तर
सैय्यद इरशाद अली खाँ
सैय्यद रामशाद अली खाँ
दख्तर (पुत्री)
लावल्द
सैय्यद सुहेल अली खाँ
दख्तर (पुत्री)
दख्तर (पुत्री)
दख्तर (पुत्री)

सैय्यद बाकर अली खाँ
दख्तर (पुत्री)
सैय्यद निसार अली खाँ
लावल्द

सैय्यद खुर्शीद अली खाँ {खानदान रंगमहल}

|

सैय्यद मुजफ्फर अली खाँ "कौसर"

|

सैय्यद सरफराज अली खाँ

|

- सैय्यद ज़ैगम अली खाँ
- दख्तर
- दख्तर
- दख्तर
- सैय्यद अलमदार अली खाँ
- सै॰ जफर अली खाँ लावल्द
- सैय्यद अजहर अली खाँ
- सैय्यद अब्बास अली खाँ
- दख्तर (पुत्री)
- दख्तर (पुत्री)
- दख्तर (पुत्री)

सैय्यद जैगम अली खाँ
सैय्यद सुलेमान अली खाँ
सैय्यद आसिफ अली खाँ
सैय्यद अहसान अली खाँ
दख्तर (पुत्री)
दख्तर (पुत्री)
दख्तर (पुत्री)

सैय्यद अलमदार अली खाँ
दख्तर (पुत्री)
सैय्यद हिलाल अली खाँ
सैय्यद मुराद अली खाँ

सैय्यद अजहर अली खाँ
दख्तर (पुत्री)
दख्तर (पुत्री)

सैय्यद अहमद अली खाँ
सैय्यद हाशिम अली खाँ
सैय्यद करबलाई हुसेन
दख्तर पुत्री
दख्तर पुत्री
दख्तर पुत्री
दख्तर पुत्री
दख्तर पुत्री

सैय्यद हुसेन अली खाँ
सैय्यद मेहदी अली खाँ
सैय्यद हामिद अली खाँ
सैय्यद अब्दुला खाँ
दख्तर पुत्री
दख्तर पुत्री

सैय्यद हशमत अली खाँ

- सैय्यद सफदर अली खाँ
  - सैय्यद मुरतजा अली खाँ
    - सैय्यद मुजतबा अली खाँ
    - सैय्यद इरतजा अली खाँ
    - सैय्यद गजसफर अली खाँ
    - दख्तर पुत्री
- सैय्यद जव्वार अली खाँ
  - सैय्यद सादिक अली खाँ
  - दख्तर
  - दख्तर
  - दख्तर
  - दख्तर
  - दख्तर पुत्री
- सैय्यद सज्जाद अली खाँ
- से० शाहिद अली खाँ
- सैय्यद जाहिद अली खाँ
- दख्तर पुत्री

सैय्यद सज्जाद अली खाँ
सैय्यद रियाज
अली खाँ
दख्तर
पुत्री

सैय्यद शाहिद अली खाँ
सैय्यद आफताब
अली खाँ
सैय्यद जाफर
अली खा
दख्तर
पुत्री
दख्तर
पुत्री
दख्तर
पुत्री
दख्तर
पुत्री

सैय्यद जाहिद अली खाँ ﴾खानदान मोतीमहल﴿
दख्तर
पुत्री
दख्तर
पुत्री
दख्तर
पुत्री
दख्तर
पुत्री
सैय्यद मेहदी
अली खाँ

सैय्यद शैकत अली खाँ के ‖पुत्र‖
सैय्यद शफकत अली खाँ
सैय्यद नुसरत अली खाँ
सैय्यद राहत अली खाँ
दख्तर पुत्री
सैय्यद नदीम
दख्तर पुत्री
दख्तर पुत्री

सैय्यद शफकत अली खाँ
सैय्यद इशरत अली खाँ
दख्तर पुत्री
दख्तर पुत्री

सैय्यद नुसरत अली खाँ ‖खानदान मोतीमहल‖
सैय्यद आरिफ
दख्तर ‖पुत्री‖

सैय्यद युसुफ अली खाँ इबने (पुत्र) सैय्यद मेहदी
सैय्यद अमीर अली खाँ
सैय्यद शब्बीर अली खाँ
सैय्यद वजीर अली खाँ
सैय्यद शब्बर अली खाँ
सैय्यद रफत अली खाँ
सैय्यद शुजामत अली खाँ

सैय्यद अमीर अली खाँ
सैय्यद अकबर अली खाँ
सैय्यद अथर अली खाँ
सैय्यद सबीह अली खाँ

सैय्यद शब्बीर अली खाँ
सैय्यद हैदर अली खाँ
सैय्यद अमजद अली खाँ
दख्तर पुत्री
दख्तर पुत्री
दख्तर पुत्री
दख्तर पुत्री

सैय्यद वजीर अली खाँ
सैय्यद सरवत अली खाँ
सैय्यद मुलरुत अली खाँ
दख्तर (पुत्री)
दख्तर (पुत्री)

2(ब)
सैय्यद हामिद अली खाँ
सैय्यद मुहम्मद अली खाँ
सैय्यद नासिर अली खाँ
सैय्यद काजिम अली खा
दख्तर पुत्री
दख्तर पुत्री

सैय्यद मुहम्मद अली खाँ
सैय्यद मुसतुफा अली खाँ
दख्तर पुत्री
दख्तर पुत्री
दख्तर पुत्री
सैय्यद मुरतजा अली खाँ
सैय्यद इरतजा अली खाँ
सैय्यद हामिद अली खाँ

सैय्यद नासिर अली खाँ
दख्तर
पुत्री
दख्तर
पुत्री
दख्तर
पुत्री

सैय्यद काजिम अली खाँ
सैय्यद रजा
अली खाँ
सैय्यद हुसैन
अली खाँ
दख्तर
पुत्री
दख्तर
पुत्री
दख्तर
पुत्री

2 (ज)
सैय्यद अब्दुला खाँ (खानदान मोतीमहल)
सैय्यद हसन अली खाँ
सैय्यद मुमताज अली खाँ
सैय्यद एजाज अली खाँ
दख्तर पुत्री

सैय्यद हसन अली खाँ
सैय्यद मोहसिना अली खाँ
दख्तर पुत्री

सैय्यद मुमताज अली खाँ
सैय्यद मुरातक अली खाँ
दख्तर पुत्री
दख्तर पुत्री
दख्तर पुत्री

सैय्यद मुश्ताफ अली खाँ
सैय्यद मेहदी अली खा
सैय्यद अहमद अली खाँ
सैय्यद अमजद अली खा
दख्तर पुत्री
दख्तर पुत्री

MUZAFFARNAGAR
10
5
0
10 MILES
SCALE-1" = 5 MILES
SAHARANPUR
KARNAL
MEERUT
BIDAULI
JALALABAD
BEHERI
CHARTHAWAL
SHAMLI
KAIRANA
MUZAFFARNAGAR
JAULI
KEWAL
DHARSI
SAMBALHERA
MAJHERA
JANSETH
KHATAULI
BHUMA
JAULA

कुत्बुल्मुल्क सैय्यद हसन अली खाँ
अब्दुल्ला खाँ के नाम से प्रसिद्ध

अमीरुल उमरा सैय्यद हसन अली खाँ
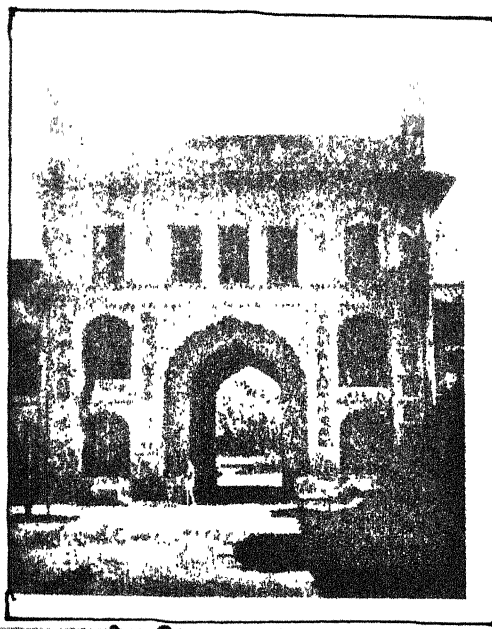
जनसठ में स्थित रंग महल का मुख्य द्वार, जिसका निर्माण सैय्यद जुल्फिकार अली खाँ द्वारा किया गया था
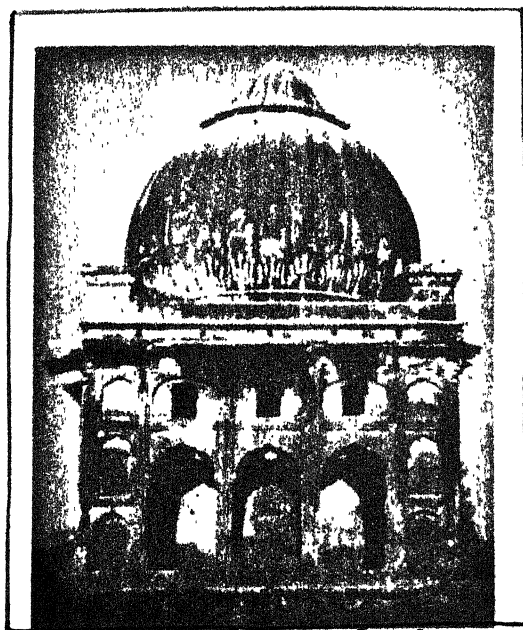
जनसठ में स्थित सैय्यद सैफुद्दीन अली खाँ का मकबरा

MISCELLANEOUS VOL. II

1713 A.D. 5th Zihijja - Saneh 2.

12th December, 1713.

P.143 : The letter that had been written to Bakhshiu Mumalik Amirul - Umara.

Your kind letter reached, mentioning you informing the Emperor about the wandering of the Maratha in the Subah of Malwa and the issue of the royal 'hasbulhukam' with the subject that I reach the Subah hostily and be vigilent for the management and send an arzdasht to him (the Emperor) after reaching there.

P.144 :

It is felicity to obey the royal orders. I intend to start for that service and have a strong hope that I will reach the Subah in all haste and be busy with the administration and thus carry out the requisites of faithfulness. After reaching the Subah, I will send an arzdasht to you.

..

31St December, 1713 24th Zilhijja - Saneh 2.

P.151 : Hasbul hukm Babhshial Mumalik to the Maharaja.

Hasbul Hukm under the seal of Bakhshial Mumalik Amirul Umara dated the 24th Zilhijja Saneh 2 that reached to the manzil of Jhabara (suggestion Gijal Khera) the 28th Safar Saneh (4th March, 1714). May the royal favours be always with you. In the mean time news has reached that you have reached upto Bundi and the Marathas are wandering in the Subah of Malwa. The Emperor has ordered that you should reach your talluge hastily and not to stay in the way. A Mace bearer has been appointed and you should reach your talluga in all haste. In this matter there is much stress from the side of the Emperor.

**

1715 A.D.

11274

25th Muharamy N.3

Letter of Nawab Qutbul Mulk to Mirza Raja Jai Singh.

...

Bhils Block Nandu Road

23rd Jan., 1715

28th Muharram Saneh 3.

P.11 :

Gopal Singh gets possession of Ranpura Badan Singh. His son has fled away. Ranpura was desolated by the tyranny of the Afghans. The Afghans in unision with Hoshdas Khan wished to devastate some Villages of Mewat but Maharaja was ordered to forbid them from doing so.

**

6th February, 1715 — 14th Safal Saneh 3.

<u>P.19</u> : Hasbul Hukm under the seal of Qutbul Mulk to Mirza Raja Jai Singh.

...

Marathas wandering near Hoshangabad after crossing the river, orders were issued to Jai Singh to punish them as well as Dilair Alhabad and other Afghans.

**

20th March 1715 — 25th Rabiul Akhir Saneh - 4.

<u>P.27</u> : Hasbul Hukm Abdullah Khan to Jai Singh.

...

It has been brought to the notice of the Emperor from the writings of the Harkars of Sirauj and Alamgirpur that a party of Ghanis after plundering Inayatpur, where Dilair's relatives are living, is wandering near Pargana Salwani Balwali in Garha District. They plundered the royal territory and the Ghanis have also plundered Tappa Nersing and Tappa Bhawas and harassed the people. Jai Singh to punish.

**

1715 A.D. 5th Zilhijja Saneh 2 - 12 Dec. 1713.

P.135 : Letter to the Maharaja Sahib to Bakshiulmulk Amirul - Umara - Marathas in Malwa; Jai Singh starts for Malwa.

...

15th April 1716 11th Rabiussani Saneh 5. 1128 H.

P.183 : Hasbul Hukm Abdullah Khan to Maharaja Sahib.

...

The Maratha crossed the Donkalia ford and came near the village Karnawad. Pargana Diju and 22 Kos from Ujjain.

500 horses from those villains had come to the town of Dewas with bad intention but on account of watchfulness and care of Bindraban amil of the Jagu of deceased. Nasrat Khan the villains returned from that place and plundered some villages of the above mentioned pargana. The amil wrote to Nait Nasim and the 'mutsaddis' of the Subah for help but it did not reach him. The villains went at the distance of 4 or 5 Kos from Ujjain and took the property and cattle of the people.

1716 A.D.

P.184 : Dost Muhamad plundering Nandsan and Jai Singh is ordered to send his own force to his Nail and to come to the Emperor.

**

P.191 : Hasbul Hukm Qutbul Mulk to Maharaja Sahib.

...

It has been brought to the notice of the Emperor that the Deccani villains are wandering in the pargana of Dewas which is 10 Kos distant from Ujjain. They have burnt three villages and devastated and plundered the village Sahana in the above mentioned pargana. It is why the subjects have flocked to the City from all sides and no one is engaged in their punishment.

...

P.192 :

Jai Singh was ordered to send a strong force to his Naib under his own man so that they two together might punish them in such a way that the Villains might not stay in that district.

...

March-April, 1716 Rabiussani Saneh 5.

P.175 : Hasbul Hukm with the seal of Qutbul Mulk.

...

From the happennings of the Sarkar Nandu, Subah Malwa the Emperror was informed that Dost Muhammad Rohilla with an immense force was roving near Mandsana and after killing Keshri Singh, Zamindar of Ratlam and appointing his brother Pratap Singh in his place, and getting possession of Ratlam artillary and in collusion with Pratap Singh was collecting lacs of rupees from the royal mahals. He was plundering and desolating the subjects of that district. Iltart Khan of that place could not repel him on account of inadequate force and without the help, the Maharaja, but he was busy in the defence of Mandsana town etc. and preparing himself for a battle. The Afghans rebelled against the Raja went to Chande, and Badau Singh was also roving there and oppressing the people.

P.176

**

25th April 1716

14th Jamadiulawwal
Saneh 5

Farrukhi

P.178 :

The Emperor ordered Jai Singh to urge his Deputy in the Subah to show anxious exertion in killing and arresting those villains. The Maharaja was also ordered to work in union with the Naib. The Emperor hoped that the Maharaja would excessively try and endeavour more them before.

...

19th April 1716

8th Jamadiulawwal
Saneh 5 - Farrukhi.

P.193 : Hasbul Hukm Abdullah Khan Qutbul Mulk to Sawai Jai Singhji.

...

P.193 :

A force of three thousand horses, all veterans, is required to be sent by forced marches with the mace bearer to the Naib of the Maharaja, in the Subah of Malwa so that the Deccani villains who are scattered in the Subah and are oppressing the people may be punished and driven out of Malwa.

P.194

...

P.194 : Hasbul Hukm of 1128 H Abdullah Khan to Mirza Raja Sawai Jai Singh to send a force of 3000 vetern Soldiers under one of his officers to his Naib in Malwa in order to drive the Marathas who are giving trouble to the people out of Malwa.

N.B. It appears to be a copy of the Akhabar of 19th April 1716.

**

25th April 1716

14th Janadiulawwal

Saneh 5 - Farrukhi.

P.197 : Hasbul Hukm Abdullah Khan to the Maharaja Sahib.

...

The Divan of the Subah sent his deputies for the collection of the dues from the Pargana of Chanderi etc. They delayed the collection on account of the news of the coming of the Deccani villains and the subject also hesitate to pay it off. The Divan of the Subah wrote to you and to the faujdars of the neighbourhood for the punishment of the Marathas. You should punish them in such a way that no trace of them may be left.

P.198

**

1715 A.D.
29th April 1715

6th Janadiulawwal
Saneh 4 - Farrukhi.

Letters to Qutbul Mulk to Maharaja Sahib.

...

P.67 :

Marathas numbering about 10,000 horses cross at Barwa and reach Tilwara (3 Kos off).

Their men demand chauth for 3 years and have come to Kampil, the jagir of Nasrat Khan. For this reason, the Amil of the aforesaid pargana reached Ujjain and Nandlal Chaudhri and other inhabitants of that place, sent their families to the mountains and are ready to run away, they have sent replies to the Marathas, demands that the chauth would be sent to them and they should not ruin the villages of the talluqa. They have also sent 2 horses, and some cash money. Another army is wandering near pargana Dharampuri, Chauli Mahesar Sarkar Nandu after crossing the Akbarpur ford. They tyranny and audacity and your letting them unpunished does not behave you. They should, therefore, be chastised so that they might not dare d cross the river and to oppress your people (the people of your Tallugue).

**

29th April 1715 — 6th Janadiul Awwal Saneh 4 - Farrukhi.

P.71 : Hasbul Hukm Abdullah Khan to Mirza Raja Jai Singh.

....

It is brought to the notice of the Emperor that 10,000 Maratha horses crossed the Barwah ford and came near the village of Tilwara 3 Kos on this side of Burwah and their men demand 3 years Chauth from the Pargana of Kanpil, the Jagir of Nasrat Khan. On account of this reason, the amil of the Pargana went to Ujjain and Nand Lal Chaudhari and other inhabitant of that place sent their familira to the mountains and are ready to run away. They have sent the reply of the Maratha message that they would pay off the Chauth and the Marathas should not devastate the village of the Tallugua. They have also sent two horses and some cash.

Another force of the villains crossed the Akbarpur Ford, came near Dharampuri Chali and Mahesar, Sarkar Nandu.

....

P.73 : Orders issued to Jai Singh to punish the villains.

30th April 1715

17th Janadiul Awwal
Saneh 4 - 11274.

P.75 : Hasbul Hukm from Abdullah Khan to the Maharaja Sahib.

P.76 :

Kanta son of Narsu in collusion with Ganga Pandit was wandering on that side of the Narbada in the tallugе of Mohan Singh Zamindar of Awas and collecting Chauth. Their forces reached the villages of Dharampuri in the tallugue of the above mentioned Subah, Saw the above mentioned Subah ford, and went away. Maihmat Khan faujdar who had encamped on the river went away. Marhmat Khan Faujdar who had encamped, on the river went to the fort of Adhag? On hearing the news, the subjects of Dhar of some villages also have the residence under the walls of the fort.

Orders were issued to Jai Singh to punish Kanta and Ganga villains in such a way that no effect of their may remain in the past.

....

1715 A.D.

11277

15th Jamadulawwal
Saneh - 4.

P. 77 : Hasbul Hukm Abdullah Khan to the Maharaja Sahib.

...

About 10,000 Marathas horses besides one thousand of the former, time are wandering near the village of Tilwara, after crossing the river at Barwah. Their men came to Kampal pargana for demanding 3 years Chauth. The inhabitants of that place sent their relatives to the mountain and sent a message to the Marathas that they should not devastate the village as they were sending them the Chauth. Accordingly two horses and some cash money were sent to the Marathas. Another force of the villains are crossing the river at Akbarpur ford and wandering near Dharmpuri etc. Sarkar Nandu. They took 500 rupees as Chauth from the village Khogalum (Khargom) of the above mentioned pargana, made the inhabitants prisoner and plundered their property.

Chatra Singh Saktavat (Saukhawat) disgraced the Kasi of Khiaiabad, for prayers and levelled the roof of the Mosque to the ground. The Maharajas men added the land near the mosque to their own haveli and erected a wall which destroyed the beauty of the Mosque.

Orders were issued to Jai Singh for the chastisement of the Marathas and for writing the fact of the erection of the wall and to send Chatra Singh with the mace bearer.

**

1715 A.D.

P.145 : Hasbul Hukm Abdullah Khan to Mirza Raja Jai Singh.

...

Marahamat Khan beseiging Durgan Sals fort, Jai Singh to send reinforcement.

16th May 1715 | 23rd Jamadiul Awwal Saneh 4 Farrukhi.

P.89 : Hasbul Hukm Abdullah Khan to Mirza Raja Jai Singh.

...

Kanha and Dabharuju (Dhabhade) or Gang etc. with about 30,000 horses reached Akbarpur ford. Three thousand or four thousand of them crossed the ford and came near Dipalpur 12 Kos from Ujjain and their patrol in wandering at the distance of 4 Kos from Ujjain, burning some villages. The Thanedars, Amils and the subjects of the neighbourhood are coming to the City with their families and the people of the village fled away. The men of Satar Sal are troubling the inhabitants of Uddaipur and Shahzadpur on the charge of keeping the Afghan. Jai Singh to punish the Marathas and keep off the men of Raja Satarsal from oppression of the people.

P.90

....

1715 A.D.

6th June 1715

14th Jamadi Ussani
Saneh - 4.

P.103 : Letters to Maharaja Sahib.

The victory over the Deccanees written in the Waggaya with suitable words on the 24th Jamadiulawwal Saneh 4 (17 May).

P.104

Qutbul Mulk ordered to report to the Emperor about your anxious consideration (exertions).

....

P.131 : Hasbul Hukm Bakhshiul Mulk to Maharaja Sahib Amirulumara 1st Bakshi Sayyad.

Hasbul Hukm of the Emperor under the seal of Nawab Bakhshiul Mulk Amirul - Umara Bahadur Firoz Jung 10th Zigad Saneh 2 with Muhammad Beg and Haider Beg mace - bearers reached at Dayaj. May the favours of the Emperor be always with you (Dayaj as Dayach) not Nimach ?

P.131 :

In the meantime, it has been brought to the notice of the Emperor that the Maratha Villains are wandering in Malwa. The Emperor has ordered that you should start for Malwa without delay for the management of the place and also for the chastisement of the villains. Muhammad Beg etc. mace bearers have been appointed and it is proper that you should reach your Subah hastily and be busy with the management of the affairs of the Subah. You should act according to the royal orders.

...

1716 A.D.
16th Aprail 1716

25th Jamadiulawwal
Saneh - 5.

P.187 : Hasbul Hukm of Abdullah Khan to the Maharaja.

...

In the meantime news reached the Emperor that Dost Muhammad Khan Rohilla killed Keshri Singh, the Zamindar of Ratlam on account of his enmity with his brother Pratap Singh. He demanded Six lacs of rupees as had been promised and Pratap Singh could not pay off the money. For that reason the Afghan intended to plunder and devastate the pargana near Ratlam, the mahals of the Khalsa and to give them to the Soldiers. The subjects of the district were running away, the Afghan getting most of the mahals of Jagirdars on contracts and taking possession of the Zamindars were desolating the people and not paying off a single atom by way of rent.

P.188

P.188

The Emperor issued order to the Maharaja to see that Afghan did not oppress the people, that the farming system might not come in force at all and that no body be guilty of taking contract.

...

P.227 : Hasbul Hukm Qutbul Mulk to Maharaja Sahib.

...

Your Naib gets the news of the gathering together of 40,000 Maratha horse bet, Berar and Khandesh and their intention to plunder the city after the Dashara. On hearing this news the above mentioned deputy said that he had one life and that would be sacrificed for the work of the Emperor but the inhabitants' lives and people would be in danger.

P.228 :

You should write to your Naib to collect a suitable force and be watchful at the fords and passages of the Marathas, and not to let them cross the river. Orders have also been issued to Rana Sangram Singh, Zamindar of Udaipur and Raja Satarsal (Bundala) and to Faujdars in neighbourhood of that Subah have also been ordered to help the Naib.

P.227 : Letters of Muhammad Saujid Khan to Mirza Raja Jai Singh.

...

Brij Bhan son of Baburao Jamadar under Balgandaa Khan, Faujdar of Sirang, much energy in fighting with the Marathas. He is in service of the Khan with 1,000 horses. He seeks your favour for engagement in the Jat war having a force of two thousand men with him.

....

19th May 1717

18th Jamadi Akhilyre - 10 June 1715

18th Jamadiulabhil Saneh 6

P.23 : Hasbul Hukm Qutbul Mulk to the Maharaja Sahib

Malwa news received from Rupram.

...

MARATHAS IN MALWA -

It is known from Rupram that the Marathas crossed the Narbada and having arrived in your Subah, they are plundering and pillaging the mahals of the Subah and the inhabitants, due to their fear, have come to the City and you have come out of the City for their chastiment. The Faujdars of the neighbourhood have not come to your help so far.

P.24

The Faujdar have been written in this connection and you too should do all you can to protect the City to give due punishment to the Marathas and to drive them out of your Subah.

Note :- Date is wrong, it must be 8th Jamadursani Saneh 4.

...

10th Sept. 1717 | 14th Shanwal Saneh 6 112917.

P.39 : Hasbul Hukm Abdullah Khan to Maharaja Sahib.

...

It is evident from the Malwa news that the Deccanies plundered 7,000 blankets from Kampil and Dewas and that 1500 Deccani horse, seized two parganas from Fateh Singh, the Zamindar of Kali Bhil, appointed 700 horses in the fort-rears of Salwas by way of athana, imposed rahdari (tax) on the travellers and blocked the passage. You are asked to write to your deputy to punish them and to write the facts in detail.

P.40

4th Oct. 1717 | 9th Ziqad Saneh 112949

P.47 : Hasbul Hukm.

Nand Kishore Aharedar of Samadar in the Sarkar of Handia, Subah Malwa suggests the appointment of a Qiladar at Sarar with equipage and the giving of the charge of guns to him in union with the thanedar.

P.47 :

There was probability of the Marathas occupation of the Saras which had a strong fort from the time of Gihari Afghans and which lay on the border of Gondwana 10 Kos from the Narbada.

Jai Singh to report on this matter.

1718 A.D. 23rd Rabiussani
15th March 1718. Saneh 7.

P.93 : IX The letter of Sayyad Kabir Khan that reached on 23rd Rabiussani Saneh 7.

...

I reached, sent villain on the 17th (9th March) instant after my starting from Ujjain in all haste on the arrival of the victorians army, he was confounded all of a sudden and found no other means to save his life and honour except submission and lamentations through the mediation of Balaji Vishwanath, the Sardar of Raja Shais army. He requested a pardon from him for his guilt and to grant his submission. I did not wish in any way to avoid the duty of punishing him. As Balaji was dis-pleased on account of the non-acceptance of that and it was necessary to have regard with him, his request was accepted.

P.93 :

IX on the 19th (11th March) of this month the above mentioned was brought by him to me and I took the reliable hostage with me that would be brought to Bakhshiul Mumalik for interviews. By the grace of God the land is now clear of any disturbance and tranquillity in the country of the Emperor is in sight. I have a strong hope that no Maratha disturbance will occur in this country after time. Always remain writing the account of your happiness.

....

कुछ आधुनिक सैय्यदों का वर्णन

प्रस्तुतकर्ता ने जानसठ तहसील में भ्रमण कर कुछ आधुनिक सैय्यदों के विषय में जानकारी की जिसको इस अध्याय में दिया जा रहा है, हालांकि निम्न वर्णन का इस शोध से कोई विशेष संबंध नहीं है ।

प्रारम्भ से ही सैय्यद बारहा के वंश ने युद्ध की विशेषताओं में ख्याति प्राप्त की । इस वंश में बहुत से विख्यात शूर वीरों में आजन्म युद्ध में शत्रुओं को मुँहतोड़ उत्तर दिया जिसका कि इतिहास आज भी साक्षी है । इस अथाह वीरता के कारण बारहा सैय्यदों को मुगल सेना में प्रथमिकता दी गई जिसका स्पष्ट उदाहरण इन लोगों का प्रत्येक सेना में सम्मिलित होना है । सादात ने अनेक युद्धों में अपनी वीरता का परिचय देकर मुगल सम्राटों की रक्षा की तथा उनकी ख्याति बढ़ाई ।

भारत वर्ष में मुगल राज्य के पतन के पश्चात् जब अंग्रेजों का अभ्युदय हुआ तथा जब 1803 के आरम्भ में ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने गंगा तथा जमुना के मध्य के क्षेत्र में(दोआब में)अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया तब बारहा के सैय्यदों ने तत्कालीन स्थिति का भलीभाँति अध्ययन किया । सादात ने अत्यन्त चतुराई से काम लेकर (अंग्रेज) आँग्ल अधिकारियों को अपनी सेवायें अर्पित की तथा अपनी स्वार्थहीन सेवाओं से उनको अपनी ओर आकृष्ट कर लिया । इस प्रकार आँग्ल राज्य में भी इनकी प्रतिष्ठा में कोई कमी न हुई और इस वंश ने अपनी महत्वपूर्ण तथा उत्कृष्ट सेवाओं से आँग्ल अधिकारियों को प्रसन्न कर अपनी प्रतिष्ठा को एवं महत्वपूर्ण स्थान को बनाये रखा । तथापि इन्हें युद्ध का बहुत कम अवसर मिला ।

अंग्रेजी राज्य के पतन तथा भारत के विभाजन के पश्चात् बारहा बंश ने बहुत कम प्रसिद्धि प्राप्त की । तथापि कुछ व्यक्तियों ने विभिन्न क्षेत्रों में ख्याति अर्जित की । लेखिका के इस क्षेत्र में यात्रा करने पर जिन लोगों के विषय में जानकारी प्राप्त हुई वह निम्नलिखित है :-

1805 ई0 में सैय्यद जुल्फिकार अली खाँ (जानसठ, जनपद मुजफ्फरनगर) ने अधिकारियों की सेवा कर तहसीलदार का पद प्राप्त किया । उन्होंने कस्बा हाजा में एक सुन्दर मस्जिद तथा बुलन्द दरवाजे का निर्माण कराया । इनके पुत्र सैय्यद अकबर अली खाँ तथा उनके पुत्र सैय्यद खुरशीद अली खाँ भी तह-सीलदार नियुक्त हुए तथा इनको भी अपनी उत्कृष्ट सेवाओं से अत्यन्त लाभ हुआ । इसके अतिरिक्त वह मुजफ्फरनगर जनपद के मौजा मोना सराये रसूलपुर लोहारा वाके के जागीरदार भी नियुक्त हुए ।

सैय्यद जलालउद्दीन हैदर कस्बा मवाना कला, जनपद मेरठ के निवासी तथा कोतवाल थे । आप रानी विक्टोरिया के अंग रक्षक के रूप में नियुक्त हुए, परन्तु कुछ कारण वश जा न सके । इनके सुपुत्र का रुझान साहित्य की ओर था तथा वे महत्व-पूर्ण सरकारी पदों पर नियुक्त रहे ।

सैय्यद इमदाद हुसैन रईस मौजा तुर्की के तहसीलदार थे । इन्होंने भी इस पद पर ख्याति प्राप्त की । सैय्यद कासिम

हुसैन मौधा बल्लीपुरा के तहसीलदार थे ।

खान बहादुर सैय्यद मुहम्मद हादी सराये रसूलपुर के जिलाधिकारी थे । सैय्यद अकबर हुसैन बिलासपुर के पी॰एम॰ जी॰ थे । सैय्यद अमीर हुसैन रयेठी के जिलाधिकारी नियुक्त हुए थे ।

सैय्यद मु॰ हुसैन व सैय्यद अहमद हुसैन ने क्रमशः ककरोल तथा कहलावद्दा के तहसीलदार के पदों से अवकाश प्राप्त किया था ।

देहली निवासी सैय्यद बशीर हुसैन जैदी तत्कालीन रामपुर राज्य के मुख्यमंत्री थे । इसके पश्चात् यह अलीगढ़ विश्वविद्यालय के उप कुलपति नियुक्त हुए । भगवान की कृपा से आप अभी जीवित हैं तथा राजकीय तथा अन्य पदों की शोभा बढ़ा चुके हैं ।

खान बहादुर सैय्यद मुजफ्फर अली खाँ (कस्बा जनसठ) का जन्म 1867 ई0 में हुआ था । इनके पिता सैय्यद खुरशीद अली खाँ उस समय तहसीलदार के पद पर थे । यह एक सुप्रसिद्ध लेखक एवं कवि थे । इनकी राष्ट्रीय एवं धार्मिक क्रियाओं में अत्यन्त रुचि थी । यह "पैसा फन्ड" नामक संस्था के निःशुल्क मन्त्री भी रहे । यह अखिल भारतीय शिया सभा को सफल बनाने में तत्पर रहे । 1921 ई0 में इन्होंने अखिल भारतीय शिया सभा के वार्षिक अधिवेशन की अध्यक्षता की । इनकी रुचि धार्मिक

कार्यों के अतिरिक्त ललित कला में भी थी । इनको फोटो खींचने की कला का भी अच्छा ज्ञान था ।

"इन्होंने "तारीख खानदाने बारहा" की रचना की तथा इसके अतिरिक्त इनकी कविता के छन्द मुहर्रम के अवसर पर अत्यन्त प्रचलित होते थे तथा इनकी रचित पत्रिकायें भी अति प्रसिद्ध थीं ।

इन्होंने खाजा कला में एक अत्यन्त सुन्दर हजरत इमाम हुसेन अलैहिस्सलाम की पवित्र यादगार में भवन का निर्माण कराया तथा वह आज भी जनता के दर्शनार्थ स्थित है । इसकी रचना का दूसरा उदाहरण "रोजाए मुकद्दस करबलाए मुअल्ला" है । यह भवन बेमिसाल है ।

सैय्यद सरफराज़ अली खाँ "शाकिर" सैय्यद मुज़फ्फर अली खाँ के पुत्र थे तथा इनका रुझान प्राकृतिक रूप से शायरी की ओर था । शायरी पढ़ने में यह बेमिसाल थे । 1949 ई॰ में इन्होंने जानसठ में अखिल भारतीय शिया सभा का वार्षिक अधिवेशन करा कर अपने वंश में ख्याति प्राप्त की ।

सैय्यद अब्दुल्ला खाँ रईस का जन्म 1881 ई॰ में जानसठ में हुआ था । इनके पिता को आँग्ल अधिकारियों ने जानसठ विद्रोह में अत्यन्त सराहनीय तथा उत्कृष्ट सेवाओं के लिये बहुत से ग्रामों की जागीर प्रदान की थी । इन्होंने एम॰ए॰ओ॰ कालिज, अलीगढ़ में शिक्षा प्राप्त की । यह जानसठ

के सभापति भी नियुक्त हुए थे तथा हाजा कस्बे में स्थित अंग्रेजी स्कूल के मन्त्री भी थे । इनके ज्येष्ठ भ्राता सैय्यद मेंहदी अली खाँ रईस जानसठ में द्वितीय श्रेणी के मैजिस्ट्रेट रहे । सैय्यद हसन अली खाँ, अब्दुल्ला खाँ के पुत्र थे तथा एम॰एल॰ए॰ रह चुके हैं ।

सैय्यद शौकत अली खाँ सैय्यद मेंहदी अली खाँ के सुपुत्र थे । इन्होंने डिप्टी कलक्टर के पद से अवकाश प्राप्त किया । यह अत्यन्त साहित्य प्रेमी थे तथा दर्शन की ओर भी इनका ध्यान था । सैय्यद मेंहदी अली खाँ के अन्य सुपुत्र आज भी कुछ विशिष्ट पदों पर आसीन हैं ।

सैय्यद कैयूम अली खाँ का ध्यान राजनीति की ओर था । यह हाजा कस्बा के सभापति भी रह चुके हैं । सैय्यद जहीर आलम निवासी मौजा सम्भलहेड़ा का आखेट में कोई जोड़ नहीं है । भगवान की अनुकम्पा से आप आज भी जीवित हैं । आखेट के विषय में इन्होंने एक पुस्तक भी लिखी है । यह लगभग 15 शेरों का शिकार कर चुके हैं ।

ज्ञान अर्जन में बारहा किसी से भी कम न थे । सैय्यद गुलाम अली, आजाद बिलग्रामी, सैय्यद अली बिलग्रामी, सैय्यद हसन बिलग्रामी इमादुलमुल्क , सैय्यद हुसैन बिलग्रामी जैसे विख्यात व्यक्ति सैय्यद ओं के ही हैं । धार्मिक विद्वानों में मौलाना सैय्यद जहूर उल हसन मीरपपुर निवासी विख्यात है । इनके अतिरिक्त मौलवी सैय्यद जुल्फकार हुसैन, मौलाना सैय्यद मुहम्मद साहब देहलवी, मौलवी हकीम सैय्यद मुहम्मद साहब ने भी

ख्याति प्राप्त की । मौलाना सैय्यद मुमताज हुसैन आज भी जीवित हैं तथा अपनी विद्वत्ता से अपने वंश का नाम ऊँचा कर रहे हैं । सम्भलहेड़ा निवासी सैय्यद कासिम हुसैन मरसिया पढ़ने में बेजोड़ हैं तथा इस क्षेत्र में आपने अत्यन्त ख्याति प्राप्त की है ।

सैय्यद मुहम्मद अली आरिफ शायरी के क्षेत्र में सुप्रसिद्ध हैं । इनके पूर्वजों का घर मौजा सम्भलहेड़ा था । ककरौल निवासी सैय्यद हमीद हसन "हुनर" ने भी शायरी में ख्याति प्राप्त की । स्वतन्त्रता के पश्चात् जमींदारी उन्मूलन के कारण इस वंश ने लघु खेती बारी का सहारा लिया, परन्तु किसी आधुनिक व्यवसाय की ओर ध्यान न दिया जिसके कारण इस वंश की आर्थिक दशा बिगड़ती चली गई तथा यह वंश एक आर्थिक संकट में पड़ गया । आर्थिक दशा बिगड़ने का एक कारण यह भी था कि सैय्यदों ने अपनी आय की बढ़ोत्तरी की ओर कभी ध्यान न दिया । इस वंश में शिक्षा पर कम ध्यान दिया गया तथा आधुनिक शिक्षा को कोई महत्व न दिया गया । कुछ गिने चुने परिवारों ने उच्च शिक्षा प्राप्त की परन्तु उन लोगों ने भी इस ओर कोई विशेष ध्यान न दिया । इस वंश में महिलाओं की शिक्षा नगण्य थी तथा इसको कोई महत्व नहीं दिया जाता था । इस प्रकार इन लोगों की आर्थिक दशा बिगड़ती चली गई तथा ये बहुत गरीब हो गये । आर्थिक दशा बिगड़ने तथा निरक्षरता के साथ साथ अन्य सामाजिक एवं सदाचार सम्बन्धी दोषों के कारण इस वंश की विशेषत: का अन्त हो गया तथा राष्ट्रीय एकता को भी ठेस पहुँची । भाई चारा निभाने के बदले ये लोग एक दूसरे की

निन्दा करने लगे । इन सब कारणों से इस वंश का महत्व नगण्य हो गया तथा साथ ही साथ सत्ता भी चली गई ।

पिछले 10 वर्षों में इस वंश में पुनः परिवर्तन आया है । शिक्षा की ओर रुचि बढ़ी है । उच्च शिक्षा के महत्व को समझा गया है । इस वंश के बहुत से नौजवानों ने अपने पूर्वजों की आजीविका का त्याग कर तथा उच्च शिक्षा प्राप्त कर बहुत ख्याति प्राप्त की है । बहुत से नौजवान वकालत करने लगे हैं । वकालत में जानसठ निवासी सैय्यद कौसर अली, सैय्यद रौनक अली जैदी, सैय्यद नजर मुहम्मद, सैय्यद इकबाल अब्बास, सैय्यद महमूद अली आदि का नाम उल्लेखनीय है ।

इसके अतिरिक्त कुछ व्यक्तियों ने शिक्षा विभाग में ख्याति प्राप्त की है । इस सम्बन्ध में डा० सैय्यद इकबाल हुसैन चित्तौड़ निवासी (इस समय ए॰एम॰यू॰, अलीगढ़), बेहड़ा निवासी सैय्यद जहीर हैदर (इस समय ए॰एम॰यू॰,अलीगढ़) व सैय्यद अनवर अली जैदी (इस समय सोमालिया, अफ्रीका) के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं ।

बहुत से नौजवानों की रुचि टेक्निकल शिक्षा की ओर अग्रसर हुई तथा उन्होंने इस क्षेत्र में राजकीय सेवा भी की । इस सम्बन्ध में जानसठ निवासी सैय्यद मुहम्मद मेंहदी, अभियन्ता, (इस समय ईराक में) तथा सैय्यद सआदत अ नबी जैदी के नाम उल्लेखनीय हैं । कुछ नौजवान आई॰टी॰आई॰ की शिक्षा ग्रहण

कर रहे हैं । आज भी महिला शिक्षा की ओर कम ध्यान दिया जाता है । हालांकि बहुत सी महिलायें स्नातक की परीक्षा में सफल हुई हैं, फिर भी अपनी शिक्षा का उचित उपयोग नहीं कर पा रही हैं ।

पिछले कुछ वर्षों में सैयदों की आर्थिक दशा में भी सुधार आया है । बहुत से परिवारों की दशा में सुधार आया है तथा जीवन के सभी क्षेत्रों में वे उन्नति की ओर अग्रसर हो रहे हैं । परन्तु फिर भी अभी बहुत परिश्रम की आवश्यकता है । इन सब परिवर्तनों का नतीजा अगले 10 वर्षों में स्पष्ट होगा । यह आवश्यक है कि समय के परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए, कुछ और परिवर्तन आयें ।

------:o:------

संदर्भ ग्रन्थ सूची -

तजकीरतुल सलातीनेचकताई -

मुहम्मद हादी कामवर खाँ कृत सीतामऊ वी0यू0लाइब्रेरी उदयपुर की मूल प्रति की नकल । इस ग्रन्थ में मुहम्मद शाह के राज्य-काल के छठे वर्ष तक के तैमूरी शासकों का संक्षिप्त विवरण मुख्य रूप से राजकीय नियुक्तियों एवं स्थानान्तरण आदि का वर्णन मिलता है । कामवर खाँ स्वयं शाही - मनसबदार थे ।

इबरतनामा-

लेखक कामराज पुत्र नैन सिंह ई0स0 1707 से 1719 तक की घटनाओं का सामान्य रूप से वर्णन ।

तारीखे हिन्दी-

लेखक रुस्तम अली शाहबादी । इसकी रचना हि0स0 1154 में की गई तथा इसमें हि0स0 1153/1740 तक की सामान्य रूप से एतिहासिक घटनाओं का वर्णन किया गया है । {सीतामऊ लाइब्रेरी की मूल प्रति की नकल}.

जहाँदार शाहनामा-

जहुरुद्दीन फारुकी बल्खी देहलवी मुलतानवी कृत इण्डिया आफिस लाइब्रेरी 3988, जहाँदार शाह के शासन के विषय में अनेक कथाएं लिखी हुई हैं । {सीतामऊ लाइब्रेरी की मूल-प्रति की नकल} .

इबरतनामा या रोजनामचा-

मिर्जा मुहम्मद (1707 से 1719) तक का विवरण । जाटों संबंधी जानकारी सीतामऊ लाइब्रेरी की मूल प्रति की नकल ।

शाहनामा-ए मुनव्वर कलाम-

लेखक शिवदास लखनवी, रयू (1) 274 (3) 939-48 रजालाइब्रेरी रामपुर, फर्रुखसियर के शासन एवं मुहम्मदशाह के शासन काल के प्रारम्भिक चार वर्षों का प्रमुख ऐतिहासिक विवरण एवं दरबार के समाचारों का उल्लेख इस ग्रंथ में मिलता है । (अंग्रेजी अनुवाद)

-------*-------

प्रकाशित ग्रन्थ-

मुन्तखबुल-लुबाब -खाफी खाँ कृत बिबल्योथिका इण्डिका सीरीज़ ।

मआसिर उल उमरा -शाहनवाज खाँ कृत बिबल्योथिका इण्डिका अंग्रेजी अनुवाद भाग I, II

मिराते अहमदी -मुहम्मद अली खाँ कृत

सियारुल मुताखरीन -गुलाम हुसैन कृत लिथो लखनऊ संस्करण

बादशाहनामा -लाहौरी कृत भाग I, II

बादशाहनामा -वारिस श्री नटनागर शोध संस्थान सीतामऊ मालवा

अमले सालेह भाग I, II, III

शाहजहाँनामा -हिन्दी अनुवाद

नुसखा-ए दिलकुशा -भीमसेन अंग्रेजी अनुवाद

मुआसिरे आलमगीरी -1658-1707 इस ग्रंथ में औरंगजेब के समय का वर्णन है । लेखक साकी मुसताद खान ।

फ्तुहात-ए-आलमगीरी -सीतामऊ लाइब्रेरी मूल प्रति की नकल

रुकात-ए-आलमगीरी -या औरंगजेब के पत्र-जामशिद-ह-बिलिमोरियाबोए.

जंगनामा -श्रीधर कृत श्री राधा कृष्ण दास और श्री किशोरीलाल काशी-नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित सीतामऊ लाइब्रेरी मूल प्रति की नकल ।

मुनतखबुत -तवारीख अल बदायुनी भाग I, II अंग्रेजी अनुवाद ।

अकबरनामा -अंग्रेजी अनुवाद भाग I, II, III

अखबार सरकारे रणथम्भोर- मैनारिया सहाब अनु काजी कराम्तुल्लाह मुंशी फाजिल रघुबीर लाइब्रेरी सीतामऊ ।

आइने-अकबरी-अबुल फजल- अंग्रेजी अनुवाद ब्लाकमैन एण्ड जेरट

तुजुके-जहाँगीरी -रोजर्स कृत अंग्रेजी अनुवाद भाग 2

जहाँगीरनामा -हिन्दी अनुवाद

औरंगजेबनामा -राममुंशी प्रसाद जी॰ श्री नट नागर शोध संस्थान सीतामऊ लाइब्रेरी

दस्तावेज पत्र आदि हस्तलिखित सामग्री-

जयपुर रिकार्ड्स -(सीतामऊ लाइब्रेरी मूल प्रति की नकल)

अखबारात -विभिन्न पत्र अब्दुल्ला खाँ व हुसेन अली खाँ से संबंधित (सीतामऊ लाइब्रेरी मूल प्रति का नकल)

बालमुकन्द नामा -सैय्यदअब्दुला खाँ के पत्र (1719, 20)

मिसलेनियस लैटर्स — जयपुर रिकार्ड (1704, 1727)
सीतामऊ लाइब्रेरी मूल प्रति की नकल

मराठी ग्रंथ — मुदियाड़ख्यात (सीतामऊ लाइब्रेरी मूल प्रति कल नकल)।

राठौड़ा री ख्यात — सीतामऊ लाइब्रेरी मूल प्रति की नकल।
मराठी रियासत 5 पुण्य श्लोक शाहू
पेशवा बालाजी विश्वनाथ
गोविंदसखाराम सर देसाई (1707-1720)
श्री नटनागर शोध संस्थान सीतामऊ मालवा।

संस्कृत हिन्दी राजस्थानी

जोधपुर राज्य की ख्यात (सीतामऊ लाइब्रेरी मूल प्रति की नकल)
1678 से 1724

अजीत विलास — भाग 27

राजरूपक — पं० रामकर्ण

सूरज प्रकाश — राजस्थान पुरातन ग्रन्थ माला।
कविया करणीदानजी चरण कृत भाग 2,3.

उर्दू — सादात बारहा का तारीखी जायजा लेखक
सुलेमान अलीखान रंगमहल जानसठ (जिला मुज०नगर)
यू०पी०.

गजेटियर — मुजफ्फरनगर- एच०आर०नेविल, आई.सी.एस.
इलाहाबाद, पंजाब, सहारनपुर, हरदोई, मेरठ,
पटियाला इम्पीरियल गजे़टियर.

सेटिलमेन्ट रिपोर्ट - मुजफ्फरनगर लीड्स मुजफ्फरनगर
- हिस्टोरिकल अकाउन्ट आफ मुजफ्फरनगर

गौण आधार ग्रन्थ

लाइफ एण्ड टाइम्स आफ महमूद आफ गजनी - मुहम्मद नाजिम

सुल्तान महमूद आफ गजनी - मोहम्मद हबीब

हिस्ट्री आफ द मगोल्स - हार्वर्थ

कोम्प्रीहेन्सिव हिस्ट्री आफ इण्डिया भाग- - हबीब एण्ड निजामी

तबकात ए नासिरी - मिन्हाज उस सिराज

कैम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इण्डिया - अंग्रेजी अनुवाद भाग- एवम्

अकबर द ग्रेट - वी0 स्मिथ

अकबर महान् - डा0 आशिर्वादी लाल श्रीवास्तव

हिस्ट्री आफ जहाँगीर - डा0 बेनी प्रसाद

नूरजहाँ एण्ड हर फैमिली - डा0 चन्द्रा पंत

जहाँगीर इण्डिया - डब्लू0एच0 मोरलैण्ड

हिस्ट्री आफ शाहजहाँ - डा0 बनारसी प्रसाद

हिस्ट्री आफ औरंगजेब - डा0 यदु नाथ सरकार

मुगल नोबिलिटी अण्डर औरंगजेब- अतहर अली

औरंगजेब इन मुन्तखबुललबाब - अनीस जहान सैय्यद

औरंगजेब एण्ड हिज टाइम - फारुकी

ए शार्ट हिस्ट्री आफ औरंगजेब - डा0 यदुनाथ सरकार

मैडिवियल इण्डिया भाग-I,II

ए मिसलेनी ॥ सेन्टर आफ एडवास स्टडी, इतिहास विभाग ॥
अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सटी

ए कौम्प्रिहेन्सिव हिस्ट्री आफ इण्डिया भाग-1, 1712, 1772 - आर॰सी॰ बैनर्जी

मनसबदारी सिस्टम - अब्दुल अजीज़

ए मुगल स्टेट्समैन आफ द 18 इन सेन्चुरी खान-ए-दौरान मीर बख्शी आफ मुहम्मदशाह 1719, 1739 - जाहिरउद्दीन मलिक

पार्टीस एण्ड पोलिटिक्स - डा० सतीश चन्द्र

उत्तर मुगल कालीन भारत - डा० सतीश चन्द्र

लेटर मुगलस् - विलियम इरविन भाग-।।

द फाल आफ द मुगल एम्पायर - कीन

हिस्ट्री आफ इण्डिया भाग-*, - इलियट एण्ड डाउन्सन

द फॉल ऑफ द मुगल एम्पायर - एस०जी० ओवेन

द रेन ऑफ मुहम्मद शाह - डा० जहीरुउद्दीन मलिक

मासिर उल उमरा {मुगल दरबार हिन्दी अनुवाद भाग-} - ब्रज रतन दास

द मुगल एम्पायर - डा० आर०सी० मजुमदार

द प्रोविन्शियल गवर्मेन्ट - पी० सरन

हिस्ट्री आफ ग्रेट मुगल - कैनेडी

मुगल एडमीनिस्ट्रेशन इन गोलकुण्डा - रिचर्डसन

द मुगल गवर्मेन्ट - यू०एन० डे

रियाज उस सलातीन या हिस्ट्री आफ बंगाल {अंग्रेजी अनुवाद} - गुलाम हुसेन सलीम

राइज एण्ड फाल आफ द मुगल एम्पायर - आर०पी० त्रिपाठी

हिस्ट्री आफ मोहम्डेन पावर इन इण्डिया - गुलाम हुसेन

ए शार्ट हिस्ट्री आफ इस्लामिक इण्डिया (1605-1748) - मुहम्मद यासीन एम०ए०

मुगल किंगशीप एण्ड नोबिलटी - राम प्रसाद खोसला

निजामउलमुल्क आसफ जहाँ - डा० युसुफ हुसेन खान

रिजीलस एण्ड इन्टैल चुअल हिस्ट्री आफ द मुस्लिम - सैय्यद आथर अब्बास रिजवी

जयपुर एण्ड द लेटर मुगल्स (1707, 1803) - हरीश चन्द्र टीकिवाल

अठारवी शताब्दी में दक्षिण - लेखक पी०सेठ माधव राव

मालवा इन ट्रान्जिशन - डा० रघुबीर सिंह

दुर्गादास राठौर - डा० रघुबीर सिंह

बेन्डेज आफ फ्रीडम (1707-1947) - विश्वेश्वर प्रसाद

डिक्शनरी आफ इस्लाम ओरियन्टल पब्लिशर्स - जे०पी० हेज

जहाँदारनामा - नुरूद्दीन कृत पाण्डुलिपि फोलियो 4।ए

मुगल साम्राज्य का अन्त - डा० अतहर अली

मध्यकालीन भारत - डा० इरफान हबीब (हिन्दी संस्करण)

लेख

हल्दी घाटी का युद्ध - शिवदत्त दान बराहठ, श्री नटनागर शोध संस्थान, सीतामऊ, मालवा

चिन्तन - शोध वार्षिकी सम्पादक माधव प्रसाद पाण्डेय (मार्च, 1977)

शोध ग्र:-

	नूरजहाँ एण्ड हर फैमली	- डा0 वन्द्रा पंत
	बहादुर शाह	- डा0 उदय राज
	फारुखसियर	- डा0 वैटर्जी